TIGHT BINDING BOOK

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180438

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—23—4-4-69—5,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 83/R 14R Accession No. H 311

Author राघव, भगवन्य .

Title रूप की ज्वाला . 1957.

This book should be returned on or before the date last marked below.

रूप की ज्वाला

[राइडर हैगार्ड के विश्वविख्यात उपन्यास 'शी' का छायानुवाद]

लेखक

डा० रांगेय राघव



किताब महल, इलाहाबाद : बम्बई

१९५७

प्रकाशक—किताब महल, ५६-ए, जीरो रोड, इलाहाबाद।
मुद्रक—जीवन कल्याण प्रेस, नैनी, इलाहाबाद।

भूमिका

एक ओर व्यक्तिवाद और दूसरी ओर साम्यवाद के संघर्ष ने आधुनिक लेखकों का दृष्टिकोण किसी अंश तक सीमित अवश्य कर दिया है। इसका कारण यह है कि अभिव्यक्ति का मध्यमवर्गीय दृष्टिकोण आज शैली का एक अपना ऐसा रूप धारण कर गया है, जो जन साधारण के लिये कठिन-सा बैठता है।

वर्तमान साहित्य का बुद्धिवादी हो जाना तो उसके इतिहास का विकास है। किन्तु एक बात हमें याद रखनी चाहिये कि संसार का महान साहित्य प्रायः ऐसा है जो अधिकांश की भाव-भूमि पर प्रभाव डालने में समर्थ हो जाता है। किसी भी कलाकृति को समझने और पढ़ने वालों का मानसिक स्तर एक ही नहीं हुआ करता। जिसका स्तर जैसा होता है, वह रचना विशेष में उतना ही अधिक आनन्द भी प्राप्त करता है। ऐसी ही रामायण की कथा है जो उदात्त से उदात्त भावनाएँ जगा कर भी लघुवेष्टनी के पाठक को अपनी घटनाओं की महानता से ही बाँध रखती है। हम बालकों तक को उसमें बड़ा आनन्द लेते हुए देखते हैं। स्वयं कवि गुरु कालिदास की किताबों से ही संस्कृत में पाठ्यारम्भ कराया जाता है। यह तुलसी के विषय में भी कहा जा सकता है। ताल्सताय और गोर्की जैसे प्रसिद्ध लेखकों में भी हमें एक आकर्षण मिलता है। शरद में तो यह था ही कि वह चौदह वर्ष तक के मस्तिष्क को पकड़ लेते हैं। हिन्दी में यह गुण प्रेमचन्द में था। यद्यपि सरलता ही साहित्य का एक मात्र गुण नहीं है, क्योंकि कामायनी सरल नहीं है, न मिल्टन की पैरेडाइज लॉस्ट, फिर भी इतना निर्विवाद है कि साहित्य में जो मूल गुण हैं उनमें से सरलता भी एक आवश्यक गुण है।

सरलता का माध्यम आकर्षण का गुरुत्व है। वह प्राप्त होता है तभी जब हम उदात्त भावनाओं को जाग्रत करने में समर्थ होते हैं। हिन्दी के आदि

कालीन उपन्यासकारों में देवकीनन्दन खत्री की कलम में यही जादू था। उनकी विशेषता यह है कि अपने सारे तिलिस्म, चकाचौंध और घटनाडम्बर में भी उनके पात्रों की सजीव मानवीयता हमें सर्वत्र प्राप्त होती है। और सत् और असत् के संघर्ष में हम अपने आप नायक पक्ष में खड़े हो जाते हैं। अपने इस पक्ष के कारण हमें उस साहित्य को पढ़ कर हीनत्व का आभास नहीं होता। हल्का पठन है और फिर भी एक ताजगी देता है। कलाकार और युग के बदलते ही वही तिलिस्मी विषय अपना औदार्य दुर्गाप्रसाद खत्री के हाथों में खो देता है। इनके साहित्य में रोचकता है, किन्तु लोकरञ्जन का पक्ष नहीं है।

हिन्दी में हमें विशेषतया यह ध्यान रखना आवश्यक है कि हमारे पाठक दो प्रकार के हैं। मध्यम वर्ग में अधिक शिक्षित लोग जिस साहित्य की खोज में रहते हैं वह एक शैली विशेष का साहित्य है, किन्तु अधिकांश जनता का स्तर इतनी दुरूहता को नहीं समझता, और यही कारण है कि मैथिलीशरण गुप्त और वृन्दावन लाल वर्मा के साहित्य में उसकी रुचि का परिचय हमें अधिक मिलता है। इस प्रकार का साहित्य हिन्दी में वांछनीय है जिसमें सरलता भी हो और कला पक्ष भी उजागर हो। शिक्षाप्रद साहित्य को उपदेशात्मक तो नहीं होना चाहिये, किन्तु आवश्यकता इस बात की है कि हमें ऐसे साहित्य का सिरजन करना चाहिये जिसमें शिक्षा अपने आप प्राप्त हो और लेखक अपनी कला के माध्यम से जनता के स्तर को पहले से तनिक ऊँचा करके छोड़े।

इसके लिए हमें यथार्थ की सीमा में ही कला की सारी अभिव्यक्तियों को बन्दी नहीं कर देना चाहिये। गलीवर्स ट्रैविल, ऐरेह्वौन इत्यादि विचित्र कथाएँ, एलिस इन वन्डरलैंड, वाटर बेबीज़ जैसी आकर्षक रचनाएँ इस प्रकार के नये प्रयोगों के विख्यात उदाहरण हैं। क्या हिन्दी को ऐसी रचनाओं की आवश्यकता नहीं है?

आज लोकरञ्जन के लिये सस्ता जासूसी और हत्या-षड्यन्त्रों से भरा यौन साहित्य बिक रहा है। इन पुस्तकों के पढ़ने से हमारे पाठक किधर जाते हैं? परन्तु उधर उनके जाने का कारण? वे हल्का पठन चाहते हैं। हल्का पठन सुन कर भौंह तरेर कर देखने की आवश्यकता कदापि नहीं है। वे केशव की रामचन्द्रिका

के स्थान पर तुलसी का रामचरितमानस चाहते हैं। आप दे सकते हैं? या आप भी इसका शोक करने को तैयार हैं कि आपके तोते तक जब संस्कृत में बोलते हैं तब आप हिन्दी में बोलें तो कैसे? मैं यह नहीं कहता कि कलाकार पर कोई बन्धन होना चाहिये। वह अपनी भावना, प्रेरणा के अनुकूल ही लिखे, किन्तु क्या वह एक बात भूल कर ठीक करेगा कि उसके साहित्य में कान्ता सन्तति का गुण नहीं रहे? आदर्श की अभिव्यक्ति केवल यथार्थ में नहीं होती, न पलायन में, वह तो भाव-भूमि के विकास में होती है, जिसमें यह देखा जायेगा कि लेखक अपने पाठक को कितना 'धनी' (बुद्धि के रूप में समृद्ध) बना कर छोड़ता है। किसने नहीं सुना कि महमूद गज़नवी की किंवदन्ती में उसके वजीर ने उल्लुओं की बातचीत के माध्यम से उसकी बर्बरता पर स्पष्ट प्रकाश डाल दिया था, जब उसने उल्लुओं को दहेज में खण्डहरों के बारे में विवाद करते हुए बताया था? व्यङ्ग की बात और है, और वह भी साहित्य का गुण है। उसे क्यों सब भूले जा रहे हैं? और उसे लेते भी हैं तो दुरूह बनाने में अपना गौरव समझते हैं?

हिन्दी उपन्यास को लोकरञ्जन के नये क्षितिजों की आवश्यकता है, क्योंकि साहित्य का एक बहुत बड़ा गुण लोकरञ्जन भी है और वह एक आवश्यक गुण है। जो अपने स्तर का साहित्य पाने के अभाव में असत् भरे साहित्य की ओर अग्रसर होते हैं, युग की विषम व्यवस्था में पतित होने से रोकने का साधन क्या है? क्या आप उन्हें रोक सकेंगे या अपनी ऊँचाई से नीचे नहीं उतरेंगे? आप कलाकार हैं। युग का निर्माण करेंगे या पीछे रहेंगे? क्या सभ्यता के विकास में मानव के नये सीमान्तों का अङ्कन आपको नया उजाला नहीं दे रहा, जो समग्र जीवन को प्रतिबिम्बित कर सके?

'रूप की ज्वाला' नामक उपन्यास, ऐसा ही एक प्रयत्न है। इसका मूल रूप है, राइडर हैगार्ड का 'शी' नामक विश्वविख्यात उपन्यास। यह एक विचित्र रचना है और इसमें जीवन की अनेक गहरी अनुभूतियों का बहुत सफल चित्रण किया गया है। हमारे लिये यह एक ध्यान देने की बात है कि 'शी' का रचना-काल प्रायः वही है जो देवकीनन्दन खत्री के 'चन्द्रकांता' उपन्यास का है। मैंने

मूल उपन्यास का शब्दानुवाद नहीं किया है। इसे केवल छायानुवाद कह सकते हैं, क्योंकि इसमें मूल ग्रंथ को तनिक संक्षिप्त भी कर दिया गया है।

हिन्दी को ऐसे क्लासिक ग्रंथों की बहुत आवश्यकता है। यदि मेरा यह प्रयत्न पाठकों को प्रसन्नता देता है तो मैं अवश्य आभारी होऊँगा, क्योंकि वे भी हिन्दी का भण्डार भरने की प्रेरणा मुझे अधिकाधिक देंगे।

—रांगेय राघव

१

जीवन में कुछ ऐसी विचित्र घटनाएँ हो जाती हैं जिनकी एक-एक बात चल-चित्र की भाँति हृदय पर सदा के लिये अङ्कित हो जाती हैं। अनेकानेक वर्ष बीत जाते हैं पर वह बातें इतनी नई सी प्रतीत होती हैं जैसे कल ही हुई हों। उनकी याद ऐसी ताजी होती है कि एक के बाद एक, सारी घटनाएँ स्वयं आँखों के सामने खिंचती चली जाती हैं और हम उनमें तन्मय होकर अपनी सुध-बुध भी खो बैठते हैं।

उन बातों को आज पूरे बीस वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। मैं संध्या के समय कैम्ब्रिज में अपने कमरे में बैठा हुआ गणित की समस्याओं में उलझ रहा था। एक सप्ताह के बाद ही मेरी परीक्षा थी और क्योंकि मैं एक अच्छा विद्यार्थी था मेरे अध्यापक और कालेज के साथी सभी को आशा थी कि मैं उसमें सफलता से उत्तीर्ण ही नहीं बल्कि कोई पारितोषिक भी पाऊँगा। पर न जाने क्यों उस समय मुझसे वह प्रश्न हल नहीं हो रहा था। मैंने थोड़ा सा दिमाग और लड़ाया, तत्पश्चात् उकता कर किताब को दूर फेंक दिया। मैं थक गया था। मैं उठा और अपना चुरुट जलाने लगा। उसी समय मेरी दृष्टि सामने लगे दर्पण में पड़ी और जलती हुई तीली के प्रकाश में मैंने अपनी सूरत दर्पण में देखी। मैं ऐसा ध्यानमग्न हो गया कि तब तक चुरुट बिना जलाये उस प्रकाश में अपना मुख देखता रहा जब तक कि सारी तीली जल गई और मेरी उँगलियाँ जल उठीं, मैंने उसे झटका दिया परन्तु अब भी मोमबत्ती के क्षीण प्रकाश में मैं अपना मुख देख रहा था। मुझे पता नहीं मैं कब तक अपना मुख निहारता रहा परन्तु अंत में मेरे मुख से निकला :

"लुडविग होरेस हौली ! तुम्हारा दिमाग ही तुम्हें चमकावे तो पता नहीं परन्तु तुम्हारा बाह्य चेहरा तो तुम्हें कहीं का न छोड़ेगा·····"

और मैंने आँखें फेर लीं। मुझे अपने चेहरे से स्वयं ही अनुराग नहीं था। आह ! मैं सचमुच ही कितना कुरूप था।

पाठकों को निश्चय ही मेरे इस कथन पर हँसी आयेगी परन्तु यह सत्य है कि बाईस वर्ष की भरी जवानी में जब प्रायः सभी नौजवान सौन्दर्य को प्राप्त होते हैं मेरे पास उस नाम का कुछ भी नहीं था। ठिगना, गठीला और गहरी छाती वाला मैं कुछ विचित्र कुरूपता को प्राप्त था। मेरी भुजाएँ अत्यंत गठीली और वानरों की भाँति अति लंबी थीं; मेरी भौंहें बहुत घनी और मिली हुई तथा पलकें काली और छोटी-छोटी थीं; आँखें भूरी तथा कुछ गड्ढों में धँसी-सी प्रतीत होती थीं; मेरे छोटे माथे पर मेरे घने काले बाल ऐसे उग आये थे मानों साफ किये हुए जंगल में एक बार फिर झाड़-झंकाड़ खड़े हो गए हैं। बीस वर्ष पूर्व मैं ऐसा था और दुर्भाग्य कि आज भी ऐसा ही हूँ, फर्क सिर्फ इतना ही है कि आयु के साथ-साथ कुछ थोड़ा शिथिल अवश्य हो गया हूँ। परन्तु इतनी कुरूपता के साथ-साथ मुझमें कुछ विशेषताऐं भी थीं, मैं जितना कुरूप बाहर से लगता था उतनी ही मेरी बुद्धि तीक्ष्ण थी। गंभीर प्रकृति होने के साथ-साथ मेरी तीक्ष्ण बुद्धि विलक्षण थी जिसका लोहा विश्वविद्यालय के सभी लोग मानते थे। इससे भी बढ़ कर एक बात और थी। मेरी शारीरिक शक्ति अमानुषिक और वानरों जैसी थी। मुझमें अपार बल था। जहाँ मेरी कुरूपता के कारण सड़क पर मेरे साथ चलने में भी मेरे साथी शर्माते थे, वहीं मेरे बल और मेरी बुद्धि पर उन्हें गर्व था। विश्वविद्यालय में ऐसा कोई नहीं था जो मेरे बल को चुनौती दे सके परन्तु फिर भी मैं अकेला था। प्रकृति के गर्भ में शायद मैं ही अकेला व्यक्ति था जिसे केवल अपने आप ही संतोष प्राप्त करना पड़ता था। मेरा न कोई मित्र था, न कोई साथी।

खासकर स्त्रियाँ मुझे देख कर नाक-भौं सिकोड़े बिना कभी नहीं रहती थीं। अभी कोई एक हफ्ते पहिले मैंने एक युवती को मुझे 'जानवर' कहते सुना था। वह अपनी सखी से मेरे बारे कह रही थी जब कि उसका ख्याल था कि मैं सुन नहीं रहा था। वह कह रही थी इसे देख कर तो मुझे मनुष्यों के पूर्वज वानरों की याद हो आती हैं। एक दिन एक युवती मेरी ओर आकर्षित होती हुई प्रतीत हुई। मैंने उस पर अपना सर्वस्व बलिदान कर देना चाहा क्योंकि मैंने समझा वह मुझे चाह कर सचमुच ही मुझ पर अपार एहसान कर रही थी। उसके सहवास में उस बहुत ही थोड़े समय में मुझे अत्यधिक सुख का अनुभव होने

लगा था। मैं उसे ईश्वरीय देन समझ कर उस पर अपना अनुराग मानो बिछा रहा था कि एक दिन उसने धन माँगा। मेरे पास जो कुछ था वह मैं उसे दे चुका था। मैं धनवान होता तो निश्चय ही उसे और देता पर अब मेरे पास देने को कुछ नहीं था, बस वह मुझे छोड़ गई। मेरा हृदय टूट गया। मैं, जो उसकी छवि देख कर विभोर हो उठा था, इस आघात को न सह सका। मैंने उससे बहुत मिन्नत की, बहुत अनुनय किया कि वह मेरे प्रेम को न ठुकराये परन्तु उन सब को सुन कर अंत में वह मुझे पकड़ कर दर्पण के सामने ले गई तथा अपना मुख मेरे मुख के बगल में रखकर बोली :

"यदि मैं सुंदरी हूँ तो अब बताओ तुम क्या हो ?"

और तब मैं बीस वर्ष का था जब मेरा पहिला और शायद अंतिम प्रेम समाप्त हो गया।

मैं देर तक शीशे में मुँह देखा किया और शायद और भी खड़ा रहता परन्तु उसी समय मुझे ध्यान हो आया कि मैं, जिसका संसार में कोई भी अपना नहीं था, क्या स्वयं अपने आप में ही शान्ति अनुभव नहीं कर सकता था। न मेरे पिता थे, न माता थीं, न भाई, न बहिन, न मित्र और न स्त्री। मैं प्रकृति को ही अपनी स्त्री, माता, बहिन समझता हुआ वहाँ से हट गया और बाहर चला गया।

रात गहरी हो चुकी थी, जब मैं लौटा और आते ही शीघ्र सो गया। एकाएक किसी ने मेरे कमरे का द्वार खटखटाया। पहिले तो मैं समझा कि हवा से द्वार हिल रहा होगा परन्तु बार-बार की भड़भड़ाहट से मुझे विश्वास हो गया कि अवश्य ही कोई व्यक्ति होगा। परन्तु फिर भी मैंने एकदम द्वार नहीं खोला। इस समय करीब बारह बजे थे और इस अर्धरात्रि के समय जब कि बाहर तूफान चल रहे थे मुझे इस प्रकार का व्याघात अच्छा नहीं लगा, परन्तु उसी समय बाहर का व्यक्ति खाँसा उसके स्वर को मैं तुरंत पहिचान गया। मेरे लिये पूरे संसार में यदि कोई मित्र कहे जाने योग्य व्यक्ति था तो वही था। मैंने उठ कर तुरंत द्वार खोल दिये।

जैसे तूफान आता है उसी प्रकार एक तीस वर्षीय क्षीणकाय पुरुष हड़बड़ाकर अंदर घुस आया। वह मेरा मित्र था। रोग ने उसे इतना अधिक दुर्बल बना दिया था कि उसका चलना दुर्लभ हो रहा था। वह लंबा और सुंदर पुरुष था परन्तु अब सुन्दरता के नाम पर उसके शरीर में उसकी केवल दो आँखें ही चमक रही थीं। वह बहुत ही अधिक थका हुआ मालूम हो रहा था। उसके हाथ में एक बड़ा लोहे का संदूक था जिसे वह दुर्लभ प्रयत्न से अपने दाहिने हाथ से लटकाये हुए था। उस विकट परिस्थिति में भी मुझसे यह छिपा नहीं रहा कि वह उस संदूक को कितने भीषण प्रयत्न से उठा रहा था। अंदर आते ही उसने वह बक्स मेज पर रख दिया और दीर्घ साँस खींच कर कुर्सी पर गिर गया। अब उसने जो खाँसना शुरू किया तो मुझे ऐसा लगा कि अब वह मर जायगा। उसका सारा चेहरा लाल हो उठा और वह रक्त वमन करने लगा। मैंने उसे थोड़ी ब्राण्डी दी जिसे पीकर वह कुछ स्वस्थ दिखाई दिया परन्तु उसकी वह स्वस्थता भी भयानक दिखाई देती थी।

थोड़ी देर बाद वह बोला : "तुमने मुझे इतनी देर बाहर क्यों खड़ा रखा हौली ? तुम तो जानते हो कि यह ठंडे तूफान मेरे लिये मृत्यु के समान हैं····· आह ! मैं·····"

और वह अधिक न बोल सका। उसे फिर खाँसी आ गई। मैंने उससे कहा :

"मुझे विदित नहीं था कि तुम हो·····यह समय घूमने-मिलने का जो नहीं है।"

"·····हाँ सो तो है। पर यह है भी मेरी आखिरी भेंट·····" वह भयानकता से मुस्कुराने का निष्फल प्रयत्न करता हुआ बोला :

"आह ! मेरे मित्र ! अब मैं सचमुच नहीं बच सकूँगा·····कल का उगता हुआ सूर्य मुझे जीवित नहीं पायेगा। मेरे हौली ! अब तो मैं भुगत गया···"

उसकी बातें और उसकी दशा देख कर मेरा हृदय भर आया और मैं बोल उठा :

"हिश ! क्या बकते हो। मैं अभी डाक्टर को बुलाकर लाता हूँ·····"

उसने तुरंत हाथ हिलाते हुए मुझे रोका और कहा :

"विचार तो तुम्हारा निश्चय ही श्रेष्ठ है परन्तु मुझे डाक्टर की आवश्यकता नहीं है। मैं स्वयं डाक्टरी जानता हूँ और यह भी जानता हूँ कि अब मैं डाक्टर की पहुँच के बाहर हो गया हूँ। मुझे तो एक वर्ष पहिले ही मर जाना चाहिये था। परन्तु न जाने कैसे मैंने यह साल बसीट दिया। अब तुम बैठ कर मेरी बातें सुन लो क्योंकि मुझे तुमसे बहुत कुछ कहना है। ध्यान से सुनना क्योंकि दुबारा बताने के लिये मैं नहीं रहूँगा। हौली! मुझे बताओ इन दो वर्षों में तुम मेरे बारे में कितना जान पाये हो? मैं कौन हूँ और कैसा आदमी हूँ?"

मैंने उत्तर दिया :

"तुम्हारा नाम विन्सी है और तुम मेरे अकेले मित्र हो। तुम धनवान हो और इस आयु में भी जब कि प्रायः सभी लोग पढ़ाई छोड़ देते हैं कालेज में तफरीहन पढ़ने आये हो। तुम्हारा विवाह हो चुका है और तुम्हारी पत्नी मर गई है·····यह सभी बातें मुझे विदित हैं।"

सभी बातों को सुनकर वह सिर हिला रहा था मानों वह संतुष्ट हो रहा हो। अन्त में वह बोला :

"क्या तुम जानते हो कि मेरा एक पुत्र भी है?"

"नहीं," मैंने उत्तर दिया।

"मेरा एक पुत्र है और वह इस समय पाँच वर्ष का है। जब संसार में यह मुझे मिला तो इसकी माता मुझसे छिन गई। मेरा संसार अपनी प्रिया को खोकर उजड़ गया था। आह! हौली यह बच्चा तब से अन्यत्र ही पल रहा है और सच तो यह है कि मैंने उसे अभी तक देखा भी नहीं है·····अभी तक क्या·····मैं उसे कभी देखूँगा भी नहीं·····"

तत्पश्चात् थोड़ी साँस बटोरकर वह फिर कहने लगा :

"हौली! यदि तुम मेरी वसीयत की शर्तों को मान जाओ तो मैं तुम्हें आज से अपने इस इस पुत्र का संरक्षक बना दूँ।"

मैं एक दम चौंक उठा : "मैं! और संरक्षक।"

"हाँ तुम।" उसने उसी शांत स्वर से उत्तर दिया, "मेरे मित्र! मैंने तुम्हें दो वर्षों से परखा है। मुझे कुछ समय से यह मालूम हो गया था कि मैं नहीं बचूँगा और तभी से मैं तलाश में था कि कोई योग्य व्यक्ति मिल जाय तो

उसे अपना पुत्र और यह लोहे का बक्स सौंपकर निश्चिंत हो जाऊँ। तुम हौली! मुझे उस कठोर वृक्ष की तरह दिखाई देते हो जो आँधी-तूफानों से तो नहीं झुकता परन्तु जिसका हृदय हरा और कोमल है।"

"यह बालक जो मैं तुम्हें दे रहा हूँ एक बहुत ही पुराने वंश का है। मेरे बाद यह उस प्राचीन और गौरवपूर्ण वंश का अकेला उत्तराधिकारी होगा।..... तुम शायद हँसो कि मैं अपने वंश का गौरव गा रहा हूँ परन्तु यह वास्तविकता है। एक न एक दिन यह तुम्हें मालूम हो जायगा कि जो कुछ मैं कह रहा हूँ वह कितना सच है। आज से छासठ या सड़सठ पीढ़ी पहिले तक मैं तुम्हें अपने पूर्वजों के नाम गिना सकता हूँ। शायद ही संसार में आज कोई ऐसा वंश हो जो इतनी पुरानी वंश परम्परा गिना सके। मेरा छासठवाँ पूर्वज प्राचीन मिश्री सभ्यता में 'देवी आईसिस' का का पुजारी था। वैसे वह ग्रीक रक्त से उत्पन्न हुआ था परन्तु मिश्र में ही रहता था। उसका वहाँ राजाओं की भाँति सम्मान था और वह इतना सुन्दर व्यक्ति था कि उसे देखकर स्वयं देवी आईसिस उस पर प्रसन्न हो उठी थीं। उसका नाम कैलीक्रेटीस था जिसका अर्थ ही सुन्दर और बलवान् होता है। उसका पिता एक ग्रीक योद्धा था जिस पर प्रसन्न होकर मिश्र की उन्तीसवीं पीढ़ी के फराओ 'हाक-हौर' ने उसे एक बहुत बड़ी जागीर दी थी। उसका बाबा प्रचंड योद्धा था जिसकी गाथा हैरोडोटस ने अपनी पुस्तक में गाई है। उसका नाम भी कैलीक्रेटीस ही था।

"ईसा से लगभग ३३६ वर्ष पूर्व पुजारी कैलीक्रेटीस देवी आईसिस के प्रति खाई हुई शपथ को भूलकर एक राजवंश की सुन्दरी कन्या को लेकर मिश्र से भाग निकला। उस समय मिश्र में फराओ का राज्य अन्तिम बार उखड़ रहा था। चारों ओर युद्ध तथा लूट-खसोट हो रही थी। कैलीक्रेटीस अपनी उस प्रिया को लेकर जहाज में समुद्री राह से भागा। दुर्गम समुद्र को चीरता हुआ वह आगे बढ़ने लगा। कई मास उसे यात्रा में लग गए। तत्पश्चात् एक रात्रि उसका जहाज तूफान की चपेट में आ गया और भीषण लहरों में खो गया। उसके सारे साथी मारे गये और बड़ी मुश्किल से वह अपनी स्त्री को लेकर अफ्रीका के तट पर उस स्थान पर पहुँचा जहाँ आजकल डेलागोआ की खाड़ी है। यहाँ भयानक दलदल थी और उन्होंने भारी विपत्ति सही। परन्तु उस पूरी मुसीबत में

भी उसकी स्त्री, जो ग्रीक रक्त से उत्पन्न मिश्री स्त्री संतान थी, सदा उसके साथ बहुत ही प्रेम से रही और उसने उसके दुःख को बँटाया। अन्त में उस देश की रानी ने उन्हें त्राण दिया। उस भयानक स्थान में जहाँ चारों ओर दलदल ही दलदल थे और जहाँ बहुत ही प्राचीन इमारतें व खंडहर विस्तृत रूप से दिखाई देते थे उन्हें उस रानी को, जो कि बहुत ही गोरी और अनन्य रूपवती थी, देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि वहाँ तो सिवा जंगली लोगों के और कोई रहता ही न था और वह भी ऐसे भयानक कि नवागंतुकों के सिर पर गर्म बर्तन रखकर उन्हें मार डालते थे।

"खैर तो वहाँ उस विद्युत के समान रूप ज्वाला से कौंध जाने वाली उस रानी ने उन्हें विशेष सम्मान दिया। उस रानी के बारे में कहा जाता था कि वह अमर थी और उसकी सुन्दरता के सामने संसार में कोई पुरुष बिना झुके रह नहीं सकता था।···इसके आगे जो कुछ हुआ वह बहुत भयानक हुआ। मेरा पूर्वज कैलीक्रेटीस जो स्वयं अपने सौन्दर्य में बहुत बढ़ा-चढ़ा था और जो अपनी प्रेयसी को जी-जान से ज्यादा प्यार करता था उस रानी की तृष्णा का शिकार बन गया। रानी उस पर रीझ गई और उसने प्रणय के लिए हाथ बढ़ाया। निश्चय ही उस रूप की ज्वाला को कोई नहीं ठुकरा सकता था। परन्तु मिश्री स्त्री भी कम सुन्दर नहीं थी और फिर कैलीक्रेटीस उसे प्रेम भी करता था। उसने रानी के प्रेम को ठुकरा दिया। रानी क्रुद्ध हो उठी और उसने भाले से अथवा किसी अस्त्र से उसे मार डाला। उसकी स्त्री न जाने किस तरह तत्-पश्चात् उस भयानक स्थान से निकलकर समुद्र तीर पर पहुँची और बहुत ही अधिक कष्टों को झेलती हुई एथेन्स पहुँची। वहीं उसने एक बालक को जन्म दिया और मर गई। उसने उस बालक का नाम टाईसिसथिनिस रखा जिसका अर्थ भारी बदला लेने वाला होता है।

"इसके बाद कोई पाँच सौ वर्षों के उपरान्त टाईसिसथिनिस के वंशज रोम में आकर बस गए। उनके बारे में अधिक कुछ पता नहीं चलता। सिवा इसके कि अब वे लोग 'विंडेक्स' कहलाते थे। इस शब्द का अर्थ भी 'बदला लेने वाला' होता है।

"फिर पाँच और शताब्दियाँ बीत गईं। ईसा के ७७० वर्ष बाद चार्ल मैग्ने ने जब लम्बार्डी पर हमला किया तो वहाँ का राजा उससे हार कर भागा। उस समय विंडेक्स लोग उस राजा के सम्पर्क में अधिक रहते थे। जब राजा एल्प पर्वत को पार कर ब्रिटैनी में आया तो वह भी उसी के साथ चले आये।

"आठ पीढ़ियाँ और बीत गईं तत्पश्चात् विंडेक्सों का वंशज इंगलैण्ड आकर बस गया। यह वह समय था जब यहाँ एडवर्ड दि कन्फैस्सर राज्य करता था। राजा विलियम दि कौंकरर (नार्मण्डी का विजयी विलियम जिसने इंगलैंड को जीत लिया था) के काल में उसके वंशज को विशेष सम्मान फिर मिल गया और वह ठाठ-बाट से रहने लगा। उस समय से अब तक मैं अपनी पूरी वंश परम्परा मुँह जुबानी सुना सकता हूँ।"

इतना कह कर वह फिर खाँसने लगा मुझे उसकी बातों से आश्चर्य हो रहा था और साथ ही कुछ-कुछ शक भी हो रहा था कि सम्भव है बीमारी के कारण उसके मस्तिष्क में कुछ विकार आ गया हो। उसकी हालत देखकर मैंने उसे फिर ब्रांडी पीने को दी जिसे पीकर वह फिर कहने लगा :

"तब से अब तक हम लोग 'विंसे' कहलाते हैं। विंडेक्स बदलकर अब विन्से हो गए पर उन्होंने हमेशा अपना सम्मान बनाये रक्खा। बड़ा आदमी तो उनमें से फिर कोई नहीं बना, कभी कोई फौज में रहा तो बाद में कोई व्यापारी। राजा चार्ल्स द्वितीय के काल से इस शताब्दी के प्रारम्भ तक वह सभी व्यापारी रहे। मेरे बाबा ने काफी धन कमाया और वे १८२१ में मर गये। मेरे पिता ने वह धन ऐयाशी में उड़ा दिया परन्तु दस वर्ष बाद जब वह मरे तो उन्होंने इतनी जायदाद तो मेरे लिये छोड़ ही दी कि मेरी वार्षिक आय दो हजार पौंड रह गई।

"इसके बाद मैंने इस सन्दूक को खोला और इसके कहे अनुसार मैंने यात्रा की। यह सन्दूक हमारे वंश में प्रारम्भ से ही चला आता है। परन्तु वह यात्रा पूरी न हो सकी। मेरा जहाज टूट गया और कठिनता से मैं एथेन्स वापस आ पाया। यहीं मुझे मेरी स्त्री मिली। वह भी अत्यन्त सुन्दरी थी कदाचित् कैली-क्रेटीस की स्त्री की भाँति ही वह भी थी। एक वर्ष बाद मेरा यह पुत्र हुआ और मेरी स्त्री सदा के लिए मुझे छोड़ गई।"

थोड़ी देर वह आँखें मूँदे बैठा रहा और लंबी-लंबी साँसें लेता रहा। मैंने उसके मुख की रेखाओं से स्पष्ट जान लिया कि वह कितना दुखी था। तत्पश्चात् वह फिर बोला :

"अपनी पत्नी के सहवास में मैं इस संदूक को बिल्कुल भूल गया था। उसके मरने के बाद मैंने फिर यात्रा की सोची। परन्तु अपनी अभीष्ट सिद्धि के लिये यह जरूरी था कि मैं अरबी भाषा बोलना सीख सकूँ क्योंकि जहाँ मैं जाना चाहता था वहाँ सब अरबी ही बोलते थे। और इसीलिये मैंने यहाँ विश्व-विद्यालय में आकर नाम लिखाया। परन्तु इसी बीच मुझे बीमारी ने धर दबाया और मेरा शरीर भुगतने लगा। मैं अब कुछ नहीं कर सकता·····नहीं अब व्यर्थ है। हौली ! अब तो मैं मर जाऊँगा।"

और वह फिर खाँसने लगा। ब्राण्डी की तीसरी मात्रा पीकर वह फिर स्वस्थ हुआ और बोला :

"हौली ! अपने पुत्र को मैंने कभी नहीं देखा है परन्तु सुना अवश्य है कि वह बड़ा होनहार और सुंन्दर बालक है।"

फिर उसने अपनी अंदर की जेब से एक सीलबंद लिफाफा निकाला जिस पर मेरा नाम व पता लिखा था। और बोला :

"तुम उसके संरक्षक बन जाओ। मैंने इसमें तुम्हारे नाम वसीयत कर दी है। बोलो हौली ! मेरी बात मानोगे ?"

मैं उसकी बातों से भावावेश में आ गया, बोला :

"अवश्य यदि मुझे तुम बता दो कि मुझे क्या करना होगा।"

"सुनो हौली ! सुनो मेरे मित्र," वह कुछ इतमीनान के साथ कहने लगा :

"लिओ के तुम संरक्षक बन जाओ। उसे अपने पास ही रख कर पढ़ाओ और अरबी भाषा सिखाना। वह होस्टल में न रहे। मेरी वार्षिक आय २००० पौंड है, इसमें से १००० पौंड तुम्हारे लिये है क्योंकि तुम मेरे ही कारण अपना पूरा जीवन मेरे पुत्र की भलाई के लिये लगाओगे। १०० पौंड लिओ की पढ़ाई का खर्चा होगा। बाकी ६०० पौंड प्रति वर्ष लिओ के लिए बचा लो। जब वह बड़ा हो जाय और उक्त यात्रा के लिये जाना चाहे तो यह धन उसके काम आवेगा। तुम शीघ्र ही परीक्षा में उत्तीर्ण होकर विद्यालय में अध्यापक हो जाओगे और

यकीन मानो कि अपनी तनख्वाह के अतिरिक्त मेरी दी हुई इस आमदनी से तुम जीवन भर आराम से रह सकोगे·····बोलो हौली तुम तैयार हो ?"

मैंने बिना सोचे ही कह दिया :

"हाँ यदि तुम्हारी इस वसीयत में और तुम्हारे कहने में कुछ अंतर नहीं निकला तो·····"

"नहीं निकलेगा।" वह झट बोल उठा। फिर बड़े अनुनय के साथ वह बोला :

"देखो हौली मान जाओ। तुम मेरे मित्र रहे हो। मेरे पास अब और दूसरा प्रबन्ध करने का समय नहीं है। मैं कल भोर तक·····"

"मैं तैयार हूँ," मैं बोल उठा।·····

"शपथ लो कि तुम लिओ को सच्चे पिता की तरह रखोगे और जो वादा है उसे निभाओगे।"

मैंने शपथ ले ली। वह मानो प्रसन्न हो उठा। उसके उस भयानक चेहरे पर वह प्रसन्नता ऐसे काँप उठी मानो कोई प्रेत हँस रहा हो। थोड़ी देर बाद वह फिर बोला :

"मुझे तुम पर विश्वास था हौली ! मैं जानता था कि तुम्हारा अंतर कितना शुद्ध है।·····" फिर वह चुप हो गया। और आँखें मूँदे पड़ा रहा। एकाएक वह उठा और उसी समय उसकी दृष्टि सामने लगे शीशे पर पड़ी। अपनी सूरत देख कर वह गंभीर हो गया। थोड़ी देर देखता रहा फिर बोला :

"कीड़ों का भोजन·····कल ही से·····" और फिर वह वहाँ से हट गया। जाते-जाते वह फिर मुड़ा और मुझसे बोला : "हौली यदि तुमने शपथ तोड़ दी तो यकीन मानो कि मैं भूत बन कर तुम्हारे पीछे पड़ जाऊँगा।"

मैंने उससे कहा :

"यह सब ठीक है विन्से पर तुम ठहर जाओ और मुझे डाक्टर को बुला लाने दो क्योंकि तुम्हारी हालत ठीक नहीं है।"

"आह ! हौली ! जीवन अब जीवित रहने लायक नहीं रह गया है·····" और वह जैसे आया था वैसे ही चला गया।

मैं न जाने कब तक बैठा रहा। खुले द्वार में से शीतल हवा के झोंके आने लगे। मैं उठा और मैंने द्वार बन्द किया। मैंने आँखें मींजीं। कहीं मैं स्वप्न तो नहीं देख रहा था? तभी मेरी दृष्टि मेज पर रखे उस विचित्र संदूक पर पड़ी। मैंने गहरी साँस ली।

मैंने अनुभव किया कि मैं बहुत थक गया था। मैंने उन सब विचारों को भूलने के लिये उस संदूक को उठा कर आलमारी में छिपा दिया और लेट गया। न जाने मैं कब सो गया। जब उठा तब वातायन से सूर्य मेरे ऊपर चमक रहा था। घड़ी देखी नौ बजे थे। मैं उठा। उसी समय होस्टल का एक नौकर दौड़ता हुआ आया और बोला :

"वह थे न वह विन्से! वह अपने कमरे के बाहर मरे पड़े हैं....."

× × × ×

२

विन्से अधिकतर बीमार ही रहा करता था और उसकी मृत्यु पर किसी ने छान-बीन नहीं की। सभी ने यह समझा कि उसे बीमारी ने मार डाला परन्तु न जाने क्यों उसकी मृत्यु पर दुख के साथ-साथ कुछ आश्चर्य और भय का भी अनुभव हुआ। उसने जो कहा था कि वह भूत बन कर मेरे पीछे लग जायगा। थोड़े दिनों बाद बात आई गई हो गई।

एक दिन मेरे पास विन्से के वकीलों का पत्र आया। लिखा था.....

"सेवा में जुडविग होरेस हौली—कैंब्रिज—

हमारे मुवक्किल एम० एल० विन्से, जिनकी मृत्यु तारीख ६ को हो चुकी है—उनकी वसीयत के अनुसार आपको कानूनन उनके पुत्र लिओ का वारिस बनाया जाता है.....आप उसे अर्थात् लिओ को अपने पास रख कर पढ़ायेंगे। और अरबी भाषा का अच्छा अध्ययन करायेंगे। विन्से की सालाना आय २००० पौंड है जिसमें से १००० पौंड आपको अपने लिये मिलेगी, १०० पौंड

लिओ की पढ़ाई के लिए और ६०० पौंड लिओ के लिए जमा रहेगी····· बच्चा आपके पास १५ दिन में आ जायगा।"

नीचे ज्योफ्रे और जौर्डन नामक वकीलों के हस्ताक्षर थे। यद्यपि मैं सभी बातें जानता था परन्तु फिर भी उस पत्र, या जिसे वसीयतनामा कहना चाहिये, को पाकर मुझे कुछ अजीब-सा भय लगा। मैं थोड़ी देर तक वैसे ही बैठा रहा और मेरी आँखों के सामने लिओ, जिसे मैंने अभी देखा भी नहीं था, उसका एक अंदाजन चित्र खिंच गया जो बहुत कुछ उसके पिता से मिलता-जुलता था और उसी अर्ध-विक्षिप्तावस्था में मैंने उसकी पढ़ाई के बारे में निश्चय किया कि मैं उसे उच्च गणित, ग्रीक तथा अरबी भाषा अच्छी तरह से पढ़ाऊँगा।

तत्पश्चात् मैंने वकीलों को स्वीकृति का पत्र डाल दिया। अब दूसरी बात लिओ को साथ रखने की थी जिसके लिये कालेज के अधिकारियों से आज्ञा लेनी थी। मैंने उन्हें लिख कर सूचना दी। दूसरे ही दिन मुझे उत्तर मिला कि मैं उस बालक को रख तो सकता था परन्तु कालेज-होस्टल में नहीं। मुझे अलग मकान लेना होगा।

मैं मकान की तलाश में निकल पड़ा और शीघ्र ही मुझे एक अच्छा हवादार साफ मकान मिल भी गया।

अब प्रश्न था कि लिओ जो अभी बच्चा ही था, उसकी देखभाल के लिये एक नौकर रखा जाय। न जाने क्यों यह मुझे तनिक भी अच्छा नहीं लगा कि किसी स्त्री की छाया में मैं उसे पलने दूँ। मैं नहीं चाहता था कि वह बालक किसी भी स्त्री के प्रभुत्व में रहे और मुझसे प्रेम न करे। बच्चा पाँच साल का था और उसे स्त्री दाई की जरूरत तो थी नहीं। मैंने निश्चय किया कि किसी पुरुष को ही नौकर रखूँगा।

काफी परेशानी के बाद मुझे जौब मिला, गोल चेहरे का यह व्यक्ति बिना लिखा-पढ़ा तो था ही पर देखने में फुर्तीला और नेक मालूम होता था। उसने कहा कि उसके सोलह भाई-बहिन थे और वह बच्चों के लालन-पालन में दक्ष था। मुझे संतोष हुआ और मैंने इतमीनान की साँस ली। उस लोहे के बड़े सन्दूक को मैं अपने हाथों से उठाकर अपने बैंकर के यहाँ ले गया और उसे

वहीं जमा करा दिया। लौटते समय मैं बच्चों के लालन-पालन के बारे में कुछ पुस्तकें बाजार से खरीद लाया।

तीसरे दिन लिओ एक वृद्धा स्त्री के साथ मेरे पास आ गया। लिओ को जो मैंने देखा तो देखता ही रह गया। इतना सुन्दर और स्वस्थ बालक मैंने अभी तक कहीं नहीं देखा था। चौड़ा माथा, भूरी आँखें और सुनहले केश जिनमें प्राकृतिक छल्ले पड़े हुए थे यह सब उसकी सुन्दरता को मानो चार चाँद लगाते थे। उसको देखकर मेरे हृदय में प्रेम उमड़ आया। उसके बाद का दृश्य करुणा-जनक था, जब वह वृद्धा जाने लगी तो लिओ से लिपटकर फूट-फूट कर रोने लगा। बच्चा भी रो रहा था। वह दृश्य मुझे आज भी वैसा का वैसा याद है। जब वह चली गई, लिओ कमरे के बीच एक आँख अपनी नन्हीं सी मुट्ठी से मूँदे खड़ा रहा और दूसरी से वह मुझे देख रहा था। मैंने कुर्सी पर बैठे ही बैठे उसे हाथ बढ़ा कर गोद में बुलाया, उसी समय जौब ने मुँह से विचित्र ध्वनि निकाल कर उसे आकर्षित करना चाहा। तत्पश्चात् एक लकड़ी का घोड़ा खींचता हुआ जौब उसके पास आया और उसने उसे दे दिया। लिओ ने उसे ले लिया और गौर से देखता हुआ कुछ देर खड़ा रहा फिर वह उसे आगे-पीछे सरकाने लगा। एकाएक उसने मेरी ओर देखा और अपने दोनों छोटे-छोटे हाथ मेरी ओर फैला दिये। वह पतली तोतली भाषा में बोला :

"तुम्हाली चकल बुली है पल तुम बले अच्छे हो।" मैंने उसे उठा कर हृदय से लगा लिया।

दस मिनट पीछे लिओ रोटी में मक्खन लगा कर हँसता हुआ खा रहा था। जौब ने उसे भुला देना चाहा पर मैंने आँखों ही आँखों में उसे डाँट दिया क्यों कि पुस्तक में यह लिखा था कि बच्चों को मीठा कम से कम खिलाया जाय।

थोड़े ही दिनों में वह हम से खूब हिल गया। वह मेरे कंधों पर चढ़ जाता और सारे घर को किलकारियों से भर देता। जौब उसे बहुत चाहता और खूब खिलाता। वही उसका सारा काम करता और उसे घुमाने ले जाता। लिओ मेरे साथ खाली समय में विद्यालय भी जाने लगा और वहाँ सभी अध्यापक तथा विद्यार्थीगणों का शीघ्र ही प्रिय पात्र बन गया। जब जिसे फुरसत मिलती वही उसे गोदी में उठाये अथवा कंधे पर चढ़ाये डोला करता था। कोई उसे बिस्कुट,

तो कोई मिठाई, तो कोई केक इस प्रकार कई तरह की चीजें देते थे। जैब उन चीजों पर कड़ी निगाह रखता और जब तक उन्हें स्वयं खाकर या चखकर देख नहीं लेता था लिओ को खाने नहीं देता था। मुझे याद है हमारे कालेज में एक अधेड़ उम्र का ऐसा मनुष्य भी था जो बालकों से घृणा किया करता था। वह हमेशा उनसे दूर-दूर रहा करता था। वह इतना नीच तथा दुष्ट था कि यदि कभी कोई बालक भूला-भटका उस तक पहुँच गया तो उसे चुपचाप बुला कर ब्रांडी की गोलियाँ इतनी खिलाता इतनी खिलाता कि बच्चा निश्चय ही वहाँ से निकल कर बेहोश हो जाता और फिर कई दिनों में ठीक होता था। एक बार उसने ऐसी गोलियाँ लिओ को भी खिला दीं; पेश्तर इसके कि मैं बोलूँ, जैब तीर की तरह उसके पास पहुँचा और बोला :

"तुम्हें इस प्रकार का कर्म करते हुए शर्म नहीं आती ? इस उम्र में ऐसा नीच काम करते हुए तुम मर क्यों नहीं गए ?" और फिर उसने वह उग्र रूप दिखाया कि बुड्ढा भयभीत हो गया और उसकी बोलती तक बंद हो गई।

यह सब होता रहा और लिओ बढ़ता रहा। मेरा उसके प्रति प्रेम बढ़ता गया। मैं उसे इतना अधिक चाहने लगा जैसे शायद ही कोई पिता अपने पुत्र को चाहेगा।

लिओ बच्चे से लड़का हुआ और लड़के से युवा। जब वह पंद्रह वर्ष का था तो कालेज में वह 'सौंदर्य का प्रतीक' के नाम से प्रसिद्ध हो गया। उसके साथ-साथ लोग मुझे छेड़े बिना नहीं रहते थे। मैं क्योंकि कुरूप था उसके साथ 'जानवर' फिर कहलाया। मेरे पीछे से वह मुझे ऐसे वाक्य सुना कर कसा करते। एक बार एक व्यक्ति जो एक कसाई का पुत्र था ऐसे ही जब मुझ पर छींटाकशी कर रहा था तो लिओ से सहन नहीं हुआ और उसने जो कद और शरीर में उस कसाई के पुत्र से आधा था उस पर घूँसों और लातों से आक्रमण कर दिया। पहिले तो मैं अनजाना सा बना चुपचाप चलता रहा परन्तु पीछे शोर अधिक मचा तो मैं मुड़ा और मैंने लिओ को बढ़ावा दिया था।

इसी प्रकार कोई लिओ को ग्रीक देवता बताता था तो मुझे स्टाईक्स नदी पर आत्माओं को खेकर पाताल ले जाने वाला भूत चारन कहता। जब लिओ

बीस वर्ष का हुआ तो वह सुन्दर देवता एपोलो जैसा प्रतीत होता था। मैं मन ही मन अपने इस दत्तपुत्र को देख कर फूला नहीं समाता था। एक बात शायद मैं कहना ही भूल गया कि अपनी पढ़ाई खत्म करने के बाद उसी साल जब पाँच वर्ष का लिओ मेरे पास आया था, मैं वही कैंब्रिज के कालेज में अध्यापक हो गया था। लिओ ने पढ़ाई में कोई कमाल हासिल नहीं किया परन्तु वह दिमाग का ठस्स भी नहीं था। उसके पिता के कहे अनुसार मैंने उसे अरबी ही पढ़ाई, और स्वयं भी इसलिये सीखी कि लिओ को पढ़ाते समय आसानी पड़े। हम लोग अब घंटों अरबी में बोलते रहते और शिकार इत्यादि की चर्चा किया करते क्योंकि मैं शुरू से ही अच्छा निशानेबाज शिकारी रहा था और अब भी हूँ। परन्तु मेरे लिओ ने इस क्षेत्र में भी मुझसे बाजी जीत ली और स्वयं एक माना हुआ निशानेबाज बन गया। हम लोग अक्सर छुट्टियाँ बिताने यहाँ-वहाँ जाते थे और हमेशा जौब को साथ ले जाते।

जब लिओ अठारह वर्ष का हुआ तो मैं उसे लेकर एक बार फिर कालेज होस्टल में आगया। मेरे पास तीन कमरे थे और बड़े आराम से कट रही थी। बीस साल की उम्र में उसने कालेज से डिग्री प्राप्त की और इसके बाद ही मैंने उसे उसके पिता और जितना मैं जानता था उसके वंश के बारे में बताया। उसकी जिज्ञासा बढ़ी और उसको बढ़ते देख कर मैंने लोहे के संदूक वाली बात उसे इसलिये नहीं बताई क्योंकि वसीयत के अनुसार अभी उसके खुलने में पाँच वर्ष बाकी थे। यद्यपि मैं स्वयं इन सारी बातों को मूर्खता समझता था और खास कर उस लोहे के संदूक की बात को तो महज वहम ही मानता था फिर भी मैंने अपने मित्र विन्से की बात को यों टाल देना ठीक नहीं समझा। इस बीच मैंने लिओ को बार में बैरिस्टर बनने के लिये दाखिल करा दिया।

एक आपत्ति मेरे सामने आई और वह यह थी कि मेरे पुत्र की सुन्दरता पर हर कोई स्त्री रीझ पड़ती। वह जहाँ भी जाता उसे युवतियाँ घेर लेतीं और एक न एक उपाय से उसे स्पर्श करने और उससे प्रेम प्रदर्शन करने का प्रयत्न करती थीं। परन्तु मेरा लिओ, मुझे संतोष है, बड़ा सभ्य युवक था और उसने कभी कमजोरी नहीं दिखाई। मुझे एक प्रकार का संतोष होता था। मैं, जिसे

स्त्रियाँ ठुकराती थीं, मेरे ही प्रिय पुत्र लिओ द्वारा वह स्वयं ठुकराई गई थीं। ऐसे ही दिन बीतते गए और वह दिन आ गया जिसका एक लम्बे अर्से से इंतजार था। लिओ की पच्चीसवीं वर्षगाँठ आगई।

× × × ×

३

लिओ कल पच्चीस वर्ष का पूरा होगा। आज वह और मैं लंदन चल दिये और बैंक से उस विचित्र सन्दूक को ले आये। जिस क्लर्क ने उसे बीस वर्ष पूर्व रखा था उसी ने निकाल कर दिया भी। सन्दूक जहाँ बीस वर्ष पूर्व रखा था वहीं अब भी मिला और यदि वही क्लर्क न होता जो अब काफी बुड्ढा हो गया था तो शायद बिना ढुँढ़ाई के मिलता भी नहीं क्योंकि वह चारों ओर से मकड़ी के जालों से इतना ढँक गया था कि दिखाई भी नहीं देता था।

लिओ घर आकर उत्तेजित हो उठा था। आते ही बोला—"चाचा! इसे अभी खोलना चाहिये।"

मैंने कहा—"बेटा! जहाँ बीस वर्ष प्रतीक्षा देखी है, क्या एक रात और नहीं देख सकते?"

वह चुप हो गया। रात में शायद उसे नींद भी नहीं आई थी क्योंकि दूसरी सुबह जब मैं, वह और जौब उसे खोलने बैठे तो उसकी आँखें लाल हो रही थीं। मैं उसकी बेचैनी अनुभव कर रहा था। जभी मैंने उससे कोई सवाल-जवाब करना उचित नहीं समझा। चाय पीते समय उसने एक खूबसूरत प्याली गिरा कर तोड़ दी। मैं समझ गया कि मेरा पुत्र अत्यधिक उत्तेजितावस्था में है।

कमरे का दरवाजा अन्दर से बन्द कर हम तीनों उस बक्स के इर्द-गिर्द बैठ गए। जौब को मैंने इसलिए रोक लिया था कि वह हमारी तमाम कार्यवाईयों का एक निष्पक्ष साक्षी रहे। हमें विश्वास था कि वह कभी किसी से उस भेद को नहीं खोलेगा।

लिओ के पिता ने जाते समय तीन तालियों का एक गुच्छा दिया था। मैंने उसे अब दराज में से निकाला। पहिली चाभी आधुनिक मालूम होती थी, दूसरी प्राचीन और तीसरी कुछ अजीब तरह की थी। यह ठोस चाँदी की बनी थी और उसमें कुछ विचित्र आँकड़े लगे हुए थे।

मैंने पहिली चाभी से सन्दूक का ताला खोला, वह नहीं खुला तो उसमें थोड़ा तेल डाल कर बलपूर्वक चाभी घुमाई। वर्षों से जंग खा जाने के कारण वह आसानी से नहीं खुला। लिओ ने जोर लगाया और तब बक्स का ढक्कन उठा दिया। अन्दर एक काली लकड़ी का बक्स और निकला जिस पर गर्द की महीन पर्त जमी हुई थी। उसे मैंने बाहर निकाला और जौब ने उसे तुरन्त एक झाड़न से साफ कर दिया। यह बक्स निश्चय ही प्राचीन काल का था क्योंकि उसके जोड़-जोड़ ढीले पड़ गये थे और देखने में वह सैकड़ों साल का लगता भी था। दूसरी चाभी से मैंने उसे भी खोल डाला। जैसे ही उसका ढक्कन खुला लिओ के मुँह से एक हल्की चीख निकल पड़ी। अन्दर से चाँदी का एक सुन्दर तीसरा बक्स निकल आया। यह काफी भारी था और अत्यन्त सुन्दरतापूर्वक बना हुआ था। एक फुट चौड़ी, एक फुट लम्बी और करीब ८ इंच ऊँची यह सन्दूकची निश्चय ही अत्यन्त प्राचीन काल की थी क्योंकि इसके चारों पैरों की जगह चार स्फिक्स की मूर्तियाँ बनी हुई थीं (मिश्री देवी जिसका शरीर स्त्री का तथा मुँह शेर का था) और उसकी एक चोटी पर भी ऐसी ही सुन्दर खुदी हुई मूर्ति जड़ी थी। चाँदी काफी काली पड़ गई थी वैसे वह सन्दूकची अच्छी हालत में थी।

इसको उठा कर मैंने अलग एक मेज पर रख दिया और अब तीसरी वह चाँदी की ताली उसमें लगाई। कमरे में सभी साँस बाँधे खड़े थे। सभी की निगाहें मानो उस चाँदी की सन्दूकची पर जम गई थीं। मैंने चाबी लगाकर घुमाई और पलड़ा उछलकर खुल गया। अन्दर न जाने क्या कुछ भूरे रंग का बुरादा-सा लबालब भरा हुआ था। मैंने उसे धीरे-धीरे उँगलियों से हटाया। मेरी उँगलियों से जो चीज पहले लगा मैंने उसे बाहर निकाला। यह एक मुड़ा हुआ कागज था। लिओ ने सिर हिलाया मानो यह तो जानता ही था कि ए निकलेगा। जौब शून्य दृष्टि से देख रहा था।

मैंने पत्र उठाकर खोला, ऊपर लिखा था :

"मेरे पुत्र लिओ को, यदि वह कभी इसे खोले" मैंने पत्र लिओ की ओर बढ़ा दिया। उसने उसे देखा और बिना पढ़े ही मेज पर रख दिया और मुझसे इशारे में ही कहा कि और देखो।

मैंने फिर बुरादा सरकाया। एक पुराने जमाने का कागजनुमा लकड़ी के छिलके का कागज निकला जो गोल मुड़ा हुआ था। और देखा तो एक और वैसा ही निकला। मैंने वह दोनों निकाल कर पहिले पत्र के साथ मेज पर रख दिये।

लिओ बोला—"चाचा और देखो।"

मैंने अब बुरादा सूत दिया। उँगलियाँ कुछ कठोर वस्तु से जाकर लगीं। मैंने उसे निकाला। एक पीले जर्जर वस्त्र से लिपटा कुछ भारी सामान था। कपड़ा खोला तो पीले रंग के बुरादे में से एक पीले रंग का भद्दा मिट्टी का ढक्कन निकला जो करीब १० इंच लम्बा, सात इंच चौड़ा और चौथाई इंच मोटा था। उस पर ग्रीक भाषा में न जाने क्या अनाप-शनाप बहुत कुछ लिखा हुआ था।

"और....." लिओ ने उत्सुकता से पूछा। मैंने फिर खोज शुरू की। एक थैली में हाथी दाँत का बना बहुत ही खूबसूरत खुदा हुआ एक चित्र मिला जिसे देख कर लिओ प्रसन्न हो गया। इसके बाद एक गहरे कत्थई रंग का किसी विचित्र पत्थर का एक अच्छी तरह छँटा हुआ पत्थर मिला जो शायद कोई ताबीज था—इस पर एक ओर एक रीढ़ की हड्डी और दूसरी ओर एक बतक और उसके ऊपर एक गोला बना हुआ था। बनावट से वह सब प्राचीन मिश्री कला का उदाहरण प्रतीत होता था। मैंने उसे गौर से देखा। उस पर नीचे की ओर प्राचीन मिश्री लिपि में महीन अक्षरों से कुछ लिखा हुआ था। उस समय तो वह हमारी कुछ समझ में नहीं आया परन्तु बाद में मालूम हुआ कि जो लिखा था उसका अर्थ था—

'सुटेन सिरा' अर्थात् सूर्य का शाही बेटा।

हाथी दाँत की खुदी मूर्ति एक सुन्दर स्त्री की थी। उसके नीचे अँग्रेजी में विन्से के हाथों लिखा था—

'मेरी प्राण प्यारी पत्नी।'

लिओ ने अपनी माँ की तस्वीर थोड़ी देर देखी। फिर गहरी साँस लेकर उसने उसे भी मेज पर रख दिया। वह बोला :

"चाचा ! और ?"

"और कुछ नहीं।" मैंने कहा।

लिओ अब कुर्सी पर बैठ गया और बिना पल भर भी नष्ट किये उसने पहिला पत्र उठा लिया और उसे खोलकर पढ़ने लगा। यह उसके पिता विन्से का उसके नाम लिखा हुआ पत्र था। लिखा था :

"मेरे बेटे लिओ ! यदि कभी तुम बड़े होकर इस मेरे पत्र को पढ़ पाओगे तो निश्चय जानना मेरी आत्मा जहाँ भी हो वह संतुष्ट होगी। तब तक मैं तो लोगों की याद से भी खो जा चुकूँगा। मैंने तुम्हें कभी नहीं देखा—मुझे क्षमा करना परन्तु मेरे पुत्र तुम्हें पाकर मैंने अपनी प्यारी स्त्री खो दी थी। मैं उसे खोकर कभी जीना नहीं चाहता था परन्तु मजबूरी थी कि मर भी न गया। तुम्हारी माँ को मैं इतना अधिक चाहता था—इतना अधिक कि शायद कोई स्त्री इतनी अधिक चाही न गई हो। वह देवी थी। उसके बिना मैं जो जिंदा रहा तो यह भी मेरा उसके प्रति अन्याय ही था। मेरे जीवन में भी वंश परम्परा से कुछ ध्येय था परन्तु मैं उसे पूरा न कर सका। मुझे बीमारी ने धर दबाया। अब यदि मैं आत्महत्या न करूँ तो अधिक से अधिक एक वर्ष और जी सकूँगा जो मेरे ध्येय को पूरा करने के लिए काफी नहीं है। अतएव ऐसा जीवन, जीवन नहीं कहा जा सकता। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि यदि मैंने दुःख से छुटकारा पाने के लिये पाप किया है तो वह मुझे उसके लिये क्षमा कर दे·····"

"ठीक है," मैं बोल उठा, "मैं तो पहले ही समझता था कि उसने आत्म-हत्या की थी।" लिओ रुका नहीं, पढ़ता गया :

"हमारे वंश के बारे में हौली ने तुम्हें जरूर कुछ न कुछ न बताया होगा। इस बक्स के सामान उन सबको साबित करने के लिये काफी हैं जो बातें मैं अब कहूँगा। मुझे यह सामान मेरे पिता ने मरते समय दिया था। मैंने इस साथ के मिट्टी के ढक्कन पर लिखे अक्षरों को पढ़ा था, जिससे मुझे उस अनुसंधान के बारे में बहुत कुछ पता लगा जिसे पूरा करना हमारे वंश के लिये करीब दो हजार साल से जरूरी रहा आया है।

जब मैं केवल उन्नीस वर्ष का था मैं अपने उस पूर्वज की भाँति घर से निकल पड़ा जो रानी एलिजाबेथ के समय में भयंकर समुद्र की भीम लहरों को काटता हुआ आगे बढ़ा था। परन्तु वह मार्ग में ही मर गया था। मैं मरा नहीं, अफ्रीका के उस किनारे पहुँचा जहाँ अभी सभ्यता नहीं पहुँच पाई है। यह वह स्थान है जहाँ जम्बेसी नदी समुद्र में गिरती है। इस स्थान से दक्षिण की ओर करीब १५० मील की दूरी पर एक ऊँचे से द्वीप के अन्दर एक गगनचुम्बी पर्वत है जिसकी चोटी एक नीग्रो अथवा ईथिओपिअन (यूथोपिआ का रहने वाला) के सिर की तरह दिखाई देती है। यहाँ मैंने एक जंगली से सुना था कि उस द्वीप में कोई खास जंगली जाति निवास करती है जहाँ के लोग अरबी भाषा बोलते हैं। उसी की जुबानी यह भी मालूम हुआ था कि वह ऊँचा पहाड़ अन्दर से पोला है और उस देश में भयानक दलदल ही दलदल है। सब से विचित्र बात जो उसने बताई थी वह यह कि उस देश में, उस पोले पहाड़ में जहाँ कब्र ही कब्र थी, कोई रानी रहती है जो अपनी सुन्दरता में अपना सानी नहीं रखती और जो अजर और अमर है। उसने यह भी कहा था कि उसकी शक्ति अपार है और वह जो चाहती है वही कर सकती है। मैंने उस जंगली से पूछा कि वह अकेला क्यों घूम रहा था तो उसने बताया कि किसी जुर्म के कारण उसके लोगों ने उसे अपने बीच से निकाल दिया था। मुझे आश्चर्य हुआ क्योंकि जो बातें इस दफ्तर पर तथा इन पत्रों में लिखी हैं हूबहू वही बातें मुझे वहाँ जा कर मिलीं।

दो दिन बाद वह आदमी मर गया और इससे अधिक मुझे कुछ पता नहीं लग सका। फिर मुझे भी बुखार ने धर दबाया और मेरा खाने का सामान भी खत्म हो गया क्योंकि जब मैं आया था मार्ग में मेरा जहाज डूब गया था। मुझे मजबूरन लौटना पड़ा। मार्ग में भीषण कठिनाइयों का सामना मुझे करना पड़ा। एक जगह जंगली लोगों ने मुझे बंदी बना लिया। बड़ी मुश्किलों से मैं उनसे छूटा और फिर मैडागास्कर होता हुआ यहाँ ग्रीस आया और फिर एथेंस, यहीं मेरी स्त्री मुझे मिली जिसने मेरे जीवन में आकर मेरे दुखों और कष्टों का अंत कर दिया। परन्तु जब मुझे छोड़ गई तो मुझे एक बार फिर अनुसंधान के लिये तैयार होना पड़ा, मैं अरबी नहीं जानता था क्योंकि उसके बिना मैं उस देश में

भला जाकर समझता भी क्या। मैं कैंब्रिज आकर अरबी सीखने लगा परन्तु मेरी आयु पूरी हो चुकी थी।

अब यह सब चीजें मैं तुम्हें देता हूँ क्योंकि कैलीक्रेटीस के अकेले वंशज अब तुम्हीं हो।

मैं इस प्राचीन मिट्टी के पात्र पर लिखी बातों को झूठ नहीं समझता क्योंकि उस नीग्रो के सिर जैसी लगने वाली पहाड़ी को मैंने भी दूर से देखा है। यदि तुम्हें इस बात का विश्वास न हो और तुम इसे कोई कल्पना समझने लगो तो तुम्हें अधिकार है कि इस सब सामान को नष्ट कर दो। मैं एक बात मानता हूँ, यदि जीवन है तो जरूर ऐसी भी कोई विधि होगी कि इसे लंबा किया जा सके या यौवन को स्थिर किया जा सके। दो हजार वर्ष की स्त्री यदि है तो निश्चय ही कोई अपार शक्ति उसके पीछे है।

मैं अब यह पत्र समाप्त करता हूँ। परन्तु अंत में एक बात कहना आवश्यक है। तुम यदि वहाँ जाना चाहो तो अरबी भाषा का अच्छा ज्ञान हासिल कर लेना अन्यथा वहाँ जाना निरर्थक ही होगा।

तुम्हारा अभागा पिता
विन्से"

लिओ ने आश्चर्य से मेरी ओर देखा और मैं मुस्कुराने लगा। वह बोला :

"चाचा ! यह तो विचित्र बात लिखी है क्या ख्याल है तुम्हारा ?"

"ख्याल ?" मैं हँसा, "ख्याल तो साफ है। तुम्हारा पिता मेरा मित्र था। बेचारा बीमारी के कारण दुखी हो गया था और आखिर में उसका दिमाग भी कुछ फिर गया था। उस पागलपन में उसने यह लिख दिया हो तो इसमें आश्चर्य ही क्या है ?"

"परन्तु यह कैलीक्रेटीस जिसका मैं वंशज हूँ, यह क्या बला है," लिओ ने मानो कुछ सोचकर पूछा।

"और पढ़ो," मैंने उसे इशारा किया।

लिओ ने दूसरा पत्र खोला जो एक बहुत ही पुरानी लकड़ी की पत्ती की तरह किसी वस्तु पर पुरानी ग्रीक भाषा में लिखा हुआ था। साथ ही उसका एक अनुवाद भी था। लिओ ने उसे पढ़ा :

"मैं एमिनार्टस, मिश्री फराओ महान् के राज वंश की कन्या परम शक्तिशालिनी देवी आईसिस के सुन्दर और शक्तिशाली पुजारी कैलीक्रेटीस की स्त्री इस असमय में मरते समय अपने एक मात्र पुत्र टाईसिसथिनिस (भारी बदला लेने वाला) को लिखती हूँ। फराओ नैक्टानिब्रस के काल में मैं तुम्हारे पिता के साथ मिश्र से भागी। मेरे ही कारण कैलीक्रेटीस ने आईसिस के प्रति अपना वचन तोडा था। वह मुझे बहुत प्यार करता था। हम समुद्री मार्ग से दक्षिण की ओर भागे। पूरे दो वर्ष तक अनन्त समुद्री की छाती पर हम यहाँ-वहाँ निरुद्देश्य भटकते रहे। लिबिया के पास हमारा जहाज टूट गया और हम एक विचित्र स्थान में पहुँचे जहाँ चारों ओर दलदल ही दलदल दिखाई देती थी। यहाँ से करीब १५० मील की दूरी पर एक विचित्र पर्वत है जिसकी चोटी दूर से किसी इथिओपियन के सिर जैसी लगती है। हम भटकते-भटकते वहाँ उस देश में पहुँचे जहाँ के लोग अरबी भाषा बोलते थे। हमें जंगलियों ने घेर लिया था और वह हमें मार कर खाना चाहते थे। उनकी मनुष्य को मारने की भी विचित्र विधि थी। वह एक बहुत बडा गर्म पात्र मनुष्य के सिर पर रख कर उसे मार डालते थे और बाद में उसे खा जाते थे। हम दोनों ने आलिङ्गन किया क्योंकि मृत्यु निश्चय थी। परन्तु उसी समय एक वृद्ध ने आकर कहा कि उनकी रानी की आज्ञानुसार हम मारे न जायँ बल्कि उसके सामने ले जाये जायँ। दस दिन तक हमें डोलियों में सफर करना पडा। मार्ग में इतनी दलदल और इतनी कीचड़ थी कि अनजाना आदमी उसे कभी पार नहीं कर सकता था। पर वे लोग मार्ग से पूर्ण परिचित थे। आखिर हम लोग रानी के सामने पहुँचे जिसने हमें बहुत प्रेम से अपनाया। वह अत्यंत सुन्दरी थी। उसका यौवन मानो शराब का लबालब प्याला था, जो हरदम छलछलाता रहता था। वह एक विचित्र स्थान में रहती थी जहाँ हजारों साल पहले के कौअर सभ्यता के खंडहर ही खंडहर चारों ओर दूर-दूर तक फैले हुए थे। वह इथिओपियन के सिर की तरह की चोटी का पहाड़ अंदर से पूरा पोला था और इसमें अनगिनती गुफाएँ थीं, जिनमें प्रायः सभी में कौअर लोगों की ममी (लाशें) रखी थीं। रानी उसी पहाड़ में रहती थी। उसकी शक्ति उसके सौन्दर्य जैसी ही थी क्योंकि जो वह चाहती थी मानो इच्छा मात्र से ही हो जाता था। उसके पास कोई विचित्र पानी का पात्र था जिसमें वह हजारों

मील का दृश्य केवल झाँक कर देख लिया करती थी। उसी पात्र में उसने हमें देखा था और उसी की आज्ञा से हम उन जंगलियों के हाथों से बच पाये थे।

कुछ दिनों तक तो वह भली बनी रही परन्तु बाद में उसकी कुदृष्टि मेरे सुन्दर पति पर जा लगी और उसने उसे अपनाना चाहा। परन्तु कैलीक्रेटीस जो मुझे अत्यधिक प्यार करता था उसे न अपना सका। वह उससे केवल डरता था। एक दिन वह हमें अँधेरे-पेचीले रास्तों से एक और पहाड़ के अंदर गहरी और भयानक गुफाओं के भीतर ले गई। वहाँ पृथ्वी के उस अतल गर्भ में भयानक आँधियों के बीच जीवन-ज्योति का स्तंभ विद्युत के समान गरज-गरज कर अंदर ही अंदर घूमता था जिसकी नीली-पीली लपटें बाहर तक फैल जाती थीं। वहीं वह स्त्री उस लपट में नहाई और जब वह निकली तो स्वर्ण के समान उसका शरीर दमदमाने लगा। उसने कैलीक्रेटीस को भी अमर बनाने का प्रण किया और उसे वरना चाहा पर जब वह फिर न माना और उसने उसकी रूप-ज्वाला के सामने अपने नेत्र हाथों से मूँद लिये तो क्रुद्ध होकर उसने मेरे पति की बगल में भाला घुसेड़ दिया। वह तुरन्त मर गया। वह मुझे न मार सकी क्योंकि मरे लोगों के जादू से वह भी घबराती थी। मैं बहुत रोई और साथ ही वह भी। तत्पश्चात् उसने मुझे नदी तीर पर समुद्र के पास छोड़वा दिया। जहाँ से बड़ी मुश्किलों से मैं यहाँ एथेंस आई। यहीं कुछ समय बाद मैंने तुम्हें जन्म दिया। अब मैं मर रही हूँ और तुम मेरे पुत्र वहीं जाकर अपने पिता की मृत्यु का बदला लेना। उस जीवन-ज्योति की लपट में नहा कर अमर-अजर बनना और तब सारे संसार पर राज्य करना। फराओ बन कर पृथ्वी पर हमेशा-हमेशा के लिये राज्य करो और हो सके तो उस स्त्री को मार दो···यही मेरी कामना है। यदि तुम ऐसा न कर सको तो मेरे इस वंश में कोई भी कभी भी यदि इस कार्य को करेगा तो वह उस स्थाई आनन्द का अनुभव करेगा जो अभी तक मनुष्यों के लिये दुर्लभ है।"

"हे भगवान ! इस स्त्री को क्षमा कर" जौब यह सब सुन कर बड़बड़ाया। उसे यह सब बातें बेकार और धर्म के विरुद्ध मालूम हो रही थीं।

मैं चुप रहा क्योंकि मैं अभी तक किसी नतीजे पर नहीं पहुँचा था। यह सारा किस्सा झूठा है और मेरे मित्र विन्से ने गढ़ कर लिखा है, यह बात भी

मन नहीं मानता था क्योंकि भला इतनी सब बातें वह कहाँ से बनाता। ठीक है यह भी समझ में नहीं आ रहा था। अपनी बेचैनी मिटाने को मैं उस मिट्टी के ढकने को उठा कर देखने लगा जिस पर सुन्दर शब्दों में मिश्री भाषा लिखी हुई थी। एक जगह लिखा था :

"इस संसार और आकाश में एक से एक विचित्र बातें होती हैं," मैंने उसे पलट कर देखा। नीचे की ओर ग्रीक, लैटिन, पुरानी अंग्रेजी तथा अबकी प्रचलित भाषाओं में भी यही लिखा था तथा विभिन्न प्रकार के हस्ताक्षर थे। निश्चय ही यह लिओ के पूर्वजों के हस्ताक्षर थे। मैंने गौर से देखा तो पता लगा कि पीढ़ी दर पीढ़ी के लोगों ने उस पर हल्के अक्षरों से जो कोई नीले थे तो कोई लाल, अपनी-अपनी राय लिखी थी। सभी ने प्रायः एक ही बात लिखी थी कि वह उस बात में पूर्ण विश्वास करते थे। कई उस विचित्र खोज में अपनी जान भी गवाँ बैठे थे। मैं एक विचित्र प्रकार के आश्चर्य और भय से भर उठा।

तीसरे पत्र में लिखा था :

"अमर और अजर जीवन प्राप्त करना कितना अच्छा होता है। काश मैं उसे प्राप्त कर सकता पर अब तो जहाज ही डूबा जा रहा है।"

इसी के नीचे लिखा था :

"सैक्स ओक्टेसिल्विस का जहाज अफ्रीका के समुद्र में डूब गया। यह पत्र मुझे उस जहाज के एक मात्र बच कर आये हुए मल्लाह ने दिया।"

नीचे हस्ताक्षर एल० एटिवूसविंडेक्स के थे जो शायद डूबने वाले का पुत्र था।

हम सभी थोड़ी देर सोचते हुए चुप बैठे थे। मैं प्रत्यक्ष देख रहा था कि लिओ पर इन सब का गहरा प्रभाव पड़ा था। थोड़ी देर बाद उसने मेरी देखा और फिर वह बोला :

"तो ?"

"तो यह कि यह सब व्यर्थ है, तुम्हारे पिता ने न जाने क्या-क्या बे मतलब अनहोनी बातें लिख दी हैं।" परन्तु न जाने क्यों हृदय में मैं भी उनको झूठ नहीं समझ रहा था।

"फिर वह पुराना लेख ?" लिओ ने हैरत से पूछा। मैं थोड़ी देर आँखें मूँदे चुप रहा। फिर बोला :

"वह ढक्कन पुराना है उसके लेख भी असली हैं इसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं है। वह पत्र निश्चय ही एमिनार्टस का लिखा हुआ अथवा लिखाया हुआ है यह भी सच है। परन्तु इसके आगे बात की सचाई का जहाँ तक प्रश्न है वहीं मुझे विश्वास नहीं होता। मेरे ख्याल से कैलीक्रेटीस की मृत्यु से उसकी स्त्री को बहुत धक्का लगा था और उसका दिमाग दुरुस्त नहीं था।"

"फिर जो मेरे पिता ने स्वयं उस इथिओपियन की खोपड़ी जैसी पहाड़ी देखी थी और उस जंगली आदमी से बातें की थीं सो ?" लिओ ने जिज्ञासा प्रकट की।

"वह कुछ नहीं" मैंने कहा "तुम्हारे पिता को मैं जानता था। वह जरूरत से ज्यादा सोचने वाले आदमियों में था। मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि आखिरी समय में उसकी बुद्धि भ्रमित हो गई थी। उसी हालत में उसने यह सब लिख दिया हो तो क्या आश्चर्य। फिर यदि वह गया भी था और वह विचित्र पहाड़ उसने देखा भी था तो यह भी कोई अनोखी बात नहीं है। हो सकता है कोई वैसा स्थान हो। पर अजर और अमर उस खूबसूरत जादूगरनी का विश्वास करना यह व्यर्थ बात है। भला ऐसा कभी हो सकता है कि जीवन हमेशा बना रहे !" और मैं हँस पड़ा।

लिओ चुप रहा। मैंने जौब की ओर देखा। वह बोला : "सब गलत बात है। यह सब झूठ है। जो भी हो लिओ को ऐसी जगह कभी नहीं जाना जाहिये जहाँ खतरे पर खतरे हों।"

लिओ अब भी चुप रहा। थोड़ी देर बाद बोला : "मेरे ख्याल से इस मामले को अब यहीं छोड़ दें। आप लोग दोनों न जायँ पर मैं अब न सही तो फिर कभी जाऊँगा जरूर; चाहे अकेला ही क्यों न जाना पड़े।"

और मैंने देखा कि उसका मुँह एक खास तरह से मुड़ गया, मैं जानता था कि इस तरह मुँह दबा कर जब वह बात करता था तो निश्चित रूप से बात मन में पक्की करके ही कहता था। अब मुझे एक प्रकार का भय हुआ। यह जो मेरे लिये पुत्र से भी अधिक था क्या उस भयानक स्थान में मुझे यहाँ अकेला जीने के लिये

छोड़ कर चला जायगा ? नहीं, नहीं मैं उसे अकेले नहीं जाने दूँगा। मेरे लिये जिसे संसार में कभी किसी ने प्यार नहीं किया, एक वही तो सहारा था। मैं यही सोच रहा था कि वह एकाएक बोल उठा :

"और चाचा ! यदि यह सब झूठ भी है तो भी हमें वहाँ उस जंगल में शिकार तो बहुत मिलेंगे।"

क्या बात कही थी मेरे पुत्र ने वाह ! इसके लिये तो मैं दुनिया के दूसरे छोर पर जाने को तैयार था। मैंने उसकी ओर प्रशंसा की दृष्टि से देखा और वह मेरा प्यारा बेटा मुझसे लिपट गया। मैंने कहा :

"कालेज से मैं छुट्टी ले लूँगा और हम सब चलेंगे।"

"कौन सब ?" लिओ ने पूछा, "जौब भी ?"

"क्यों जौब ?" मैंने उससे पूछा।

"हाँ आप लोग दोनों जायेंगे तो मैं ही यहाँ अकेले क्या करूँगा। फिर वहाँ आप का काम कौन करेगा," वह बोला।

शैतान लिओ ने लपक कर उसे छपटा लिया और चूम लिया। वह झेंप गया और हम दोनों हँसने लगे।

× × × ×

४

तीन महीने बाद हम लोग पाल का जहाज ताने अफ्रीका के समुद्र में तैर रहे थे। चारों ओर विस्तृत समुद्र फैला हुआ था जिसका न कोई ओर था न कोई छोर। शीतल पवन चल रहा था और विशाल पाल को ताने हमारे जहाज को आगे बढ़ाये ले जा रहा था। उस समय समुद्र की भी लहरें शांत थीं और पानी जहाज से टकरा कर मधुर शब्द उत्पन्न करता हुआ एक विचित्र पर सुमधुर वातावरण बना रहा था। यहाँ वह कैंब्रिज का सुखद कमरा, वह सजी हुई किताबों की आल्मारियाँ, वह इंगलैण्ड का दृश्य नहीं था। बस दूर-दूर तक चाँदनी में चमचमाती हुई समुद्र की छाती अनन्त तक दृष्टि को ले जाती थी। सब कुछ शांत

था। केवल मल्लाहों के डाँड़ चलाने की आवाज, पानी कटने का छपाक-छपाक शब्द उस शांत वातावरण को तोड़ रहा था।

आधी रात का गहरा सन्नाटा छाया हुआ था। प्रायः सभी सो रहे थे। मल्लाह भी उनींदे हो रहे थे। केवल एक आदमी जो सुगठित शरीर का था जहाज की अग्र भाग में बने सिंहमुख को पकड़े खड़ा था। वह कभी गम्भीर आवाज में दोनों हाथ उठाकर पुकारता "सिं·····बा!" (अर्थात् शेर) वह अरब देश का रहने वाला था और उसके शरीर से सदा बदबू आती रहती थी। उसकी उस समय की सिंबा की तेज आवाज हमारे हृदयों को मानो पार कर जाती थी। कितना भयानक लगता था वह सब! हम सब उठ बैठे। जौब, मैं और मेरा लिओ। मैंने कहा :

"अगर कप्तान का हिसाब ठीक-ठाक है तो कल सुबह १० बजे तक हम उस हब्शी की खोपड़ी वाले पहाड़ को देखने लग जायँगे।"

"और उस महानगर के ध्वंसावशेषों को देखते हुए उस अमर ज्योति तक पहुँच जायँगे," लिओ फौरन बोल उठा।

"फिजूल बात," मैंने डाँटा, "अभी तुम उस अरब से क्या बातें कर रहे थे। उस बेकार जुबान में तुमने मुहम्मद से क्या कहा था? (उस अरब का नाम मुहम्मद था) क्या उसने कुछ बताया?"

"वह तो मूर्ख है। कुछ नहीं जानता। पर यह जरूर कहता है कि वह देश दलदल से भरा पड़ा है। यह तो पूरा क्षेत्र ही दलदल और मलेरिया से भरा पड़ा है।"

"सो तो है," मैंने कहा, "जानते हो ये सब लोग हमारे बारे में क्या सोचते हैं? ये समझते हैं हम पागल हैं, और वाकई है भी यही बात। मुझे तो निश्चय ही आश्चर्य होगा यदि हम फिर कभी इंगलैण्ड वापस पहुँच गए।"

"अरे वह क्या है दूर·····दूर·····वह काला-काला," लिओ ने इशारा किया।

हम सब देखने लगे। दूर कई मील दूर काला-काला बड़ा-सा ढेर दिखाई दे रहा था।

"मुहम्मद से पूछो," मैंने कहा।

लिओ उठा और उसने जँभाई ली फिर वह लम्बे डग भरता हुआ चला गया। जब वह लौटा तो बोला :

"वह कहता है कि यह कोई खास समुद्री तेज हवा है जो काफी खतरनाक होती है पर वह यह भी कहता है कि वह यहाँ नहीं आवेगी, दूर निकल जायगी।"

"वाह रे अफ्रीका," मैंने आश्चर्य से कहा—"तेरी हवा का भी रंग होता है।"

जौब अब तक चुप था। अब एकाएक बोला :

"शाब बड़ी खराब जगह है यह·····यह झूठ है कि हवा आ रही है। यह तो कोई पहाड़ है पहाड़।" फिर न जाने क्या सोच कर बोल उठा :

"इन लोगों के बीच में तो जीना भी दूभर हो गया है शाब। ये लोग तो बड़े घृणित हैं बदबूदार·····और हम उस पीछे बँधी नाव में चलकर क्यों न सोयें। वह हमारे सारे सामानों से और हमारी बन्दूकों से भरी है। कहीं इनमें से किसी ने रस्सा काट दिया तो बस फिर तो हम मर गए·····मेरे विचार से हम वहीं चलें।"

उसकी बात हमको भी जँच गई और हम उठ कर नाव में जा लेटे। यह नाव हमने खास तौर से डेंडी में बनवाई थी। तीस फीट लम्बी, बीच में काफी चौड़ी और नीचे से इस पर ताँबे की चद्दर चढ़ी हुई थी। इसमें दो कमरे थे जो खूबसूरती से हवाबन्द बने थे। इसका एक छोर ऊपर उठा हुआ हंस की शक्ल की तरह था। उसी सुबह जब कप्तान ने हमसे कहा था कि जहाज समुद्र तीर पर उथले पानी के कारण वहाँ नहीं जा सकेगा जहाँ हम जाने वाले थे तो हमने अपना सारा सामान व बन्दूकें इत्यादि अपनी इसी नाव पर लाद दिया था। यह नाव एक रस्से से जहाज के पीछे की ओर बँधी खिंच रही थी। जो ताबीजनुमा पत्थर विन्से के बक्स में मिला था उसमें भी यही लिखा था कि उस स्थान में पानी बहुत उथला है।

इसके बाद हम तीनों सो गए, एकाएक नाव में बड़े जोर से झटका लगा और हम सब एक दूसरे के ऊपर लुढ़क गए, हड़बड़ा कर बैठे और उसी समय तीर की भाँति ठंडा जल हमारे मुँह पर लगा। जहाज में भयानक शोर हो रहा

था। चारों ओर मानों प्रलय मचा हुआ था। भयंकर वेग से आँधी व तूफान छा रहे थे, समुद्र की भीम तरंगें ऊपर उठ रही थीं जिनके थपेड़े से जहाज और नाव बुरी तरह हिल रहे थे। मैंने देखा और वह विकट परिस्थिति पलक मारते मेरी समझ में आ गई। लिओ और जौब भय विस्फारित नेत्रों से पत्थर की भाँति खड़े थे। चारों ओर भयानक रोर फैल रही थी और अँधेरा इतना हो गया था कि हाथ को हाथ दिखाई नहीं दे रहा था। मैंने लपक कर मजबूती से रस्सा पकड़ लिया और भीम वेग से उसे खींचने लगा पर परन्तु उस हवा के सामने मेरी एक न चली, मैं चिल्लाया :

"पाल गिराओ·····पाल·····गिरा·····ओ," पर मेरी आवाज उस प्रकृति के क्रूर अट्टहास में अकिंचन की भाँति खो गई। मैंने आँखें फाड़-फाड़ कर देखा कि मुहम्मद अपने बलिष्ठ भुजाओं से पाल नीचे खींच रहा था परन्तु सफल नहीं हो रहा था। तूफान का वेग इतना था कि पालों में हवा मानों जम कर बैठ गई थी, और बीस फीट के करीब एक लहर उठी जिसका ऊपरी हिस्सा सफेद था। वह ऐसी लगती थी मानो मृत्यु दाँत निकाल कर हमें चबा जाने को चली आ रही हो। छपाक की आवाज हुई और पानी हमारे ऊपर हो कर निकल गया। हम बुरी तरह भींग गए। नाव में पानी भर गया। मैंने मुड़ कर देखा लिओ नाव में नहीं था। हाय! वह कहाँ गया? मेरा दिल बैठने लगा। पास ही एक काली छाया दिखी। यह मुहम्मद था जो न जाने कैसे यहाँ आ गया था। मैं चिल्लाया :

"मेरा लिओ कहाँ है·····?"

किसी ने उत्तर नहीं दिया। मैं पल भर को उस सारे तूफान को भूल गया। हाय! मेरा पुत्र डूब गया और मुझे रोने के लिये छोड़ गया और मुझे जीने की तनिक भी लालसा नहीं रही। "हाय लिओ, हाय मेरे प्यारे बेटे!" मैं फिर चिल्लाया, पर सब बेकार।

उसी समय भयानक चीख सुनाई दी; जहाज डूब रहा था। वह पानी से भर गया था, उसके पाल फट गए थे। मुहम्मद ने बिजली की फुर्ती से चाकू निकला और नाव का रस्सा काट दिया। एक और तूफान आया और हमारे ऊपर से निकल गया। उसी समय चन्द्रमा बादलों की ओट से बाहर क्षण भर को

आया और मैंने देखा सामने जहाज नहीं था। "डूब गया···" जौब चिल्लाया : "डूब गया हाय !"

"मेरा लिओ·····लिओ !" मैं अब खड़ा नहीं रह सका। चाँद फिर छिप गया था। मैंने अपने जीवन को अब बचाने का कोई प्रयत्न नहीं किया। क्या होगा जीकर जब मेरा लिओ ही डूब गया। बिजली-सी कौंधी और एक पहली लहर से बड़ी लहर पीछे से ऊपर उठी और हमारी ओर आई, उससे भी तीव्र गति से मैंने बैठे-बैठे सोचा—'कहाँ है वह हब्शी के सिर वाला पहाड़; कहाँ है वह कैलीक्रेटीस को मारने वाली जादूगरनी, वह शाश्वत जीवन प्रदान करने वाली आग की लपटें ! क्या लिओ भी अपने पूर्वजों की तरह यों ही मर गया' और तभी भर्रा कर पानी आया, जौब चिल्लाया। नाव एक दम उछल कर बहुत आगे जा गिरी और एक भारी बोझा हमारे बीच आकर गिरा, जौब चीखा। वह उसकी कमर पर आ गिरा था। मैं बेहोश हो गया। उसके बाद मुझे कुछ नहीं मालूम हुआ।

जब मेरी आँखें खुली तो मैंने देखा समुद्र शांत था। स्वच्छ चाँदनी छा रही थी, जौब और मुहम्मद नाव खे रहे थे। मैंने निगाह घुमाकर देखा। पास ही लिओ सोया हुआ था। मैं झटके से उठा। मेरी भीम शक्ति मुझे फिर वापस मिल गई थी। मैंने देखा वह बेहोश था और बुरी तरह भींग गया था। मैं उससे लिपट गया। मेरा बेटा मुझे न जाने कैसे फिर मिल गया था। जिंदा या मुर्दा समुद्र ने एक बार उसे मुझसे लेकर फिर वापस दे दिया था। मैंने उसके हृदय की गति कान लगाकर सुनी फिर साँस देखीं। वह सो रहा था। उसी समय जौब बोला :

"शाब ! मुझे मेरी कमर टूट जाने का दुख नहीं है। लहरें लिओ को हमें वापस दे गईं हमारे लिये यह सौभाग्य है·····"

"नहीं ! यह हमारे लिये जीवन है," मैंने कहा, "इसके बिना मैं क्या करता भला जी कर ?"

नाव का सारा पानी जौब ने उलीच दिया था और वह अकेली नाव उस अनंत समुद्र में शांत भाव से थिरकती चली जा रही थी। एक बार फिर सब कुछ निस्तब्ध था। केवल डाँड़ चलाने का शब्द उस नीरवता को तोड़ रहा था। न

जाने क्यों मुझे वह दृश्य अच्छा नहीं लग रहा था। कदाचित् इसलिये कि वह बहुत ही अच्छा था। एकाएक मुझे याद आया कि हमारा जहाज इतने सारे प्राणियों को लेकर समुद्र के गर्भ के अन्दर डूब गया है और मैं एक अज्ञात भय से सिहर उठा। लिओ अब भी मेरी बगल में पड़ा था। वह बेहोश था। जौब और गम्भीर स्वर से 'सिंबा' चिल्लाने वाला मुहम्मद नाव खे रहे थे। न जाने मेरी कब आँखें लग गईं।

जब मेरी आँखें खुलीं उस समय प्राची से सिंदूरा फूट रहा था। पृथ्वी के अन्य भागों से सूर्योदय यहाँ के दृश्य से विभिन्न होता है। वहाँ किसी न किसी वस्तु के पीछे से वह उगता हुआ दिखता है और यहाँ दूर सुदूर अन्तरिक्ष की सीमा से उदित होता हुआ वह समुद्र में लम्बी लकीर-सी खींचता हुआ विराट प्रतीत होता है। मैंने देखा दृश्य कितना सुहावना था। मन्द-मन्द बयार समुद्र की सतह पर छोटी-छोटी लहरें बनाती हुई बह रही थीं। ऊषा की लालिमा से सारा समुद्र लाल आभा से चमक रहा था और फिर थोड़ी ही देर बाद सूर्य निकल आया। मैंने समुद्र के जल से मुँह धोया और उस फैलते हुए प्रकाश में जहाँ तक मेरी निगाहें जाती थीं वहाँ तक निगाह घुमा-घुमाकर देखा।

सूर्य का प्रकाश अब कुछ गर्मी भी देने लगा था। हम जो भींग गए थे उससे प्रकृतिस्थ होने लगे। मेरे शरीर में मानो नवजीवन का अंकुर फूटा हो। मैंने स्नेह से लिओ की ओर देखा पर वह अब भी सो रहा था।

नाव चली जा रही थी। थोड़ी ही देर बाद एक स्थान पर जब नाव मुड़ी तो मेरी आँखों के सामने दूर एक पहाड़ खड़ा दिखाई देने लगा। मैंने धुँधली दृष्टि से उसकी ओर देखा परन्तु जो कुछ देखा उससे मेरे कान खड़े हो गए और मैंने गौर से देखा। ऊँचे पहाड़ पर कोई ८० फीट के करीब उसकी मोटी चोटी करीब १५० फीट के घेरेदार हिस्से पर टिकी रखी थी। सूर्य के तीव्र और स्वच्छ प्रकाश में मैंने देखा कि वह चोटी किसी नीग्रो के सिर जैसी प्रतीत होती थी जिसकी मुखमुद्रा कठोर और हिंसात्मक लगती थी। मैं रोमांचित हो उठा। निश्चय ही वह वही पहाड़ था जिसका जिक्र उस ढक्कन में किया गया था। मोटे-मोटे होंठ, मोटे पर चपटे गाल, बैठी हुई चौड़ी नाक—यह सब साफ-साफ उसे वही वीभत्स रूप दे रहे थे। अब तक की सारी बातें सच निकली थीं।

तो क्या वहाँ दो हजार साल की जादूगरनी रहती है। मैं भय से सिहर उठा। परन्तु फिर मुझे अपनी कमजोरी पर हँसी आ गई। यह सब तो प्राकृतिक दृश्य हैं। इनमें आश्चर्य ही क्या है। उस पहाड़ का ऊपरी गोल हिस्सा छिला हुआ था और ऊपर की ओर जंगली बड़े-बड़े झाड़ खड़े थे जो यहाँ से ऐसे मालूम होते थे जैसे उसके बाल हों। परन्तु था वह अजीब। हजारों सालों से वह वहाँ उसी प्रकार देख रहा था। मैंने सोचा कि जब मिश्री राजकुमारी एमिनार्टस अपने पति कैलीक्रेटीस को लेकर आई थी तब भी ऐसा ही था और आज भी वैसा ही है और न जाने कब तक ऐसा ही खड़ा रहेगा। संसार की सभ्यता भी जब खत्म हो जायगी तब भी शायद यह नीग्रो इसी प्रकार अनन्त समय तक देखता रहेगा। शायद हजारों साल पहिले मनुष्य के हाथ ने ही इसे ऐसा बनाया था कि दूर से शत्रु उसे देख कर थर्रा उठें और उस देश पर आक्रमण करने की तो क्या पदार्पण करने में भी हिचकिचायें। कमाल की थी वह सभ्यता जो इतना विशाल हब्शी का सिर बना गए। निश्चय यह उनसे भी महान् थे जिन्होंने पहाड़ तराश कर थिब्रिस (मिश्र) में स्फिक्स बनाई।

मैंने जौब की ओर देखा। वह पतवार रखकर सूर्य की किरणों को मुँह खोल-कर मानो खा रहा था। उस पहाड़ की ओर इशारा करते हुए मैंने उससे कहा :

"वह देखो।"

उसने देखा और एक हल्की चीख उसके मुँह से निकल गई। वह बोला :

"शाब, यह विशाल पुरुष तो मेरे विचार से तस्वीर खिंचाने पहाड़ पर जा बैठा है।"

उसकी मूर्खतापूर्ण बात पर मुझे हँसी आ गई। मैं जोर से हँस पड़ा और उसे सुन कर लिओ जो अभी तक पड़ा था हड़बड़ाकर उठ बैठा और बोला :

"अरे यह क्या ? मेरा सारा शरीर कड़ा क्यों पड़ रहा है और वह जहाज कहाँ है ? मुझे थोड़ी ब्रांडी दो।"

"जहाज डूब गया," मैंने उत्तर दिया—"उस पर के तमाम आदमी भी डूब गये। एक बार तुम भी हमसे बिछुड़ कर डूब गये थे। परमात्मा को अनेका-नेक धन्यवाद हैं कि तुम्हें उसने अजीब तरह से बचा लिया।" और तब मैंने उसे रात्रि की सारी वार्ता सुनाई। इतने में जौब ने उसे ब्रांडी दी जिसे पीकर उसने

कुछ गर्मी का अनुभव किया और वह प्रकृतिस्थ हुआ। मेरी बातें सुनकर उसे बहुत आश्चर्य हुआ और वह बोला :

"वाह रे विधाता ! क्या हम ही चारों बचे रहने के लिए रचे गए थे ! बेचारे हमारे साथी !" परन्तु जौब के चेहरे से यह साफ दिख रहा था कि उन लोगों के मर जाने का उसे कोई दुख नहीं था। अब हम सभी ने ब्राण्डी पीकर अपने शरीर गर्माये। सूर्य की किरणों से तथा ब्राण्डी से एक बार फिर हम स्वस्थ और फुर्तीले बन गए।

एकाएक लिओ की दृष्टि उस हब्सी की खोपड़ी को देख कर चमक उठी वह एकदम बोला :

"अरे वह है तो सामने वही खोपड़ी वाला पहाड़ जिसके बारे में उस पात्र पर....."

"हाँ वह है," मैं बीच ही में बोल उठा। वह उसे ध्यान से देखता रहा। तत्पश्चात वह सिर हिला कर बोला :

"तब तो बाकी सभी बातें सत्य होनी चाहिये।" मैंने सुना और नकारात्मक सिर हिला कर कहा :

"इस सिर के होने से बाकी बातें सिद्ध नहीं होतीं, इसे तो तुम्हारे पिता ने भी देखा था जिसके बारे में उसने लिखा है और हो सकता है यह वह न हो कोई दूसरा हो। और अगर वही हो तो भी बाकी अनर्गल बातें भला इससे कैसे मान ली जा सकती हैं ?"

लिओ मुझे देख कर ऐसे मुस्कुराया जैसे वह मेरा उपहास कर रहा हो। वह बोला :

"चाचा होरेस ! तुम तो यहूदियों की भाँति हो जो कभी किसी नई बात का विश्वास नही करते, क्यों जौब ?" और उसने उसकी ओर आँख मारी। पर जौब न जाने उस समय क्या सोच रहा था। वह एकदम बोला :

"यहाँ जाने क्या खाने को मिलेगा और स्थान कहाँ हैं जो मैं पकाऊँ।"

हम फिर हँस पड़े। वह झेंप गया। लिओ फिर बोला :

"चाचा जो जियेगा सो देखेगा।"

"बिल्कुल," मैंने कहा और फिर मैं बोला :

"जौब डाँड़ तो खींच लाओ क्योंकि देखो अब हम किसी नदी के मुहाने पर आ लगे हैं। हम यहीं अंदर मुड़ेंगे और देखें यदि कोई स्थान उतरने को मिल जाय।"

नदी का मुहाना चौड़ा नहीं था। यहाँ जहाँ वह आकर डेल्टा बनाती हुई समुद्र से मिल रही थी वह अधिक तेज भी नहीं थी। फिर भी जब समुद्र में ज्वार आते थे तो ऊँची रेत की पाड़ यह बता रही थी कि यहाँ से आगे का बहाव असंभव था। उस समय प्रायः सभी अफ्रीका की नदियों की भाँति यह भी पार नहीं हो सकती थी। जौब, मुहम्मद और मैंने नाव को उस बहाव के विपरीत आड़ा खेना शुरू किया और हम करीब एक मील अंदर चले गए। हवा जरूर उल्टी बह रही थी और हमें अधिक परिश्रम करना पड़ा। अंत में हमें ऊँचा उठा हुआ भूमि भाग दिखने लगा। इतने दिनों बाद उस भूमि को देख कर मैं प्रसन्न हो उठा। मैं तीर पर चढ़ने के लिये लालायित हो उठा। एक खूबसूरत पत्तों वाले बड़े पेड़ की जड़ से अपनी नाव बाँधकर हम लोग घुटने-घुटने जल में होकर तीर की ओर बढ़े। यहाँ से हम ने देखा कि नदी के दूसरे तट पर बालू पर हजारों मगर पड़े धूप खा रहे थे। उनकी विकराल पूँछें और उनके वीभत्स और भयावने डील-डौल को देख कर भय मालूम होता था। हम आगे बढ़े। अब सूखा आ गया था परन्तु यहाँ भी जमीन नम और गीली थी और दृश्य बड़ा मनोरम था। चारों ओर सुन्दर चटकीले पुष्प खिले हुए थे। दूर-दूर तक घनी हरियाली के सिवा और कुछ भी दिखाई नहीं देता था। ऐसा प्रतीत होता था जैसे वह देश एक दम निर्जन हो। हमने जल्दी-जल्दी अपनी आवश्यकता की वस्तुओं को नाव से उतारा और सर्वप्रथम हमने स्नान किया, कपड़े धोये और उन्हें पेड़ की डालियों पर सूखने डाल दिया। इतने दिनों बाद आज हमें स्नान करना बहुत अच्छा लग रहा था। जब हम कपड़े बदल चुके और सब कामों से निश्चिन्त हो गए तो भी हमारी थकान नहीं गई थी। परमात्मा की कृपा थी जो हमारी चीजें हमारे साथ थीं। अब हमने सीलबन्द डिब्बे खोलकर बैल की जीभ खाना शुरू किया। यह स्वादिष्ट खाद्य वस्तु हम अपने साथ बहुतायत से लाये थे। हम इतने भूखे थे कि हमने कुल मिलाकर

कोई दस बड़े-बड़े टुकड़े खा डाले। अब तबियत हरी हो गई। भूमि पर पेड़ की छाया में तब हम लेट गए और न जाने कब सो गए।

करीब तीन बजे मध्यान्होपरान्त मेरी आँखें खुली। मैंने लिओ को जगाया और दूर चरते हुए कुछ जंगली हिरन दिखाये। अब जौब और मुहम्मद भी जाग गए थे।

लिओ, जौब और मैं राइफल, पिस्तौल लेकर घूमने चले। थोड़ी दूर पर भूमि करीब ऊँची उठ गई थी। यह स्थान चौरस था और लंबाई-चौड़ाई में कोई ५०० फीट लगायत २०० फीट था। लिओ ने उसे देख कर कहा :

"यह बंदरगाह है, निश्चय ही यहाँ किसी जमाने में जहाज उतरते रहे होंगे।"

मैंने उसे दुतकार दिया।

"यहाँ इस बियाबान में जहाँ सभ्यता का कोई एक लक्षण भी नहीं है भला बंदरगाह कहाँ से आया ?" और फिर चारों ओर देख कर बोला :

"और वह देखो आगे दलदल ही दलदल है। स्थान-स्थान पर न जाने कितना पानी भरा है। यहाँ से आगे बढ़ने का तो मार्ग है ही नहीं। यहाँ बंदरगाह है !!" और मैंने उसका परिहास करते हुए उसकी ओर देखा।

"हो सकता है यहाँ पहले दलदल न रहा हो," लिओ रूखे स्वर से बोला। उसी समय हमारी दृष्टि एक उखड़े हुए बड़े वृक्ष की जड़ पर पड़ी। शायद यह पेड़ कल रात के तूफान में ही उखड़ा था क्योंकि अभी तक वह हरा था और उसकी सब पत्तियाँ भी हरी थीं। जड़ के पास कड़ी भूमि भी उखड़ आई थी। वह कुछ विचित्र गोलाकार थी। मैंने उसे ठोकर से तोड़ा तो उसके नीचे पत्थर की एक बड़ी कड़ी मिली जो कम से कम एक फुट चौड़ी थी। यह निश्चय ही मनुष्य के हाथों का करिश्मा था और अब मेरी पहिली धारणा बिखरने लगी।

"यह शायद जहाजों को बाँधने के लिये था," लिओ ने उसकी ओर दिखाते हुए कहा। मैंने साफ देखा कि कड़ी का एक छोर मजबूत चूने से जड़ा हुआ था। चूना इतना मजबूत था कि मैं उसे अपने शिकारी चाकू से न छुड़ा सका। अब मैं उसका विरोध न कर सका। कुछ देर मैं चुप रहा, तत्पश्चात्

जैसे ही मैं बोलने को हुआ कि लिओ जो न जाने क्यों इतना खुश दिख रहा था बोला :

"चाचा ! अब तो मानोगे ?"

"यह अफ्रीका विचित्र देश है," मैंने उत्तर दिया, "यहाँ प्राचीन समय में जाने कितनी सभ्यतायें गुजर गई हैं जो आज तक किसी ने न जानी है न जान पायेगा। हो सकता है यहाँ कोई सभ्यता रही हो। मिश्र के बारे में ही कितने लोग जानते हैं !"

"अब आये ढङ्ग पर मेरे चचा," लिओ ने कटाक्ष किया। मैं चुप रहा। अब हम लोग दलदल के किनारे जा पहुँचे थे। दूर-दूर तक पानी भरा था और बीहड़ जंगल खड़ा था, कहीं-कहीं पानी सड़ कर बदबू दे रहा था। नाना प्रकार के पक्षी उस सघन हरियाली में विचित्र भाषाओं में बोल रहे थे। जल-कौओं से वह वातावरण भयावना लग रहा था जो रह-रह कर जल के ऊपर अपने शिकार की खोज में मँडरा रहे थे। पानी में से गर्मी के कारण एक तीखी भाप मिश्रित गंध फैल रही थी जो उस वातावरण को जहरीला बना रही थी।

अब दो बातें थी, वह दलदल नहीं पार किया जा सकता था और न हम वहीं रह सकते थे। मच्छर और डाँस इतने ज्यादा थे कि उस दिन के समय ही शरीर खुजा-खुजाकर लाल हो गये थे। हमने कुनैन काफी मात्रा में खा ली थी, जब मैंने यह बात अपने साथियों से कही तो उन्होंने उसे ठीक माना। तब मैंने फिर कहा :

"इस सूरत में या तो हम समुद्र में लौट चलें और या नदी के उल्टे बहाव में और अंदर चलें और देखें आगे क्या मिलता है।"

"मैं तो नदी में ऊपर चढ़ूँगा·····" लिओ झट से बोला। उसकी मुद्रा ऐसी थी जैसे वह कह रहा हो 'चाहे तुम लोग मेरे साथ न भी चलो तो,' मैंने भी स्वीकृति दे दी।

जौब ने सुना और उसने भय से आँखों की पुतली घुमा दी; अरब मुहम्मद बड़बड़ाया : "हाय ! अल्लाह !" वह तब भी नहीं नहाया था। मुझे उस पर हँसी आ गई। मैं बोला :

"हम लोग शैतान और मृत्यु के बीच में है फिर सीधे मृत्यु के मुँह में जाने की बजाय चलें, जरा शैतान से ही निपट लें।" मन में मैं भी उस हब्शी की खोपड़ी वाले पहाड़ तथा इस पत्थर से काफी प्रभावित हो गया था और एक विचित्र उत्सुकता से भर उठा था जिससे मुझे कुछ शर्म भी महसूस हो रही थी क्योंकि साधारणतया भावनाओं में बह जाने वाले व्यक्तियों में मैं नहीं था। उस समय अनुकूल हवा बह रही थी और हमने आसानी से उसी के अनुसार अपने पाल तान लिये। उस भयानक निर्जन स्थान में उन विकट परिस्थितियों में भी न जाने मुझे क्यों एक विचित्र आनन्द का अनुभव हो रहा था। सच पूछा जाय तो बावजूद कैलीक्रेटीस की कथा अनहोनी समझते हुए भी मेरा मन न जाने क्यों उसे सच मान रहा था परन्तु मैं अपनी इस कमजोरी को जाहिर नहीं करना चाहता था और अपनी उत्सुकता छिपाने के लिये मैंने सीटी बजाना शुरू कर दिया था।

एक स्थान पर हमें दरियाई घोड़े मिले। होंगे करीब हजार या दो हजार। विशालकाय और बेहद बदसूरत जो भयानक रूप से दहाड़ रहे थे। हम लोग डर गए और हमने अपनी एक्सप्रेस राइफलें भर कर हाथ में ले लीं। मैंने आज पहली बार इन्हें देखा था और निश्चय ही उन्होंने भी आज ही गोरे आदमियों को देखा था क्योंकि वह आश्चर्य की पैनी दृष्टि से हमें देख रहे थे। एक बार तो मैंने समझा कि वह हम पर टूट पड़ेंगे क्योंकि हम उनसे करीब २०० फीट के फासले पर थे। पर शुक्र है वह इधर न आकर दूसरी दुनिया में भाग गये। लिओ ने बन्दूक उठाई पर मैंने उसे रोक दिया, मैंने कहा :

"कहीं यह उल्टे चढ़ बैठे तो लेने के देने पड़ जायँगे।"

थोड़ी दूर आगे चल कर नाक पर सींग वाले हजारों परिन्दे हमने देखे जो जल में मछलियाँ पकड़ने के लिये उड़ रहे थे। लिओ ने धाँय से गोली छोड़ी और उनमें से दो गिर पड़े। बहुत सुन्दर थीं वे चिड़ियाँ। हमने आज तक कभी ऐसी चिड़ियाँ नहीं मारी थी। जौब ने उसे बहुत पसंद किया और अपनी भाषा में उसे 'यूनिकार्न गूस' कहकर पुकारा। मैंने जौब को दाद दी तो मुहम्मद जो गम्भीर बैठा था बोला: "या अल्लाह !" उसे हमारी ये हरकतें बिल्कुल पसंद नहीं आ रही थी क्योंकि हम उसकी निगाहों में काफिर और पापी थे।

अब शाम हो चली थी। हम लोग एक स्थान पर उतर कर घूम रहे थे। यह स्थान भी वैसा ही दलदल से पूर्ण था जहाँ पानी से बदबू आ रही थी। उसी समय शाम के झुटपुटे में हमने देखा—

पचास गज के फासले पर एक चितकबरा सुनहला हिरन पानी पी रहा था। कितना सुन्दर था वह कि उसकी टिपकियाँ अस्त होते सूर्य के प्रकाश में सुवर्ण जैसी चमक रही थीं। लिओ उसे मारने को तड़प उठा। राइफल तानकर वह बैठ गया। उसी समय मैंने धीरे से कहा—"चूक न जाय।" और अपनी बंदूक भी तान ली। उसने मेरी बात सुनकर मेरी ओर क्रोधपूर्वक देखा और वह धीरे से बड़बड़ाया, "चूक न जाय। गोया मैं गोली चलाना नहीं जानता।" उस समय तक हिरन ने पानी पीकर सिर उठा लिया था। उस ढलुआ जमीन के छोर पर खड़ा हुआ वह जानवर कितना शानदार लग रहा था। चारों ओर बियाबान जंगल, अस्त होता हुआ लाल सूर्य और पीछे जल, वह दृश्य मुझे आज भी वैसा ही याद है। निश्चय ही यदि मैं सौ वर्ष भी जीऊँ तो भी ऐसा दृश्य फिर देखने को नहीं मिलेगा। कहाँ हम इंगलैंड के रहने वाले अँग्रेज और कहाँ यह भयावने प्राकृतिक दृश्य और तभी धाँय से लिओ की गोली छूटी। निशाना सचमुच चूक गया और तीर की तरह हिरन भागा। मैंने बन्दूक साधी। वह सौ गज के करीब पहुँच गया था। धाँय·····! वह लुढ़का·····धाँय !! वह दो बार और लुढ़का, फिर ढेर हो गया।

"कहो बेटे ? क्या कहा था मैंने ?" मैंने उपहास किया।

"जहन्नुम में जाओ !" लिओ ताव खाकर बोला फिर उसे अपने चाचा को ऐसे अपशब्द कहने का ध्यान हुआ तुरन्त माफी माँगता हुआ बोला, "बधाई है चाचा बधाई ! तुम्हारा निशाना सच्चा और मेरा झूठा।"

हम दौड़े और हमने अपने शिकार को काटा। करीब आधा घंटा लगा और हमने उसका मांस काट कर अपने थैली में भर लिया।

जब तक हम नाव लेकर नदी के जल में करीब तीस धनुष के फासले पर पहुँचे तो अन्धेरा हो गया। किनारे से हट कर रात नाव में ही काटना हमने तय कर लिया था क्योंकि हमें भय था कि रात्रि के अन्धकार में उस विचित्र स्थान में न जाने कौन-कौन से जहरीले और डरावने जानवरों का मुकाबला करना पड़े।

किनारे से तीस धनुष की दूरी पर जहाँ नदी तनिक चौड़ी थी, हमने लंगर डाला क्योंकि यह स्थान हमें काफी अच्छा और आपत्तिरहित लग रहा था। हमने लालटेन जलाई और डिब्बा खोलकर बैल की एक स्वादिष्ट जीभ का भोजन किया जिसके कई डिब्बे हम साथ लाये थे। भगवान् जानता है कि उस लालटेन को जलाये रखने से हमें उस थोड़े समय में ही कितनी दिक्कत उठानी पड़ी। मच्छरों और उड़ने वाले कीड़ों ने हम पर मानों पूर्ण आक्रमण कर दिया था। यह तो निश्चित था ही कि उन्होंने रात्रि के समय कभी कृत्रिम उजाला तो देखा ही न था और फिर अब उन्हें नये स्वाद का अँग्रेजी खून भी चखने को जो मिल रहा था। वह गा-गाकर प्रहार करने लगे। खाने के बाद कुछ देर तक तो तम्बाकू के धुएँ से हम उन्हें उड़ाते रहे परन्तु तत्पश्चात लालटेन बुझाकर कम्बल ओढ़ कर बैठ गये। अन्धकार प्रगाढ़ होने लगा था।

करीब नौ बजे एकाएक जंगल गूँज उठा। एक शेर की भयानक दहाड़ सुनाई दी। फिर एक और फिर एक और मानो जंगल शेरों से भर गया था। लिओ ने फुसफुसाकर कहा :

"जान बची लाखों पाये। कहीं हम रात जमीन पर बिताते तो ?" फिर उसने अपनी नाक पर मच्छर मारा और बोला :

"कम्बख्त ने नाक ही खा डाली !"

मैंने उसे चुप रहने को कहा। दहाड़ें चलती रहीं। अब आसमान में चाँद ऊपर उठने लगा था। हमने देखा कि तीर पर बीसियों शेर निर्द्वंद घूम रहे थे। वह सभी दहाड़ लगाते और लंबी-लंबी छलाँग लगा कर इधर-उधर डोल रहे थे। जब हमें विश्वास हो गया कि हम सही-सलामत थे और यहाँ जल में कोई खतरा नहीं था तो ऊँघने लगे।

मुझे पता नहीं क्यों मैंने अपनी सुखद नींद एकाएक तोड़ कर मच्छरों के लिये एक बार मुँह कंबल में से फिर बाहर कर लिया पर परन्तु उसी समय मैंने देखा कि जौब मुझसे कुछ फुसफुसा कर कह रहा है और किनारे की ओर इशारा भी कर रहा है। मैंने उस ओर देखा। "हे भगवान ! यह तो गजब हो रहा है और हम सो रहे थे", मैं बोला। लिओ जाग रहा था। पानी में होकर एक के पीछे एक दो शेर हमारी ओर चले आ रहे थे, लिओ ने बन्दूक उठाई और मैंने अपनी।

आगे वाली शेरनी थी क्योंकि उसके सिर पर जटा और दाढ़ी न थी। जब वह करीब १५ फीट की दूरी पर आ गई जहाँ पानी घुटनों तक था तो मैंने लिओ को इशारा किया। उसी समय शेरनी ने मुँह खोल कर शायद दहाड़ लगानी चाही थी, धाँय से गोली छूटी और उसके खुले मुँह में होकर पीठ की हड्डी तोड़ती हुई निकल गई। वह छपाक से पानी में लुढ़क गई और मर गई। पीछे वाला पूरा सिंह था। अपनी साथिन को मरा देख वह पीछे हटा और भागा, परन्तु तीर तक मुश्किल से पहुँचा होगा कि पानी में न जाने क्या हलचल मच गई। पहिले तो सिर्फ खींचतान, पानी की खलबली इत्यादि की आवाज आई पर फिर शेर की हुंकार और न जाने किस जानवर का भयानक गुर्राहट मिश्रित स्वर आया। हम सभी भय से रोमांचित हो उठे। जौब का एक-एक बाल मानो खड़ा था। हम सभी ने अपनी राइफलें तान रखी थीं। चाँदनी बादल से हटकर फिर चमकी और मुहम्मद चिल्लाया :

"या अल्लाह ! मगर ने पकड़ लिया है कंमबख्त का पैर," और हमने देखा। बड़ा विचित्र दृश्य था। लंबे मुँह वाला मगर अपने पैने दाँत चमकाता हुआ शेर से गुँथ रहा था जो भीम प्रयत्न से अपने को उसके जबड़े से छुड़ा लेने को छटपटा रहा था। अब शेर सूखे पर आ गया था और मगर आधा पानी में और आधा सूखे में। उसके मुँह में अब भी शेर की टाँग दबी थी।

शायद मगर ने उसकी टाँग तोड़ दी या जाने क्या किया कि शेर बड़ी जोर से तड़पा और दहाड़ा—फिर दहाड़ा—फिर दहाड़ा—इतना चिल्लाया, इतना गुर्राया, दहाड़ा कि वातावरण उसकी गूँज से व्याप्त हो गया और तब वह विद्युत गति से घूमा और उसने एक थप्पड़ उस मगर के सिर पर मारा। मगर की एक आँख बाहर निकल आई और ऐसा लगा जैसे अब वह मर जायगा। परन्तु तभी वह दोनों बुरी तरह गुँथ गए और रेत पर लुढ़कने लगे। कितना भयंकर था वह युद्ध ! हड्डियाँ चटक रही थीं। शरीर लोहू-लुहान हो रहा था। अपार शक्ति लगा कर दोनों हुंकारते हुए लुढ़क रहे थे। जब वह ठहरे तब दृश्य दूसरी तरह का हो गया था। मगर जिसका सिर अब लोथड़े की भाँति हो गया था अपने लोहे के समान मजबूत जबड़े में शेर की कमर दाबे था और शेर पिचका चला जा रहा था। वह बुरी तरह गुर्रा रहा था और मगर के गले के निचले हिस्से को अपने पंजों

से ऐसे फाड़-फाड़ कर फेंक रहा था जैसे वह महीन कपड़े का बना हो। और तब अंत आ गया। मगर ने भरपूर उसे दबाया और शेर आखिरी बार लंबी गुर्राहट के साथ मर गया। उसका सिर मगर की पीठ पर लुढ़क गया। मगर करीब एक मिनट तक और जिया फिर उसने उठने का प्रयत्न किया। वह लुढ़का और गिर गया। शेर की कमर अब भी उसकी विकराल दाढ़ों में थी जिसे हमने दूसरे दिन देखा। उसने दो टुकड़ों में काट दिया था।

गजब का दृश्य था वह, जो न किसी ने देखा होगा न सामान्यतया कोई देख सकता है। उसे याद करके आज भी मुझे रोमांच हो आता है। लिओ और मैं देर तक उन वीर पशुओं को देखते रहे। जब हम एक बार फिर सोये तब रात काफ़ी गहरी हो चुकी थी और मुहम्मद चौकी पर सन्नद्ध था।

× × × ×

५

चिड़ियों की चहचहाहट से भोर में मेरी आँखें खुली, मैंने अपने साथियों को भी जगाया और तब हमने घुटनों के बल बैठ कर परमात्मा से प्रार्थना की, धीरे-धीरे उजाला काफी फैल गया और उस समय मुझे जौब और लिओ के चेहरे देखकर हँसी आ गई। मच्छरों ने उनको सुजा दिया था। हालत तो मेरी भी अच्छी नहीं थी पर उनसे अच्छी इसलिये थी कि प्रथम तो मेरी त्वचा उनसे कुछ कड़ी थी और दूसरे जब से मैं इंगलैंड से चला था, मैंने दाढ़ी बनानी छोड़ दी थी जिससे मुँह को काफी आड़ हो गई थी। लिओ और जौब साफ चेहरे वाले थे जो रोज दाढ़ी बनाते थे और उन्हीं पर मच्छरों ने खुला प्रहार किया था। मुहम्मद और मच्छरों की तो मानों मित्रता थी अथवा यह कि मच्छर उससे भागते थे। उसके शरीर से निकली हुई गंध के कारण उसे कोई नहीं काटता था। शायद मच्छर खूब पहचानते थे कि वह असली धर्म को मानने वाला था और बावजूद उसके गदराये शरीर के उसे कोई छूता भी न था। उन दिनों हम कितना चाहते थे कि उसके शरीर की बदबू काश हमारे शरीरों में भी आ जाय।

नदी तीर से जब हम जरूरी कामों से निपट कर चले सूर्य काफी ऊचा उठ आया था। शीतल समीर बह रहा था और साथ में सूर्य का ताप मिला कर शरीर को बहुत सुखकर प्रतीत हो रहा था। हम अपनी नाव उसी दिशा में खेने लगे। दोपहर के समय हम एक सुन्दर स्थान पर उतरे जहाँ पेड़ों की घनी छाया थी। यहीं हमने दो जल-कौए मार कर उन्हें तथा रात को मारे गए हिरन के मांस को पकाया और छककर भोजन किया। जो गोश्त बचा उसे पतला काट कर धूप में आइंदा के लिये सुखा लिया। यही मेरे खयाल से बिल्टौंग कहलाया था जिसे अफ्रीकन बहुत चाव से खाते थे।

सुबह-शाम स्थल पर खाना खाते हुए और नाव में रात गुजारते हुए हम चार दिन तक आगे बढ़ते चले गए। हमने अब तक करीब १४० मील की यात्रा अंदर ही अंदर नदी में कर ली थी। पाँचवे दिन करीब ग्यारह बजे दिन के हमारी नाव एक ऐसे स्थान पर पहुँच गई जहाँ आगे जाने का मार्ग बन्द था, यहीं एक और नदी इतनी ही चौड़ी बगल से आकर इससे जुड़ गई थी। अब हमें पता चला कि जिसे हम नदी समझे बैठे थे वह नदी न होकर कोई नहर थी जिसमें समुद्र की ओर जाने का जल मार्ग था। उसी भाँति वह दूसरी नहर भी थी और शायद आगे चल कर दूसरी ओर और भी नहरें मिलतीं। हमें बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि यहाँ भी पहले ही तरह का चूने में गड़ा पत्थर का एक कड़ा मिला। इसका अर्थ यह था कि यह सब नहरें मनुष्य के हाथों द्वारा ही बनी थीं, प्राकृतिक नहीं थीं। आगे भयानक दलदल ही दलदल था जिसमें नाव में तो क्या पैदल बढ़ना भी असंभव था।

हमने उतर कर तट को अच्छी तरह देखना शुरू किया। कड़ी मिट्टी की बनी पाड़ अब भी काफी ऊँची उठी हुई थी। नहर के दोनों ओर वह करीने से डाली गई थी और इतने हजारों वर्ष के बाद भी अच्छी हालत में थी यद्यपि कहीं-कहीं पानी ने उसे काट कर अपना मार्ग बना लिया था। मेरा हृदय भर आया। प्राचीन काल के उन लोगों के अपरिमित साहस का यह उदाहरण देख कर मैं भावनाओं में खो गया। मनुष्य ने कितना महान् कार्य किया था। सचमुच यह निश्चय ही उसी प्रकार की नहरें थीं जैसी जंजीबार द्वीप पर ताना नदी और ऊजी के बीच बनी हुई हैं जो भीतरी मार्ग को समुद्र तक ले जाती हैं। यह शायद

प्राचीन काल में अंदर से पानी निकालने तथा जहाजों को अंदर लाने के लिये काम में आती थी।

कम से कम एक बात अब मेरे मन में समा गई थी और वह यह कि जहाँ हम जा रहे थे अवश्य किसी जमाने में वहाँ जबर्दस्त सभ्यता रही होगी हालाँकि दो हजार साल पुरानी जादूगरनी की बात अब भी मेरी समझ में अनर्गल ही मालूम होती थी। लिओ बोला :

"चाचा ! हम यहाँ तो रह नहीं सकते क्योंकि प्रथम तो हम यहाँ रहने आये नहीं हैं दूसरे अगर ऐसा करें तो भी शीघ्र ही मलेरिया हमें उस दुनिया में भेज देगा (उसका मतलब मृत्यु से था)। अब प्रश्न है कि इस बगल वाली नहर में चलें या फिर समुद्र-तट लौटें। या तो यह दूसरी नहर भी समुद्र में ही निकलेगी या फिर कहीं आकर यहाँ मिली होगी—सोचो और बोलो जल्दी क्योंकि यदि सोचते ही सोचते रात हो गई तो·····" वह एकाएक रुक गया।

"क्यों रुक कैसे गए लिओ," मैंने पूछा। उसने दिखाया। जौब अपने सूजे होठों को चाट रहा था और ऐसा करने में विचित्र जानवरों की सी हरकत कर रहा था। मुझे हँसी आ गई। फिर जब मुझे याद आया तो मैंने लिओ से फिर पूछा, "तो क्या लिओ ?"

"पता नहीं। मैं तो भूल गया," वह लापरवाही से बोला।

"तो हम यहीं मर जायेंगे," जौब ने वाक्य पूरा किया। अब हम लोग उस दूसरी नहर में बढ़ रहे थे। जौब आंतकपूर्ण घृणा से भर उठा था और मुहम्मद ने पैगंबर को याद करना शुरू कर दिया था। लिओ और मुझे एक अजीब उत्सुकता घेरे हुई थी। रात फिर हमने नाव में ही गुजारी। दूसरे दिन जब हम चले तो हमारा मार्ग आगे से पत्तों और बेलों से रुका पड़ा था। पानी की सतह पर एक दम हरियाली छा रही थी और करोड़ों बेलों ने मार्ग रोक रखा था। जाने कब से वे निर्बाध रूप से बढ़ रही थीं। मुहम्मद के चाकू से मैंने और लिओ ने अपने बड़े चाकू से बेलों को काटना शुरू किया और नाव आगे बढ़ाने लगे। हमारी तमाम कोशिशों के बावजूद हम शाम तक केवल पाँच मील के करीब ही आगे बढ़े क्योंकि बेलें थीं कि बवाले जान थीं जिन्हें जितना काटो उतनी ही और आकर मार्ग रोकती थीं।

इसी प्रकार एक दिन और एक रात और बीत गए। दूसरी रात हम अधिक नहीं सोये। मुहम्मद की तलवार से बेल काटते हुए अब हम रात की शीतलता में चाँद के उजाले में आगे बढ़ने लगे क्योंकि दिन में सूर्य के ताप में हमसे इतनी कड़ी मेहनत नहीं होती थी। मैं जो सबसे तगड़ा था और दो व्यक्तियों की शक्ति रखता था, बेलें खींच-खींच कर इतना थक जाता था कि ऐसा लगता जैसे शरीर में प्राण ही न रहे हों। एक दिन दिन में तूफान आया और हमने नाव एक पेड़ से बाँध दी और लंगर डाल दिया। फिर मेह आया। वह पूरे छै घंटे बरसता रहा। हम इतने भींगे, इतने भींगे कि शायद हमारी त्वचा भी भीतर से भींग गई क्योंकि रात को हमें बेहद सर्दी लगी। ऊपर से मच्छर। वह रात बड़े कष्ट से कटी। भोर को जब हम तट पर फिर उतरे तो जौब की ठोकर से एक स्थान पर मिट्टी उलट गई और उसके नीचे सफेद चमचमाती हुई एक आदमी के सिर की हड्डी दिखाई दी। 'हे भगवान !' जौब भय से चीख उठा। वह नर-मुंड उस निर्जन स्थान में बड़ा ही डरावना लग रहा था। मेरे मन में धारणा जमती गई कि हम ही यहाँ पहले मनुष्य नहीं आये थे। जाने कब से मनुष्य यहाँ रहते आये हैं।

वह दिन भी बेल काट कर आगे बढ़ने में बीता। रात मुझे नींद जब आई तो मैंने भयावने स्वप्न देखे। मैंने देखा मैं सोते-सोते मुहम्मद पर लुढ़क गया हूँ और वह असली धर्म को मानने वाला मेरे स्पर्श से क्रुद्ध होकर लाल-लाल आँखें किये मेरी ओर छूरा लेकर झपट पड़ा है। मैं चीखा और चीखा, बार-बार चीखा पर जब मुझे होश आया तो देखा कि मेरे गले पर ठंढा लोहा चमचमाता हुआ विकराल भाला बन कर रखा था। दो लाल आँखें मेरी ओर घूर रही थीं। मैं भय से फिर चीखने ही वाला था कि कोई प्राचीन अरबी भाषा में बोला :

"शांत रहो।"

मैंने आँखें मींजीं। कहीं मेरा स्वप्न ही तो चालू नहीं था। नहीं यह स्वप्न नहीं था। मैंने देखा सामने एक जंगली आदमी हृष्ट-पुष्ट खड़ा है जो कमर में केवल बाघ की खाल बाँधे हैं। उसका तेज भाला मेरी गर्दन पर रखा था। मैंने गर्दन जरा घुमा कर देखा मेरे सभी साथियों के गले पर उसी प्रकार भाले रखे

थे। मैं किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया। तभी आततायियों के पीछे से एक भारी स्वर सुनाई दिया :

"कौन हो तुम अजनबी ? बताओ कैसे जल पर होकर और क्यों कर यहाँ आये हो ? बताओ वरना·····"

और जैसे स्वतः भाले वाले का हाथ भाले पर कड़ा हो गया। मेरा गला दबा और मेरी हड्डी तक भय से काँप उठी। मैंने देखा वह कई थे। मैंने साहस बटोर कर थूक निगला और अरबी में ही बोला :

"हम लोग यात्री हैं और जहाज डूब जाने के कारण इत्तिफाक से इधर आ गए हैं।"

प्रत्यक्ष मालूम हुआ कि मेरी बोली उन्होंने समझ ली थी, मेरे सामने का व्यक्ति हटा और उसने पीछे खड़े हुए एक ऊँचे परन्तु वृद्ध पुरुष से पूछा : "पिता ! इन्हें मार दें ?"

"क्या रंग है इन आदमियों का ?" गंभीर स्वर में उसने प्रत्युत्तर दिया।

"गोरे हैं," पहिला बोला।

"खबरदार ! मारना मत, चार दिन पहिले मेरी पास सूचना आई थी कि गोरे आयेंगे, उन्हें न मारा जाय। यह उसकी आज्ञा है जिसकी आज्ञा माननी ही होती है। यह वहीं जाकर ठहरेंगे। इन्हें ले चलो और साथ में इनका तमाम सामान भी ले लिया जाय।"

"चलो", मुझसे कहा गया और हाथ पकड़ कर मुझे वह ले चला। इसी प्रकार मेरे साथी भी लाये गए। तट के नीचे कोई पचास आदमी खड़े थे। हृष्ट-पुष्ट, ऊँचे पूरे आदमी और सभी के हाथों में लम्बे-लम्बे चौड़े चमकदार फलक वाले भाले थे। उनका रंग काला न था, वह कुछ गेंहुँआ रंग के थे। सभी नंगे थे केवल कमर पर चीते की खाल लपेटे थे, उनके मुख गंभीर और क्रूर थे। मैंने देखा वह सभी उस वृद्ध से दबते थे। वृद्ध की दीर्घ और बलिष्ठ काया थी। उसकी लंबी दाढ़ी जो उसकी नाभि तक लटकती थी यह सब उसे एक भव्य गरिमा दे

रही थी। मेरे पीछे से धक्का आया और लिओ और जौब को मेरे पास ला खड़ा किया गया। लिओ जो उनींदा था, घबराकर बोला :

"अरे यह सब क्या है ?"

उत्तर में जौब रोनी आवाज में बोला :

"शाब ! अब मरे, कैसे जंगलियों ने हमें घेर लिया है। हे भगवान ! अब कैसे बचें ?"

उसी समय किसी ने भाला की नोक से ढकेलते हुए मुहम्मद को भी वहीं ला पटका जो "या अल्लाह ! या अल्लाह !" कराहता हुआ गिर पड़ा। एक आकृति उस वृद्ध से बोली :

"यह तो काला है, वह जिनकी आज्ञा माननी ही होती है इसके बारे में क्या कहती हैं ?"

"इसके बारे में वह कुछ नहीं बोलीं थीं," वृद्ध ने उत्तर दिया। तब उस आदमी ने वृद्ध से कान में कुछ कहा जिसे सुनकर वह हँसा और फिर वह सब वीभत्स रूप से हँसे जिसे सुन कर हम भीतर तक काँप उठे। वृद्ध बोला :

"तीनों गोरे आ गए ?"

"तैयार हैं," उत्तर मिला।

"तब वह जो इनके लिये है उसमें इन्हें बिठाओ और वह जो वहाँ तैर रहा है, उस सबको भी इनके साथ ले चलो। किश्ती यहीं रहेगी।"

तुरंत पर्देदार पालकियाँ हमारे सामने आ गईं। प्रत्येक पालकी को चार आदमी उठाये हुए थे और दो आदमी साथ चल रहे थे।

लिओ को उस समय भी परिहास सूझा। पालकियों को देख कर अंग्रेजी में बोला :

"ठाठ हो गए चाचा ! इतने लम्बे सफर के बाद क्या शानदार सवारी मिली है। वाह !"

"बस अब इसी में हम मार डाले जायेंगे", जौब ने कराह कर रोनी आवाज में दुहराया।

मेरे पास सिवा उसमें बैठने के और कोई चारा नहीं था। मैं एक पालकी में घुसा, बड़ी आरामदेह जगह थी। सिर और कंधों के लिये नर्म सहारा

तथा नीचे मुलायम गद्दानुमा कुछ बिछा था। घास के तार के वह सब बुने मालूम होते थे। मैं आराम से जम कर बैठ गया। बिना पल भर भी नष्ट किये चार आदमियों ने मेरी पालकी उठा ली और वह चल दिये। पालकी दोनों ओर झूलती हुई मुझे एक विचित्र आनन्द दे रही थी। वह पालकी वाले जिन्हें कहार कहा जाना चाहिये अपने कदमों से ताल देते हुए एक बहुत ही बुरा गाना गाते हुए चल रहे थे। उनके उस गाने तथा उस डोले के झटके से मुझे नींद सी आने लगी और मैं ऊँघ गया। करीब एक घंटा तक मैं सोता रहा और जब मेरी आँखें खुलीं तो मैंने देखा मेरे कहार मुझे उसी भाँति बीहड़ दलदल के बीच बनी पगडंडियों तथा कहीं मुरचे तो कहीं घुटनों तक के पानी में होकर ले जा रहे थे। स्पष्ट था कि वह उस विकट मार्ग से परिचित थे। मैंने पीछे मुड़ कर देखा। वही गाना गाते हुए कहार अन्य पालकियाँ लिये चले आ रहे थे। वे सभी कितने सुगठित थे। कोई भी छै फीट से कम ऊँचा नहीं था और वे कुछ-कुछ पीला रंग लिये हुए थे। पूर्वी अफ्रीका के सोमाली लोगों जैसे वह लगते थे। भेद इतना ही था कि सोमालियों के बाल घुँघराले और सिर पर ही कटे होते हैं और इनके काले केश लंबे-लंबे थे जो उनके कंधों पर पड़े थे। देखने में यह काफ़ी सुन्दर लगते थे और खास कर इनके दाँत स्वच्छ और मोतियों के समान पंक्ति वाले थे। परन्तु फिर भी उनके मुख पर एक स्पष्ट क्रूरता की झलक थी जो शायद उनके जंगली होने के कारण थी और यही चीज मेरे मन में उनके प्रति एक घृणा पैदा कर रही थी। मैं यही सब बातें सोच रहा था कि आखिर कौन-सी जाति के ये लोग थे और ये लोग हमें कहाँ ले जा रहे थे कि मेरी पालकी की बगल में एक और पालकी चलने लगी। मैंने परदा जरा खिसका कर देखा और जो देखा तो उससे मेरा अंतर तक काँप गया। उस पालकी में वही पिता कहा जाने वाला दीर्घाकाय वृद्ध बैठा था जिसकी भव्य श्वेत दाढ़ी नाभि तक लटक रही थी। उसकी चमकीली आँखें गहरी और गिद्ध के समान तीक्ष्ण थीं। उसके मुख से जीवन के लंबे अनुभव का स्पष्ट पता चलता था कि इस व्यक्ति में कितनी बुद्धि और एकत्रित ज्ञान है। उसके होंठों पर एक ऐसी विचित्र मुस्कान थी जिसे लिख कर बताना कम से कम मेरे लिये असंभव है। मुझे देख कर वह बोला :

"अजनबी ! सोकर उठ आये ?"

"हाँ पिता मैं जाग गया हूँ", मैंने अत्यन्त नम्र स्वर में उत्तर दिया। मैं हर प्रकार से उसका प्रिय पात्र बनना चाह रहा था। मेरी वाणी सुन कर वृद्ध के कठोर मुख की शिकन ढीली हो गई। उसकी मुस्कान मुखरित हो उठी और उसका चेहरा नर्म पड़ गया। वह बोला :

"आगन्तुक ! तुम जहाँ से भी आये हो यह स्पष्ट है कि वहाँ भी हमारी भाषा बोली जाती है, और यह उससे भी अधिक स्पष्ट है कि वहाँ लोग अपने बच्चों को नम्र भाषण सिखाते हैं। तुम कौन हो और क्यों इस अनबूझ भूमि पर आये हो जहाँ पराये आदमी ने कभी कदम नहीं रखा ? क्या सचमुच ही तुम और तुम्हारे ये साथी जीवन से उकता गए हो ?"

मुझे उसके प्रश्न पर आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि जैसा गंभीर और बुद्धिमान वह लगता था वैसा ही उसने प्रश्न किया था। मैंने भरसक नम्र बनते हुए उत्तर दिया :

"हे पिता ! हम दुनियाँ की पुरानी बातों से उकता कर नई बातों की खोज में निकले थे। हम यहाँ ऐसे आये जैसे समुद्र के गर्भ को फोड़ कर ऊपर निकल आये हों। हम बहादुर देश के रहने वाले मृत्यु से नहीं डरते हैं। यदि मरने के पहिले हमें जीवन की कुछ नवीन बातों का पता चल जाय तो हम अपनी यात्रा को सफल समझेंगे।"

"हुँ !", उसने हाथ ऊपर उठा कर कहा, "तुम्हारी बात सच हो सकती है। मैं इसका विरोध नहीं करता। बहादुर तो तुम निश्चय हो ही अन्यथा इस स्थान में कभी न आते। मुझे विश्वास है कि 'वह जिसकी आज्ञा मानना अनिवार्य है' तुम्हारी जिज्ञासा को बहुत कुछ शांत करेंगी।"

मैं 'वह जिसकी आज्ञा मानना अनिवार्य है' इस बात को अब तक तीन-चार बार सुन चुका था। कौन थी भला वह ? मेरे मन में एकदम उत्कण्ठा बढ़ी। मैंने साहस बटोर कर पूछा :

"वह जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य है, कौन हैं ?"

मेरी बात का उत्तर वृद्ध ने एकदम नहीं दिया। उसने कहारों की ओर आँख उठा कर देखा फिर वह हँसा; तत्पश्चात् वह बोला :

"तुम शीघ्र जान जाओगे मेरे पुत्र ! यदि 'वह जिनकी आशा अनिवार्य है' तुम्हें सशरीर देखना चाहेंगी।"

मेरी हड्डी तक एक बर्फ के समान शीतल भय से काँप गई। मैंने हड़बड़ा कर पूछा :

"सशरीर ! मेरे आदरणीय पिता का अर्थ मैं समझा नहीं ?"

वृद्ध केवल हँसा। उसने उत्तर नहीं दिया। परन्तु उसकी हँसी बड़ी विकराल थी। मैं भय से स्तंभित हो गया। थोड़ी देर मैं सोचता हुआ चुप रहा। 'इस प्रकार भयभीत होने से फायदा भी क्या हो सकता है' मैंने सोचा। अब इन जंगलियों में से निकल कर एक बार फिर शांत कैम्ब्रिज में तो वापस कभी जा न सकूँगा इसका तो मुझे कुछ विश्वास सा होने लग गया था। मैंने इधर-उधर देखा फिर पूछा :

"मेरे आदरणीय पिता के लोगों की कौन सी जाति है ?"

"मेरे लोग एमैहैग्गर कहलाते हैं। इस शब्द का अर्थ है पहाड़ों के आदमी।"

"क्या पुत्र अपने पूज्य पिता का नाम भी जानने की धृष्टता कर सकता है ?"

"मेरा नाम बिलाली है," वह बोला।

"और हम जा कहाँ रहे हैं पिता !" मैंने फिर छेड़ा, परन्तु उसने नहीं बताया। सिर्फ बोला :

"तुम्हें पता चल जायगा।"

मैं चुप हो गया। उसने कहारों को इशारा किया और अब वह डोले लेकर चलने के स्थान पर भागने लगे। मैंने पीछे मुड़ कर देखा। अन्य पालकी वाले भी भागे चले आ रहे थे। लिओ शायद अपनी पालकी में लेटा हुआ था क्योंकि उसका एक पैर बाहर लटक कर झूल रहा था। जौब घबराया हुआ बैठा था।

इसके बाद कुछ खास बात नहीं हुई। मैं उस झूले में फिर ऊँघने लग गया। मैं जाने कब तक सोया पर जब आँख खुली तो देखा कि अब हम पहाड़ों से घिरे मार्ग में कठोर भूमि पर चल रहे थे। गाना उसी प्रकार अपने बुरे सुरों में हो रहा था। पहाड़ ऐसे लगते थे मानों किसी ज्वालामुखी के भग्नावशेष हों जिन

पर घनी हरियाली तथा बड़े-बड़े वृक्ष खड़े दीर्घ छाया फैला रहे थे। बड़ा दृश्य सुहावना था क्योंकि दोनों ओर ही सुन्दर और चटकीले असंख्य फूल खिले हुए एक विचित्र वातावरण बना रहे थे। थोड़ी दूर जाने के बाद एक मोड़ आया और अब हम एक खुले नीचे मैदान के मुहाने पर आ गए जो बहुत बड़ा और कटोरे की भाँति बीच में नीचा था। कैसे करूँ उस सौंदर्य का वर्णन जो अब मेरे सामने था। वह मैदान कम से कम छै मील लम्बा था और इतना ही चौड़ा और नाना प्रकार के सुवासित पुष्पों से महक रहा था। ऐसा लगता था जैसे हम किसी रोमन-थियेटर के मैदान में आ गए हों जहाँ सौंदर्य मुखरित होकर बह रहा हो। दूर-दूर तक घनी हरियाली छाई हुई थी और उस कटोरे के मध्य भाग में ऊँचे-ऊँचे छायादार वृक्ष लगे हुये थे जो उस सौंदर्य को द्विगुणित कर रहे थे। मैदान में गाय-बकरियाँ चर रही थीं परन्तु मैंने खास तौर पर यह बात देखी कि वहाँ भेड़ का नाम भी न था। ऐसा सुन्दर स्थान मैंने आज तक कहीं नहीं देखा था। थोड़ी देर सोचने के उपरांत मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि वह स्थान वास्तव में किसी ज्वालामुखी का अंग रहा होगा जो जब ज्वालामुखी शांत हो गया तो किन्हीं प्राकृतिक कारणों से जल से भर गया। तत्पश्चात् मनुष्य ने किसी खास विधि से उसमें से पानी निकाल दिया और अब वह सूखा था। यह मेरा अनुमान मेरे बाद के अनुसंधान द्वारा बिल्कुल सच निकला। एक चीज मुझे बड़ी देर से आश्चर्य में डाले हुए थी। मवेशी थे, खेत थे पर ये आदमी रहते कहाँ थे? क्योंकि मुझे उनके मकान या झोपड़े कहीं नजर नहीं आ रहे थे। मैं चाहता था कि अपने जबर्दस्ती के पिता से पूछूँ पर उसी समय मेरे कहार मेरी पालकी लिये पहाड़ों की ओट चलने लगे। फिर बाँये घूम गए। अब हम ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों के बीच सँकरे परन्तु उजाले से पूर्ण मार्ग पर जाने लगे। कोई पौन मील गए होंगे कि एक बड़ी गुफा के सामने कहारों ने मेरी पालकी रख दी। मैंने मुड़कर पीछे देखा कि बिलाली अपनी डोली में से उतर रहा था। मैं झट कूद कर नीचे खड़ा हो गया। लिओ और जौब भी तुरंत नीचे खड़े हो गए। अब मैंने देखा कि हमारा अरब साथी मुहम्मद मुँह से झाग डालता हुआ पृथ्वी पर गिर कर हाँफ रहा था। मैंने पालकियाँ गिनीं। वह केवल चार थीं। मैं समझ गया कम्बख्तों ने उसे पैदल ही घसीटा था। उसे पूरे मार्ग भागना पड़ा था और जब वह थक

जाता और रुकता तो उसे पीछे से भाला चुभाया जाता था। यह मुझे बाद में पता चला था।

मैं बिलाली के पीछे चला। हम लोग एक बहुत बड़ी गुफा के सामने एक ऊँचे पत्थर के चबूतरे पर खड़े थे और वहीं हमारी नाव का सारा समान रखा था। हमें तीन ओर से जंगली पुरुष और स्त्रियों ने घेर रखा था जो उत्सुकता और आश्चर्य से हमें देख रहे थे। पुरुष प्रायः सभी सुन्दर और दृढ़ शरीरों वाले थे जिनकी मांसपेशियाँ कठोर और बलवान दिखाई देती थीं, वह सभी ऊँचे, पूरे डील-डौल के व्यक्ति थे। हमारे कहारों से उनका रंग साफ था। कोई उनमें गहरे रंग का भी था पर अधिकतर पीले थे। सभी नंगे थे बस कमर में एक चीते की खाल पहिने थे, मैंने बिलाली को इसके विपरीत पीले रंग का सूती कपड़ा पहिने देखा जो शायद ओहदे की निशानी थी।

उनकी स्त्रियाँ साफ रंग की थीं और अत्यन्त सुन्दर थीं। गदराये हुए शरीर वाली वह सुन्दरियाँ, बलिष्ठ और कजरारे नयनों वाली थीं; उनके केश लम्बे और मुलायम थे जो किसी के नग्न कंधों पर पड़े थे तो किसी ने उन्हें उठा कर सिर के ऊपर गाँठ देकर बाँध रखा था। उनमें से कोई-कोई तो बिलाली की भाँति पीले सूती वस्त्र पहिने थीं परन्तु अधिकांश हिरन की खाल कमर में लपेटे हुई थीं और उसी खाल को ऊपर तक खींच कर उन्होंने अपने मांसल पीनस्तनों के नीचे का भाग थोड़ा ढँक रखा था। वह सुन्दर मुस्कान बिखेर रही थीं और उनके मुख पर पुरुषों जैसी वह अज्ञात कठोरता नहीं थी जिसे देख कर मेरा हृदय भीतर ही भीतर काँप उठा था।

ग्रीक देवता एपोलो के समान सुन्दर शरीर वाले लिओ को देख कर प्रायः सभी स्त्रियाँ उससे प्रभावित हो रही थीं। खासकर जब लिओ ने उन्हें देख कर अपने सिर से टोप उठाया तो उसके सुनहले चमकदार केशों को देखकर वे उसकी ओर बहुत आकर्षित हुईं। एक स्त्री की तो साफ साँस सुनाई दी जो उसे देख कर बेहाल हो गई थी। वह आगे बढ़ी, कितनी सुन्दर युवती थी वह, कि मैं अब कैसे लिखूँ। पर उसके यौवन की जैसे कोई सीमा नहीं थी। शुभ्र रंग वाली वह युवती उस मनमोहक कामिनी की भाँति थी जो अपने पीनवक्ष का उभार अपने पीन नितंबों से पतली कटि पर साधती हुई, इटलाती हुई, नयन कटाक्ष करती हुई

प्रियतम के गले में बाहें डालने निस्संकोच भाव से बढ़ती हैं। उसे देख कर मैं स्तब्ध रह गया। उस स्त्री के लम्बे बाल भूरे और चमकीले थे। वह शायद किसी ऊँचे घर की थी तभी उसने भी बिलाली की भाँति पीले सूती वस्त्र धारण कर रखे थे। वह मंथर गति से आगे बढ़ी और उसने लिओ के गलबहियाँ डाल कर उस का देर तक चुम्बन लिया।

मैंने बड़े जोर से घबरा कर दीर्घ श्वास छोड़ा क्योंकि मैं यह पक्की बात समझ रहा था कि अब यह जंगली मेरे लिओ को मार देंगे।

"छिनाल!" जौब अंग्रेजी में चीख पड़ा, "जादूगरनी!"

परन्तु लिओ केवल आश्चर्यचकित ही था, भयभीत नहीं। उस युवती ने जब उसका चुम्बन लिया तो दुगने प्रेम से उसने उसे अपनी कठोर भुजाओं में बाँध लिया और देर तक चुम्बन लेता रहा। बाद में उसने मुझे बताया कि वह पहिले ही समझ गया था कि इन लोगों की रीति-रिवाज प्राचीन इसाईयों की भाँति थीं जिनमें स्त्रियों की स्वच्छन्दता मान्य होती थी। मुझे उस समय भी भय लगा हुआ था परन्तु किसी ने कुछ नहीं कहा, न किसी ने उस वासनायुक्त प्रेम प्रदर्शन को रोका ही। केवल कुछ युवती स्त्रियाँ थोड़ी चिढ़ी हुई अवश्य प्रतीत हुईं जो शायद ईर्षा के कारण थीं। शेष वृद्धाऐं और वृद्ध केवल मुस्कुरा कर रह गए। मुझे बाद में बिलाली ने बताया कि उनके यहाँ स्त्रियों को पुरुषों के समान ही अधिकार होता है और वह कामोद्वेलित होकर चाहे जिस पुरुष के साथ विहार कर सकती हैं। मुझे आश्चर्य हुआ क्योंकि प्रायः सभी अन्य स्थानों में यहाँ तक कि अफ्रीका की दूसरी जंगली जातियों में भी स्त्रियाँ पुरुषों के अधीन उनकी वस्तु समझी जाती हैं। उसने मुझे इस विषय में और भी बहुत सी बातें बतलाईं। स्त्री एक पुरुष के साथ तभी तक रहती है जब तक उसकी इच्छा होती है। इसी तरह पुरुष भी स्वच्छन्द है। एक और बात उसने मार्के की बताई कि पिता को जानते हुए भी एमैहैगग्र लोग अपनी वंश परंपरा मातृकुल से ही चलाते हैं। बच्चे इकट्ठे पाले जाते हैं। और पूरे वंश अथवा घराने का एक ही सर्दार होता है जो 'पिता' कहलाता है और जिसकी अवज्ञा नहीं हो सकती।

बिलाली का घराना काफी बड़ा था। करीब सात हजार व्यक्ति उस परिवार में थे जिसका वह अकेला पिता कहलाता था। यदि किसी स्त्री को कोई पुरुष भा जाता तो वह इसी प्रकार सब के बीच उसे प्यार करती थी। यदि पुरुष भी प्रत्युत्तर देता तो यह बात मान ली जाती थी कि अब वह दोनों स्त्री-पुरुष की भाँति रहेंगे। बाद में मुझे यह भी मालूम हुआ कि उनमें स्त्रियाँ तथा पुरुष प्रायः एक दूसरे को नहीं छोड़ते थे जैसा कि उस रिवाज से प्रत्यक्ष जाहिर होता था। बल्कि स्त्रियों के पीछे पुरुषों में झगड़े भी नहीं होते थे।

कैसा विचित्र था वह देश मैं आज भी सोचता हूँ। कहाँ हमारे देश जहाँ चरित्र और रीति-रिवाज धर्म से संबंधित मान ली गई हैं और कहाँ यह एमैहैग्गर जो जंगली होते हुए भी स्त्रियों के प्रति विशाल हृदय वाले होते हैं।

× × × ×

६

उस युवती का नाम यूस्टेन था। जब वह लिओ को प्यार कर चुकी, तो उसके कंधे पर झूलती हुई उससे सटी हुई गुफा की ओर चल दी, लिओ भी उसकी कमर में हाथ डाले उसके साथ चल दिया। एक और स्त्री जो काफी तगड़ी थी जौब की ओर आकर्षित हुई और वह उसे ललचाई दृष्टि से देखती आगे बढ़ने को हुई परन्तु जौब यह देख कर ऐसा घबराया कि भाग कर मेरे पास आ गया। जैसे कुछ हुआ ही न हो। बिलाली ने मुझसे कहा :

"आओ।"

और तब हम सब उसके पीछे गुफा के अंदर चले। अंदर मैंने यूस्टेन को इशारे से कहा कि हम एकांत चाहते थे परन्तु वह लिओ को छोड़ती न थी। यहाँ एक बात बताना शायद मैं भूल गया और वह यह कि मुझे देख कर कोई स्त्री न आकर्षित ही हुई और न किसी ने मुझे गौर से देखने की चेष्टा ही की।

गुफा अंदर से विशाल थी जो मनुष्य के हाथ द्वारा तराशी गई थी। कोई

१५० फीट लंबी, ८० फीट चौड़ी और इतनी ऊँची थी कि छत तक दृष्टि भी ऊपर अंधेरे के कारण नहीं पहुँच पाती थी। इसकी दोनों ओर पंद्रह-पंद्रह फीट के फासले पर बगलों में द्वार थे जो शायद बगल के छोटे कमरों या गुफाओं में खुलते थे। गुफा के अंदर जहाँ उजाला कम होता चला गया था, बड़ी-बड़ी लकड़ियाँ जल रही थीं जिनसे ऊँची-ऊँची लपटें निकल कर गुफा की दीवारों पर विचित्र छायाएँ बना रही थीं, इसी अग्नि के पास बिलाली ने हमें बिठाया और कहा कि शीघ्र ही हमारे लिये भोजन आ रहा है। हम वहाँ शेर की खालों पर उठंग गए। सब लोग सिवा उनके जो आग के पास बैठे थे अब इधर-उधर हो गए थे। थोड़ी देर बाद खाना परोसा गया। युवतियाँ उसे लाईं। गर्म-गर्म बकरे का गोश्त, ताज़ा दूध कोरे मिट्टी के बर्तन में और हिंदुस्तानी अनाज का दलिया बना था। एक तो भूख और फिर वह स्वादिष्ट भोजन! हम सबों ने जी भर कर खाया। जो कुछ हमें दिया गया था वह सब हम झाड़-पोंछ कर खा गए। जब हमने खा लिया तो बिलाली जो अब तक चुप बैठा हुआ हमें देख रहा था, बोला :

"अभी तक कोई गोरा हमारे देश में नहीं आया, कभी-कभी काले आदमी तो आ जाया करते हैं और उन्हीं की जुबानी हमें मालूम होता था कि दुनियाँ में गोरे व्यक्ति भी रहते हैं जो समुद्र में बड़े-बड़े जहाज़ों में डोला करते हैं। जब मुझे तुम लोगों के यहाँ आने का पता लगा तो मैंने अपने आदमियों को तुम्हें तुरंत मार डालने की आज्ञा दे दी क्योंकि हमारे रिवाज़ के अनुसार यहाँ आकर कोई जीवित वापस नहीं जाता। उसी समय मेरे पास 'वह जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य है' की आज्ञा आ पहुँची, उन्होंने कहलाया था कि तुम लोग मारे न जाओ और जभी तुम आज हमारे मेहमान हो।"

'वह जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य है' उसके बारे में तो मैं जानता था कि वह बुड्ढा कुछ बतायेगा नहीं, इसलिये मैंने प्रश्न को तनिक घुमा कर पूछा :

"हे पिता! यदि 'वह जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य है' यहाँ से और आगे रहती हैं तो भला उन्हें कैसे पता चल गया कि हम लोग यहाँ आ गए हैं?"

बुड्ढा मेरी ओर उस मनुष्य की तरह देखने लगा जो अपने सामने एक मूर्ख को देख कर दया की दृष्टि से देखता है। तत्पश्चात् उसका मुख कठोर हो गया, वह बोला :

"आगन्तुक ! क्या तुम्हारे देश में ऐसा कोई भी नहीं है जो आँखों से देखे बिना और कानों से सुने बिना सब बातें जान ले ? अधिक प्रश्न न करो। इतना ही जानो वह सब कुछ जानती थी।"

मैंने कंधे उचका कर विचित्र मुद्रा बनाई तो वह बोला :

"तुम्हारे बारे में मेरे पास कोई आज्ञा नहीं आई है अतएव मैं आज ही वहाँ जा रहा हूँ जहाँ 'वह जिनकी मानना अनिवार्य है'। रहती हैं वह एमैहैग्गर की रानी हैं और सर्वज्ञ हैं," उसने यह भी कहा कि कितनी ही जल्दी वह क्यों न जाय तब भी पाँचवें दिन से पहले वह न लौट सकेगा उसने बताया कि उसे मीलों दलदल में और पानी में होकर जाना पड़ेगा और कि वह मार्ग सिवाय जाने हुए मनुष्यों के और किसी से पार नहीं किया जा सकता। जाते-जाते वह फिर कहने लगा :

"इन पाँच दिनों में लड़कियाँ तुम्हारे आराम का पूरा ध्यान रखेंगीं। यदि 'वह जिनकी आज्ञा मानना जरूरी था' तुम्हें देखना चाहेंगी, जिसकी कि मुझे पूर्ण आशा है, तब तो सब कुछ ठीक है, मैं तुम्हें वहाँ ले चलूँगा यदि नहीं तब तो बस तुम्हारी मृत्यु निश्चित है क्योंकि वह कभी किसी व्यक्ति को जो उन्हें नहीं भाता, जीवित नहीं रहने देतीं, पहिले भी मेरे पिता और मेरे बाबा के समय में कुछ अजनबी आये थे और उन्हें 'वह जिनकी·····' ने ही बुलाया था पर फिर उनसे मिलना नहीं चाहा और उन्हें मरवा डाला। किस तरह मरवाया यह बता कर मैं तुम्हें डराना नहीं चाहता पर खैर सो बात छोड़ो। मुझे आशा है कि तुम तो बचोगे ही।·····पर यदि बाद में मारे जाओ तो मुझे दोष न देना।"

और वह चला गया। मैं उससे पूछना चाहता था कि यह कैसे हो सकता था कि 'वह जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य था' उसके बाबा के समय में भी रही हों क्योंकि वह स्वयं ही वृद्ध था परन्तु वह चला गया था।

अब एक अज्ञात भय ने मुझे घेर लिया। कहीं 'वह जिनकी आज्ञा मानना जरूरी था' हमारे खिलाफ पड़ गई तो ?' और मैंने तुरंत वह विचार त्याग देना चाहा। 'क्यों चाहने लगी भला वह ऐसे ?' तभी मुझे ध्यान आया कि उसने बिलाली के बाप और दादा के काल में भी तो आगन्तुकों को बेरहमी के साथ मरवा डाला था। और तब उस अज्ञात स्त्री के प्रति मेरे मन में घृणा भर गई। लिओ सब कुछ जानते हुए भी विचित्र बातें कर रहा था। वह मुझसे कह रहा था :

"चाचा ! यह वही रानी है जिसने कैलीक्रेटीस को मारा था और जिसका जिक्र उस पत्र और ढक्कन पर लिखा था। हम ठीक स्थान पर आ लगे हैं।" अब इन अजीब-अजीब बातों के बाद मुझमें इतनी शक्ति नहीं थी और न इतना साहस ही था कि उसकी बात का विरोध करता चाहे वह कितनी भी बेजा बात क्यों न थी। जौब आँखें फाड़ कर बड़बड़ा रहा था :

"कहीं कोई और छिनाल न आ जाय", उसे उस तगड़ी स्त्री का अब भी भय लग रहा था शायद।

मुहम्मद केवल अल्ला-अल्ला कहता था और गुफा के एक कोने में पड़ा था। हम तीनों अब स्नान करने के लिये तरस रहे थे क्योंकि हम एक तो थके हुए थे और दूसरे कई दिनों से अच्छी तरह नहाये भी न थे। हमारी देख-भाल करने वाला एक अधेड़ व्यक्ति था जिसे बिलाली हमारी सेवाओं के लिये रख गया था। उसे साथ लेकर हम तीनों नहाने चले। मुहम्मद ने अब भी नहाने से इन्कार कर दिया। वह हमारे साथ गया जरूर पर उस सुन्दर झरने को देख कर भी उसके मन में नहाने की इच्छा नहीं हुई जिसमें हम घंटों बैठ कर नहाये थे।

जब हम बाहर निकले तो पुरुष और स्त्रियाँ हमें उसी भाँति घूर-घूर कर देखने लगे। उन्होंने हमें एक प्रकार से घेर भी लिया था परन्तु जब हमने अपने चुरुट जलाये और धुँआ छोड़ा तो वे सब भाग गए। उन्होंने हमें बहुत बड़ा जादूगर समझा। परन्तु फिर भी जब हम नहा रहे थे, लिओ की सुन्दर देह देख कर कितनी ही युवतियाँ आकर्षित होकर उसे देखने, आ खड़ी हुई थीं। यूस्टेन ने उन्हें देखा पर वह तनिक भी ईर्षित दिखाई नहीं दी।

जब हम लौटे साँझ हो चुकी थी। गुफा में अग्नि प्रज्वलित हो रही थी और काफी उजाला फैल रहा था। हम आकर थोड़ी देर अपने आसनों पर बैठे रहे और उन एमहैग्गर लागों को खाना खाते देखते रहे। वह बड़े-बड़े कौर मुँह में लेकर अजीब तरह से खा रहे थे। काफी देर तक हम उन्हें देखते रहे। कोई किसी से नहीं बोला। आखिर हम ऊब गए। उनका खाना खत्म ही न होता था। हमने अपने संरक्षक से कहा कि हम सोना चाहते हैं। वह तुरन्त हमें लेकर बगल के एक छोटे कमरे की ओर मुड़ा। यहाँ दीवाल में दीपक जुड़ रहे थे और भूमि पर भी लालटेन की भाँति मिट्टी के दीपक रखे थे। सभी पक्की मिट्टी के थे और कोई-कोई तो उनमें बहुत ही सुन्दर था। उनमें चर्बी जल रही थी, यह धुँए से साफ दिखाई देता था। हाथ लालटेनों में सूखा सरकंडा जलाया जाता था जो बत्ती का काम देता था। परन्तु इन सभी में दिक्कत यह थी कि बत्ती ऊपर-नीचे सरकाने के लिये कुछ भी नहीं था।

बगल की गुफा करीब आठ फीट लंबी और इतनी ही चौड़ी थी। इसमें एक ओर दीवाल के सहारे एक कोने से दूसरे कोने तक तीन फीट ऊँचा एक लम्बा चबूतरा बना हुआ था। इस पूरी गुफा में और कुछ नहीं था। न चटाई, न कंबल न कुछ और न जंगला न खिड़की, न रोशनदान। उस अधेड़ व्यक्ति ने मुझसे कहा :

"यह तुम्हारे सोने के लिये है", और लिओ, जौब और मुहम्मद को लेकर आगे बढ़ गया। मैंने देखा कि वह चबूतरा बीच-बीच में जरा गड्ढेदार था। मैं उसे देखता रहा कि क्या यह सोने का स्थान नहीं है कि एकाएक मुझे एक बात सूझी और भय मानों मेरी हड्डी तक उतर गया और उस शीतल वातावरण में भी मेरे पसीना आ गया। मैंने देखा कि वह चबूतरा मृतकों को लिटाने के अनुकूल बना हुआ था जिसमें मनुष्यों के अंग-प्रत्यंग उभार उतार के साथ उस पर जम कर बैठ सकें। हे भगवान! तब क्या इस शव के बिस्तर पर सोना पड़ेगा! पर और कोई चारा नहीं था। उस एक प्रकार की कब्र में सारी रात अकेले बिताना मुझे असंभव सा प्रतीत होने लगा। उसी समय जौब भागा हुआ मेरे पास आया। वह घबराया हुआ तो पहिले से ही था अब ऐसा लगता था

जैसे भय से मर जायगा। मैंने उसको सांत्वना देने के लिये उसका हाथ अपने हाथ में लेकर दबाया, वह बिल्कुल ठंडा हो रहा था। वह थूक से जीभ गीली कर होंठ चाटते हुए बोला :

"वह मुझे उस कब्र में अकेले सोने को कहता है। मैं वहाँ निश्चय मर जाऊँगा·····नहीं-नहीं मैं वहाँ नहीं जाऊँगा।"

मैंने उसे समझाया पर वह न माना और फिर बोला :

"क्या मैं यहाँ आपके पास नहीं सो सकता ?"

मैं तो यह चाहता ही था तुरन्त मैंने अनुमति दे दी। फिर जाकर हम लोग अपने कंबल लाये और लेट गए। जौब ने बताया कि मुहम्मद आगे वाली गुफा की भूमि पर पड़ा था क्योंकि उसे चबूतरे पर सोने को मना कर दिया गया था। मैंने पूछा, "लिओ ?"

तो जौब थोड़ी देर चुप रहा। फिर दीर्घ श्वास छोड़ता हुआ बोला :

"उसे तो वह छिनाल ले गई अपने साथ।"

मैंने लम्बी साँस ली और करवट बदल कर लेट गया। मैं ग्लानि में डूब रहा था। उन जंगलियों में से भी किसी ने मुझे नहीं छाँटा था।

मेरी रात अच्छी नहीं कटी। भयानक स्वप्नों ने मुझे बेहद डरा दिया और मैं कई बार पसीने में तराबोर होकर जाग गया। मुझे ऐसा लगा जैसे वे लोग मुझे जिंदा जमीन में गाड़ रहे थे और मैं प्राणों के लिये बेतहाशा चिल्ला रहा था पर आवाज मेरे मुँह से नहीं निकल रही थी। यह सब उस मुर्दों के टीले का प्रभाव था परन्तु रात के उस नीरव वातावरण में मुझे भावनाओं ने बुरी तरह दबा लिया था।

भाग्य जगे, एक तेज तुरही की आवाज सुनाई दी और बड़ी गुफा में चहल-पहल शुरू हो गई। बाद में मुझे मालूम हुआ कि यह तुरही एक हाथी की पोली सूँड़ के मुँह पर जोर से इसलिये बजाई जाती थी कि आवाज सब ओर फैल कर गूँज जाय।

इशारा समझ कर हम सब उठ बैठे और गुफा के बाहर नित्य कर्म करने चले गये। मैं कंबल ओढ़ कर ही बाहर निकाला क्योंकि सर्दी पड़ रही थी, उस कटोरे

की तरह के मैदान की इस समय की शोभा लिख कर वर्णन नहीं की जा सकती। प्रकृति का वह अनूठा सौंदर्य देखकर मैं मन ही मन एमैहैग्गर लोगों से जलने लगा जिन्हें मैं अपने दिल में उस शोभा के लूटने वाले एक मात्र लायक अधिकारी कभी नहीं मानता था। कहाँ वह जंगली और कहाँ यह शोभा। मैं देर तक उस दृश्य को देखता रहा। जब लौटा मैंने देखा सब लोग नाश्ता करने बैठे थे। एक आसन पर लिओ बैठा मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। शीघ्र ही गर्म-गर्म माँस और दूध परोसा गया। जौब लिओ के दूसरी ओर बैठा ध्यानमग्न होकर खा रहा था। मैंने साफ देखा कि वही कल वाली तगड़ी औरत जो करीब तीस वर्ष की थी चुपके से अपने स्थान से उठी और उसने जाकर सबके बीच जौब को झटके से आलिङ्गन में बाँध कर उसके मुँह को चूम लिया। जौब घबरा गया। वह ऐसी बातों का तनिक भी आदी नहीं था। एक तो वह सत्रह भाई-बहिनों में से एक था और प्रकृति से ही एकांतप्रिय और शांत था, दूसरे अपने मालिकों के सम्मुख इस प्रकार की हरकत से वह एकदम घबरा गया। हालाँकि उस चुम्बन को प्रशंसायुक्त नेत्रों से देख कर मुस्कुरा रहा था पर उस समय जौब की मुख मुद्रा जो सामने आई तो मेरे रोके हँसी न रुकी। मैं उसकी उस समय की मुखमुद्रा को जीवन में कभी नहीं भूल सकता। वह झटके के साथ उठा और अपना बचाव उस स्त्री से करता हुआ अंग्रेजी में बोला :

"चुड़ैल ! जाने कहाँ से आ गई। मैं कभी नहीं·····," इससे आगे उससे बोला नहीं गया। उस औरत ने शायद यह समझा कि वह सबके बीच होने के कारण शर्मा रहा था इसलिये उसने उठकर उसे फिर आलिङ्गन में लेने का प्रयत्न किया। अब जौब चिल्लाया :

"हट चुड़ैल हट ! बदचलन बदमाश !" फिर मेरी तरफ देखकर हड़बड़ा कर बोला :

"देखिये मेरी कोई गलती नहीं है। मैने इस छिनाल को तनिक भी प्रोत्साहन नहीं दिया है।" परन्तु वह औरत अब भी नहीं रुकी। पीन स्तनों को हिलाती हुई हाथ फैलाये फिर वह उसकी ओर बढ़ी तो अबकी बार जौब चिल्लाया :

"अरे यह तो मेरे पीछे पड़ गई बाजारू औरत!" और वह नाश्ता छोड़कर, जान लड़ा कर गुफा के बाहर भागा। एमैहेग्गर लोगों को इतनी जोर से हँसते हुए तभी मैंने सुना। सब तालियाँ बजा कर हँस पड़े और औरतें भी हँस पड़ीं। कुछ युवतियों ने आपस में इस प्रकार इशारे किये मानो वह औरत बुड्ढी थी जो इस पुरुष को आकर्षित न कर सकी थी। वह औरत गुस्से से लाल हो उठी थी। खास कर इस तरह सबके बीच उसे जौब ने ठुकरा दिया था। और फिर युवतियाँ इशारों में ही ताने दे रही थीं सो अलग। वह अपनी जगह खड़ी हुई क्रुद्ध सर्पिणी की भाँति फुफकारने लगी और मुझे उसी समय विपत्ति की आशंका होने लगी। मुझे जौब की वह कैथोलिक हरकत उस समय बहुत ही नागवार मालूम हुई। 'क्या हर्ज था यदि वह भी लिओ की भाँति उस स्त्री से लिपट कर प्रेम कर लेता और उसका जी भर देता। कम से कम उन जंगलियों से शत्रुता तो न बढ़ती।' मैंने सोचा और बाद में जो मैंने सोचा वही हुआ भी क्योंकि वही औरत निकट भविष्य में हमारे लिये भारी विपत्ति का कारण बनी।

जब वह स्त्री अपनी जगह जाकर बैठ गई तो जौब घबराता हुआ वापस आया और हर एक स्त्री से चमकता हुआ कि कहीं उसे कोई पकड़ न ले वह मेरे पास आकर बैठ गया। मैंने उपयुक्त मौका समझ कर अरबी में कहा :

"यह व्यक्ति शादीशुदा है और इसने अपने परिवार में बहुत दुख झेले हैं। इसकी स्त्री ने इसे धोखा दिया है और इसीलिये अब यह दुनिया से विरक्त हो गया है। यहाँ तक कि अब किसी भी स्त्री के संपर्क से घबराता है।"

पर मेरी बात पर जैसे किसी ने ध्यान नहीं दिया। वह इस मामले को सोचने लायक ही नहीं समझ रहे थे। अन्य स्त्रियों ने उस स्त्री को थोड़ी देर इशारों से छेड़ा भी परन्तु थोड़ी देर बाद वह स्वयं उन्हीं के साथ हँसती हुई घुल-मिल गई।

इसके बाद तीन दिन तक कोई खास बात नहीं हुई। इस बीच हमने उस कटोरेनुमा मैदान तथा उन पहाड़ों पर घूम-घूम कर जितनी हो सकती थी उतनी वहाँ की बातें जानने की कोशिश की, वहाँ दो प्रकार के मवेशी थे।

एक ऊँची पूरी बिना सींग वाली जो ढेर सा दूध देती थी और दूसरी प्रायः चपटी और छोटी। इनके सींग भी होते थे। यह खाने के काम आती थी। बकरियाँ ऊँची-ऊँची और लंबे बालों वाली थीं जो केवल खाने के काम आती थीं। उनका दूध एमैहैग्गर लोग नहीं दुहते थे। उनकी खेती के ढङ्ग अत्यन्त प्राचीन और दुखदाई थे। लोहे के चौड़े फलक से वह जर्मान उखाड़ते और अधिकतर खुदाई से ही खेती करते थे जिसमें पुरुषों को बेहद मेहनत करनी होती थी। स्त्रियाँ खेतों में काम नहीं करती थीं। यह बड़े आश्चर्य की बात थी कि पुरुषों के इतने अधिकार होते हुए भी स्त्रियों के अपने अधिकार सुरक्षित थे और उन्हीं के नाम पर वंश बोला जाता था।

मैंने उनका प्राचीन विकास जानना चाहा तो कुछ पता नहीं चला। तीसरे दिन मैंने लिओ की प्रिया यूस्टेन से पूछा तो वह तो बोली :

"वह जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य है', जहाँ रहती हैं उस स्थान के पास मीलों के घेरे में खंडहर पड़े है जहाँ बड़े-बड़े स्तंभ तथा चिनाई किये हुए भूंट पड़े हैं। वहाँ कोई नहीं जाता क्योंकि वहाँ आत्मायें आती हैं। वह भयावनी और अभिशप्त जगह है। कहते हैं, हज़ारों साल पहिले वहाँ 'कौयर' लोग रहते थे। शायद हम उन्हीं की बची हुई संतान हैं। वैसे इस द्वीप पर हमारी तरह कोई दस कबीले रहते हैं जिन सबके अलग-अलग 'पिता' हैं। सबके ऊपर 'वह हैं जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य है।' कभी-कभी कबीले आपस में युद्ध भी करते हैं और दर्दनाक तरीके से एक दूसरे का वध करते हैं परन्तु उसी समय रानी की आज्ञा आ जाती है और उठे हाथ नीचे गिर जाते हैं। किसी की मजाल नहीं कि उनकी अवज्ञा कर सके।"

"और यदि कोई विदेशी आक्रमण करे तो?" लिओ ने मूर्खतापूर्ण प्रश्न किया।

यूस्टेन उसके भोलेपन पर रीझ गई। उसने उसको अपने से लिपटा लिया और उसका चुंबन लेती हुई बोली :

"तो मैं उसे यों बाँध लेती हूँ।"

लिओ झेंप गया। फिर वह मेरी ओर देखकर बोली :

"यहाँ बाहर से आदमी आ ही नहीं सकते क्योंकि यहाँ दलदल ही दलदल है। यदि तुम्हारे पास लोग जाकर तुम्हें यहाँ न लाते तो स्वतः तुम यहाँ कभी न आ सकते थे। यहाँ मार्ग अजनबी को मिल ही नहीं सकता।"

"सो तो है," मैंने हामी भरी।

"एक बार," वह फिर बोली: "किसी विदेशी ने सेना लेकर आक्रमण किया था। उससे कोई नहीं लड़ा उसकी आधी सेना बुखार से और बाकी दलदल में फँसकर मर गई।"

बात के सिलसिले में मैंने यह भी उससे जाना कि वह सारे पहाड़ भी प्राचीन कौयर लोगों ने ही अन्दर से तराश कर पोले किये थे। उनके यहाँ कोई लिखित कानून नहीं था परन्तु रीति रिवाज ही प्रचलित थे जिनकी अवज्ञा का दण्ड मृत्यु थी। मैंने पूछा :

"अच्छा यूस्टेन ! यह बताओ कि मृत्यु दण्ड देते किस भाँति हैं ?" तो वह हँसी और बोली :

"शीघ्र ही तुम स्वयं देख लोगे," सुनकर मैं अन्दर तक काँप गया। 'वह जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य था' के बारे में उसकी अपनी धारणा थी, जिसे उसने केवल लिओ को बताया था। उसने कहा था :

"मेरा ख्याल है कि 'वह जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य है' बदलती रहती हैं। एक ही नहीं हैं। वह इतनी सुन्दर हैं कि सारे संसार में उन जैसी स्त्री कोई नहीं है। कहते हैं उनके रूप को प्रत्यक्ष देखकर कोई सहन नहीं कर सकता इसीलिये वह हमेशा एक काला चोगा सिर से पैर तक ओढ़े ही बाहर निकलती है। एमैहैग्गर लोगों के बीच वह कभी तीन-चार वर्ष में एक बार दिखाई देती हैं जब वह न्याय करने दरबार में निकलती हैं। उस समय भी वह ढँके बदन आती हैं। उन्हें आज तक कभी किसी ने नहीं देखा है।"

लिओ ने जब पूछा कि वह बदलती कैसे रहती हैं तो पहले तो उसने वह बात किसी से न कहने की सौगंध ली फिर वह उसे एकांत में ले जाकर बोली :

"वह बहुत सुन्दर तो हैं ही। बस किसी पुरुष को फँसा कर उससे खूब मौज उड़ाती हैं। जब कन्या पैदा हो जाती है तो उस पुरुष को मार कर खत्म कर

देती हैं। कोई देखने तो जाता ही नहीं है। बस जहाँ कन्या जवान हुई, वह रानी बन जाती है और पहली तब तक मर जाती है। मेरा तो यही विचार है···पर किसी से कहना मत·····क्योंकि 'वह' बहुत ही शक्तिशाली हैं। सेना उनके पास नहीं है। परन्तु उनकी अपनी शक्ति विराट् है जिनसे कोई नहीं जीत सकता। उनके पास जितनी सेविकायें और जितने सेवक हैं वह सभी गूँगे या बहरे हैं जो बाहर उनके बारे में कुछ नहीं कह सकते। हम लोगों के लिये सचमुच ही यह एक बहुत बड़ा रहस्य हैं।"

लिओ को उसकी यह बात बिल्कुल नहीं जँची थी, वह तो उस ढक्कन के लेख से उस रानी को मिला कर यह सिद्ध करने पर तुला हुआ था कि वही वह ढाई हजार साल पुरानी स्त्री थी।

जौब की अब वह हालत थी कि न बोलाये बोले न सुझाये सूझे। उसने तो जैसे अपने आपको होनी के सुपुर्द कर दिया था।

मुहम्मद के साथ वैसे तो वे ठीक ही व्यवहार कर रहे थे पर मौका देखकर उसे झिड़कते अवश्य थे। वह बेहद डरा हुआ केवल 'अल्ला-अल्ला!' ही बड़बड़ाया करता था। मैंने उससे जब पूछा तो बोला :

"यह लोग जिन्हें तुम आदमी और औरत समझते हो असल में आदमी ही नहीं हैं। यह लोग शैतान हैं और यह स्थान दोज़ख हैं। यहाँ जादू चलता है और बुरी आत्मायें औरत-मर्द की शक्ल बनाये घूमती रहती हैं।"

क्षण भर को उन जंगलियों को देख कर मेरी भी न जाने क्यों वैसी ही धारणा बन गई।

उसी रात लिओ, यूस्टेन, मैं और जौब आग के पास गुफा में सोने के पहले बैठे थे कि एकाएक यूस्टेन उठी और उसने लिओ के सुनहले बालों को अपनी हथेली से सहलाया। वह अब तक गंभीरता से न जाने क्या सोच रही थी।

फिर वह गाने लगी, मैंने इतना पतला सुरीला कण्ठ आज तक नहीं सुना जिसमें मानो हृदय की पूरी वेदना उँड़ेल दी गई हो। गाने के शब्द थे :

"हे मेरे प्रियतम! तुम्हारी प्रतीक्षा मैं प्रारंभ से ही कर रही हूँ·····

तुम्हारे समान सुन्दर, तुम्हारे समान सुनहले बालों वाला भला और कौन है?

तुम्हारे शरीर का रंग स्वर्ण की भाँति चमकता और चंद्रमा की भाँति स्वच्छ है।
तुम्हारी भुजाएँ कठोर हैं और तुम्हारा सा पौरुष भला और कहाँ हो सकता है?
तुम्हारी आँखें आकाश हैं और उनकी रोशनी तारों का प्रकाश।
हे मेरे प्राणाधार! मैं तो तुम्हें देखते ही तुम पर मर मिटी थी।
तुम कितने अच्छे हो जो तुमने मुझे अपनाया!
मैं तुम पर मर-मर कर फिर मर जाना चाहती हूँ,
मैं तुम्हारे सिर को अपने बालों से छिपा लूँगी·····
कहीं तुम्हारे धूप न लग जाय मेरे प्यारे!
हाय! सुख की घड़ियाँ सदा नहीं रहतीं और बुरे दिन आ गए।
मैं जान रही हूँ प्यारे तुम्हें उसने मुझसे छीन लिया है।
वह मुझसे भी अधिक सुन्दर और बहुत शक्तिशालिनी है।
हाय! मैं अंधकार में छूट गई हूँ; असहाय हूँ!!
तुमने मुड़ कर मुझे ढूँढा है मेरे मालिक!
पर बीच में उसकी नंगी देह आ गई है।

उसकी जवानी सूर्य की भाँति है और तुम उसमें चकाचौंध हो गए हो---और तब·हाय! मेरे प्रियतम हाय! मैं·····मैं·····मैं???"

और एकाएक संगीत रुक गया। हम सब उसे सुनकर उदास हो गए थे। खास कर मैं सोच रहा था कि यह लड़की कितनी बुरी तरह से मेरे लिओ पर मर मिटी है। भगवान खैर करे, तभी अंधकार की ओर उँगली उठा कर वह लिओ से बोली:

"वह देखो।"

हम सबने उस ओर देखा पर कुछ न दिखा पर शायद उसे बहुत कुछ दिखा था क्योंकि वह भय से एक बार चीखी और पछाड़ खाकर हमारे बीच गिर गई। लिओ जो शायद स्वयं भी प्यार करने लग गया था उसके इस प्रकार दुखी होकर बेहोश हो जाने पर चिंतित हो उठा और उसे हवा करने लगा।

थोड़ी देर में उसने आँखें खोली और उठ बैठी। मैं हैरत में था कि इतनी स्वस्थ और तगड़ी स्त्री एक दम बेहोश कैसे हो गई। कौन सी वह अज्ञात शक्ति थी जिसने इसे इस तरह झँझोर डाला?

जब वह ठीक हो गई तो लिओ ने उससे पूछा :

"प्यारी तुम्हें क्या हुआ था ?"

तो वह उससे लिपट गई और अपनी वेदना छिपाने का विफल प्रयत्न करती हुई हँस कर बोली :

"मेरे प्यारे ! वह तो मैंने अपनी जाति की रिवाज के अनुसार तुम्हें एक गीत सुनाया था।"

"तो बेहोश क्यों हो गई और उस अंधेरे में तुझे क्या दिखाई दिया।" लिओ ने उससे हठ किया तो वह बोली :

"कुछ नहीं देखा था मेरे प्राण ! मैं तुम्हें वह सब बता कर डराना नहीं चाहती। फिर है भी वह सब व्यर्थ क्योंकि भविष्य के बारे में भला कोई कैसे कुछ निश्चित रूप से कह सकता है।"

और मैंने देखा उस समय जो प्रेम और दर्द उसकी आँखों में था शायद मैंने और किसी में आज तक नहीं देखा--न सभ्य लोगों में न जगलियों में। कितनी ममता थी उसके नेत्रों में उस समय। वह उठी और उसने लिओ का सिर अपने हाथों में लेकर उसके माथे को चूम लिया जैसे ममतामयी माता ने अपने पुत्र को चूम लिया हो।

लिओ चुप बैठा रहा तो वह फिर बोली परन्तु अबकी बार उसकी आवाज में संयम मानो टूट चुका था। बहुत प्रयत्न करने पर भी वह अपने भीतर की घुटन और रुँआसा स्वर न छिपा सकी थी। बोली :

"मेरे स्वामी ! जब मुझे तुमसे हटा दिया जायगा·····जब रात में तुम हाथ बढ़ाकर मुझे ढूँढोगे और न पाओगे तब मेरी याद कर लिया करना क्योंकि मैंने तुम्हें सचमुच दिल की गहराईयों से चाहा है यद्यपि मैं तुम्हारे पैर धोने लायक भी नहीं हूँ।·····"

फिर स्वर संभाल कर वह थोड़ा हँस कर बोली :

"भावनायें ठीक नहीं होती। आज की रात हमारी है चलो सोने·····कल की किसने जानी है," और वह उससे लता की भाँति लिपटी उसे उठाकर एक ओर ले चली।

उसके जाने पर जौब धीरे से बोला :

"जादूगरनी।"

मुहम्मद ने फिर 'अल्लाह' को याद किया और बड़बड़ाया :

"या अल्लाह ! शैतान से बचा।"

मैं सोच रहा था क्या प्रेम करने के लिये भी सभ्य होना आवश्यक है ?

× × × ×

७

मैं उस पूरी रात बल्कि दूसरे दिन तक यूस्टेन के उस गाने और उसके मर-मिटने वाले प्रेम के बारे में सोचता रहा। रह-रह कर उस संगीत की तानें मेरे कानों में गूँजती रहीं और उसका वह व्यथित, सुन्दर मुख मानों मुझे देखता रहा। आज भोर से ही लिओ और वह घूमने चले गए थे। करीब दस बजे जब जौब, मैं और मुहम्मद बैठे थे हमें बताया गया कि आज रात को हमारी एक दावत होने वाली थी। मुझसे यह बात एक अधेड़ वयस्क स्त्री ने कही थी और क्योंकि वह खाल न पहन कर पीले सूती वस्त्र पहने हुई थी, प्रत्यक्ष था कि वह किसी अधिकार से ही निमंत्रण दे रही थी। मैंने उससे कहा :

"हम लोगों में दावत का महत्व नहीं माना जाता इसलिये हम नहीं चाहते कि व्यर्थ कष्ट उठाया जाय।" मैं चाहता था उन जंगलियों से कम से कम संपर्क हो परन्तु मेरी बात शायद उसे अच्छी नहीं लगी क्योंकि उसने कोई उत्तर नहीं दिया और स्थिर गम्भीर भाव से वह मुझे घूरने लगी। मैंने अधिक बहस करना अनुचित समझा। मुहम्मद अपनी धुन में 'अल्लाह ! अल्लाह !' अब भी कर रहा था। जब उससे मैंने कहा तो वह भयभीत नेत्रों से बोला :

"इनसे बचना कठिन है, या अल्लाह ! बचा।"

मैंने सोचा आज चौथा दिन था जब हम यहाँ आये थे या जब बिलाली 'मेरा गोद का पिता' वहाँ गया था जहाँ 'वह जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य था' रहती थी। कहीं ऐसा न हो कि उसके आने के पहिले ही यहाँ कुछ गड़बड़ हो जाय।

सूरज डूबने के बाद उस दिन जब मैं और जौब गुफा में पहुँचे तो देखा कि आज रोज से कहीं बड़ी आग जल रही थी। हम जाकर एक ओर बैठ गये। उसी समय लिओ और अपनी आदत के अनुसार यूस्टेन उससे लिपटी हुई अन्दर आई। आते ही लिओ तो हमारे पास आ बैठा परन्तु मैंने देखा कि यूस्टेन ने जब उस दावत के बारे में सुना तो एक बार उसका चेहरा धक पड़ गया। उसके सुन्दर मुख पर आतंक छा गया और वह पल भर को मानो जड़वत् हो गई। फिर वह एक दम एड़ी पर घूमी और उसने एक आदमी से न जाने क्या धीमे से पूछा। उसे जो जवाब मिला उससे उसका भय तो जाता रहा परन्तु वह ऐसी दिखाई देने लगी मानों वह उस उत्तर से सन्तुष्ट नहीं थी। मुझे परिस्थिति रहस्यमय जान पड़ी। कल रात भी इसी लड़की को भविष्य के बारे में न जाने क्या दिखा था और आज भी जैसे वह होने वाली बातों को जानती थी। मैंने देखा जौब ने धीरे से अपनी कमर पर हाथ फेरा। उसकी देखा-देखी मैंने भी अपनी पेटी छुई। हम दोनों की पिस्तौलें तैयार थीं।

अब यूस्टेन उस आदमी से हट कर एक और प्रौढ़ व्यक्ति से मानो झगड़ रही थी और बार-बार अपने हाथ और मुद्रा से जता रही थी कि जो कुछ हो रहा था उसके वह बिल्कुल विरुद्ध थी परन्तु फिर मैंने देखा कि वह व्यक्ति जो प्रौढ़ था और ओहदेदार मालूम होता था एकाएक उस पर चीख पड़ा। वह उससे क्रुद्ध हो गया प्रतीत हो रहा था। फिर उसने यूस्टेन का हाथ पकड़ कर अपने और एक और आदमी के बीच आग के पास एक ओर बिठा लिया और उसे चुप रहने का इशारा किया। न जाने क्या सोच कर वह वहीं बैठ गई या उसने वहीं बैठना उचित समझा।

अब सब आग के चारों ओर बैठ चुके थे। पैंतीस पुरुष और केवल दो स्त्रियाँ थीं— एक यूस्टेन और दूसरी वही जौब वाली तीस साल की तगड़ी औरत। पुरुष गम्भीर थे। उनके पीछे उनके लम्बे भाले खड़े थे जिनके फलक ऊपर गुफा में अटके हुए थे। एक आध कपड़ा पहिने थे बाकी सभी चीते की खाल कमर में बाँधे थे।

जौब मुझसे बोला :

"वह देखिये वह चुड़ैल मुहम्मद से कैसे घुल-घुल कर बातें कर रही है। शुक्र है आज मुझे उसने छोड़ दिया। देखिये कम्बख्त उस गरीब से कैसी लिपटी पड़ रही है।"

"तुम्हें ईर्षा हो रही है जौब ?" लिओ ने उसे छेड़ा।

बेचारे जौब ने उसे सच समझा और वह कसमें खाकर सफाई देने लगा। तब मैंने उसे चुप किया। मैंने देखा एक कोने में अल्लाह को पुकारता हुआ मुहम्मद किस तरह उस औरत द्वारा जबर्दस्ती वहाँ लाया गया और कितना कृत्रिम प्रेम-प्रदर्शन उस स्त्री ने उसके प्रति किया। मैं समझ गया कि डरा हुआ मुहम्मद उस स्त्री के साथ लड़खड़ाता हुआ आकर जो आग के पास बैठ गया तो वह उस स्त्री के कारण नहीं बल्कि उन भालों की चमक के कारण था।

मुझे न जाने क्यों वह सब अच्छा नहीं लगा। मैंने अपनी भाषा में जौब और लिओ से कहा :

"पिस्तौलें सँभाल कर रखो।"

"तैयार है", लिओ ने जवाब दिया। ऐसा लग रहा था जैसे जौब ने आज अपना भय बिल्कुल त्याग दिया था। लिओ के पास केवल शिकारी चाकू था। उसकी पिस्तौल हमारे सामानों के साथ रखी। मैंने महसूस किया कि अब इतना समय नहीं था कि लिओ जाकर उसे लाये हम लोग उठे और दीवार के सहारे बीच में लिओ को लेकर जम कर बैठ गए।

तभी मिट्टी के एक बड़े बर्तन में शराब घूमने लगी। हमने भी उसे चखा और स्वाद उसका बुरा नहीं था। यह किसी हिन्दुस्तानी अनाज से नहीं बनी थी बल्कि उस खास अफ्रीका के अनाज से बनाई गई थी जो पेड़ के गुच्छों में लटकता है और जिसे 'मुसलमान' काफिर-धान कह कर पुकारते हैं। जब पात्र मुहम्मद के सामने आया तो एक बार तो उसने मुँह फेर लिया पर जब उसी स्त्री ने हाथ बढ़ाया तो वह झट उसे पी गया।

वह पात्र कुछ अजीब था जिसमें शराब घूमी थी। क्योंकि ऐसे ही कई पात्र ये लोग काम में लेते थे, इसलिये इनके बारे में यहाँ मैं कुछ बता देना चाहता हूँ। यह पात्र निश्चय ही एमैहैग्गर लोगों के नहीं थे। जैसा कि मुझे बाद में

मालूम हुआ यह हजारों साल पुराने थे और कौयर सभ्यता के अवशेष थे जो इन लोगों ने उनकी कब्रों में से निकाल लिये थे। मैं तो यह समझता हूँ कि जब कौयर लोग अपने मृतक शरीरों की ममी बनाते थे तब इन्हीं में उनका रक्त पानी इत्यादि निकालते थे। बाद में वह पात्र उसी मृतक के पास रख दिया जाता था। लिओ का विचार तनिक भिन्न है। वह समझता है कि ममी बनाने के उपरांत इन पात्रों में सुवासित जल रखा जाता था जिसे मृत आत्माऐं आकर पियें। यह सभी नाप के थे। कोई तीन फीट ऊँचा तो कोई छै इंच। इनकी बनावट इतनी सुन्दर होती है और उन पर कढ़े चित्र इतने चित्ताकर्षक होते हैं कि बनाने वाले की प्रशंसा करनी ही पड़ती है।

खैर तो ऐसे ही एक बड़े पात्र में इस समय शराब चल रही थी। सभी खामोश बैठे थे। आग के दोनों तरफ दो लंबे-लंबे लोहे के चीमटे पड़े थे जिनके पिछले हिस्से पर लकड़ी की मूठ थी और आगे से वह आग में लाल हो रहे थे। एक कसाईयों वाला बड़ा थाल था तथा कुछ तेज चाकू। थाल में चार हंडिल लगे थे। मैंने बहुत कुछ समझने का प्रयत्न किया पर कुछ हाथ नहीं आया। नाम दावत का पर यहां तो खाने को कुछ भी नहीं था। यह कैसा धोखा और कैसा ऊधम है। मैं सोच ही रहा था कि आग के दूसरी ओर से हठात् एक व्यक्ति बोला :

"हमारे खाने का मांस कहाँ है ?

जैसे पूर्व निश्चित् योजना थी या जैसे सभी उत्तर पहले से ही सीखे हुए थे, वह सब आग की ओर दाहिना हाथ फैला कर गंभीर समवेत स्वर से बोले :

"मांस आयेगा !"

"बकरा है ?" उसी व्यक्ति ने फिर पूछा।

"बिना सींगों का बकरा है। बकरे से भी उत्तम है हम उसे काटेंगे", उसी प्रकार समवेत स्वर गूँजा। अब की बार सभी कूद कर एक ओर सरक गए थे यहाँ तक कि हर कोई आधा आग का चक्कर दे गया था।

"बैल है ?" फिर वही आदमी बोला।

"हाँ बिना सींगों का बैल है और उससे भी उत्तम है और हम उसे काटेंगे", फिर वही समवेत स्वर, दाहिने हाथ से अग्नि का स्पर्श और आग के चारों ओर घूमना।

और एकदम मैंने देखा वही तगड़ी मोटी औरत मुहम्मद से लिपट गई और उसके गालों को थपथपाने लगी। वह दिखाने को तो उससे क्रीड़ा कर रही थी परन्तु वास्तव में उसका रूप भयानक हो चला था। और वह स्वयं भावावेश में काँप रही थी। भय से मेरे रोम खड़े हो गए। मैंने मुड़कर लिओ की ओर देखा। वह भय से सफेद पड़ रहा था। उस स्त्री का प्यार और उसका स्पर्श साँप की तरह था जो अपने शिकार पर मानो हलाहल विष उंडेल रहा था। मुहम्मद आतंक से जड़वत् हो गया था और उसकी त्वचा सफेद हो गई थी।

तभी वह पहिला व्यक्ति फिर चिल्लाया :

"पकाने के लिये मांस तैयार है ?"

"तैयार है, तैयार है," सब चिल्लाये।

अब स्वर ऊँचा उठ गया था। वह व्यक्ति पतली आवाज में चिल्लाया :

"क्या बर्तन गर्म हो गया है ?"

"लाल है लाल है" उत्तर मिला।

और तभी लिओ अंग्रेजी में चिल्लाया :

'हे भगवान ! चाचा याद है उस ढकने का लेख—यह लोग नवागन्तुकों के सिर पर लाल बर्तन रखते हैं।'

मैंने सुना और मुझे एकदम याद आया परन्तु इससे पहिले कि मैं या लिओ या जौब कुछ कहते या करते, दो तगड़े आदमी उठे जो देखने में ही क्रूर और बदमाश मालूम होते थे, एकदम उठ कर मुहम्मद की ओर लपके उस स्त्री ने जो अब तक उससे काम-क्रीड़ा कर रही थी, झट से अपनी कमर के अंदर से एक पतली रस्सी का फंदा निकाला और उसे उसके में फँसा कर खींचा। उसी समय बगल के एक व्यक्ति ने मुहम्मद की टाँगें पकड़ कर उसे गिरा दिया। औरत उस फंदे को कड़ा करती गई और दो आदमियों ने उसे दबा लिया। इतने में उन दोनों आदमियों ने लंबे चीमटे उठा कर आग को इधर कुरेदा। बड़े-बड़े

बोटों के नीचे से एक वैसा ही मिट्टी का पात्र निकला जो इस समय अग्नि के ही रंग का दहक रहा था। उसे लेकर वह मुहम्मद की ओर चले। उधर मुहम्मद जो अब तक केवल अल्लाह-अल्लाह किया करता था अब आखिरी समय देख कर बाघ की भाँति लड़ रहा था और साथ-साथ उसकी चीख पुकार से गुफा काँपने लग गई थी। उसे पाँच-पाँच आदमी दबा रहे थे पर वह बार-बार छूट रहा था। आखिर उस औरत ने उसके पैर में फंदा डाल कर उसे गि लिया। गर्म पात्र अब उसके सिर के पास पहुँच चुका था।

मेरे लिये अब भय अपनी सीमा लाँघ गया था। मेरा रोम-रोम खड़ा था और यही हाल लिओ और जौब का था। अब मुहम्मद के बाद शायद मेरा ही वार था। मैं अधिक कुछ न सोच सका। कूद कर खड़ा हो गया और मैंने रिवाल्वर कमर से निकाल कर उस औरत की ओर दाग दिया। 'धाँय'.....वह स्त्री धड़ से गिर पड़ी। गोली उसकी पीठ में होकर गर्दन फाड़ कर निकल गई थी। मुझे उसके मरने का आज भी संतोष है क्योंकि वही उस सारे उत्पात की जड़ थी जैसा कि मुझे बाद में पता चला। कम्बख्त बड़ी बुरी औरत थी। जौब ने जब उसे हाथ नहीं धरने दिया था तो उसने प्रतिशोध की यह विधि निकाली और उसने बाकी एमैहैग्गर लोगों को ऐसा करने को उकसाया था।

गोली लगते ही वह गिरी और मर गई। मैंने आश्चर्य से देखा कि मुहम्मद जो अब तक छूटने का उपक्रम करते हुए उछल रहा था एकदम उछला और उस औरत की लाश पर गिर कर मर गया। जाने किस तरह गोली औरत के शरीर से निकल कर उसे भी पार कर गई थी। खतरनाक मौका तो वह था ही पर साथ ही बड़ा हृदयद्रावक भी था क्योंकि वह बेचारा व्यर्थ ही मारा गया था।

सन्नाटा खिंच गया। एमैहैग्गर लोगों ने बारूद से चलने वाला अभी तक कोई हथियार नहीं देखा था। उनकी समझ में ही नहीं आया कि यह क्यों और कहाँ से 'धाँय' हुई, धुँआ निकला और साथ ही साथ वह स्त्री मर गई। दूसरे ही क्षण वह सँभल गए थे। मैंने देखा एक आदमी लिओ की ओर भाला झुकाये निशाना बाँध रहा था। मैं चिल्ला कर गुफा से अंदर की ओर भागा और लिओ और

जौब ने मेरा अनुसरण किया। यदि गुफा के द्वार पर आदमी न होते तो मैं निश्चय ही बाहर भागता पर वहाँ तो वह जैसे पहिले ही से तैयार होकर पँक्ति बाँध कर खड़े थे। मैं एक ही छलाँग में मुहम्मद के ऊपर हो कर अँदर निकल गया और भीतर दूसरे छोर पर एक गज़ भर ऊँचे चबूतरे पर जा चढ़ा। यह भी गुफा की पूरी दीवाल के साथ बना हुआ था पर इसमें मुर्दा लिटाने के लिये गड्ढे नहीं थे। मेरे साथ ही साथ लिओ और जौब भी वहीं आ चढ़े हमारे पीछे क्रुद्ध जंगली एमैहैग्गर चीखते चले आ रहे थे। वह उस चुड़ैल के मरने से पागल हो गए थे और शायद अपने शिकार के भी इस प्रकार बिगाड़ जाने पर। हमने झट निश्चय कर लिया कि मरेंगे तो सही पर बड़े मंहगे मरेंगे। हम पिस्तौल ताने दीवाल की ओर पीठ किये खड़े हो गए और क्षणभर को हमें देख जंगली लोग ठिठक गए। दाहिनी ओर मैं, बाईं ओर जौब और बीच में लिओ उस चबूतरे पर खड़े थे। लिओ के हाथ में बस उसका शिकारी चाकू ही था। मैंने देखा सामने उन जंगलियों का क्रोध 'बुल-डौग' की भाँति मानो दहक रहा था। मैंने दूर पर देखा कि वह बर्तन अब भी दहक रहा था। मैंने मन ही मन दोनों का मिलान किया। उसी समय लिओ मुझसे लिपट कर बोला :

"मेरे पिता से भी अधिक मेरे चाचा! मुझे विदा दो मैंने ही तुम्हें इस आपत्ति में फँसाया था मुझे क्षमा करो।"

मेरा जी भर आया। मैंने दाँतों से होंठ दाबे और कहा :

"भगवान पर भरोसा रक्खो मेरे बेटे! वह जो चाहता है वही होता है," और तभी भीड़ हमारी तरफ बढ़ी। 'धाँय' जौब ने गोली दागी। 'आह' आवाज आई। एक व्यक्ति गिर गया। वह रुके फिर अर्राये। धाँय, धाँय, धाँय, कई लुढ़क गए। जौब ने फिर गोलियाँ चलाईं। अब वह जान पर खेल गए। चीख कर पशुओं की भाँति लपके और मैंने गोली दागी। हमारी रिवाल्वरों से ग्यारह-ग्यारह गोलिया छूटती थीं, वह आते गए, हम मारते गये। हमारी लड़ाई का तरीका जरा गलत रहा। असल में हम घबरा गए थे इसीलिये हम चूक गए। एक चलाता रहता, दूसरा गोलियाँ भर-भर कर रिवाल्वर देता रहता तो शायद हम बहुत देर तक उन जंगलियों से बचे रहते पर हम दोनों ने जो इकट्ठे गोलियाँ चलाईं तो शीघ्र ही वह समाप्त हो गईं। अब दुश्मन सिर पर आ गए

थे। कमाल था उन लोगों में भी जो यह न जानते हुए भी कि हमारी गोली चलाने की शक्ति क्षीण हो गई थी, मरते जा रहे थे फिर भी आगे बढ़े चले आ रहे थे। अब हमने भी अपने चाकू निकाल लिये। एक भारी सा आदमी कूद कर चबूतरे पर चढ़ा। पलक मारते लिओ ने उसके सिर पर वार किया और उसे कंधों तक फाड़ दिया। एक मेरे ऊपर लपका और मैंने भी उसे काट डाला पर जौब निशाना चूक गया। और मैंने देखा कि एक तगड़े से जंगली ने उसे बीच से पकड़ कर नीचे जोर का धक्का दिया। मैंने समझ लिया बेचारा जौब मर गया और मुझे दुगना क्रोध हो आया।

लिओ शेर की तरह लड़ रहा था। उसमें अपार शक्ति और फुर्ती थी। एक-एक चाकू के हाथ में वह तीन-तीन का सफाया कर देता था। एक आदमी ने लपक कर उसका चाकू वाला हाथ दोनों हाथों से पकड़ कर दबाया और बिजली की फुर्ती से लिओ ने हाथ से उनकी ठोड़ी में ऐसा घूसा मारा कि वह वहीं ढेर हो गया। मुझमें शुरू से ही परमात्मा ने अमानुषिक बल दे रखा था, इस समय वह काम आ रहा था। दो आदमी एक साथ मेरे ऊपर कूदे और मैंने दोनों को पलक मारते काट डाला। दो और कूदे पर अबकी बार एक तीसरा मेरे पीछे भी आ गया और उसने मेरा चाकू हाथ पर भाला मार कर गिरा दिया। मैंने मुड़ कर उसके सिर पर प्रबल प्रहार मुष्टि से किया, वह मर गया। मैंने उसका भाला छीन कर घुमाया। थोड़ी देर में मैदान साफ हो गया। लिओ को उन्होंने चारों ओर से घेर लिया था और वह घिरे हुए शेर की भाँति लड़ रहा था। मैं उस भीड़ में घुस गया। भाला अब व्यर्थ था। उन्होंने अब लिओ का चाकू छीन लिया था। वह लात-घूँसों से ही लड़ रहा था। तभी तीन आदमियों ने उसे दबाया पर वह नीचे से चीते की भाँति निकल गया और उसने एक एमैहैगर की लाश उठा कर ऊपर हवा में घुमाई और उसे उस भीड़ पर फेंक दिया। उसकी चपेट से पाँच-छै आदमी गिर गए। तभी दो और आदमियों ने मेरे ऊपर आक्रमण किया। मैं उन्हें लेकर गिर गया और तब तक उनको उन्हें दबाता हुआ पड़ा रहा जब तक वे दोनों न मर गए। परन्तु अब मेरा भी अंत आ गया था क्योंकि मैं बेहद थक गया था। मेरी शक्ति जवाब दे गई थी, उधर वे दुष्ट मेरे लिओ को उठाये लिये जा रहे थे। उन्होंने उसे उस शेर को आखिर

गिरा ही लिया। मैंने समझ लिया अब अंत आ गया था। मैं आँखें मींचे पड़ा था और पड़ा-पड़ा सुन रहा था। मैं अर्ध तंद्रा में पड़ा था। उन्होंने आग के पास जाकर लिओ को आग पर डालना चाहा पर एक स्त्री कंठ ने बुरी तरह उनका विरोध किया। तब उनमें से एक बोला :

"भाला मारो इस गोरे की बगल में।"

"मारो-मारो," सभी चीखे।

"नहीं! नहीं," पतले कंठ से स्त्री चिल्लाई। अब मुझे लगा वह यूस्टेन थी। मैंने तनिक आँखें खोलीं। देखा वह लिओ के शरीर पर लेटी उसे बचा रही थी।

"इसे खींच लो," एक चिल्लाया। और फिर वह उसे खींचने लगे पर वह तो उससे जोंक की तरह चिपट गई थी।

"मारो भाला दोनों में होकर," एक ने उकता कर कहा :

"बड़ी प्रेम करनी वाली आई हरामजादी!"

और मैंने आँखें मूँद लीं। भगवान को याद किया। अब अंत आ गया था।.....

तभी.....

मानो बादल गरजा। पहाड़ों में वह गंभीर स्वर गूँज उठा :

"सावधान! हाथ रोक दो!!"

मैंने गर्दन उठाई। देखा गुफा के मुहाने पर गंभीर बिलाली खड़ा था। मेरा सिर लुढ़क गया और मैं बेहोश हो गया।

× × × ×

८

जब मेरी आँखें खुली मैंने देखा कि मैं उसी आग के एक ओर एक चटाई पर पड़ा था जिसके चारों ओर हम पहली रात वह विचित्र दावत खाने बैठे थे। मेरे बगल में लिओ अब भी बेहोश पड़ा था। मैंने देखा कि वह ऊँची स्वस्थ युवती यूस्टेन अब भी उस पर झुकी हुई उसकी बगल में लगे घाव को ठंडे पानी से

धो रही थी। मैंने दूसरी ओर गर्दन घुमाई और मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब मैंने देखा कि जिसे मैं मरा हुआ समझता था वही जौब खड़ा हुआ कुछ-कुछ काँप रहा था। उसके सिवा खुरसाटों के और कोई चोट नहीं थी, मेरा अङ्ग-प्रत्यङ्ग टूट रहा था और जिस्म कड़ा पड़ गया था। मैंने अग्नि के दूसरी ओर देखा। वहाँ वे लोग पड़े थे जिन्हें हमने मार डाला था। मैंने गिने, वे कोई तीस थे, पास ही वह मोटी स्त्री और मुहम्मद लिपटे पड़े थे। मुझे उस जीर्णावस्था में भी गर्व का अनुभव हुआ कि हम तीन अंग्रेजों ने तीस जंगलियों को द्वंद युद्ध में मार डाला था। एमैहैग्गर लोग जो मरे नहीं थे, उन लाशों को दो-दो कर उठा रहे थे। मैंने स्पष्ट देखा वे कितने असंतुष्ट और साथ ही साथ भय-भीत थे। गुफा के द्वार पर वही खड़ा था जिसने हमें बचाया था। मेरा 'मान्य पिता' बिलाली लंबी दाढ़ी लटकाये उस समय भी भव्य लग रहा था। वह ऐसे देख रहा था जैसे कुछ हुआ ही न हो। उसने मुझे जगा हुआ देख लिया और मेरे पास आया। क्षण भर मुझे देखता रहा, फिर बोला :

"मेरे बेटे! अब कैसे हो? क्या अधिक पीड़ा तो नहीं होती।" उस वृद्ध की सहानुभूति से मेरा मन गद्‌गद् हो गया और मेरी आँखों से अश्रु बह आये। मैं बोला :

"मेरे आदरणीय पिता! मेरा शरीर ऐंठ रहा है। मुझे यही नहीं अनुभव होता कि मैं कैसा हूँ?"

उसने सुना और धीरे से सिर हिला कर बोला :

"शेर के भाला बुरा लगा है, पर अंदर कुछ कटा नहीं है। वह जल्दी ही ठीक हो जायगा।"

लिओ को वह 'शेर' कहा करता था। मैंने फिर कहा :

"हे पिता! तुम धन्य हो जो समय पर आ गए, अन्यथा हम सब वहाँ पहुँच गए होते जहाँ से कोई अच्छा होकर नहीं लौटता। तुम्हारे इन आदमियों ने हमें भी शायद हमारे नौकर मुहम्मद की ही तरह मार दिया होता।"

वृद्ध ने दाँत पीसे, वह मानो क्रुद्ध हो उठा था। बोला :

"मेरे बेटे! घबराओ नहीं। इन दुष्टों को इसका ऐसा दंड मिलेगा कि उसे सुन कर लोगों की हड्डियाँ काँप उठेंगीं। ये सब दंडित होने के लिये वहाँ

जायँगे जहाँ वह 'जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य है' रहती हैं।" फिर वह मुहम्मद की ओर उँगली उठा कर बोला :

"इसकी मृत्यु तो बहुत ही सुविधाजनक हुई है। अब देखना कि इन दुष्टों को किस प्रकार तड़पा-तड़पा कर मारा जाता है। पर यह सब हुआ कैसे मेरे पुत्र? मुझे सब विस्तारपूर्वक बताओ।" फिर दाढ़ी पर हाथ फेर कर बोला :

"पर वाह रे जवानों! खूब लड़ते हो तुम, शेर तो कमाल का योद्धा है और तुम में भीम शक्ति है। तीन आदमियों ने तीस मारे वाह !!"

तब मैंने उसे कम से कम शब्दों में वह सारी बातें बता दीं।

सुन कर वह बोला :

"तो यह बात थी। यहाँ एक रिवाज है कि यदि कोई अजनबी आता है तो उसके सिर पर गर्म बर्तन रख कर उसे मार कर लोग खा लिया करते हैं।"

"यह तो आतिथ्य सत्कार का बिल्कुल उल्टा है। हमारे यहाँ हम अपने अतिथि का सत्कार करते हैं और उसे भोजन देते हैं। यहाँ तुम उसे ही मार कर खा जाते हो!"

"यह रिवाज है," उसने बिना सोचे उत्तर दिया। फिर बोला : "वैसे मुझे यह पसन्द नहीं है।" फिर थोड़ी देर चुप रहा और बाद में न जाने क्या सोच कर बोला :

"मुझे ऐसा मांस तनिक भी नहीं भाता क्योंकि यात्री अधिकतर बीमार होते हैं और जल-कौए खा कर ही आते हैं जिनके कारण उनमें एक खास बू हो जाती है।·····तुमने ठीक किया जो उस औरत को मार दिया क्योंकि उसी ने बाकी सबों को मुहम्मद को मार कर खा जाने को उकसाया था। 'वह जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य है' उन्होंने सिर्फ तुम तीनों के बारे में तो कहला भेजा था पर इसके बारे में कोई आज्ञा नहीं आई थी, सो इन्होंने सोचा लाओ इसे मार खायँ·····पर खैर अब जब इन्हें वह दंड देंगी (इतना कह कर बिलाली स्वयं काँप गया) तो·····" वह आगे न कह सका, फिर सोच कर बोला :

"वह अच्छे रहे जो तुम्हारे हाथों मारे गए क्योंकि जिन्हें अब मरना होगा उनकी तो मैं क्या कहूँ। सचमुच उस मरने से बुरा और कुछ नहीं है। 'वह

जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य है' उनकी आज्ञा की अवहेलना·····" और वह एकदम चुप हो गया।

मैंने कराह कर कहा : "पिता पानी !"

उसने स्वयं मुझे पानी पिलाया। तत्पश्चात् वह फिर कहने लगा :

"खूब लड़ते हो तुम लोग वाह !! तुम्हारी वीरता ने तो मुझे तुम्हारा और शेर का मित्र बना दिया है। मुझे वीर बहुत पसंद है। अकेले शेर ने कोई ग्यारह आदमी मार डाले और तुम सचमुच बनमानुष हो। लम्बे हाथ ! घने बाल ! वाह रे मेरे बनमानुष ! तुम गज़ब की शक्ति रखते हो। जानते हो तुमने उन दो आदमियों की हड्डियाँ ऐसी चूर कर डाली थीं जैसे वह मनुष्य न होकर चिड़िया के बच्चे हों ! पर हाँ एक बात मेरी समझ में नहीं आई। तुमने कई आदमियों के शरीर में छेद कर दिये। वह भला कैसे किये ? और लोग कहते हैं उस समय बड़ा धड़ाका भी होता था और धुआँ भी निकलता था।"

मैंने तब उसे बारूद के बारे में कुछ बताया जिसे वह कुछ नहीं समझा। मैं बुरी तरह थका हुआ था और निश्चय ही कभी न बोलता यदि मुझे उस परम शक्तिशाली व्यक्ति के रुष्ट हो जाने का भय न होता। वह बोला :

"इनमें से एक को मार कर दिखाओ तो ! एक कम हो जायगा तो कोई नहीं पूछेगा और फिर प्रतिहिंसा भी शीघ्र हो जायगी।"

परन्तु जब मैंने उससे कहा कि हम लोग इस तरह ठंडे दिल से खून नहीं करते और कि ऊपर भगवान सबको देखता है, तो वह बड़े आश्चर्य से मुझे देखने लगा क्योंकि उसने कभी ऐसी बातें सुनी ही न थी। उसको खुश करने के लिये जब मैंने कहा :

"मैं ठीक होकर शिकार करते समय तुम्हें दिखाऊँगा," तो वह ऐसा प्रसन्न हो गया जैसे बच्चे को नया खिलौना मिल जाने की आशा पर होता है।

लिओ थोड़ी ब्राण्डी पीकर कुछ गर्माया और उसने आँखें खोलीं। वह दर्द के मारे कराहने लगा। हम लोगों ने उसे उठाकर एक नर्म शैया पर लिटा दिया। यूस्टेन अब भी उसके साथ छाया की भाँति लगी हुई थी। उठाते समय एक तरफ से उसी ने लिओ को छाती से लगा कर उठाया था। मेरे हृदय में उस लड़की के प्रति श्रद्धा हो गई थी। यदि इंगलैंड होता तो मैं निश्चय उसे चूम

कर अपना पितृव्य प्रेम प्रकट करता परन्तु क्योंकि वह जवान थी और कहीं उल्टा अर्थ न समझ बैठे इसलिये मैंने वैसा नहीं किया।

तत्पश्चात् कुटा-पिटा और खुरसाटों से परिपूर्ण मैं अपने उसी कमरे (गुफा) में चला गया जहाँ कंबल बिछा कर उसी मुर्दे रखने के पत्थर पर न जाने कब सो गया। कम से कम अब मुझे जीवित रहने की तो आशा थी। मैंने न जाने क्या-क्या भयानक स्वप्न देखे और न जाने कितनी बार भय से पसीने-पसीने हो गया, यह सब अब मुझे याद नहीं है। एक बात अवश्य भयानक हुई। एक सुन्दरी स्त्री जिसके गोरे रंग और जिसका लावण्य मैं लिखकर वर्णन नहीं कर सकता मेरे सामने आई। उसके हाथ फैले हुए थे और वह नितात नग्न थी।

उसने मेरे सामने आकर हाथ नीचे गिरा दिये और हे भगवान अब वह एक वीभत्स नर कंकाल हो गई। बिना होंठ के दाँतों को फाड़ कर वह अट्ट-हास करने लगी और जब मैं भय से थर-थर काँपने लगा तो उसने हाथ फिर ऊपर उठा लिये। अब वह फिर उसी प्रकार कमनीय और यौवन से पूर्ण हो गई। वह विचित्र स्वर से कभी हाथ नीचे गिरा कर, कभी उठाकर गीत गा रही थी। उसका कुछ-कुछ अर्थ इस प्रकार था :

"जो जीवित है मृत्यु को जानता है
जो मर चुका वह फिर कभी नहीं मरेगा
ज्योतिर्मयी आत्मा और प्राण के कालचक्र में
न जीवन है न मृत्यु
अरे ! सभी चीज़ें शाश्वत हैं, शाश्वत हैं
केवल कुछ समय कोई सो जाता है और भुला दिया जाता है।"

जब मैं जागा उस समय भोर हो चुकी थी। मैं पड़ा रहा। मेरा शरीर अब भी अकड़ रहा था। करीब सात बजे जौब बुरी तरह लँगड़ाता हुआ आया। उसने कहा लिओ अब बेहतर था। वह रात को खूब सोया था। मैं फिर भी नहीं उठा। करीब नौ बजे बिलाली आया। उसने देखा मैं आँखें मींचे पड़ा था। मैं फिर भी जान-बूझकर चुप ही पड़ा रहा। उस समय भी वह भव्य लग रहा था, उसका ऊँचा शरीर जो गुफा की छत तक पहुँच रहा था, थोड़ा मेरे ऊपर झुका फिर वह वापस जाने लगा। जाते-जाते मैंने आँख की कोर से उसकी लम्बी दाढ़ी देखी जो नाभि

तक लटक रही थी। हिम के समान श्वेत वह इतनी सुन्दर थी कि निश्चय ही लंदन का कोई भी नाई उसे अपनी दुकान में रखकर नुमायश लगा सकता था। फिर बड़बड़ाया :

"इतना बदसूरत और इसका साथी इतना सुन्दर! बिल्कुल बनमानुष है। पर आदमी हीरा है। बड़ा बहादुर, बड़ा दिलावर। वाह! क्या उम्र मेरी और आश्चर्य कि मैंने इस उम्र में इसे पसंद किया। स्त्री तो निश्चय ही धोखा है। है तो यही है मित्रता के योग्य, पर है बनमानुष।"

वह गुफा के बाहर निकल ही गया था कि मैंने उसे पुकारा :

"पिता कहाँ जा रहे हो·····आओ।"

वह वापस आकर बोला :

"मैंने समझा तुम सो रहे हो। मैं यह कहने आया था कि वह जिन्होंने तुम्हें तंग किया था अब वहाँ भेज दिये गए हैं जहाँ वह 'जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य है' रहती हैं। उन्होंने तुम्हें भी फौरन बुलाया है, परन्तु देखता हूँ अभी तुम नहीं जा सकते।" और उसका उठा हुआ स्वर धीमा पड़ गया।

"हाँ पिता अभी नहीं," मैंने कराहकर उत्तर दिया। फिर मौका अच्छा देख कर मैंने कहा :

"यह स्थान मुझे मार डालेगा। यहाँ मेरा दम घुटता है। मुझे यहाँ से उजाले में ले चलो मेरे पिता।"

"ठीक कहते हो मेरे बनमानुष, ठीक कहते हो," वह बोला :

"यह स्थान अच्छा नहीं है। मैं जब पहले-पहल यहाँ आया था इसी पत्थर पर जहाँ तुम लेटे हो एक अत्यंत सुन्दर स्त्री का शव पड़ा हुआ था। वह कितनी सुन्दर थी यह मैं तुमसे कैसे कहूँ! आह! हिम के समान श्वेत और लावण्य से परिपूर्ण थी वह! मैं रोज रात को दीप लेकर यहाँ आया करता और घंटों बैठ कर उसे देखा करता। वह बिल्कुल ठंडी थी और मैं यही समझता कि न जाने वह कब उठ बैठेगी। उसके सुन्दर केश पीले थे और पैर तक लटकते थे। वैसे कौयर में अब भी सैकड़ों वैसी ही रखी हैं पर न जाने मैं उससे क्यों इतना आकर्षित हो गया था। आह! कितनी रात मैंने यहाँ उसे देखते बिताई थी।

उसे देखकर मेरे हृदय में प्रश्न उठते, जाने किस भाग्यवान की वह स्त्री रही होगी, कितने ठाठ रहे होंगे इसके जब यह जिंदा रही होगी···नहीं, नहीं, मेरे बनमानुष हँसो मत। मैं उस समय छोटा ही था। मैं समझता था कि उसके पास बैठ कर मैं मृतकों का ज्ञान सिंचित कर रहा था। मैं उन दिनों बिल्कुल बदल गया था। मेरी माँ एक बहुत ही चतुर और बुद्धिमान स्त्री थी। उसने मेरा हाल तुरंत जान लिया। एक दिन वह मेरे पीछे-पीछे यहीं आगई और जब मैं झुक कर उसे देख कर प्रेम से विभोर हो रहा था कि वह गुस्से से भभभभाती अंदर आई और उसने उस लाश को दीवाल के साथ खड़ा कर दिया और दीप से उसमें आग लगा दी, मुझे उसी दिन पता चला कि यह लाशें कितनी जल्दी और लाख की भाँति चटचटाकर जलती हैं। मेरे देखते ही देखते वह भक् से जल गई·····

वह देखो दीवाल पर अब भी उसका धुँआ लगा हुआ है।"

मैंने देखा धुँआ अब भी मौजूद था। उसकी बात सुन कर मैं स्तब्ध हो उठा। मैंने भी तो स्वप्न में वैसी ही स्त्री देखी थी जो गा-गाकर जीवन मृत्यु के बारे में मुझे न जाने क्या-क्या बता रही थी। तो क्या वह अब भी उस गुफा में मँडरा रही थी। तभी वह बोला :

"वह पूरी जल गई। उसका एक पैर बचा था और वह भी जल जाता पर मैंने उसे झट चाकू से काट डाला। वह मैंने यहीं इसी चबूतरे के नीचे रख दिया था शायद अब भी हो।"

और वह नीचे का एक पत्थर हटा कर उसे ढूँढ़ने लगा। मैंने आश्चर्य से देखा कि उसने धूल-मिट्टी के नीचे से कुछ निकाला। उसमें एक चूहा भी मर कर सूख गया था। एक कपड़े में कुछ बंधा निकला। कपड़ा उसने फाड़ डाला और एक स्त्री का गोरा सुन्दर पैर निकल आया—इतनी अच्छी हालत में था जैसे जीवित स्त्री का हो—मैं स्तब्ध रह गया। कमाल था उन लोगों का जिन्होंने जाने कितने हजारों साल पहले उसे वहाँ रखा था। मैं सोच में पड़ गया। कैसी होगी यह स्त्री ? कैसे ठाठ होंगे इसके और कितने लोग इसके पीछे आपस में मर मिटे होंगे ? यह किस दर्बार को सुशोभित करती रही होगी ? और मेरे सामने उसके बाल्यकाल का पैर फिर उस पूर्ण तरुणी का पैर नाचते दिखने लगे। आह किस राजा ने या किस सर्दार ने उसे चूमा होगा ?

बिलाली चला गया था। मैंने वह पैर कपड़े में लपेट कर अपने थैले में रख लिया। मैने सोचा यदि कभी बच कर कैम्ब्रिज पहुँच गया तो दुनिया को दिखाऊँगा वह प्राचीन काल का तोहफा जिसे देख कर उनकी आँखें फटी की फटी रह जायँगी।

जब मै बाहर गया तो मैंने देखा कि लिओ यूस्टेन के सहारे उठ कर बैठा कुछ खा रहा था। वह अब पहिले से बहुत अच्छा था। मैं भी खाने बैठ गया।

तीन दिन और बीत गए और बिलाली कौयर जाने के लिये बार-बार कहने लगा। उसे भय था कि कहीं 'वह जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य था' क्रुद्ध न हो जाँय कि उनकी आज्ञा में इतनी देरी क्यों हुई। अब लिओ भी स्वस्थ हो गया था। आखिर मैंने दूसरे दिन चलना मंजूर कर लिया।

गुफा के सामने पाँच पालकियाँ रखी थीं। उन्हें उठाने वाले तीन कहार और पचास एमैहैग्गर सैनिक साथ जाने को तैयार खड़े थे। हमारे साथ बिलाली भी जाने वाला था और यह हमारे लिये सबसे बड़ा सहारा था। पर पाँचवीं पालकी मेरी समझ में नहीं आया किसके लिये थी। मैंने बिलाली से पूछा :

"क्या यूस्टेन भी चलेगी ?"

तो विचित्र मुद्रा बनाकर कहा :

"अगर वह चाहे तो। हम लोग स्त्रियों की किसी इच्छा को मना नहीं करते। हम उनके प्रति आदर और श्रद्धाभाव रखते हैं क्योंकि वे सृजन भी करती हैं, परन्तु जब कोई स्त्री सीमा को लाँघ जाती है तब....."

मैं बीच में ही पूछ उठा : "तब ?"

"तब हम उसे मार डालते हैं। हर दूसरी पीढ़ी में ऐसा होता आया है कि स्त्रियों को शिक्षा देने के लिये हमें उन्हें मारना पड़ा है। तीन वर्ष हुए मेरी स्त्री भी मार डाली गई थी क्योंकि वह सबके लिये असह्य हो उठी थी।"

सुनकर मैंने उससे कहा :

"पिता तुम बड़े राजनीतिज्ञ और बड़े ओहदे वाले भी हो पर तुमने अपनी जिम्मेदारी बहुत कम कर रखी है।"

वह इसे सुन कर चक्कर में पड़ गया परन्तु जरा सोचने के बाद हँस कर बोला :

"हाँ हमारे यहाँ कोई वृद्धा जीवित नहीं है क्योंकि वे सभी असह्य हो गई थीं। यह उनकी खुद की करतूत थी।"

फिर वह यूस्टेन के बारे में कहने लगा :

यह (लिओ) शेर की स्त्री हो गई है और उसे बहुत चाहती है। तुमने देखा था यह उसके लिये मरने तक को तैयार हो गई थी। विवाहिता स्त्री अपने पति के साथ चाहे जहाँ जा सकती है पर यदि.....", फिर वह थोड़ी देर चुप रहा और फिर सोच कर बोला :

"मेरे बनमानुष पर यदि 'वह जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य है' इसे नहीं रखना चाहें तो तब तो इसे शेर को छोड़ना ही होगा।"

"और अगर यह छोड़ने से इन्कार कर दे ?" मैंने पूछा।

"और अगर तूफान पेड़ से कहे झुक और पेड़ न झुके तब ?" उसने कंधे झटका कर उत्तर दिया।

मैं चुप हो गया। आगे भला क्या गुंजायश थी। बिलाली अपनी पालकी में बैठ चुका था। मैं भी अपनी पालकी में चढ़ गया।

दो घंटे बाद हमारा काफिला उस कटोरेनुमा मैदान को पार कर ऊपर चढ़ चुका था। थोड़ी दूर और जाने पर ढाल शुरू हो गया। यह करीब दस मील तक फैला हुआ था और बड़ा सुन्दर लग रहा था। दूर-दूर तक हरियाली फैल रही थी और यहाँ-वहाँ ऊँचे-ऊँचे पेड़ खड़े थे। उस ढाल पर हमारे कहार हमें तेजी के साथ लेकर उतर रहे थे। मैं कल्पना कर रहा था कि कहीं मैं जादू के देश में तो नहीं पहुँच गया था। आगे चल कर काँटेदार झाड़ियाँ मिलीं जिनसे बच कर हमारे कहार टेढ़े-मेढ़े होकर निकल रहे थे। अब इन्होंने अपना वही मनहूस गाना शुरू कर दिया था। मैं ऊँघने लगा। जब मेरी आँख खुली तो उस लंबे ढलुआ मैदान को वे पार कर गए थे और एक बार फिर दलदल में घुस गये थे। मुझे आश्चर्य हो रहा था कि उसमें होकर वे हमें ले कैसे जा रहे थे। आगे-आगे दो आदमी लम्बी बल्लियाँ लेकर चल रहे थे और उसे पानी में डुबो कर मार्ग दिखाते जाते थे। परिचित मार्ग को भी ये लोग क्यों देखते थे इसका कारण मुझे बिलाली से पूछने पर ज्ञात हुआ। उसने कहा कि यहाँ भूमि की तासीर जल के अन्दर ही अन्दर बदलती रहती है, जो सतह आज

चलने लायक होती है वहीं एक मास के उपरांत प्राण लेवा कीचड़ बन जाती है अतएव पहले उसे देख लेना पड़ता है। स्थान-स्थान पर चिड़ियों का संगीत सुनते हुए हम मील पर मील चलते हुए सायंकाल एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जो पानी से ऊँचा था, वहीं हमने शाम का पड़ाव डाला। जमीन पर कम्बल बिछाकर हम लेट गए और बीच में आग जला ली गई। पानी सड़ने की तेज बू आ रही थी और हमने उसी वातावरण में खा-पीकर तम्बाकू पी। लिओ को तेज बुखार चढ़ आया था। कुनीन की मात्रा हम सभी ने और अधिक ली। यूस्टेन लिओ का शरीर दबा रही थी। वह उसकी बीमारी से शायद मुझसे भी अधिक चिंतित थी। जौब भी लिओ की बीमारी से काफी चिन्तित था। मैं इतना अधिक थक गया था कि एक बार तो गिरते ही सो गया परन्तु उन मच्छरों ने जो वहाँ बुरी तरह भनभना रहे थे मुझे शीघ्र जगा दिया। उन्हें मच्छर न कह कर डाँस कहना अधिक ठीक रहेगा। जहाँ काटते थे खून निकाल लेते थे और मेरा खुजाते-खुजाते बुरा हाल था। शाम को जो ऊमस और गर्मी थी, रात को ओस भरी ठंडी रात बन गई और मैंने कंबल सिर पर तान कर फिर सोने की कोशिश की। परन्तु नींद न आई। आसमान में अगणित तारे खिले हुए थे। उन्हें देख कर मुझे एक विचित्र शांति और साथ ही साथ कौतूहल हुआ। यह वही नभमंडल और तारे हैं जो यहाँ हजारों साल पहिले भी चमका करते थे। कितनी पुरानी है यह सृष्टि और यह दुनिया और कितने अकिंचन हैं हम और कितना क्षणिक है हमारा जीवन! इसी पृथ्वी पर कितने-कितने पराक्रमी शासक रहे हैं और जाने कितने और आवेंगे और सब एक-एक कर मृत्यु की चपेट में भुला दिये जायँगे परन्तु यह पृथ्वी, यह आकाश, यह झिलमिलाते हुए तारे तब भी रहेंगे। फिर मुझे हठात् वह पुराना ढक्कन याद आ गया। उसकी काफी बातें अभी तक सही निकली थीं। तो क्या सचमुच ही यहाँ ऐसी स्त्री रहती हैं जो ढाई हजार साल से जीवित थी! मेरी बुद्धि ने इस बात को मानना स्वीकार नहीं किया। तभी मुझे बिलाली की बात याद आ गई।

'क्या तुम्हारे देश में ऐसा कोई नहीं है जो बिना देखे जान ले और बिना मरे रह ले?'

बिलाली मूर्ख तो नहीं था। बुद्धिमान मालूम होता था। कैसे थे वे पुराने लोग भी जो अपने मुर्दों की ममी बना कर रखते थे। मिश्र की ममी की तो खाल काली पड़ जाती थी पर यहाँ ऐसी ममी हैं जो बिलकुल जीवित के समान हैं··· मुझे मालूम नहीं मैं जाने कब तक यह सोचता रहा। जब भोर हुई तो बिलाली ने मुझे जगा कर कहा :

"तैयार हो जाओ क्योंकि अभी मार्ग काफी चलना है।"

लिओ की तबियत रात से भी ज्यादा खराब थी। मैंने बिलाली से कहा तो वह बोला :

"यहाँ रह कर तो वह निश्चय ही मर जायगा। इससे अच्छा तो यह है कि वहीं चले क्योंकि वहाँ इलाज के प्रबंध हो सकते हैं।"

'यह कंबख्त जंगली भला क्या इलाज करेंगे', मैंने सोचा पर और हो भी क्या सकता था।

मार्ग में और कोई घटना सिवा एक के कुछ नहीं हुई। जो घटना हुई वह काफी खतरनाक थी।

जब हम एक दलदल से निकल कर दूसरे जल-मार्ग में घुसने लगे, उस समय बिलाली की पालकी सब से आगे थी, मैं न जाने क्या सोचे बैठा था। एकाएक आगे तरफ शोर हुआ, लोग ऐसे चिल्लाये जैसे कोई भारी विपत्ति आ गई थी। मैं पालकी से कूद कर आगे आया। यहाँ से उस पार एक लकड़ी के पुल नुमा पड़े हुए बड़े वृक्ष का सहारा लेकर जाना पड़ता था। मैंने देखा बिलाली वहाँ नहीं था। मैंने घबरा कर इधर-उधर देखा तो सामने कपड़ों में लिपटा कुछ पानी पर डुबकी लगा रहा था। हुआ यह था, जो मुझे बाद में मालूम हुआ, कि जब वे लोग पानी के सहारे पहुँचे तो आगे पानी की गहराई नापने वाले ने जो बल्ली से जल नापा तो उसका पैर फिसल गया। वह बुरी तरह गिरा और उसकी बल्ली उससे छूट गई। गिरने का सहारा तिनका, उसने गिरते-गिरते पालकी पर हाथ मारा। हाथ वहाँ तो लगा नहीं, बिलाली के चोगे पर लगा। बिलाली उस समय ऊँघ रहा था। झटके के साथ बाहर लुढ़क आया और

उसके साथ ही पालकी की सारी बिछावन भी उस पर आ पड़ी। पानी में जब वह गिरा तो कपड़ों में उलझ गया।

मैंने देखा वह पानी में उन कपड़ों से छूटने का भीम प्रयत्न कर रहा था।

"वह रहा हमारा पिता,·····वह रहा।" वे लोग उसे दिखा दिखाकर कहने लगे परन्तु उनमें से एक भी उसे बचाने नहीं कूदा। मुझे क्रोध हो आया।

"हट जाओ·····", कह कर मैंने दो को एक ओर ढकेला और दौड़ कर छलाँग भर कर जल में कूद गया।

मैंने झट जाकर उसे पकड़ लिया और उसे उन कपड़ों से छोड़ा दिया, बाकी काम आसान था क्योंकि बिलाली बुद्धिमान व्यक्ति था। जब मैं उसे हाथ पकड़ा कर लाने लगा तो वह चुपचाप बिना आपत्ति किये खिंचा चला आया वह उन अनाड़ियों में नहीं था जो पानी में बचाने वाले को ही पकड़ लेते हैं, जब मैं उसे लेकर पानी से बाहर निकला उसकी भव्य दाढ़ी पानी में भींगकर सुत गई थी। वह ऐसी लगती थी जैसे किसी चीन के आदमी की लम्बी चुटिया हो। उसका सारा शरीर और सिर काई से हरा हो गया था। वह विचित्र लग रहा था। बाहर आकर वह एमैहैगर लोगों से बोला :

"नापाक कुत्तों! तुम सब किनारे पर खड़े-खड़े देखते रहे और तुमने अपने 'पिता' को मरने को छोड़ दिया। अगर यह परदेशी यहाँ न होता तो मैं निश्चय ही मर गया था। अच्छा जलील लोगों मुझे तुम्हारी यह हरकत याद रहेगी। बचना मुझसे।" उसने यह सब अधर्मियों की आँखें चीर करके ठंडे स्वर में कहा था। मैंने देखा सुनने वाले मन ही मन क्रुद्ध थे परन्तु प्रत्यक्ष निर्विकार बनने का प्रयत्न कर रहे थे।

फिर बिलाली जिसे जौब 'बिली गोट' (बकरा) या केवल 'बिली' कहा करता था मुझसे बोला :

"तुम, मेरे बनमानुष, आदमी नहीं, देवता हो। तुम्हारे जैसा बहादुर और दिलदार आदमी मेरा दोस्त होने लायक है। तुम मेरे परम मित्र हो। तुमने आज मेरी जान बचाई है। मैं याद रखूँगा और किसी दिन तुम्हारी जान बचा कर प्रतिकार करूँगा।" और उसने मुझे हृदय से लगा लिया।

वृद्ध ने तत्पश्चात् अपने को खूब साफ किया और उसके बाद हमारी यात्रा फिर शुरू हो गई। वह आदमी जो गिर गया था हमारे साथ अब नहीं था क्योंकि वह तो मर चुका था। उसकी लाश का भी हमें पता नहीं लगा। और उसके मर जाने का मानो किसी को अफसोस भी न था।

× × × ×

६

दूसरे दिन तीसरे पहर हम उस मनहूस दलदल से बाहर निकले, अब हम चढ़ाव पर पहुँच गये थे। भूमि आगे ऐसे उठ रही थी मानो लहर पर लहर उठ रही हो। यहीं पहिले चढ़ाव के उतार पर हम रात को विश्राम करने ठहर गये। लिओ की तबियत खतरनाक थी। वह बुखार के साथ-साथ अब बुरी तरह कै कर रहा था। रात भर वह ऐसा ही रहा। मैं उस सारी रात जागता रहा और यूस्टेन के साथ लिओ की सेवा सुश्रूषा करता रहा। परन्तु यहाँ रात में न इतनी सर्दी थी और न इतने मच्छर। सुबह लिओ बोला :

"चचा अब मैं हल्का-हल्का अनुभव कर रहा हूँ। ऐसा मालूम होता है जैसा अब मैं आधा हो गया हूँ। कहीं मेरे दो टुकड़े तो नहीं हो गये? हाँ दो बराबर टुकड़े!"

उसकी बात सुनकर मेरा हृदय काँप गया। वह सन्निपात की अवस्था को पहुँच गया था, न जाने क्या-क्या बक रहा था। मैंने यूस्टेन की जुबानी सुना था कि उस प्रकार के बुखार कितने खतरनाक होते थे। बेचारी सच्ची स्त्री की भाँति लिओ की सेवा में लीन थी। जब बिलाली ने उसे देखा तो बोला :

"हमें इसे लेकर शीघ्र चल देना चाहिये। यदि यही हालत रही और यह ऐसे स्थान पर न पहुँचा जहाँ इसका ठीक इलाज हो सके और पूरा आराम मिले तो निश्चय ही यह एक-दो दिन में मर जायगा। इसे यहाँ से ज्यादा से ज्यादा बारह घंटों के अंदर अभीष्ठ स्थान पर पहुँचना होगा।"

मैं भला उसकी अवहेलना किस भाँति करता? तुरंत हम चल दिये। यूस्टेन अब पालकी में नहीं बैठी बल्कि पैदल ही उसकी मक्खियाँ उड़ाती हुई चलने

लगी। वह इस बात पर भी पूरा ध्यान दे रही थी कि कहीं वह उस हालत में कूद न पड़े।

सूर्योदय होते-होते हम उस चढ़ाव की सब से ऊँची लहर को पार कर गए। मैंने देखा सामने एक विस्तृत मैदान था जो बहुत ही सुन्दर लग रहा था। इसमें चारों ओर हरियाली ही हरियाली फैल रही थी। स्थान-स्थान पर दीर्घाकार वृक्ष खड़े थे और चटकीले खुशबूदार पुष्प खिले हुये थे। ऐसा दृश्य था कि बार-बार देख कर भी जी नहीं भरता था। मैंने सामने देखा और जैसे मेरे आश्चर्य की सीमा न रही।

जिस स्थान पर हम उस समय थे वहाँ से कोई बीस मील की दूरी पर एक विशाल पर्वत पृथ्वी से आकाश तक खड़ा था। वह अकेला और गोलाकार था जिसके चारों ओर का परिमाण लगाना यहाँ से असम्भव था। फिर भी सामने का हिस्सा देखकर अन्दाज लगता था कि यह कम से कम पचास मील के घेरे में अवश्य होगा। नीचे वह घनी हरियाली में से एकदम ऊपर उठ गया था और चोटी पर यहाँ-वहाँ उसके ऊपर बादल टिके हुए थे। प्रत्यक्ष था कि वह कोई ठंडा पड़ा हुआ ज्वालामुखी पर्वत था। नीचे से बिल्कुल सीधी दीवाल कोई पाँच सौ फीट ऊँची थी जिस पर चढ़ना असम्भव था। यहाँ भी चारों ओर दीवाल शायद घास व झाड़ों के कारण हरी थी परन्तु उसके ऊपर एक सीढ़ी सी चारों ओर बनी थी और उस पाँच सौ फीट ऊँचे मैदान के मध्य पहाड़ फिर ऊपर सीधा पन्द्रह सौ फीट ऊपर खड़ा था। गजब का लगता था वह पहाड़ क्योंकि वह वहाँ बिल्कुल अकेला था और बड़ा ही भव्य और शानदार लगता था। मुझे आश्चर्य हो रहा था कि उस पहाड़ पर भला कोई चढ़ कैसे सकता था। ऐसा कमाल का दृश्य मैंने न कभी देखा था और न शायद अब कभी देखूँ। मैं उसे फटे नेत्रों से देखकर निहार रहा था कि बिलाली ने उँगली सीधी कर कहा :

"वह देखो उनका घर है 'जिनकी आज्ञा टाली नहीं जा सकती'·····देखा है कभी तुमने किसी रानी का ऐसा भव्य और विशाल सिंहासन ?"

मैं आश्चर्य से देख रहा था। मैंने कहा :

"यह कमाल है। निश्चय ही मैंने इतना बड़ा प्रासाद कहीं नहीं देखा है··· परन्तु पिता ! इस पहाड़ पर भला कोई चढ़ता कैसे है। इसकी दीवालें तो बिल्कुल सीधी खड़ी हैं ?"

"वह तुम स्वयं देख लोगे," वह बोला। अब हम एक विचित्र मार्ग से आगे जा रहे थे जिसके दोनों ओर ऊँचे कगारे बने हुये थे। कहीं वह ऊपर से टूट गया था परन्तु अधिकांश हिस्सा अच्छी हालत में था। यह मार्ग सीधा पहाड़ की जड़ तक चला गया था। बिलाली ने मुझसे पूछा :

"मेरे बनमानुष बताओ यह कैसा मार्ग हैं ? तुम बुद्धिमान व्यक्ति हो। मेरा विचार है तुम सोचकर ठीक बात बता सकोगे।"

मैंने थोड़ी देर चुप रह कर कहा :

"हे पिता यह शायद पानी बहने के लिये नहर है।"

"तुम ठीक कहते हो," वह एमैहैग्गर वृद्ध बोला, उसके स्वर में मेरे प्रति प्रशंसा थी। फिर थोड़ा खाँस कर उसने गला साफ करते हुए कहा :

"यह पूरा मैदान जहाँ होकर हम आये हैं पहिले जलमग्न था अर्थात् पर्वत की जड़ तक गहरी झील थी। पूर्वजों ने जो बड़े अच्छे कारीगर थे जाने किस विधि से यहाँ से सारा पानी निकाल दिया था। यहाँ से पानी आगे इन्हीं मार्गों में होकर निकला। आगे जगह-जगह दलदल फैलाता हुआ बढ़ा और अंत में नदी नुमा कई नहरों में होकर अनन्त समुद्र में उस तरफ जा मिला जिधर से सूर्य उगता है।"

मेरी आँखों के सामने नक्शा खिंचता चला गया। जभी यह भयानक दल-दल यहाँ बनी हुई है, परन्तु तभी मुझे एक प्रश्न सूझा। मैंने पूछा :

"परन्तु पिता यदि यह मार्ग जल का है तो इस समय सूखा क्यों है क्योंकि जिस जल को निकाल कर बाहर फैलाया है और वह अब भी दलदल बना रहा है तो इससे तो यही प्रत्यक्ष है कि पानी अब भी भरता ही रहता होगा।"

वह गद्‌गद् कंठ से बोल उठा :

"मेरे बनमानुष ! तुम कुरूप केवल बाहर से हो। अंदर से तुम वीर, नेक और कुशाग्र बुद्धि हो। तुम सचमुच मेरे मित्र हो। तुम्हारा विचार अक्षरशः सही है।

जल अब भी उसी प्रवाह के साथ भरता और बहता है। परन्तु एक अन्य मार्ग द्वारा क्योंकि पूर्वजों ने पहिले यह मार्ग बनाया फिर इसे आने-जाने का मार्ग बना दिया और फिर दूसरी राह से जल निकाल दिया।···मेरे मित्र! और तब जो मीलों लम्बा-चौड़ा उपजाऊ मैदान निकला उस पर हजारों वर्ष पूर्व कौयर सभ्यता उठी।·····तुम देखोगे वे कितने पराक्रमी पुरुष थे। उन्होंने वहाँ एक महा नगर बनाया जिसके ध्वंसावशेष अब भी उनके यश की गाथा गाते हैं। उन्होंने पूरा पर्वत अंदर से पोला कर दिया और अपने मृत शरीरों को ऐसे रखा कि मिश्र भी उनका लोहा मानता था।"

फिर कुछ सोचकर उसने कहा :

"यह बातें आज से करीब सात हजार साल पहिले की हैं·····तब जब मिश्र भी नहीं था·····संसार में था तो बस यही था·····यही कौयर !!"

"और 'वह जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य है' क्या तभी से यहाँ रहती है ?" मैंने पूछा तो वह गंभीर हो गया। फिर बोला :

"कोई नहीं जानता वह यहाँ कब से हैं, वह हमेशा से हैं·····"

अब हम कुछ ऊँचे स्थान पर थे। यहाँ हम लोग उतर पड़े। मैंने बदन सीधा किया और देखा कुछ दूर पर एक चीतल खड़ा था। कितना सुन्दर था वह। मैंने जेब से अपनी बन्दूक ली और बैठ कर निशाना लिया, बिलाली देख रहा था।

'धाँय !' चीतल तड़फड़ाया और गिर गया। बिलाली उस शिकार के तरीके को देखकर बहुत खुश हुआ। परन्तु फिर भी उसने उसे बन्दूक की महिमा न समझ कर मेरी ही प्रशंसा की। फिर एक ओर उँगली दिखाकर वह बोला :

"देखो।"

मैंने देखा काफी दूर सफेद धार वाली एक नदी सी बहती जा रही थी।

"वह यहाँ का जल बह रहा है। दूसरा मार्ग वह है।" बिलाली ने दोहराया।

जब हम पुनः यात्रा करने लगे तब मैं उस महानता को सोच-सोच कर आश्चर्य कर रहा था कि कैसे कमाल के लोग थे वे जो हजारों साल पहले इतना पुरुषार्थ रखते थे। मेरे ऊपर उन प्राचीन कौयर लोगों की सभ्यता की गहरी

छाप पड़ी जो आज भी वैसी है। जब हम पहाड़ से थोड़ी दूर रह गए तो मैंने वृद्ध से पूछा :

"पिता ! क्या ! दुर्ग में प्रवेश करने का एक ही मार्ग है ?"

"एक और है," वह बोला : "परन्तु वह गुप्त है। अजनबी आदमी एक साल इस मैदान में डोले तो भी वह उसे न पा सकेगा। वर्ष भर में एक बार मवेशी उस राह से बाहर लाई जाती हैं और चरी हुई दूध वाली बाहर से अन्दर ले जाई जाती हैं।"

"और 'वह' क्या कभी बाहर आती-जाती हैं ?" मैंने उत्सुकता से प्रश्न किया।

"नहीं मेरे पुत्र ! 'वह' जहाँ हैं बस वहीं हैं।"

अब हम पहाड़ की जड़ में पहुँच गए थे। यहाँ से पहाड़ सीधा खड़ा था। इतना ऊँचा कि ऊपर देखने में सिर से टोप भी खिसक जाता था। केवल वही बाहर की पाँच सौ फीट ऊँची चट्टान ही दिखती थी, ऊपर की चोटी नहीं। यहाँ हम रुके। मैंने बन्दूक से एक-दो जानवर और मारे। एमैहैगर लोग मुझे जादूगर समझने लगे थे और भय से मेरे पास नहीं आते थे। बिलाली फिर उसी भाँति खुश हुआ और बोला :

"मेरे पुत्र तुमने कहा था कि तुम मुझे भी सिखा दोगे, क्यों है न ?"

"अवश्य मेरे पिता अवश्य," मैंने कहा परन्तु मैं मन में सोचने लगा।

"जब यह चलाने लगेगा तब इस अनाड़ी से बचने को पेड़ के पीछे छिपना पड़ेगा।"

अब हम दोनों ओर से चट्टानों से घिरे तंग रास्ते में होकर जाने लगे। यहाँ से उस पहाड़ का रूप और भयावना लगता था। सच तो यह है कि उसके विस्तृत और विशाल रूप को देख कर तथा उसके पीछे जो सहस्रों वर्षों का इतिहास था उसे सुनकर मेरे मन में एक भय उत्पन्न हो गया था। मैं सोच रहा था कि यह रास्ते और यह पहाड़ को पोला करना यह सब इतने बड़े काम थे कि उस जमाने में जब बारूद नहीं थी, मशीन नहीं थी, केवल मनुष्य ने ही अपने हाथों से कैसे बनाये होंगे। जाने कितनी सदियों तक पूरे राज्य की जनता ने अथवा युद्ध में पकड़े गये बंदियों द्वारा इसका निर्माण हुआ था। मिश्र में 'फराओ लोगों ने 'पिरैमिड'

बनवाये थे और उसे मिश्र की सारी प्रजा ने बनाया था। शायद ऐसा ही यहाँ भी हुआ हो। परन्तु यदि बंदियों द्वारा बनवाया था तो वह यहाँ कहाँ से आये ? क्या इन कौयर लोगों का कहीं दूर-दूर तक राज्य भी फैल रहा था ? कौन जाने ? मैं सोच रहा था। यह संसार भी विचित्र है जिसमें अनन्त समय निर्धारित है। मनुष्य तो क्या; सभ्यतायें होती हैं और मिट जाती हैं। हजारों-लाखों साल इस पृथ्वी, इस आकाश के लिये जैसे पल भर के भी समान नहीं है। और मुझे मनुष्य क्षुद्र जंतु दिखाई देने लगा। यह पहाड़ लाखों वर्षों से खड़ा है, हजारों साल पहले पोला किया गया है और जाने कब तक खड़ा रहेगा, और हम ?

अब हम पेचीदा मार्ग में होकर घूम-फिर कर पहाड़ की एक दीवाल के सामने एक अँधेरे मार्ग के पास आ गए। यहाँ हमारा काफिला ठहर गया। इस मार्ग के अंदर से बड़ी तेजी के साथ जल बाहर आ रहा था। इसके एक ओर करीब आठ फीट ऊँचे पर पैदल चलने के लिये सूखा पक्का मार्ग था। मैं शायद कहना भूल गया कि यह जल तो वहीं से प्रारंभ हो गया था जहाँ से हम तंग रास्ते में घुसे थे। उस जगह भी पानी के लिये चौड़ा और चलने के लिये तंग रास्ता था।

बिलाली उतर पड़ा और बोला :

"मेरे बेटे ! 'उनकी' ऐसी ही आज्ञा है कि जब तुम अन्दर लाये जाओ तुम्हारी आँखें बाँध दी जाय।"

मैं सहर्ष राजी हो गया क्योंकि और भला चारा ही क्या था। जौब जरूर घबराया क्योंकि वह शायद समझ रहा था कि गर्म बर्तन सिर पर रख कर मारने का यह प्रारंभ था। मुझे हँसी आ गई। मैं उससे अंग्रेजी में बोला :

"यहाँ न बर्तन है न उसे गर्म करने को आग·····फिर क्यों घबराते हो।"

उसने भी पट्टी बँधवा ली। मुझे खुशी थी कि अब वह ठीक हो गया था। लिओ बेहोश हो गया था और सो गया था। यह भी मेरे लिये एक बड़े चैन का विषय था।

यूस्टेन की आँखें भी बाँध दी गई शायद इसलिये कि वह लिओ से बहुत हिल गई थी और शायद उसे या हमको बाद में मार्ग बता देती।

काफिला फिर चल पड़ा। अंधकार बढ़ता गया पर जैसे वे लोग उस मार्ग से पूर्ण परिचित थे। अब बगल में जल का कल-कल नाद और कहारों के पद-चाप प्रतिध्वनित होते चले जा रहे थे। अब शायद हम गहरे अँधेरे में से जा रहे थे और मार्ग भी बहुत सँकरा हो गया था। मुझे एक विचित्र रोमांच सा हो रहा था। अब हम पर्वत के गर्भ में चल रहे थे उस पर्वत के गर्भ में जो लाखों वर्ष पुराना आकाश तक खड़ा था। कहीं यह बैठे पड़े तो! और तुरंत यह व्यर्थ का भय जाता रहा। आगे हवा घुटने लगी और मुझे ऐसा लगा कि अब जीना मुश्किल हो गया। तभी पालकियाँ दाहिने घूम गईं। पानी कम हो गया। फिर घूमीं और आगे बढ़ीं। परन्तु अब मार्ग सीधा नहीं रहा था। एमैहैग्गर लोगों का वही मार्ग का संगीत फिर शुरू हो गया था। उसे सुन कर उस विचित्र परिस्थिति में मुझे उबाकी आ रही थी और तबियत मिचली खा रही थी। मैं कोशिश तो काफी कर रहा था कि मार्ग को याद कर सकूँ पर इतने घूम और मोड़ आये कि मेरे लिये यह असंभव हो गया।

थोड़ी देर बाद साफ हवा आने लगी, पालकियाँ फिर घूमीं, सारे रास्ते पालकियाँ ऊपर चढ रही थीं। करीब पौन घंटे के बाद हवा अब बिल्कुल साफ बल्कि सुगंध से परिपूर्ण हो गई थी। अब हम उजाले में पहुँच चुके थे। थोड़ी देर बाद पालकियाँ रुक गईं। बिलाली ने पालकी से उतर कर यूस्टेन को आज्ञा दी :

"अपनी और इनकी पट्टियाँ खोल दो", मैंने झट अपने आप अपनी पट्टी खोल ली और पालकी से नीचे कूद पड़ा। सामने जो देखा उससे मेरे हृदय में उस स्थान के तथा उसके बनाने वालों के प्रति श्रद्धा और बढ़ गई। सामने ही एक बहुत बड़ी कटोरेनुमा जमीन थी। यह बिल्कुल वैसी ही थी जैसी पहले बिलाली के स्थान में हमने देखी थी परन्तु उससे यह कम से कम दसगुनी बड़ी थी। यह विशाल भूभाग ज्वालामुखी के ठीक नीचे था और अवश्य ही उसकी टंकी रही होगी।

घनी हरियाली से आच्छादित यह रंग-बिरंगे सुगंधित फूलों से लदी हुई थी। स्थान-स्थान पर वृक्ष खड़े थे। कटोरे के ऊँचे किनारे पर दीर्घ चट्टानें गड़ी थीं जो चहारदीवारी का काम देती थीं। इसी मैदान में पर्वत की ओर बाग और दूसरी ओर विस्तृत खेत थे। एक ओर चरागाह थे जहाँ अगणित स्वस्थ मवेशी

चर रहे थे। सैकड़ों मील का घेरा था। यह पर्वत के ठीक दूसरी ओर का दृश्य था परन्तु यह स्थान जहाँ से हम घुसे थे उस स्थान से काफी उँचाई पर था क्योंकि यहाँ से पर्वत का शिखर अधिक ऊँचा नहीं लग रहा था। केवल ५०० या ७०० फीट ऊँचा रहा होगा। मैदान के बीच में पत्थर की दीवाल से सुरक्षित घने गुलाब थे जो अपनी सुंदरता से चित्ताकर्षण कर रहे थे। वह कई मीलों पर थे पर यहाँ से भी जो दिख रहे थे तो काफी बीच में रहे होंगे। बीचो-बीच दूर-दूर तक कुछ इमारतों के भग्नावशेष पड़े थे परन्तु उन्हें मैं इस समय न देख सका क्योंकि पालकियों के रुकते ही कोई तीन या चार मिनट में ही मैंने यह सब देखा हमें चारों ओर से एमैहैग्गर लोगों ने घेर लिया। वे सभी उत्सुक नेत्रों से हमें देख रहे थे। तभी पहाड़ के बगल से अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित सेना दौड़ी हुई हमारी ओर आई। अगणित सैनिक थे तथा उनके साथ अफसर भी थे जो हाथ में हाथी दाँत के डंडे लिये हुए थे। सैनिक प्रायः नंगे थे और केवल चीते की खालें कमर में बाँधे हुए थे। अफसर लोग पीले सूती कपड़े पहिने थे। सैनिकों के पास छुरे और लंबे-लंबे भाले थे वैसे ही जैसे बिलाली के क्षेत्र में लोगों के पास थे। बे इतने अधिक उस समय आ रहे थे कि दूर से पहाड़ की बगल से निकलते ऐसे लग रहे थे जैसे चींटियाँ बिल में से निकल रही हैं। मैंने समझ लिया कि यह 'उनके' अंगरक्षक थे।

सेना मुहाने पर ही रुक गई थी। कोई दो सौ फीट अन्दर जाने के बाद हम दाहिनी ओर घूमे, यह मार्ग उतना चौड़ा नहीं था। यहाँ कोई चालीस कदम चलने के बाद हम एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ मार्ग दोनों ओर गुफा में घुस गया था। यहाँ एक वृद्ध पुरुष मिला जिसने हमें देखकर केवल सिर झुकाया पर वह बोला कुछ नहीं। वह गूँगा था। हम फिर दाहिनी ओर घूम गये। आगे चल कर फिर दो व्यक्ति मिले जो लम्बे भाले लिये हुए थे। ये भी गूँगे थे। उन्होंने हमें बाँई ओर जाने को इशारा किया। मैं समझ गया कि वह द्वार जहाँ वह खड़े थे अवश्य 'उनके' स्थान जाने का था, जभी वहाँ पहरा मौजूद था। आगे चल कर एक छोटी गुफा मिली जिसके द्वार पर कुश की बनी चटाई लटक रही थी जो बहुत कुछ जंजीबार द्वीप की चटाइयों से मिलती थी। यहाँ एक गूँगे ने चटाई उठा कर हमें अन्दर मार्ग दिखाया।

अन्दर काफी बड़ी एक गुफा थी जो दीवाल में लगी एक बड़ी मशाल द्वारा प्रकाशित थी। उस तेज प्रकाश को देख कर मेरे जी में जी आया। यहाँ पत्थर के हौज पानी से भरे थे और चौकियों पर बैठने को चीते की खालें बिछी थीं। यहीं लिओ को छोड़ दिया गया। यूस्टेन उसी के पास रह गई। एक गूँगा जो मार्ग प्रदर्शन कर रहा था यूस्टेन को देख कर खीज उठा। उसने तेज निगाहों से उसे घूर कर देखा मानों कह रहा हो, "तू कौन है और यहाँ किसकी आज्ञा से आई है ?"

आगे एक गुफा में जौब, एक में बिलाली और फिर एक और में मैं ठहर गया। मैंने देखा सभी गुफायें काफी बड़ी और चित्रित थीं। मैंने चलते-चलते बिलाली से पूछा :

"पिता यहा कितने कमरे होंगे ?"

वह मानो मेरे इस मूर्खतापूर्ण प्रश्न को सुन कर मुस्कुराया। फिर बोला :

"मेरे बनमानुष, क्या एक जीवन काल में तुम उन्हें गिन सकोगे ?"

मैं हैरत में रह गया। वाह री कौयर की सभ्यता ! मैं आगे और कुछ न सोच सका। मैं मानो उस स्थान के विराट् रूप से दब गया था।

× × ×

१०

उनका प्रधान आगे बढ़ा और उसने अपना डंडा माथे में लगा कर बिलाली को सलाम किया। फिर वह जल्दी-जल्दी उससे कुछ पूछने लगा जिसका उत्तर बिलाली ने थोड़े शब्दों में दे दिया। मेरी समझ में उनकी बोली नहीं आई, अब वे सैनिक पंक्ति बाँध कर पहाड़ की ओर चलने लगे और उनके पीछे-पीछे हमारा काफिला। आधे मील के बाद हम एक गुफा के मुहाने पर पहुँच गये और यहाँ बिलाली ने मुझसे व जौब से उतर कर चलने के लिए कहा। मैंने देखा गुफा विशाल थी, कोई अस्सी फीट चौड़ी और सवा सौ फीट ऊँची। अब सूर्य अस्त हो रहा था। लिओ को नहीं उतारा गया क्योंकि वह तो बेहोश था, कुछ दूर तक तो सूर्य का लाल प्रकाश आया परन्तु फिर अन्धकार बढ़ता गया। बस यहीं से दीपक जल रहे थे ओर उनके मंद प्रकाश में हम आगे

बढ़े। ऐसा लग रहा था कि जैसे हम लंदन की किसी सूनी सड़क पर चले जा रहे थे जहाँ उजाला भी काफी न था।

मैंने देखा कि गुफा के दोनों ओर की दीवालों पर ऐसा कोई भी स्थान नहीं था जहाँ चित्रांकित न हो। कहीं मूर्तियाँ अङ्कित थीं तो कहीं चित्र रंगों से बने हुये थे। रंग तो जाने कब के बने थे पर वह अब भी नये थे। मूर्तियाँ द्वार के पास तो बुरी तरह घिस गई थीं परन्तु अन्दर और बाद में मैंने देखा अन्य स्थानों में ऐसी नई थीं जैसे आज ही बनी हों। इनमें अधिकांश चित्र वैसे ही थे जैसे बिलाली की गुफा में मैंने उस मिट्टी के पात्र में देखा था। शिकार के दृश्य, द्वंद युद्ध के दृश्य तथा कुछ आपसी लड़ाइयों के दृश्य अंकित थे। उन्हें देख कर स्पष्ट पता लगता था कि यहाँ विदेशी लोग कभी नहीं आये क्योंकि उनका अपना ही एकसा साँचा सब जगह मौजूद था। विदेशी छाया भी नहीं थी। वे जबर्दस्त लोग थे और प्राकृतिक दुर्गम स्थान में रहने के कारण शायद उन्हें कभी विदेशी आक्रमणों का सामना भी नहीं करना पड़ा। चित्रों की रूपरेखा न यूनानी थी न मिश्री; न यहूदी न एसीरियन। यह मैंने खास तौर से जाँचा। बीच-बीच में कुछ विचित्र अक्षर बने हुये थे जो बहुत कुछ चीन देश के अक्षरों से जरूर मिलते-जुलते थे। मैं उनसे और भी ज्यादा प्रभावित हुआ।

× × × ×

११

जब से हमारा जहाज डूबा था तब से हमने वस्त्र नहीं बदले थे। जौब और मैं जी भर कर नहाये और अब जब हम नये फ्लानेल के कपड़े पहन, बाल काढ़ कर तैयार हुए तो हमने एक नवीन स्फूर्ति का अनुभव किया। केवल एक चीज की कमी रह गई और वह था साबुन। हमारे सब सामान नाव से यहाँ आ गए थे परन्तु क्योंकि समुद्र में ही डूबने से पहले जब हमने अपना सारा सामान नाव में लादा था तभी शायद साबुन की पेटी रह गई थी, बाद में मुझे मालूम हुआ कि ये लोग एक विशेष प्रकार की मिट्टी से घिस कर शरीर साफ करते थे। यह मिट्टी बस छूने में ही बुरी लगती थी अन्यथा यह साबुन की तरह ही झाग देती थी और शरीर को सुवासित कर देती थी। नहा-धोकर मैंने दर्पण के सामने खड़े

होकर अपनी घनी दाढ़ी छाँटी और फिर कंघे से काढ़ ली। मैंने देखा कि बिलाली मुझे जो बनमानुष कहता था सो ठीक ही था क्योंकि मेरी दाढ़ी इतनी ज्यादा बढ़ कर फैल गई थी कि मैं सचमुच ही आदमी नहीं मालूम होता था।

अब मुझे बेहद भूख लगी। उसी समय मेरी गुफा के द्वार पर लटकी चटाई उठी और एक युवती दिखाई दी। वह सुंदरी तो थी पर शायद गूँगी थी। उसने मुझे इशारों से बताया कि भोजन तैयार था। मैं उसके साथ हो लिया।

हम एक और कमरे में पहुँचे जहाँ जौब पहिले से मौजूद था। उसे भी ऐसी ही एक गूँगी बुलाकर लाई थी। जौब को हर स्त्री 'गर्म बर्तन' रखने वाली प्रतीत होती थी। वह उनसे चौकन्ना रहता था। मुझसे अँग्रेजी में बोला :

"मुझे इन सभी स्त्रियों की निगाहों से भय होता है। यह निश्चय रूप से शरीफ औरतें नहीं कही जा सकतीं।"

मैंने उसे हँस कर टाल दिया।

यह गुफा काफी बड़ी थी। इसमें दो तरफ पूरी दीवाल के सहारे दो लंबी चौकियाँ पत्थर में ही खुदी हुई थीं। यह भी मुर्दों के शरीर को 'ममी' बनाने का स्थान था। वास्तव में बीच की मेजनुमा ऊँची पत्थर की चौकी पर तो मुर्दे को ममी रूप दिया जाता था और बाद में इन्हीं चौकियों पर लिटा दिया जाता था। बाद में मैंने ऐसी कई कब्रें देखीं। बीच की मेज ऐसी थी कि उसके दोनों ओर अंदर दो फीट तक पत्थर छील दिया गया था जिससे बैठने वालों के घुटने उससे न लगें। इस मेज के दोनों ओर भी दो चबूतरे बने हुये थे। बीच की मेज विचित्र थी। मैंने खास तौर से देखा कि इसकी लंबाई में पाँच गड्ढे पत्थर में तराशे गये थे। यह इसलिये बनाये गये थे कि मुर्दा लिटाते समय उस खाँचे में बैठ जाय। गर्दन के लिये एक सिर और कंधों के गड्ढों के बीच एकउठी हुई दरार बनी हुई थी। यही नहीं बल्कि उस सिल्ली पर छोटी बड़ी लाशों को उसी प्रकार लिटाने का प्रबंध था। हिसाब से बीच में और गड्ढे बने हुये थे। इसके अतिरिक्त मेज में स्थान-स्थान पर छेद भी थे जिनमें होकर शायद शरीर का रस निकाल दिया जाता था।

उन बहुत प्राचीन लोगों ने यह पर्वत अंदर से तराश कर अपनी कब्र बनाई थी। सहस्रों वर्षों में वह बन पाई होगी और सभी स्थान मृतकों के शवों से भर गये थे।

मेरी दृष्टि दीवाल की ओर गई। रंगीन चित्र ऐसे बने हुए थे—इतने नये जैसे आज ही बने हों। मैंने देखा।

पहिला चित्र :

एक लंबी दाढ़ी वाला व्यक्ति मर रहा था। उसके तीन ओर खड़े बच्चे और स्त्रियाँ रो रही थीं। स्त्रियाँ सुंदर और केवल अधो वस्त्र पहिने थीं। उनके उन्नत स्तन नग्न थे। उनके लंबे केश पीठ पर पड़े थे।

दूसरा चित्र :

इसमें उसे 'ममी' बनाया जा रहा था। आदमी मेज पर बिल्कुल नंगा लेटा हुआ था। उसके पास तीन व्यक्ति खड़े थे। एक शायद अफसर था जो उन दोनों के काम देख रहा था। दो आदमी मेज पर खड़े थे। एक के हाथ में एक बड़ी कुप्पी थी जिसे उसने उस मृतक व्यक्ति के सीने में घुसा दिया था। शायद वह उसे किसी मोटी खून की नली में फँसाये थे। दूसरा व्यक्ति साध कर कोई बहुत गर्म बल्कि खदकता हुआ तरल पदार्थ उसी कुप्पी के द्वारा उसके शरीर में पहुँचा रहा था।

वह तरल पदार्थ इतना गर्म था कि जिस पात्र में उसे लेकर वह खड़ा था। उसमें से भाप और धुँआ निकल रहा था। आदमी उसे बहुत से कपड़े से पकड़े खड़ा था।

एक विचित्र बात थी। दोनों व्यक्ति उस तरल पदार्थ को डालते समय अपना मुँह फेर कर दूसरे हाथ से नाक पकड़े हुए थे। यह या तो उस मुर्दे के शरीर से उठी हुई बू के कारण था या यह कि वह तरल पदार्थ विषैला धुँआ फैला रहा था। दूसरी बात ही अधिक ठीक मानी जा सकती थी क्योंकि एक और विचित्र बात यह थी कि तीनों ही व्यक्तियों के मुँह पर कपड़ा ऐसे बँधा था कि केवल आँखें ही बाहर दिखाई देती थीं।

तीसरा चित्र :

मृतक 'ममी' बनाकर गुफा की बगल की चौकी पर लेट रहा था। उसके शरीर के चारों ओर कपड़ा लिपट रहा था जो पीले रंग का था। उसके सिर और पैर के पास दीप जल रहे थे और वैसे ही पात्र जिन पर चित्र कढ़े रहते थे

दोनों ओर रखे थे जिनमें शायद मिश्री लोगों के विचारों के अनुसार यहाँ भी मृतकों के लिये आवश्यक वस्तुयें भर कर रखी गई थीं।

मैं उन्हें देख रहा था और आश्चर्य में डूब रहा था। कैसे थे वे पुराने कौयर के लोग जो उस महान् विद्या को जानते थे। वह विद्या उन्हीं के साथ चली गई। मिश्री तो शरीर के अंदर से रक्त-मांस निकाल कर 'ममी' बनाते थे और ये थे जो केवल एक गर्म तरल पदार्थ को ही शरीर में डालकर उसे जैसा का का तैसा हमेशा के लिये बना देते थे। विचित्र था उन लोगों का ज्ञान और अद्भुत थीं उनकी क्रियाएँ। मैं सोच रहा था कि क्या कभी मैं कैंब्रिज पहुँच कर अपने मित्रों को यह सब बता सकूँगा। और क्या वे मेरी बात की सत्यता स्वीकार करेंगे। तभी खाना आ गया—बकरे का गर्म-गर्म मांस, मिट्टी के पात्र में भरा ताजा दूध और गेहूँ की रोटियाँ जो गोल-गोल तथा नर्म थीं। साफ लकड़ी के तख्तों पर यह हमें खाने को मिलीं। हमने छक कर खाया। बड़ा स्वादिष्ट भोजन था वह। हम देर तक खाते रहे।

खाना खाने के उपरांत हम लिओ को देखने गए जो अब भी बेहोश पड़ा था। यूस्टेन अब भी उसकी सेवा कर रही थी। कितना प्यार करती थी वह स्त्री उसे मैं कैसे लिखूँ? और बाद में उस गरीब को उस प्यार और सेवा के परिणाम में मिला भी क्या? सोचता हूँ तो हृदय भर आता है।

बिलाली ने आकर मुझसे कहा :

"मेरे बेटे! अब तैयार हो जाओ वह 'जिनकी आज्ञा नहीं टाली जा सकती' हमें बुला रही हैं। अभी मुझे सूचना मिली है। अब हम नहीं रुक सकते। सँभल कर चलना। अपने जीवन भर का एकत्रित संयम और शिष्टाचार अब दिखा देना। ध्यान रहे तनिक भी चूक हुई और मृत्यु खड़ी मिलेगी। 'वह जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य है' शस्त्रों से नहीं मारतीं। वह अपनी मर्जी से भस्म कर देती हैं।"

मेरे ऊपर भय की कालिमा छा गई। मैं उसके साथ भावी मृत्यु और उस विचित्र ढाई हजार साल पुरानी स्त्री के बारे में सोचता हुआ चल दिया। वृद्ध ने मुझसे यह भी कहा था कि मेरे ऊपर 'वह' मेहरबान थीं अन्यथा वह किसी से नहीं मिलती थीं, परन्तु जब मैंने उसकी बात सुन कर कोई आदर

या श्रद्धा 'उनके' प्रति प्रदर्शित नहीं की तो ऐसा लगा जैसे वह मेरी मूर्खता और उद्दण्डता से आहत हुआ हो और भावी निश्चित मृत्यु से भयभीत हो गया हो। परन्तु बिलाली बुद्धिमान व्यक्ति था। चुप रहा और मुझसे कुछ बोला नहीं। जब मैं चला तो मेरी दृष्टि लिओ के कमरे में एक जगह पड़ी हुई किसी चमकदार वस्तु पर पड़ी। मैंने वह झट से उठा ली। यह सोने की एक बड़ी अँगूठी थी जो लिओ की थी और शायद उसके हाथ से उतर कर गिर गई थी। इसके बीच में वही तावीजनुमा पत्थर लगा हुआ था जो हमें उस लोहे के बक्स में मिला था जिसे बिसे बीस वर्ष पहले मुझे दे गया था। मैंने वह अपनी उँगली में सरका ली। अबकी हम एक और तरफ से चले। तीन कमरे एक के बाद एक पार करके हम एक गलियारे में पहुँचे, वह काफी लंबा था। ये सभी स्थान दीपक के मंद प्रकाश में धुँधले दिखाई दे रहे थे। फिर हम बाँये घूमे। सामने ही दो तगड़े व्यक्ति हाथ में भाला लिये खड़े थे। उनके फलक चमचमा रहे थे। हमें देख कर उन्होंने भाले आड़े करके माथे से लगा लिये यह साफ जाहिर था कि उन्होंने हमें सलाम किया था। वे गूँगे थे जभी बोले नहीं। मैं समझ गया यहीं से 'उनका' निवास प्रारंभ हो जाता है।

हम द्वार के अन्दर चले गये। तीन कमरे (गुफाएँ) और पार किये। ये सभी स्थान हमारे ठहरने के स्थान जैसे ही थे। अन्तर केवल इतना था कि यहाँ कमरे बड़े और उज्वल रूप से प्रकाशित थे। द्वार पर फिर हमें चार व्यक्ति मिले। ये भी भाले वाले थे। अब हम दाहिने घूमे, आगे चल कर दो गूँगे पुरुष और दो गूँगी सुंदरी युवतियाँ मिलीं, उन्होंने झुक कर हमारा अभिवादन किया। एक स्त्री मार्ग दिखाती हुई आगे चली और एक पीछे। यह भी एक गलियारा था परन्तु काफी चौड़ा था। उसके दोनों ओर कई द्वार खुलते थे। बाद में मुझे मालूम हुआ कि यहाँ उनकी सेविकायें रहती थीं। गलियारे के पहले सिरे पर दो और गूँगे मिले। यहाँ एक दीर्घ और विशाल द्वार था जो अद्भुत तरीके से पत्थर में तराशा गया था। इस पर एक मोटा पर्दा उसी भाँति का जैसा हमारे स्थान पर था लटक रहा था। हम अन्दर चले गए। यह भव्य कमरा था जिसकी दीवालें और छत सभी अद्भुत कारीगरी से परिपूर्ण थे। नाना प्रकार की मूर्तियाँ उनमें सुन्दरता से खुदी हुई थीं। यह कम से कम

चालीस फीट ऊँची गुफा थी। दीवालों पर तेज मशालें जल रही थीं जो तीव्र प्रकाश फैला रही थीं। भूमि पर कामदार खालें तथा ऊन के कंबल बिछे थे। यहाँ वहाँ चीते की खालें पड़ी थीं और सुन्दर पत्थर की चौकियों पर बिछे नर्म आसनों पर कोई दस सुनहले बालों वाली कमनीय युवतियाँ बैठी हुई हाथी दाँत की सुईयों से कसीदा काढ़ रही थीं। हमें देख कर वे उठीं और उन्होंने हमें आगे जाने को इशारा किया। ये भी सब गूँगी और बहरी थीं।

जब हम सामने के सुदर और चित्रांकित द्वार पर पहुँचे तो हमने देखा वहाँ दो और युवती स्त्रियाँ खड़ी थीं। उन्होंने भी अपना सिर हमारे सामने झुकाया। इनके स्तन इतने पीन और उन्नत थे कि मुझे आश्चर्य हुआ, कहीं बनावटी तो नहीं थे। यहाँ द्वार पर महीन कपड़े का पर्दा पड़ा था जो चारों ओर और मध्य में खूबसूरत कसीदे से काढ़ा गया था। उसमें बल पड़ रहे थे क्योंकि वह द्वार से चौड़ा बनाया गया था। मैं समझ गया अब वह 'जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य है' सामने आने वाली थीं।

उन युवतियों ने आगे बढ़कर पर्दा हटा दिया और तभी बिलाली पृथ्वी पर औंधा लेट गया। वह घुटने और कुहनियों के बल सरकने लगा और उसने मुझसे धीरे से कहा :

"लेट जाओ मेरे बेटे; लेट जाओ मेरे बनमानुष ! अब हम 'उनके' हुजूर में चल रहे हैं, 'जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य है'। याद रखना जरा भी ढिठाई की तो वे उसी क्षण तुम्हें भस्म कर देंगी।"

वह सरकने लगा। परन्तु न जाने क्यों मेरा मन लेटने को नहीं किया। एक बार तो भय के कारण मेरे घुटने मानो स्वतः झुकने लगे परन्तु फिर मैं सँभल गया। मैंने सोचा :

"यदि एक बार लेटा तो हमेशा लेटना होगा और वह बड़ी दिक्कत होगी। जाने यहाँ कब तक रहना होगा। फिर मैं तो अँग्रेज हूँ। भला एक जंगली रानी के सामने क्यों झुकूँ।"

फिर मेरे मन में विचार आया :

'झुकूँगा पर जब समझ लूँगा कि इसके बिना इन जंगलियों से प्राण बचाना असंभव है' और मुझे स्वयं ही अपने साहस पर आश्चर्य हुआ कि मैं घिसटते

हुए बिलाली के पीछे-पीछे धीमी चाल से चलने लगा। परन्तु भय ने मेरे रोम खड़े कर दिये थे। यह कमरा जिसमें अब हम चल रहे थे, बाहर वाले से छोटा था। इसमें चारों ओर सुन्दर चित्रित पर्दे लटक रहे थे। भूमि पर सुन्दर कसीदे कढ़े मोटे कंबल बिछे थे तथा उन पर स्थान-स्थान पर चीते की खाल भी बिछी थी। यहाँ प्रकाश अति तीव्र था। कोनों में बड़े-बड़े चित्राङ्कित पात्र सजे रखे थे। कमरा शांत वातावरण से परिपूर्ण था। बिलाली मुश्किल से सरक रहा था। मेरे मन में उस भय से पूर्ण स्थिति में भी उसे देख कर न जाने क्यों पीछे से लात मारने की हो आई और मैंने अपने को बड़ी मुश्किल से रोका।

कमरे के एक छोर पर एक बड़ा चबूतरा बना था जो करीब दो फीट ऊँचा था। उसके चारों ओर पर्दे पड़े थे। अन्दर दीपक का उजाला फैल रहा था। बाकी और कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। बिलाली ने एक बार मुड़ कर मेरी ओर देखा और उसका मुख भय से काला पड़ गया।

शायद वह मेरे सीधे चले आने के कारण मृत्यु निकट जानकर भयभीत हो उठा था।

हम कमरे के पास जाकर खड़े हो गए। पाँच मिनट ऐसे ही बीत गए। बिलाली पड़ा रहा और मैं खड़ा रहा। वहाँ अद्भुत शाँति छा रही थी। मेरे ऊपर भय अब आतंक बन चुका था। यह पाँच मिनट मानो पाँच दिन के समान थे जो बीतते ही न थे। मुझे निरंतर लग रहा था कि कोई आँख मुझे पर्दे के भीतर से घूर रही थी। किसकी दृष्टि इस समय मेरे ऊपर लग रही थी? मैं भय से व्याकुल हो रहा था यहाँ तक कि मेरे सिर के बाल भी खड़े हो गए थे। क्या यह कोई नग्न जंगली रानी है ओ अद्भुत रूप की राशि है या कोई उन्नीसवीं सदी की योरोपियन स्त्री है जो यहाँ इन जंगलियों को धोखा देकर रानी बन बैठी है। मैं यही सोच रहा था। वह प्रतीक्षा मेरे असीम भय का कारण बनी हुई थी। जाने क्या होने वाला है। यह भय सचमुच होने वाली बात से कहीं अधिक था। मेरे माथे पर पसीना छलक आया, मुझे ऐसा लग रहा था मानो उन अदृश्य निगाहों के नीचे मेरा कलेजा बाहर निकल आवेगा।

तभी सामने का पर्दा हिला। मैं घबरा गया। फिर एक स्त्री का हाथ बाहर निकला, इतने सुन्दर हाथ मैंने जीवन भर में न कभी देखा था न कभी देखूँगा।

गोरा हाथ, रोम रहित, चिकना, जिसकी त्वचा स्वर्णिम गुलाब की भाँति थी और जिसमें पतली, लंबी उँगलियों के छोर पर सुन्दर नख गहरे गुलाबी रंग की शोभा को प्राप्त हो रहे थे। उस हाथ ने पर्दे को पकड़ लिया और फिर अन्दर से एक मधुर कंठ निकला। मुझे ऐसे लगा जैसे चाँदी की घंटियाँ बजा दी गई हों या किसी सुन्दर चश्मे में से कल-कल करता हुआ स्फटिक के समान शुभ्र जल बह रहा हो।

मैंने सुना, उस स्त्री कंठ ने पूछा :

"अजनबी ! तुम इतना डरे हुये क्यों हो ?" वह अरबी भाषा में बोल रही थी। एमैहैग्गर लोगों की भाँति मिश्रित अरबी में नहीं बल्कि शुद्ध सांस्कृतिक भाषा में।

मुझे इस प्रश्न पर आश्चर्य हुआ और साथ ही साथ मेरा भय भी एकदम कम हो गया। मैं जो इतना साहसी था और इस समय अपने आप को नियंत्रण में रखता हुआ यही जाहिर करने का प्रयत्न कर रहा था कि मैं ठीक हूँ; क्योंकर इसे भयभीत दिखाई दिया ? मैं उत्तर देने ही वाला था कि पर्दा खुला और मेरे सामने चबूतरे पर एक ऊँची स्त्री का सुन्दर आकार दिखाई दिया। हाँ वह आकार ही था क्योंकि उसका सारा शरीर यहाँ तक कि मुख भी एक महीन कपड़े से लिपटा हुआ था। उसे देख कर एक बार तो भ्रमित हो गया कि यह कोई मृत शरीर है जो न जाने कैसे खड़ा होकर बोलने लग गया है। परन्तु फिर मुझे ध्यान आया कि वह जीवित स्त्री है जो अत्यंत लावण्यवती है। यह उसके उस महीन कपड़ों में से उसके गुलाबी उज्वल शरीर की शायद चमक थी जो मुझे ऐसा सोचने को विवश कर रही थी। अब मेरा भय सीमा को लाँघ चुका था। मेरे सिर के बाल और सारे शरीर के रोम खड़े हो गये थे। मेरे मन में एक बात पक्की जम गई थी कि यह कोई सांसारिक स्त्री तो नही थी बल्कि कुछ और ही शक्ति थी चाहे मृतक रही हो चाहे आत्मा, कम से कम मनुष्य नहीं थी और यह विचार ऐसा था कि मुझे लगा कि मैं भयंकर परिस्थिति में पहुँच चुका हूँ जहाँ से बचकर निकलना मेरे लिये असंभव था। वह 'ममी' सा लगने वाला आकार एक भुवनसुंदरी का लावण्य पूर्ण शरीर था जिसमें सर्प की सी लचक थी। जब वह हाथ या पैर हिलाती तो पूरा शरीर बल खा जाता

था। वह अद्भुत थी, उसकी, गर्दन झुकती नहीं थी, कमान की तरह मुड़ जाती थी।

"क्यों डरते हो इतना अजनबी," वही कोकिल कँठ फिर गूँज उठा, "क्या मेरे कारण ही तुम इतना डरे हुये हो? तब तो निश्चय ही अब संसार में आदमी बदल गये हैं।"

मैं देखता रहा। फिर वह हिली। इठलाते हुये उसने अपना एक हाथ ऊपर उठा दिया जिससे उसके ऊपर का वस्त्र हट गया। यौवन से छलकता हुआ एक हाथ अपनी मादकता फैलाने लगा। मैंने देखा उसने अपने शरीर को झटका देकर ऐसे हिलाया जैसे कामुक हो उठी हो। वह मुड़ी और मैंने देखा कि उसके सुंदर भँवरों के समान काले और घुँघरदार केश भूमि तक लटकने लगे। उसके सुंदर पैरों में न जाने किस जानवर की खाल के बने जूते बँधे थे। मैंने ऐसे पैर आज तक कभी नहीं देखे जो सुंदरता और कोमलता में सारे संसार में अद्वितीय थे।

मैंने अपना सारा साहस बटोरा और एक बार थूक निगल कर कहा :

"हे रानी! मैं तुम्हारी सुंदरता से भयभीत हो उठा हूँ।"

न जाने मेरे मुँह से कैसे यह निकल गया क्योंकि मैं ऐसा कुछ भी कहना नहीं चाहता था। परन्तु मेरा खयाल है कि मैंने बिलाली को मेरे उस उत्तर को सुनकर, धीरे से बड़बड़ाते सुना था, जब वह कह रहा था :

"शाबास! मेरे बनमानुष शाबाश!" वह हँसी और बोली :

"इसका अर्थ यह है कि आज की दुनिया में भी पुरुष वैसे ही हैं। वह हम स्त्रियों को फुसलाना खूब जानते हैं। मुझे ऐसा लगा जैसे चाँदी की मधुर घंटियाँ कहीं दूर बज उठी हों। मैं चुप खड़ा रहा।

थोड़ी देर बाद वह फिर उसी मधुर कंठ में बोली :

"आह! अजनबी! तुम्हें इसलिये भय हो रहा था क्योंकि मेरी आँखें तुम्हारे हृदय को ढूँढ रही थीं। फिर भी मैं स्त्री हूँ और तुम्हें तुम्हारी झूठ के लिये क्षमा करती हूँ क्योंकि जो कुछ तुमने कहा वह शिष्टाचार के लिये कहा। ...खैर .....जाने दो.....पर मुझे अब यह बताओ कि तुम यहाँ, जहाँ चारों ओर दलदल ही दलदल है और जहाँ लोग मुर्दों के कब्रों में अभिशप्त जीवन

बिताते हैं, कैसे आये ? यहाँ जहाँ मृतकों की छाया हर वस्तु पर पड़ती है, भला तुम कैसे आ गये ? क्या तुम जानते हो कि तुम्हारी जान 'हिया' के हाथों में है ? (वह 'जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य था,'का दूसरा नाम 'हिया' भी था) वह 'जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य है' अपनी हथेली के गड्ढे में तुम्हारी जान रखती हैं। क्यों तुमने अपनी जान ऐसे भयंकर स्थान में फँसा ली जहाँ से निकल कर जाना असंभव है ?·····हाँ एक बात यह भी विचित्र है कि तुम मेरी भाषा भी जानते हो। क्या अब भी संसार में यह भाषा बोली जाती है ? यह मधुर भाषा है जो प्राचीन सिरैइक भाषा से निकली है·····आह ! मैं यहाँ गुफाओं में मृतकों के साथ रहती हूँ·····जाने कब से·····कब से·····इतने समय से·····," वह रुकी और फिर बोली : "मैंने अपनी कब्र स्वयं अपने हाथों खोदी थी·····प्राचीन विद्वानों का यह सच्चा मत है कि मनुष्य स्वयं अपने पथ का निर्माण करता है।" और यहीं उसकी आवाज कुछ काँप गई। हठात् उनकी दृष्टि नीचे पड़े बिलाली पर पड़ी और वह सँभल गई। बोली :

"ओह ! वृद्ध बिलाली ! तुम यहीं हो," अब उसकी बोली में कुछ कड़ाई आगई थी। वह कहती गई :

"कैसे हुआ वह सब झगड़ा जब मैंने ऐसी आज्ञा नहीं दी थी ? इसमें एक को तो शायद गर्म बर्तन द्वारा मारने की भी कोशिश की गई और बाकी के तुम्हारे आदमी इनसे लड़े भी थे। मैं जानती हूँ ये लोग बहादुरी से लड़े थे परन्तु यदि मारे जाते तो मैं भी इन्हें पुनः जीवन न दे पाती। यह सब क्यों हुआ ? क्यों न मेरा प्रतिशोध तुम्हारे प्रति भी उसी प्रकार हो जैसे अब उन तुम्हारें आदमियों के साथ होगा·····?"

मैंने सुना उसका स्वर उठता जा रहा था। उसका क्रोध भी बढ़ गया था क्योंकि अब वह सीधी खड़ी हो गई थी और मैंने अनुमान किया कि कपड़े के पीछे उसकी आँखों में एक विचित्र चमक आ गई थी। आवाज यहाँ तक उठी कि अब वह उस चट्टान से घिरी गुफा में तीखी बन कर गूँजने लगी। मैंने देखा कि बिलाली जिसे मैं निर्भीक आदमी समझा करता था, भय से पत्ते की भाँति काँप रहा था। वह काँपता हुआ बोला :

"हे हिया ! हे 'वह जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य है' आपकी प्रभुता के सामने मैं तुच्छ हूं।" उसने अपना श्वेत दाढ़ी से ढँका सिर बिना उठाये ही कहा :

"जैसी आपकी महानता है वैसी ही दया भी कीजिये क्योंकि मैं बिलाली आपके चरणों का दास हूं। इसमें मेरा तनिक भी दोष नहीं है।·····एक स्त्री ने जिसे आपके मेहमान 'सूअर' ने (बिलाली मुझे 'बनमानुष', लिओ को 'शेर' और जौब को 'सूअर' कहा करता था) दुतकार दिया था, लोगों को उकसाया कि वह उस काले आदमी को गर्म बर्तन रख कर मार डालें जिसके बारे में आप के पास से कोई आज्ञा नहीं पहुँची थी, उन दुष्टों ने उसकी बात मान ली और वह उसके खून के प्यासे हो उठे। तभी खतरा समझ कर इस बनमानुष और 'शेर' ने ,जो अब बीमार पड़ा है,उस स्त्री को मार डाला। इन्होंने अपने उस काले नौकर को भी गर्म बर्तन से छुटकारा दिलाने को मार डाला। और वे दुष्ट, जो अंधकार के गड्ढों में रहते हैं, बुद्धिहीन हैं, उस स्त्री के रक्त को देखकर पागल हो उठे और उन्होंने इन तीनों पर आक्रमण कर दिया। हे हिया ! हे वह 'जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य है' इन्होंने कमाल का काम किया। इन्होंने तीस व्यक्ति मार गिराये। 'शेर' और बनमानुष में अमानुषिक पराक्रम है। ये बड़े साहसी और वीर हैं। वे आखिर में इन्हें मार ही डालते कि मैं पहुँच गया और मैंने इन्हें बचा लिया। वे दुष्ट जिन्होंने आपके मेहमानों पर हमला किया, आपकी अवहेलना की, कौयर के न्यायालय में आ गये हैं। उन्हें आप न्याय चाहे जब दें, वह प्रतीक्षा करेंगे·····हे हिया, बिलाली निर्दोष है।"

हिया का स्वर नम्र पड़ गया परन्तु फिर भी थोड़ा कड़ा था। वह बोली :

"ठीक है ;वह मैं सब जानती हूँ। कल मैं उनका न्याय करूँगी। तुम डरो मत बिलाली क्योंकि मैंने तुम्हें इस बार क्षमा कर दिया है। परन्तु फिर भी तुम अपने भाग्य की सराहना करो कि तुम बच गये। खैर जाओ·····पर आयंदा अपने घराने का अच्छा प्रबंध करना·····।"

बिलाली झटके के साथ उठा। मुझे उसकी फुर्ती देख कर आश्चर्य हुआ। उसने तीन बार अपना सिर झुकाया और प्रत्येक बार ऐसा करने में उसकी दाढ़ी भूमि से छू गई। फिर वह जैसे आया था उसी भाँति औंधा लेट गया और बाहर की तरफ सरकने लगा। थोड़ी देर में वह पर्दे के बाहर हो गया और

मेरे हृदय में एक नवीन भय से कँपकँपी आ गई क्योंकि अब मैं उस विचित्र, भयानक और अद्भुत सुन्दरी स्त्री के साथ अकेला रह गया था।

थोड़ी देर 'वह' चुप रही फिर जब उसने जान लिया कि जाने वाला बाहर वाले बड़े कमरे के भी बाहर हो गया है तो वह बोली :

"गया, वह मूर्ख बिलाली गया।" फिर तनिक हँसी और हाथ उठाकर बोली :

"कितना थोड़ा जानता है मनुष्य उस प्रकृति के रहस्य के बारे में जो हजारों वर्षों में भी प्राप्त नहीं किया जा सकता! वह दोनों हाथों से समेटता है परन्तु नहीं जानता कि वह पानी में हाथ चलाता है। वह समेटता है और जल उँगलियों की राह फिर बह जाता है। और लोग·····इस पीढ़ी के लोग इसे बुद्धिमान मानते हैं! हुँ!"

एकाएक फिर मेरी ओर उसकी दृष्टि फिरी और उसने मुझसे पूछा :

"यह वास्तव में इन जंगलियों की रीति है क्योंकि इनके मस्तिष्क का विकास ही कहाँ हुआ है। जिन जन्तुओं के साथ रहते हैं उन्हीं में से नाम देते हैं। मूर्ख! परन्तु अजनबी! तुम्हारे देश में तुम्हें क्या कह कर लोग पुकारते हैं?"

"हौली! मेरी रानी", मैंने झुक कर कहा।

"हौ·····ली" उसने तनिक कष्ट से कहा परन्तु उसके उस कहने में भी संगीत झनझना उठा था। वह फिर बोली :

"·····और हौ·····ली·····हाँ, हौली·····परन्तु इसका अर्थ क्या है?"

"एक काँटेदार वृक्ष", मैंने संक्षिप्त में उत्तर दिया।

"एक काँटेदार पेड़ जैसे ही तुम लगते हो। तुम बलवान हो, कुरूप भी हो परन्तु यदि मेरा अनुभव सही है तो तुम्हारा हृदय सच्चा और शुद्ध है। तुम ऐसे हो जिस पर कोई सहारा ढूँढ़ सकता है और तुम सोचने वाले भी हो। तुम्हें मैं अपने सामने इन जंगलियों की भाँति रेंगते हुए नहीं देखना चाहती। मैं इन लोगों के भयभीत मुख और इनकी श्रद्धा और पूजा से चिढ़ गई हूँ। मुझे यह देखने में भी बुरे लगते हैं। जब कभी मुझे बहुत खीज हो उठती है तो मैं इन्हें भस्म भी कर डालती हूँ केवल मन बहलावे के लिये और तब जो भय से सफेद

मुख इनके हो जाते हैं·····", फिर जैसे स्वयं उस वार्ता से ऊब उठी हो, हाथ हिला कर बोली, "·····मरने दो इन्हें·····हाँ तुम खड़े क्यों हो हौली ? यहाँ आओ और मेरे साथ बैठो", और उसने अपनी हाथी दाँत की सी बाँह से पर्दा एक ओर सरका दिया।

मैं भय से विचलित तो था ही मन में काँपता हुआ उस पर्दे के घेरे में चढ़ गया। अन्दर एक शैया बिछी थी और पूरा स्थान कई दीपकों से प्रकाशित था। दीपक मिट्टी के पात्र में छेद करके बनाये गये थे और पात्र सब उसी प्रकार के थे जैसे कि मैं कह आया हूँ। यह स्थान कोई बारह फीट लंबा चौड़ा था जिसके चारों ओर ऊँचे पर्दे लगे हुए थे। बीच में एक सुन्दर पत्थर की मेज थी जिस पर कसीदे का कपड़ा बिछा था और उस पर कुछ ताजा फल और स्फटिक के समान शुभ्र जल रखा था। शैया के सिरहाने पत्थर का एक बड़ा बर्तन और रखा था जिस पर छंटावट का घना काम किया गया था। इसमें शुभ्र जल भरा हुआ था। बस और कुछ वहाँ नहीं था।

"बैठ जाओ," वह बोली और उसने उस शैया की ओर इंगित किया। मैं दबा हुआ शैया के पैताने बैठ गया। वह अपनी मस्तानी और बेफिक्री की चाल से आई और उस विशाल शैया के दूसरी ओर गुदगुदे पर बैठ गई। फिर उसने कहा :

"तुम्हें मुझसे भय करने का कोई कारण नहीं है। यदि कभी ऐसा कारण हो जायगा तो भी तुम्हें भय खाते हुये नहीं रहना होगा क्योंकि मैं तब बिना प्रतीक्षा कराये तुम्हें तुरन्त मार दूँगी·····अतएव इस समय बिल्कुल बेफिक्र रहो।"

उसकी बातों से मेरा आतंक और बढ़ गया। मैं यह तो साफ समझ गया कि यदि यह तनिक भी रुष्ट हो गई तो मृत्यु निश्चित थी। फिर वह ऊपर देख कर लेट गई और धीरे से बोली :

"अल् अरब अल् अरीबा !·····अरबों में खास अरब ! हौली ! मैं वह हूँ। जानते हो खुशनुमा चमन की राजधानी ओज़ाल को ? वहाँ मेरे पूर्वज रहते थे। यारब जो खेतान का बेटा था वही मेरा पूर्वज था। आह ! कितना समय बीत गया तब से !·····पर हौली ! तुम इतनी अच्छी अरबी कैसे

बोलते हो ? तुम्हारे उच्चारण तो शुद्ध हैं परन्तु इनमें 'हमचार' का संगीत नहीं है। कुछ शब्द भी बदले प्रतीत होते हैं।.....और यह एमैहैगर लोग तो भाषा का नाश ही कर देते हैं। जंगली ! और मुझे भी इनसे इन्हीं की भाषा में बोलना होता है !"

पर्दों से और वहाँ की उस मनोहर चीज से एक भीनी-भीनी खुशबू फैल कर मुझे प्रोत्साहन दे रही थी कि मैं भय को त्याग दूँ। स्वयं 'हिया' भी सुगन्ध से महक रही थी। मैं अपने विचारों में ही खोया सा बैठा रहा तो वह फिर बोली :

"हौली ! तुमने उत्तर नहीं दिया," और मैं तुरन्त होश में आ गया, बोला :

"मैंने इस भाषा को वर्षों पढ़ा है और वैसे यह आजकल भी मिश्र में तथा कई और देशों में बोली जाती है।"

"वाह !" वह सुनकर बोली, "तो यह अब भी दुनिया में है और जैसा कि तुम कहते हो मिश्र भी है। कौन सा फराओ आजकल गद्दी पर है ? और क्या अब भी वही फ़ारस के 'ओखस' का वंश चल रहा है या अब 'एखिमिनियन' लोग नहीं रहे ? आह ! ओखस को तो बहुत समय हो गया !!"

सुनकर मेरी हड्डी तक काँप गई। ढाई हजार वर्ष पहले की बात कर रही थी। हे भगवन ! मैंने मन ही मन उसे याद किया। मेरा मुँह सूख गया और मैं झट थूक निगल कर बोला :

"फ़ारस के लोग तो करीब दो सहस्र वर्ष पूर्व मिश्र से चले गए थे। उनके बाद 'प्टौलीस' फिर रोमन और फिर न जाने कितने वंश वहाँ रह कर अपना समय पूरा कर गए। हे रानी ! तुम्हें फारस के आर्टेक्सरसीज़ की बात भला कैसे मालूम ? वह तो ढाई हजार साल पहले हुआ था ?"

उसने कोई उत्तर नहीं दिया केवल सुन कर थोड़ा हँस दी। फिर वैसे ही बोली :

"और यूनान ! क्या अब भी कोई यूनान है ? आह ! मुझे वह बहुत पसंद था। सुन्दर स्त्री-पुरुष !! परन्तु चालाक ! वीर तो वह निश्चय रूप से थे ही !"

उस सदियों पुरानी स्त्री के सम्मुख मेरी हालत अच्छी नहीं थी। एक विचित्र आतंक मुझ पर छा गया था, मैं बोला :

"हाँ यूनानी अब भी संसार में हैं परन्तु अब वह देश पहले जैसा नहीं है। अब वहाँ पहले जैसी वीरता और सुन्दरता दोनों ही नहीं हैं।"

"और यहूदी ?" वह उसी भाँति पूछने लगी।

"क्या अब भी वह जेरूसलम में ही हैं ? और वह मन्दिर ? वही जो उस बुद्धिमान राजा ने बनवाया था ? और हाँ ! उस मसीहा का क्या हुआ जिसके बारे में शोर था कि वह संसार पर राज्य करेगा ? क्या उसका राज्य फैल गया ?"

मैं अब फटे नेत्रों से उसे देखता हुआ उसे उत्तर देता रहा। मेरे ऊपर आश्चर्य जैसे सजीव होकर नृत्य कर रहा था। मैंने उत्तर दिया :

यहूदी लोगों का जेरूसलम अब संसार में नहीं है·····वे लोग यहाँ वहाँ दुनिया में फैल गए हैं। और वह मन्दिर जिसे हैरोड ने बनवाया था·····"

"हैरोड ?" वह बीच में ही चौंक कर पूछ उठी, "यह कौन था ?·····पर खैर कहे जाओ," और वह फिर लेट गई।

"रोमन लोगों ने उस मन्दिर को जला कर खाक कर दिया और फिर रोमन 'ईगल' उस पर फिर गया। जूडिया अब रेगिस्तान है।"

"ठीक-ठीक," वह बोली, "रोमन लोग महान् थे। उनके ईगल सारे संसार में जहाँ उड़ जाते वही उनका हो जाता था। वह युद्ध के पश्चात् अद्भुत शांति फैलाते थे।"

और मेरे मुँह से लैटिन की एक कहावत निकल गई :

"सोलिट्यूडिनम फैसिअंट, पेसम्एपैलैंट," वह सुन कर चौंक उठी और बोली :

"तुम लैटिन भी बोल सकते हो ? धन्य हो तुम ! सचमुच विद्वान व्यक्ति मालूम होते हो। तुमने दुनिया में विद्या रूप जल को अपने हाथों से पकड़ा है। मैं सच कहती हूँ तुमने यह लैटिन बोल कर मुझे बहुत ही अधिक प्रसन्न किया है। इसमें वही संगीत है जो मैंने बहुत पहले सुना था। तुम ठीक वैसा ही बोलते हो। यह कहावत जाने किसने कही थी पर इसका अर्थ कितना सच है ! रोमन वास्तव में महान् थे !" फिर वह एकदम उत्सुक होकर बोली :

"यूनानी भी जानते हो हौली ?" उसकी बोली बड़ी प्यारी लग रही थी।

"हाँ जानता हूँ और थोड़ी 'हिब्रू' (यहूदी भाषा) भी जानता हूँ परन्तु इन्हें तेजी से बोल नहीं सकता।"

उसने सुन कर बच्चों की भाँति खुश होकर तालियाँ बजाईं फिर मधुर स्नेह-सिक्त मुरली की तान के सदृश कोमल कंठ से कहा :

"ओह हौली ! तुम कुरूप पेड़ तो हो परन्तु तुम्हारे फल बुद्धि और ज्ञान रूपी हैं, वास्तव में तुम अत्यंत धीमान पुरुष हो· ····" और एक बार फिर उत्सुक होकर उसने पूछा :

"उन यहूदियों से मै आंतरिक घृणा करती थी क्योंकि वे बड़े क्रूर, कट्टर और मूर्ख थे। जानते हो वे मुझसे क्या कहा करते थे ? कहते थे मैं जंगली हूँ। कहते थे मैं वाराङ्गना हूँ·····हाँ तो उनके मसीहा का क्या हुआ ? क्या उसका राज्य संसार में फैल गया ?"

मसीहा का नाम सुन कर मेरा मन श्रद्धा और भक्ति से भर उठा। मैंने कहा :

"हाँ रानी ! उनका मसीहा आया था परन्तु उन्होंने उसे न माना। वह गरीब घर में पैदा हुआ और सारे जीवन उसने उन्हें सीख दी पर उन्होंने उस पर पत्थर मारे, उन्होंने उसे पेड़ पर सलीब पर चढ़ा कर मार दिया। परन्तु वह फिर भी नहीं मरा क्योंकि उसके शब्द, उसकी सीख आज भी आधी से अधिक दुनिया मानती है। आज भी उसके नाम पर लोग श्रद्धा से सिर झुका लेते हैं। वह महान् था। उसका राज्य फैल गया है परन्तु मनुष्यों के हृदय में। उसका कोई सांसारिक राज्य नहीं है वास्तव में वह भगवान का पुत्र था।"

"आह ! तो उन भेड़ियों ने उस मसीहा को मार डाला," वह भुनभुनाई फिर स्पष्ट भाव से बोली :

"वे बड़े लोभी और दुष्ट थे। उनके जाने कितने देवता थे। उन्होंने मसीहा को भी मार डाला !! परन्तु मैं कैसे मानूँ कि वह जीवित-आत्मा का पुत्र था ? फिर भला वह मर किस प्रकार सकता था·· ! खैर छोड़ो·····इस बारे में मैं तुमसे बाद में बातें करूँगी।·····वे यहूद: कभी किसी भगवान की परवाह तब तक न करते जब तक वह वैभव के साथ उनके बीच न आता। उनके पास देवताओं की भला क्या कमी थी ! जैहोवा, बाल, एस्टोरैथ और मिश्री

देवताओं को भी वे मानते थे। उनके उदर में हलाहल विष था और वे सदा धन और शक्ति के पीछे षडयंत्र रचा करते थे। उन्होंने मसीहा को मार डाला क्योंकि वह गरीब था। क्रूर, निर्दयी, अत्याचारी थे वे। उन्होंने मेरी बुरी गति की थी। मेरा अपमान किया था उन्होंने मुझे सभ्य समाज से भगा दिया था और मैं यहाँ दुनिया से दूर इस बियाबान में जंगलियों के देश में आ गई। जेरूसलम के मन्दिर के दीर्घ तोरण के सामने जब मैं उन्हें कुछ सीख देना चाहती थी, कुछ जीवन की विशेषताऐं बताना चाहती थी, जानते हो उन्होंने क्या किया? उन सफेद दाढ़ियों वाले मक्कारों ने और उनके रबियों ने जो कुत्तों की भाँति खूँखार थे, मेरे ऊपर पत्थर फेंके, मुझे लहू-लुहान कर दिया।" और उसने अपनी हंस-ग्रीवा के सदृश बाहु पर से वह पतला कपड़ा हटा कर मुझे एक पुरानी चोट का निशान दिखाया और बोली :

"देखो अभी तक उन लोगों की दुष्टता का निशान बाकी है।"

मेरा हृदय एक बार धड़कने लगा और मैं भय से जैसे जम गया था। यह तो कोई ढाई हजार वर्ष पूर्व की बात कह रही थी हे भगवन!

मैंने डरते-डरते उससे पूछा :

"मुझे क्षमा करो हे रानी! परन्तु मेरे मन में भयानक जिज्ञासा उत्पन्न हो गई है। मसीहा को हुए आज दो हजार वर्ष हो चुके हैं। उन्होंने उसे गोलगोथा में सलीब पर चढ़ा दिया था और तुमने उससे भी पहले जेरूसलम के मन्दिर के द्वार पर जो उपदेश यहूदियों को देने चाहे थे तो क्या तुम तब भी थीं? यह कैसे हो सकता है रानी? भला मनुष्य इतने दिनों कैसे जी सकता है? मुझे तुम मूर्ख क्यों बना रही हो?"

उसने कोई उत्तर नहीं दिया। वह शैया पर पुनः लेट गई और मैं ऐसा अनुभव करने लगा मानों उस महीन कपड़े की ओट से उसकी आँखें मेरे हृदय को ढूँढ़ रही थीं। मैं भी चुप रहा। थोड़ी देर बाद वह बोलने लगी। इस बार उसका स्वर बहुत ही गिरा हुआ था। ऐसा लग रहा था मानो वह जबर्दस्ती बोल रही थी। वह बोली :

"अरे आदमी! मालूम होता है संसार को अभी तक उन रहस्यों का पता नहीं है जो यहाँ सदा से विद्यमान थे। तुम तो निश्चय ही उन्हें नहीं जान पाये

हो। क्या तुम समझते हो मृत्यु कोई आवश्यक बात है? और मृत्यु होती भी क्या है? वह तो बस आत्मा के लिये एक परिवर्तन मात्र है। आत्मा चोला ही तो बदलती है परन्तु कभी-कभी उसे ठीक पहले जैसा शरीर मिल जाता है……।"

मेरी समझ में उसकी एक भी बात नहीं आई थी और यह शायद उससे भी छिपा नहीं रहा था। वह दीवारों पर बने चित्रों की ओर इशारा करती हुई बोली :

"इन्हें देखो यह कहाँ मरे हैं। सात-आठ सहस्र वर्ष गुजर गए और यह जिन्दा है। इनके बनाने वाले कभी के न रहे पर ये अभी तक मौजूद हैं। मुझे तो कभी-कभी ऐसा लगता है कि इनकी आत्माएँ यहाँ आती हैं और आपस में अपनी बनी इन आकृतियों के बारे में वाद-विवाद करती रहती हैं।"

"परन्तु इस दुनिया के लिये तो वे हमेशा के लिये मर ही गए?" मैंने प्रश्न किया।

"ओह! वे नहीं मरते। वे थोड़े समय के लिये चले जाते हैं बस। मैं, आयशा—यही मेरा नाम है, हे अजनबी! आज दो सहस्र वर्षों से एक जाने वाले की प्रतीक्षा कर रही हूँ, आह! वह मेरा प्यारा तब चला गया था। मैं जानती हूँ वह फिर आयेगा……और वहाँ……इसी बियाबान में मुझे लेने आयेगा। यह निश्चय है। वह जब भी फिर जन्म लेगा मुझे ढूँढ़ेगा और मैं उसे यहाँ मिलूँगी।……" वह चुप हो गई। मैं आश्चर्यचकित होकर फटे नेत्रों से उसे देख रहा था। वह एकाएक मेरी ओर देखकर बोली :

"बता सकते हो हौली! मैं जो सर्वशक्तिमान हूँ, जिसकी सुन्दरता सारे संसार में अद्वितीय है, इतनी सुन्दर कि यूनान की हैलेन जिसके बारे में कवि लोगों ने गाथाएँ गाई, मेरे सामने ठहर भी नहीं सकती थी। मैं जो इतनी बुद्धिमान और ज्ञानी हूँ कि वह वृद्ध राजा सुलेमान जो प्रसिद्ध ज्ञानी था, मेरे पैरों की धूल भी नहीं था और मैं जिसने परिवर्तन, जिसे तुम मृत्यु कहते हो—उसे भी किसी हद तक जीत लिया है—इस जंगल में इन जंगलियों के बीच सारे संसार की सभ्यता से दूर क्यों रहती हूँ? यह जंगली जो जानवरों से भी बदतर हैं, क्या इन्हीं का संग मुझे भाता है?"

"नहीं! मैं नहीं जानता?" मैंने नम्र स्वर में अपनी अनभिज्ञता बताई। वह उसी उत्तेजित परन्तु कोमल स्वर में कहने लगी :

"अपने प्रेमी से मिलने के लिये। मेरा जीवन कदाचित् प्रारंभ में बुरा रहा हो क्योंकि अच्छे-बुरे की परिभाषा करना भी साधारण विषय नहीं होता। मैं उसे ढूँढने निकलूँ यह भी मैंने कई बार इन ढाई हजार वर्षों में सोचा है परन्तु ऐसा करते हुये मैं डरती हूँ। इसलिये नहीं कि मैं मर जाऊँगी क्योंकि मरूँगी तो मैं तभी जब मेरा समय आ जायगा अर्थात् तभी मैं परिवर्तन को प्राप्त होऊँगी। पर इसलिये कि उस विश्व में जहाँ करोड़ों वर्षों से तारे घूम रहे हैं भला मैं उसे ढूँढ़ कर कहाँ पाऊँगी? और यदि पा भी जाऊँ तो कहीं कोई दीवाल उसके और मेरे बीच में न खड़ी हो जाय। आह! होली! तब मैं उस झटके को नहीं झेल सकूँगी। इसीलिये मैं यहीं उसकी प्रतीक्षा कर रही हूँ। वह आयेगा और अवश्य मुझे खोजता हुआ आयेगा। चाहे वह कल या परसों न आये और पाँच हजार या पन्द्रह हजार साल बाद आये पर आयेगा अवश्य। यह प्रकृति है और प्रकृति के नियम झूठे नहीं हो सकते। यह पन्द्रह हजार वर्ष समय की अनंत गति में इतना ही प्रभाव रखते हैं जितना बादल के बनने और बिगड़ जाने में। वह मेरा प्यारा आवेगा और अबकी मुझे प्यार करेगा। चाहे मैंने पहले बार उसे मारा ही क्यों न था पर अबकी उसका हृदय मेरे प्रति उदार और प्रेमसिक्त होगा और·····," फिर वह अपनी छातियों पर हाथ रख कर बोली :

"और वह मुझे चाहे पहिचाने भी नहीं, शायद 'परिवर्तन' में वह अपने आपको और मुझे भूल भी जाय तो भी वह मुझे मेरे रूप के कारण चाहेगा।"

मैं उसकी बातें सुनकर हक्का-बक्का रह गया था। क्षण भर को मेरी बोलती बन्द हो गई क्योंकि जो कुछ वह कह रही थी वह मेरे लिये जीवन की सबसे जटिल समस्या बन गई थी। मनुष्य का दिमाग तो इतना सब कुछ सोच भी नहीं सकता था। बड़े साहस से मैं बोला :

"परन्तु हे रानी! यदि पुनर्जन्म सही है तो भी; पर तुम तो·····," और मैंने देखा कि उसने मेरी ओर तीक्ष्ण दृष्टि से देखा। उसके कपड़े में से मुझे अनुमान हुआ मैंने उसके नेत्रों में एक चमक देखी। परन्तु मैं रुका नहीं बोलता गया, "·····उससे भी मुक्त हो क्योंकि तुम कभी नहीं मरी हो?"

वह कुछ देर चुप रही, मैंने समझा। मैंने समझा कि मैंने अधिक प्रश्नों से उसे रुष्ट कर दिया है और मैं डरने लगा परन्तु उसी समय वह वैसे ही स्वर में बोली :

"यह सच है क्योंकि मैंने यत्नों से और कुछ इत्तिफाक से संसार के एक बहुत बड़े रहस्य को जान लिया है। हे अजनबी! तुम्हें मेरे लम्बे जीवन पर आश्चर्य होता है! है न? पर मैं पूछती हूँ क्यों न मनुष्य थोड़ा और जीकर देखे? समय और जीवन की अनन्त गति में दस-बीस-पचास हजार सालों की गणना है ही कितनी सी? पचास हजार साल में आँधी, मेह, तूफान इत्यादि, प्रकृति के आघातों से पहाड़ को एक हाथ भी तो कम नहीं करता? करोड़ों साल से यह तारे आकाश में चमकते हैं, इनका तो कुछ भी नहीं बिगड़ता? इन ढाई हजार वर्षों से ये गुफायें तो वैसी ही हैं जैसी मैंने पहले देखी थी। जीवन, हे हौली! विचित्र अवश्य है परन्तु उसका एक चोले में कुछ अधिक समय तक रहना आश्चर्यजनक नहीं है। जानते हो प्रकृति की भी एक जीवित-श्वास होती है? और मनुष्य जो प्रकृति का बच्चा होता है उसमें भी वैसी ही एक शक्ति होती है। यदि मनुष्य अपनी जननी प्रकृति की जीवित-श्वास को पा जाय तो वह भी उसी की भाँति लम्बे जीवन का अधिकारी हो जाता है। लम्बा जीवन तो अमर नहीं क्योंकि अमर तो प्रकृति भी नहीं है। उसे भी एक न एक दिन परिवर्तन के वश होना पड़ेगा। पृथ्वी को उसी प्रकार निर्जीव होना पड़ेगा जैसा कि अब चन्द्रमा है। उसकी अवधि पूरी हो गई और अब वह निर्जीव है। परिवर्तन में उसे जाने कब पुनः जीवन प्राप्त होगा·····आह! प्रकृति के नियम नहीं टाले जा सकते। मेरा प्रियतम आयेगा और उसे मैं इन्हीं नियमों से लम्बा जीवन दिलाऊँगी·····और तब हम आनन्द भोगेंगे·····हौली! तुम बुद्धिमान व्यक्ति हो। मैं समझती हूँ कि अब तुम्हारे लिये यह बातें कठिन प्रतीत नहीं होंगी। मैं फिर कभी तुम्हें, यदि मेरी इच्छा हुई तो, उन रहस्यों के बारे में बताऊँगी।··· जानते हो जब तुम लोग इस देश में आये थे मुझे कैसे पता चल गया था? आह! यदि मैं समय से सूचना न भेजती तो वे दुष्ट लोग तुम्हें भून कर खा जाते।"

"नहीं·····हे रानी,' मैं ने मूर्खतापूर्वक कहा क्योंकि अब मैं आश्चर्य की सीमा को लाँघ चुका था।

"इधर आओ और उस पानी में झाँक कर देखो," वह उस पर हाथ बढ़ाते हुए बोली। मैंने देखा उसके हाथ बढ़ाते ही पानी गहरा हो गया। फिर धीरे-धीरे

वह स्वच्छ हो उठा और मैंने देखा·····हाँ मैंने ! हौली ने ! इन्हीं नेत्रों से देखा·····कि हमारी नाव उस भयानक काई से ढँकी नहर में खड़ी है जिसमें लिओ मच्छरों से बचाव करने के लिये कोट ओढ़े पड़ा सो रहा हैं। मैं, जौब और मुहम्मद नाव को तीर पर खींचकर बाँध रहे हैं। मैं घबड़ाकर पीछे हट गया। भय से मेरे सिर के बाल खड़े हो गए थे। मैं अबकी जोर से चिल्ला उठा :

"जादू·····यह जादू है।"

"नहीं ! नहीं ! हौली !·····यह कोई जादू नहीं है। जादू कुछ होता ही नहीं है·····," वह बोली : "वह तो मूर्खों का भय है। हाँ प्रकृति के रहस्यों को जान लेना बड़ी विद्या है। यह पानी मेरा दर्पण है। इसमें मैं जब चाहे भूत और वर्तमान देख लिया करती हूँ। यह संसार के लिए नई वस्तु नहीं है। शायद अब यह न रही हो परन्तु मेरे काल में काफी प्रचलित थी। इसे पाँच हजार वर्ष पहले अरब और मिश्र के सिद्धों ने इसे बनाया था। परन्तु भविष्य के बारे में इससे मुझे कुछ पता नहीं चलता। शायद वह भी इससे जाना जा सकता हो परन्तु मैं उस विधि को नहीं जानती। उस दिन जाने क्यों मुझे उस नहर का ध्यान हो आया जहाँ दो हजार वर्ष पूर्व मैं आई थी और मैंने इस दर्पण में वह नहर देखी और तभी मुझे तुम लोग दिखलाई दिये। जो युवक सो रहा था सचमुच ही किसी अच्छे वंश का मालूम होता था क्योंकि वह गोरा और सुगठित है। परन्तु मैं उसका मुँह न देख सकी थी। अच्छा हुआ जो मैंने तुम्हें देख लिया और बचा लिया। खैर·····अब हौली तुम जाओ·····मैं विश्राम करना चाहती हूँ·····पर ठहरो·····वह युवक कौन है ? उसके बारे में मुझे बताओ। बिलाली उसे 'शेर' कहता है। परन्तु वह तो शायद अस्वस्थ है और शायद लड़ाई में घायल भी ?"

"हाँ वह बहुत ही ज्यादा बीमार है।" मैंने उदास स्वर से कहा। फिर मैंने पूछा : "हे रानी ! तुम तो सर्वज्ञ हो। तुम मेरे लिओ को ठीक नहीं कर सकतीं ?"

"अवश्य·····मैं उसे ठीक कर सकती हूँ·····पर तुम इतने उदास क्यों हो गये ? क्या वह तुम्हारा पुत्र है ?" उसने पूछा :

"नहीं। पर पुत्र से भी अधिक है," मैंने उत्तर दिया, मैंने उसे गोद लिया है।"

"उसे कब से ज्वर है?" उसने जाँच की।

"आज तीसरा दिन है," मैंने उसी भाँति उत्तर दिया।

"ठीक है। एक दिन और देखो। शायद वह अपने आप ही ज्वर को पछाड़ दे। कल उसी समय की प्रतीक्षा करो जब ज्वर उसे चढ़ा था। यदि वह स्वयं ठीक नहीं हुआ तो मैं उसे जीवन का पीयूष देकर ठीक कर दूँगी। मैं अपनी औषधि तभी देती हूँ जब और कोई चारा नहीं रहता क्योंकि वह शरीर की जड़ों को हिला देती है···घबराओ मत···हाँ उसके पास उसकी सेवा-सूश्रूषा कौन करता है?"

"हमारा नौकर जौब जिसे बिलाली 'सूअर' कह कर पुकारता है।" मैं बोला· और फिर जरा हिचकिचा कर मैंने कहा :

"·····और एक यूस्टेन नाम की सुन्दरी युवती भी है जो यहीं बिलाली की गुफा में हमें मिली थी। उसने सब के बीच लिओ को चूमकर उसे अपना पति बना लिया था। वह तभी से उसके साथ छाया की भाँति लगी रहती है। तुम्हारे आदमियों के नियम के अनुसार वह उसकी स्त्री ही है।"

"मेरे आदमी?" वह जल्दी से बोल उठी, "उन्हें मेरे आदमी न कहो। ये कुत्ते हैं जो मेरी आज्ञा पालन करने के लिये ही पैदा हुए हैं। जब तक मेरा प्रियतम नहीं आ जाता वह ऐसा ही करते रहेंगे क्योंकि बाद में तो मैं इन्हें····· इन जंगलियों को सदा के लिये छोड़ जाऊँगी। इनके रीति-रिवाजों से भी मुझे घृणा है। हाँ·····तुम मुझे रानी न कहा करो क्योंकि यह चाटुकारी की बातें सुनते-सुनते मैं इन ढाई हजार सालों में बहुत थक गई हूँ। मुझे 'आयशा' कह कर पुकारो क्योंकि यह मेरे लिये नया सा लगेगा·····"

डरते-डरते मैंने कहा : "आयशा···।"

"आह! कितने समय बाद मुझे मेरे नाम से किसी ने पुकारा है·····आह! कितनी पुरानी याद दिलाता है यह नाम!" वह आनन्द से विभोर होकर बोली। फिर उसने जिज्ञासा भरा प्रश्न किया। अबकी उसका स्वर बहुत धीमा था :

"और यह यूस्टेन कौन है? कैसी है वह·····कहीं यह वही तो नहीं है जिसके बारे में मुझसे सावधान रहने को कहा गया था और जिसे मैंने भी

सावधान किया था·····ठहरो मैं देखती हूँ।" और फिर उसने उसी भाँति उस पानी पर हाथ फिरा कर अन्दर झाँका। वह देर तक उसे देखती रही। फिर मुझसे उसने कहा :

"देखो तो हौली यही है न वह ?"

मैंने देखा वही थी। यूस्टेन उस समय लिओ पर झुकी हुई देख रही थी। उसके नेत्रों में ममता का समुद्र मानो उमड़ आया था। उसके स्वस्थ और सुन्दर नग्न कंधे पर उसकी भूरी लटें बिखरी हुई थीं; मैंने कहा :

"वह इस समय लिओ को देख रही है।"

'लिओ !' मानो आयशा ने अभी ध्यान दिया। उसने उस जल पर फिर हाथ फेरा और पानी फिर गहरा होकर शुभ्र हो गया। परन्तु लिओ शायद मुँह फेरकर सो रहा था। कुछ साफ दिखाई नहीं दिया। केवल दीपक का उजाला ही दिखाई दिया। अब वह शैया पर सीधी लेट गई और बोली :

"अब और तो कुछ नहीं पूछना चाहते मेरे हौली ?" मैं चुप रहा। वह फिर बोली :

"देखो मैं क्या खाकर रहती हूँ। यहाँ इन जंगलियों में सभ्यता का एक भी लक्षण नहीं है। मैं केवल फल, दूध और आटे की रोटियाँ ही खाती हूँ और पानी। बस यही। हजारों वर्ष मैंने यही खाया है। तुम्हें यहाँ सभ्य समाज तो नहीं मिलेगा पर फिर भी जो है उसे तुम पूर्ण रूप से भोगो। मैंने अपनी गूँगी सेविकाओं से तुम्हारी सेवा करने का आदेश दे दिया है। मेरी सेविकायें सब गूँगी अथवा बहरी हैं। अनुचर हमेशा ऐसे ही होने चाहिये जो तुम्हारा भेद कहीं न दे सकें। इनके तो बस हाव-भावों तथा इशारों से ही बात समझी जा सकती है। मैंने इन्हें सैकड़ों वर्षों के कठिन कार्य के बाद पाया है। पहले ये सब कुरूप थीं। कुरूपता बढ़ती गई और मैंने उकताकर उन सब को मर जाने दिया। एक बार मैंने दानवों को भी पाला था पर प्रकृति ने उन्हें भी मंजूर नहीं किया। अब ये हैं जो अत्यन्त सुन्दर कही जाने योग्य हैं। तुम इनसे अपनी सेवा करा सकते हो।"

मैं उठ कर खड़ा हो गया। मैंने उसकी ओर झटके से मुड़ कर देखा और न जाने कैसे मुझमें इतना साहस आ गया कि मैंने उससे कहा :

"हे आयशा ! एक बात मैं और कहना चाहता हूँ। यदि आज्ञा हो तो कहूँ।"

उसने सिर हिला कर स्वीकृति दी। मैंने कहा :

"मुझे अपना मुख और शरीर दिखा दो।"

सुनते ही वह खिलखिला कर हँस पड़ी। उसकी हँसी संगीत बन कर फैल गई। फिर उसने कहा :

"ओह हौली ! सोचो ! तुम क्या कह रहे हो ! कहीं तुम्हें बाद में पछताना न पड़े। तुम तो विद्वान् हो और अवश्य ही तुमने तो एक्टियौन की कथा पढ़ी होगी। वह बेचारा यूनानी इसीलिये मर गया था। क्योंकि उसने बहुत ज्यादा सुन्दर स्त्री देख ली थी। कहीं तुम्हारा भी यही हाल न हो। मुझे देखने के बाद शायद तुम अपना कलेजा निकाल कर स्वयं खाने लगो। नहीं हौली ! ऐसी भूल मत करो क्योंकि मेरी सुन्दरता तुम झेल नहीं सकोगे। खासकर जब मैं तुम्हें कुछ न दे सकूँगी। जानते हो मैं तुम्हारे लिए नहीं हूँ·····मैं तो उसकी हूँ जो कभी था और अभी नहीं आया है !!"

"आह !" मैंने साँस खींच कर उत्तर दिया :

"मैं स्त्री की सुन्दरता से नहीं डरता। मैंने तो उस चीज को ही अपने जीवन से भुला दिया है। मैं स्त्री की तुरन्त मुर्झा जाने वाली सुन्दरता का कायल नहीं हूँ।"

"नहीं वह कभी नहीं मुर्झाती·····यहीं तुम गलती करते हो। जब तक मैं हूँ मेरी सुन्दरता बनी रहेगी। परन्तु हे उतावले पुरुष ! यदि तुम मरने पर ही तुल गये हो तो मैं तुम्हें अपना रूप दिखा दूँगी। परन्तु बाद में मुझे दोष न देना। जिस मनुष्य ने मुझे एक बार देख लिया वह कभी मुझे अपने नेत्रों से नहीं हटा सका। मैं इसीलिये इन जंगलियों के बीच भी कपड़े से अपने को ढँकी रखती हूँ। मुझे देखकर किसी भी पुरुष के लिये असम्भव है कि वह पागल न हो उठे और उस हालत में मुझे उसे मारना पड़ता है। इसीलिये मैं अपने को ढँके रखती हूँ।"

उसकी बातें सुनकर मेरी उत्सुकता पराकाष्टा को पहुँच गई। मैंने कहा :
"आयशा ! मैं तैयार हूँ। पर्दा हटा दो।"

वह हँस दी।

× × × ×

१२

मैंने समझा उसने मेरी बात ठुकरा दी थी परन्तु उसी समय उसने अपनी बाँहें ऊपर उठाईं। उस पर से कपड़ा हट गया था। आह ! उन हंसग्रीवा सदृश मांसल गोल गौर और शुभ्र बाँहों का मैं किस प्रकार वर्णन कर सकता हूँ। मेरी आँखें उन पर ठहर गईं। उसने अपने केशों में उँगलियाँ देकर कोई ग्रन्थि खोली और जैसे पूर्ण चन्द्रमा के सामने से एकदम बादल हट गया। वह कपड़ा जो उसके शरीर के चारों ओर मुर्दे की तरह लिपटा हुआ था एकदम पृथ्वी पर गिर गया और मैंने एक बार नहीं बार-बार, आँखें फाड़ कर देखा····· वह अपने ज्वलंत रूप में दमक रही थी। अब वह केवल एक सफेद कसी पोशाक पहिने हुई थी जो उसके शरीर को सीने से घुटनों तक ढँके हुई थी। परन्तु यह इतनी कसी हुई थी कि इसमें होकर उसके शरीर की सारी बनावट दिखाई दे रही थी। आह ! मेरे सामने जैसे रूप का ज्वालामुखी फूट रहा था। उसके छोटे गोरे पैरों में बालोंदार जूते थे जो सोने के तारों से बँधे हुए थे। फिर उसके टखने और पिंडलियाँ दिखाई दीं। वह ऐसी थीं जिनकी कल्पना करना भी असंभव था। किसी भी शिल्पी ने अब तक ऐसा रूप ध्यान में भी नहीं देखा होगा। उसकी पतली दूधिया कमर पर एक सोने की रशना थी जो कसी हुई थी। उसके मुख पर विचित्र रूप से दो सर्प आपस में गुँथे हुए थे। फिर उसके युगल स्तन ! ऐसे गोल और उन्नत उरोज संसार में नहीं होते क्योंकि उनमें विश्व को मदहोश करने की थिरकन थी। वह विद्युत के समान चमकीले, दूध की भाँति शुभ्र और हाथी दाँत की भाँति स्निग्ध थे। उसके स्कंध नग्न थे। उसकी गर्दन मानों बीच से बल खाती थी, सुराहीदार वह ऐसी थी जिसमें होकर यदि वह पानी भी पीती तो निश्चय ही दिखाई दे जाता !

जब मेरी निगाहें उसके मुख पर पड़ी तो मैं सच कह रहा हूँ मैं घबरा कर पीछे हट गया। मैंने पढ़ा था और सुन भी रखा था कि स्वर्गिक सुन्दरियाँ होती हैं परन्तु अभी तक उनका रूप नहीं देखा था। मेरी आँखें चौंधिया गईं। भँवरे के समान काली अलकावलियों के बीच उसका शुभ्र मुख ऐसा लगता था जैसे घने बादल के बीच दामिनी चमक उठी हो। गहरे काले नेत्र, सुवर्ण के समान मुख जिसमें इंद्रधनुष की गुलाबी छा रही थी, उसके रूप को देदीप्यमान बना रहे थे। उसकी रूप-रेखा अद्भुत थी। कमान सदृश उसकी भौं पर कोमल काली रोमावलियाँ घनी हो गई थी जो पंक्ति के बाहर एक रोम भी नहीं दिखा रही थीं। लंबी पलकें, सीधी नासिका, गुलाब सदृश पतले होंठ, सुन्दरतम चिबुक और गाल·····मैं उस रूप का शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता। यह सब अत्यन्त सुन्दर तो थे परन्तु फिर भी उस नारी की सुन्दरता मानो उनमें नहीं थी। वह तो जैसे इनसे भी बढ़कर जाने कौन सी आकर्षण शक्ति थी जो मुझे उस समय बलहीन किये दे रही थी। यह शायद उसकी प्रत्यक्ष गरिमा में, उसकी दैवी अद्भुत शक्ति में तथा उस अलौकिक और कमनीय लचक में थी जो इस समय उसके मुख पर सुन्दरता को चुनौती देती हुई प्रगट हुई थी।

फिर भी वह पूर्ण दैवी ही नहीं कही जा सकती थी क्योंकि न जाने क्यों मुझे उसमें एक साँप की सी फुर्ती और शैतान का निवास दिखाई देता था। मैंने कभी नहीं सोचा था कि सौन्दर्य नखशिख में बँध सकता था—और यह सौंदर्य अलौकिक तो था परन्तु पूरी तरह स्वर्गिक नहीं था फिर भी अद्भुत अवश्य था। उसमें शिकन का नाम भी नहीं था। वह मुख यौवन का उठता फव्वारा था परन्तु मुझे उसमें एक दीर्घ, बहुत ही दीर्घकाल का अनुभव दिखाई दिया·····अनुभव जो दुख अपूर्ण वासना से उद्दीप्त हो उठता है। वह मुस्कुरा रही थी और ऐसा करने में उसके चिबुक और गालों के बीच हल्के गढ्ढे पड़ जाते थे वैसे ही जैसे बीचियों में चलते-चलते पड़ जाते हैं। परन्तु वह मुस्कुराहट भी उस भाव को मेरी आँखों से न छिपा सकी। वह कौमार्य का सौंदर्य था जो स्पर्श से बहुत दूर और पवित्र था। फिर भी मुझे उसमें शैतान की छाया दिखाई देती थी। वह रूपसी मानो पुकार कर कहती थी :

"मुझे देखो ! मेरे समान सुन्दरी संसार में न कभी कोई थी और न है। मैं परिवर्तन से मुक्त हूँ और जहाँ हूँ वहीं मेरा यौवन ठहर गया है। मैं अजर हूँ, मैं अमर हूँ। मेरी चिर स्मृतियाँ मुझे प्रेत की भाँति सताती हैं क्योंकि उनका कोई अन्त नहीं है और वासना मेरा हाथ पकड़े मुझे उद्वेलित करती रहती है क्योंकि मैं अतृप्त हूँ। मुझे मेरा प्रियतम अभी तक नहीं मिला है क्योंकि मैंने उसे पाकर खो दिया है। मैंने पाप किया है और दुख झेल कर सदियों से ओह ! हजारों वर्षों से परिचय प्राप्त किया है। मैं तब तक शायद पाप करती ही रहूँगी जब तक मेरी मुक्ति न होगी·····मेरी मुक्ति मेरे प्रियतम के आने में बसी है····· ···!!!"

मै उस रूप की अग्नि को अधिक न देख सका। मेरी दृष्टि उसके पैरों पर टिक गई। और मुझे ऐसा अनुभव होने लगा जैसे उसके पैरों से विद्युत का सी एक रेखा मेरे शरीर में घुस कर मुझे झटके दे रहा है। मेरी आँखें आधी मिंच गईं।

वह हँसी और मानो चाँदी की पतली घंटियाँ बज उठीं। मैंने निगाहें उठाईं। देखा उसने ग्रीवा हिलाई। उसकी उस भाव भंगिमा पर मैं सिहर उठा और एक कदम आगे बढ़ा। वह बोली :

"एक्टियौन की भाँति हे जिद्दी आदमी ! तुमने अपने आपको मेरे रूप के प्रवाह में बहा दिया है ! परन्तु सावधान उसकी भाँति मूर्खता करके अपने को नष्ट न कर लेना।"

मैं जहाँ का तहाँ खड़ा रह गया। वह फिर बोली :

"हे हौली ! मैं भी एक कुमारी देवी हूँ जिसे कोई पुरुष नहीं छू सकता, केवल वही मेरा अधिकारी है·····वह मेरा प्रियतम ! आह ! वह जाने कब आयेगा ! पर आयेगा अवश्य·····चाहे पचास हजार वर्ष और बीत जाँय..."

मैं पागल की भाँति खड़ा रहा तो उसने पूछा :

"देख लिया हौली ! तुमने मेरा रूप ? और कुछ चाहते हो ?" मैंने अपनी आँखों पर दाहिनी हथेली रख ली और उँगलियों की दरारों में से थोड़ा-थोड़ा देखता हुआ भर्राये कंठ से बोला :

"हे आयशा ! मैं तुम्हारे रूप की ज्वाला से अंधा हो गया हूँ। मैं अब कुछ भी नहीं देख सकता।"

"कहा न था मैंने तुमसे पहिले ही हौली ?" वह बोली : "रूपसी का रूप अद्‌भुत होता है परन्तु जिस पर पड़ जाता है उसे ही नाश कर देता है और खासकर यह विद्युत 'पेड़ों' के लिये तो बहुत ही भयानक है·····यह उन्हें जला देता है', वह फिर वासना भरी दृष्टि लिये मटकती हुई मुस्कुरा दी।

परन्तु उसी समय मैंने उँगलियों की दरारों से देखा कि उसका वह मुख एकदम कठोर हो गया। ऐसा मालूम होने लगा जैसे उसके हृदय की अतल गहराइयों से उठते हुये आतंक और किसी नवीन आशा में, जो उसी समय किसी वस्तु को देखकर उसमें प्रस्फुटित हुई हो, भयानक द्वंद चल रहा था। उसकी वह सर्प की सी लचक अब नहीं रही थी। वह सीधी ऐंठी खड़ी थी·····

"बोलो !" उसने कठोर स्वर में मुझे आज्ञा दी·····वह आधी फुसफुसा रही थी मानो सारा हलाहल उसके कंठ में एकत्रित हो गया था। वह बोली :

"बोलो आदमी ! यह तावीज़ तुमने कहाँ पाया ? यह तुमने अँगूठी में कैसे जड़वाया·····बोलो ? अन्यथा मैं तुम्हें यहीं भस्म कर दूँगी," और वह एकदम मेरी ओर बढ़ आई। उसकी ग्रीवा एक बार पीछे को लचक गई मानो भुजंग पीछे हट कर अब प्रहार करना चाहता था। उसके नेत्रों में मैंने देखा अग्नि जल रही थी। मैं घबरा उठा। आतंक की भी पराकाष्ठाओं को मैं पार कर गया था। मैं निर्जीव होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। मैंने समझा मौत आगई थी, मेरे नेत्र मुँद गये।

"शांत·····शांत", मुझे सुनाई दिया और मैंने नेत्र खोले, वह उसी पहिले मंद स्वर में बोल रही थी, उसने कहा :

"मुझे क्षमा करो हौली ! मैंने तुम्हें डरा दिया। मैं आखिर एक कमजोर स्त्री ही तो हूँ। युगों से प्रतीक्षा करता हुआ मेरा मस्तिष्क एकदम अपना संतुलन खो बैठता है क्योंकि आह ! कितना दुख ! कितनी स्मृतियाँ एकत्रित हो गई हैं ! ऐसे समय में मैं अपनी शक्ति का प्रयोग कर दिया करती हूँ। मैंने तुम्हें मार ही डाला था कि हठात् मुझे याद आ गया·····परन्तु यह तावीज ? यह तुमने कहाँ पाया ?"

मैं अब उठ खड़ा हुआ और अटक-अटक कर बोला : "मैंने·····मैंने··· यह लिओ के कमरे में पड़ी देखी थी·····वहीं यह मुझे मिली·····" वास्तव में मैं इतना घबरा गया था कि उस समय मुझे सिवा इसके और कुछ याद ही नहीं आया। मैं उस तावीज, उस बक्स, विसे सब को भूल गया था।

"आश्चर्य है!" वह स्त्री सुलभ स्वर से कंपित होकर बोली, शायद उसे बहुत ही पुरानी किसी घटना की याद हो आई थी। "परन्तु ऐसी ही एक तावीज तब·····मेरा प्रियतम गले में पहने हुये था शायद·····शायद यह कोई और हो", और मैंने देखा वह घुटी सी रोने लगी, मैंने अनुमान लगाया कि आखिर वह स्त्री ही तो थी चाहे कितनी ही पुरानी क्यों न हो।

वह फिर सँभल गई और बोली :

"शायद यह कोई दूसरा है परन्तु इसके पहनने वाले ने मुझसे कहा था कि सारे संसार में ऐसा दूसरा नहीं था·····पर वह तो गले में लटका हुआ था और यह अँगूठी में जड़ा है·····शायद यह कोई दूसरा और किसी ने वैसा ही बना लिया हो·····"

और इसके बाद भी जब मैं खड़ा रहा तो वह मधुर स्वर से बोली :

"जाओ हौली! जाओ, आयशा के रूप को याद रखकर अपने को न मारो·····जाओ·····इस रूप में कहीं भस्म न होना पड़ जाय·····", और वह शैया पर गिर कर तकियों में सिर छिपाकर सुबकने लगी, उसे आज अपने प्रियतम का विरह खाये जा रहा था।

मुझे नहीं मालूम मैं कैसे और कब अपनी गुफा में आया·····।

× × × ×

१३

मुझे याद नहीं मैं कब लेटा पर जब मुझे थोड़ा होश हुआ उस समय रात्रि के करीब दस बजे थे। मैं अभी तक सोता तो न था पर ठीक कही जाने वाली हालत में भी नहीं था। मैं सोचने लगा कि जो कुछ मैंने स्वयं देखा उसे मैं कैसे झूठ मान सकता था। फिर प्रश्न उठता था कि आधुनिक विज्ञान और आविष्कारों

के बारे में मैं अनभिज्ञ तो था नहीं फिर भला वह अनर्गल बातें मैं क्यों सच मान बैठा था ? भला कोई स्त्री दो हजार वर्ष पुरानी हो सकती थी ? कितनी बड़ी झूठ थी यह उस स्त्री की और कैसा धोखा दिया उसने मुझे, मुझे बड़ा ख्याल हुआ। परन्तु फिर ध्यान आया उसकी बातों का, वह जो दो हजार वर्ष पहले की बातें करती थी और तब से अब त के बारे में कुछ भी नहीं जानती थी ? और उसका वह पानी का बड़ा पात्र जिसमें वह चाहे जिसकी परछाँई देख लेती थी ! आह ! वह तो गजब का था ! और सबसे ऊपर उसकी सुन्दरता ! क्या वह सांसारिक स्त्री की भाँति थी ? क्यों थी जगमगाहट उसके रूप में जो अन्य स्त्रियों में नहीं पाई जाती ? अवश्य ही वह कोई विशेष शक्ति की प्रतीक थी। मैं पुनर्जन्म तो खैर मानता ही न था परन्तु अब मेरा विश्वास डोलने लगा। यदि दो सहस्र वर्षों से भी ज्यादा आयु वाली स्त्री हो सकती है तो पुनर्जन्म भला क्यों नहीं हो सकता ? कौन था वह उसका प्रेमी जिसकी प्रतीक्षा वह युगयुगांतर से कर रही थी ? कहीं वह लिओ ही तो नहीं था ? तो क्या वह तावीज वाली कथा सत्य थी ? वही जो विंसे के बक्स में से भेद निकला था ? मैं कुछ भी निश्चित न कर सका। कितना सुन्दर था वह सब और फिर भी कितना भयानक। जरा चूके और मृत्यु तैयार थी।

मैं समझता था कि मैंने अपने जीवन से स्त्री शब्द को निकाल फेंका था परन्तु अब मैंने देखा कि उस विचित्र स्त्री के प्रति मेरे हृदय में भयानक हलचल मच गई थी। हाँ, उसने तो पहले ही कहा था, 'हौली ! कहीं तुम्हारी वेदना तुम्हें तुम्हारा ही हृदय खाने को मजबूर न कर दे·····मेरी सुन्दरता विलक्षण है !'

मेरा सिर फटने लगा। मैं क्या करूँ ? और कुछ न करूँ तो कैसे जिऊँ ? यह हालत मेरी हो गई। मैं शैया से उठ बैठा और अधीर मन लिये अपनी उस गुफा में घूमने लगा। तभी मुझे फिर ध्यान आया। वह कह रही थी, 'वह फिर आयेगा·····चाहे पचास हजार साल और रुकना पड़े,' आह ! पचास हजार साल ! क्या यह स्त्री तब तक जीवित रहेगी ? और फिर ऐसी ही रूप की जलती हुई शिखा बनी रहेगी ? मुझे लगा मैं यह सब अधिक नहीं सोच सकूँगा। मैं यदि ऐसा ही रहा तो पागल हो जाऊँगा। फिर मुझे पुनर्जन्म की बात याद आई यह भला कैसे संभव हो सकता है ? मरा हुआ फिर कैसे वापस आ सकता है ?

और शायद आता भी हो ! मेरी दृष्टि सामने की दीवार पर बने एक चित्र पर पड़ी, एक सैनिक—हजारों साल पहले का कौयर सभ्यता का सैनिक—उदास खड़ा था। वह काफी कुरूप था। मैंने सोचा 'कहीं मैं उन दिनों यही तो नहीं था ?' और मैं जोर से हँस पड़ा मैंने उससे कहा :

'देख मैं फिर पैदा हो गया हूँ·····तेरा ही दूसरा रूप·····मैं मरा नहीं था·····कभी नहीं मरा था·····अब फिर आ गया हूँ·····हा·····हा·····हा·····', मैंने अपना ही अट्टहास सुना और मैं चौंक गया। यह क्या मैं पागल हो गया हूँ। इतनी जोर से मैं क्यों चिल्ला रहा था ? गुफा अब भी मेरी आवाज से गूँज रही थी। मुझे ध्यान आया कहीं किसी ने मेरा बोल तो नहीं सुन लिया ? मुझे कोई कहीं से छिप कर देख तो नहीं रहा है ? तभी मुझे लिओ की याद आई। वह बीमार था। मेरा बेटा, मेरा सब कुछ, वह बीमार था। मैं और न रुक सका। जूते उतार कर मोजे पहिने हुए उसके कक्ष की ओर चल दिया था, सब तरफ निःशब्द था। लिओ के कमरे में दीप जल रहा था। मैंने देखा वह ज्वर की पीड़ा में अब भी तड़प रहा था। वह बेहोश तो था पर उसकी पीड़ा की उसकी करवटों और साँसों से प्रत्यक्ष हो रही थी, यूस्टेन शायद बैठी-बैठी ऊँघ गई थी। वह आधी पत्थर की चौकी पर आधी भूमि पर टिकी हुई थी। मैंने देखा लिओ के सुन्दर गाल ज्वर ने पीले कर दिये थे। आह ! कितना सुन्दर था ! और मेरे मन में स्पर्धा हो आई। कहीं यही तो वह नहीं है जिसकी हिया को प्रतीक्षा है ? और अगर न भी हो तो भी वह मुझसे सुन्दर है और शायद इसे पसन्द आ जाय ! तब मेरा अपना कोई स्थान उस सुन्दरी के पास नहीं रहेगा। तब तो लिओ का मरना ही·····।

"नहीं नहीं", मैं चीख उठा, फिर मैंने अपने ऊपर नियंत्रण किया। भाग्यवश कोई नहीं जगा था। मैंने भगवान से प्रार्थना की : "मेरे लिओ को ठीक करदे, भले ही वही उसे ले ले। मुझे नहीं चाहिये, नहीं चाहिये वह !"

मैं वहाँ से दबे पाँव चला आया। अपने कक्ष में आकर मैं फिर घूमने लगा। मेरे हृदय, मेरे मस्तिष्क, मेरे शरीर में, बल्कि मेरे रोम-रोम में हलचल मच गई थी। कैसी थी वह स्त्री जिसे देखकर मेरी शांति मुझसे छिन गई। तभी मैंने अनुमान किया कि मेरे कमरे में कहीं कोई गुप्त द्वार था जिसमें से कोई

मुझे देख रहा था और मेरा हृदय एक अज्ञात आशंका से काँप उठा। मैं सो जाऊँगा तो वह व्यक्ति मेरे ऊपर झुका खड़ा होगा और शायद मुझे मार ही दे ! और न जाने क्यों मेरी आशंका इतनी बढ़ी कि मैं दीपक लेकर चारों ओर दीवालें देखने लगा। एक स्थान पर मुझे कुछ दरार सी दिखाई दी तो मेरा ख्याल ठीक था। मैंने उसकी परीक्षा की। एक पटिया अड़ी हुई थी। मैंने थोड़ा जोर लगाया, वह एक ओर दीवाल में घुस गई। मैं दीपक हाथ में लिये अन्दर घुस गया। अन्दर लंबी सीढ़ियाँ थीं जो बगल से नीचे उतर गई थीं। न जाने मुझे क्या प्रेरणा हुई और मैं उन पर उतरता चला गया। करीब पचास सीढ़ियाँ थीं। निश्चय ही उन्हें यदि कोई चढ़ता तो हाँफ जाता। नीचे मैं एक गलियारे में पहुँचा जो सीढ़ी के बगल के लंबा चला गया था। यह स्थान चौड़ा कम था, लंबा ज्यादा। मेरे अनुमान से यह ठीक उस गलियारे के नीचे था जिसमें होकर हम अपने कमरों में आये थे। यह सब भी उसी भाँति चट्टान काट कर पोला किया हुआ मार्ग था। कमाल था इनके बनाने वालों का जो समूचा पहाड़ ही पोला कर डाला ! और न जाने इसकी हवा स्वच्छ कैसे थी ? प्रत्यक्ष में तो कहीं से हवा आने का मार्ग नहीं था। मैं विचारों में खोया हुआ आगे बढ़ता ही गया। लगभग सत्तर कदम जाने के बाद मैं एक ऐसे स्थान पर पहुँचा जहाँ से दो मार्ग कटते थे। बल्कि उस सीधे मार्ग में जो आर-पार निकल गया था यह जाकर आड़ा मिलता था। यहाँ मैं सोच ही रहा था कि क्या करूँ·····आगे बढ़ूँ या वापस लौटूँ क्योंकि वहाँ खड़ा तो मैं रह ही नहीं सकता था। आखिर वहाँ मुझे कौन देखने आता ? उस स्थान पर तो शायद मध्याह्न में भी घुप्प अंधकार रहता हो कौन जाने ? मैं यही सोच रहा था कि उस आड़े मार्ग से तेज हवा का झोंका आया और मेरा दीपक बुझ गया। मेरा दिल धक् से बैठ गया। मैं स्वतः बोला :

"हौली ! अब मर इस अँधेरे में !" माचिस भी मेरे पास नहीं थी।

मैंने पीछे मुड़कर देखा कब्रिस्तान की भाँति सन्नाटा छा रहा था। मैं थोड़ा और एक ओर दाहिने घूम गया और चलने लगा। मुझे अब एक और भय था। कहीं इस अपरिचित स्थान में मैं किसी गड्ढे में न गिर पड़ूँ। यहाँ तो बस फिर मौत निश्चित होगी। किसी को क्या पता चलेगा कि मैं इस दैत्य से पहाड़

के किस छिद्र में समा गया हूँ और फिर किसे पड़ी है जो मुझे दीपक लेकर ढूँढ़ने निकलेगा ? मैंने दीवाल को एक हाथ से पकड़ लिया और धीरे-धीरे आगे सरकने लगा। पहले पैर बढ़ाकर भूमि देख लेता था। हठात् मेरी दृष्टि सामने पड़ी और मैंने देखा दूर कहीं दीपक जल रहा था। मेरी जान में जान आई। तो दीपक है ! जान बच गई। मैंने अंदाज लगाया वह कोई पचास गज पर था। मैं बढ़ने लगा, फासला भी बजाय कम होने के मानो बढ़ता ही गया। हे भगवान ! पचास ! साठ ! अस्सी ! अरे यह तो सौ गज से भी दूर है !! मैं सरकता हुआ आगे बढ़ता ही चला गया। कहीं गड्ढा नहीं था। भूमि नीचे कठोर पत्थर की थी जिस पर मोजे पहिने हुए मैं निःशब्द चला जा रहा था।

मैंने देखा एक बड़े कमरे के द्वार पर पर्दा गिरा हुआ था और उस पर्दे में से मैंने देखा कि अन्दर कोई लम्बी स्त्री खड़ी है। स्त्री की पीठ मेरी ओर थी, सामने एक चौकी पर—वैसी ही चौकी पर जैसी पर हम सोते थे एक आदमी सोया हुआ था। मैं समझ गया वह किसी का मुर्दा था। 'शायद वह भी कौयर सभ्यता का कोई ममी रहा होगा,' मैंने सोचा। मैं सोच ही रहा था कि क्या करना चाहिये कि वह स्त्री मुड़ी और उसने ऊपर का काला चोगा उतार दिया। मेरा दिल धक से बैठ गया। भय आतंक बन कर मुझ पर छा गया था।···

सामने उस उज्जवल प्रकाश में वह 'जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य थी'··· वह···हिया···आयशा खड़ी थी !

वह वैसी ही अपूर्व सुन्दरी लग रही थी। उसके शरीर पर सफेद कसी पोशाक अब भी थी जो आधे वक्षस्थल तक गले से नीचे खुली थी। आह ! उस विकट परिस्थिति में भी मैं उसके रूप को देखकर पागल हो उठा। उसके युगल-स्तन उस नीचे गले की पोशाक में जुड़े हुए वासना का अतल गह्वर बना रहे थे। मेरा रोम-रोम रोमांच और आतंक से खड़ा हो गया था। उसने तभी अपने हाथ ऊँचे किये और उसकी वह पोशाक ऊपर से नीचे गिर गई। मेरी आँखें मिंच गईं। कमर तक, जहाँ वह दो फन का सुवर्ण नाग, रशना के मुख पर जड़ा था, वह नग्न हो गई। मैं कैसे उस अपरूप रूप का वर्णन करूँ ? मेरे पास शब्द तो हैं ही नहीं ! वह नग्न सौन्दर्य ! आह वह स्वर्णिम इंद्रधनुषी गुलाबी आभा, वह हाथी दाँत की सी स्निग्ध त्वचा ! वह चाँदनी सी स्वच्छ, दूध के फेनों सी

श्वेत काया ! वह पीन उन्मत्त उरोज ! जिनमें विश्व का यौवन और वासना मानो थपेड़े मार रहा था ! उसकी ग्रीवा, उसके नग्न स्कंध ! और सबके ऊपर उसका वह अत्यंत लावण्यमय मुख ! आह ! काश मैं उसी समय मर जाता तो वह त्रिभुवन का अलब्ध सौंदर्य मेरी आँखों में हमेशा के लिये समा जाता। मैं साँस बाँधे देख रहा था, अपलक, बिना हिले, बिना डुले। तभी मुझे ध्यान आया, 'अगर आयशा ने मुझे ऐसे में देख लिया तो अंत निकट था,' और भय से मेरे सिर के बाल खड़े हो गए।

कमरे के बीच सफेद लपटों वाली अग्नि फू-फू कर जल रही थी परन्तु उसमें से आश्चर्य था कि धुआँ बिल्कुल नहीं निकल रहा था। मुझे भय था कि कहीं खाँसी आ गई या मैं छींक दिया तो ? परन्तु जाने किस अज्ञात आकर्षण··· निश्चय ही हिया का रूप मुझे वहाँ से हिलने नहीं दे रहा था।

आयशा के हाथ नीचे गिर गए और फिर मानो अपने आप ऊपर उठ गए।

मैं जो कुछ कह रहा हूँ बिल्कुल सच कह रहा हूँ। मैं पागल नहीं हूँ, भ्रमित बुद्धि नहीं हूँ। मैं एक सभ्य समाज में पला हुआ पढ़ा-लिखा आदमी हूँ और केंब्रिज जैसे उच्च विद्यालय में अध्यापक हूँ। मैंने देखा, हाँ हौली ने स्पष्ट देखा कि जब वह अपने हाथ ऊपर करती थी तो उनमें से अग्नि की भीषण लपटें निकलने लगती थीं जो उस गुफा की छत को छू लेती थीं और जब वह हाथ नीचे करती थी तो वह अदृश्य हो जाती थीं; मेरे आश्चर्य की भी सीमा अब जाती रही थी। भयानक जादूगरनी थी वह, जिसकी सभी बातें विचित्र थीं; उसके हाथों से निकली अग्नि इतनी तेज होती थी कि उसके प्रकाश में उन पत्थरों पर खुदी छोटी से छोटी मूर्तियाँ भी साफ दिखाई देती थीं।

अब वह साँप की तरह फुफकारती हुई अरबी में जाने क्या कहने लगी। मैंने ध्यान लगाकर सुना और मानो मेरा रक्त जम गया। उसके हाथ उसी भाँति ऊपर उठते और नीचे गिर रहे थे; अग्नि की लपट उठती और फिर बुझ जाती थी। भयंकर था वह दृश्य ! आयशा के नेत्र मानों स्वयं दो जलते हुए अंगारे थे। सर्पिणी-सी फुफकार रही थी :

"उसका नाश हो ! उस स्त्री का सत्यानाश हो।"

हाथ उठे और लाल अग्नि की जिह्वा ऊपर उठी।

"उसकी याद, उसकी स्मृति का भी नाश हो···उस मिश्री स्त्री का नाम भी मिट जाय···!"

हाथ नीचे आये और आग गायब हो गई।

"उसका नाश हो···उसकी सुन्दरता का नाश हो···उस नीच की पुत्री का नाश हो···!"

फिर लपटें···"उसका नाश हो···उसका जादू मेरे विरुद्ध भी चल गया···!"

हाथ नीचे···"उसका नाश हो क्योंकि उसने मेरा प्यारा मुझसे छीन लिया···!"

"उसका सत्यानाश हो !!"

अब उसने अपने हाथ अपनी आँखों पर लगा लिये और जोर से कहने लगी :

"अब क्या फायदा उसे शाप देने में·····वह तो कभी की मिट गई·····"

थोड़ी देर वह चुप रही, परन्तु इस बीच उसके मन में भयानक संघर्ष चल रहा होगा क्योंकि अब की बार उसके हाथ ऊपर-नीचे जल्दी-जल्दी चलने लगे और वह स्वर उतनी ही जल्दी बकती गई :

"वह जहाँ भी हो मेरी आहों से तड़प उठे···"

आग की लपट तेजी से उठती और बुझ जाती। उठती और बुझ जाती—

"वह आकाश के तारों की छाया में सड़े···

उसकी स्वयं की छाया का भी नाश हो···

वह मेरी बोली उस सीलन और बदबूदार स्थान में भी सुने जहाँ वह रहती है···

वह अंधेरे में ही हमेशा-हमेशा सड़ती रहे···"

परन्तु फिर उसे अपनी मूर्खता का ध्यान हो आया और वह आँखें ढँक कर रुँआसी सी बोली :

"यह सब व्यर्थ है···जो शक्ति के पीछे चला गया उस तक भला कौन पहुँच सकता है ? मैं भी नहीं···प्रकृति भी नहीं !!"

परन्तु मानो फिर उसकी ईर्षा का उद्वेग बढ़ गया। वह फिर हाथ उठाकर और नीचे गिरा कर आग की लपटें उठाती-बुझाती कहने लगी :

"उसका पुनर्जन्म में भी नाश हो···

नये जन्म की घड़ी से मृत्यु तक वह यातनाओं में रहे···

आह ! उसे नये जन्म में मैं तड़पा-तड़पा कर मारूँगी···

कहाँ है वह सुन्दरी चुड़ैल ???"

उसका स्वर उठ गया···इतना···इतना कि वह उस गुफा में टकरा कर गूँजने लग गया। मेरे शरीर से पसीना बह रहा था···भय ने मुझे जड़ कर दिया था···

मैंने देखा वह उसी प्रकार अपनी प्रतिद्वंद्विनी किसी यूनानी स्त्री को शाप देती रही। कभी वह सर्प की भाँति फुफकारती तो कभी चिल्लाने लगती थी। बीच-बीच में थोड़ी देर को रुक जाती थी।

बड़ी देर तक वह ऐसे ही करती रही। तत्पश्चात् शायद थककर वह पत्थर की एक शिला पर बैठ गई। उसके मुख के दोनों ओर और उसकी नग्न काया पर वह घुँघराले, काले केश फैले हुए थे। ऐसा लग रहा था जैसे काले बादलों में से दामिनी कौंध रही हो। वह रो रही थी। आह ! कितनी करुणाजनक थी। वह उस समय···कितना संचित दुख था उसका···यातना जिसका कोई अंत नहीं था और दो सहस्र वर्षों की स्मृतियाँ !! मेरा मन दहल उठा।

पत्थर को भी पिघलाने वाले स्वर में वह सुबकने लगी :

"आह ! दो हजार साल से भी ऊपर ! मेरे प्रियतम ! मैं तुम्हारी राह देख रही हूँ···मुझे मेरी पुरानी स्मृतियाँ खाये जा रही हैं·····मेरी वासना मेरे हृदय को मरोड़े डालती है···मेरा दुख असह्य है ! आह वह कौन सी अभिशप्त घड़ी थी जब मैंने तुम्हें मार डाला ? मैंने पाप किया था···परन्तु दो हजार साल तक प्रतीक्षा करके भी क्या मैंने उसे अपने प्रेम से नहीं धो डाला ? उस यूनानी स्त्री का नाश हो जिसने तुम्हें मेरे विरुद्ध उकसाया। काश ! तुम्हारे साथ मैं भी मर जाती पर·····पर मैं तो मर ही नहीं सकती·····आह ! जाने अभी कब तक इस यातना की अग्नि में इसी रूप को लेकर अतृप्त जीना पड़ेगा··· जाने बीस कि पचास हजार साल·····जाने अस्सी·· ···।"

वह एकदम कहते-कहते रुक गई। वह उठी। उसने अपने वस्त्र पहने और अपने केश पीछे फेंक लिये। अब वह उस ममी की ओर बढ़ी। फिर बोली :

"मेरे कैलीक्रेटीस !" मेरा रोम-रोम उस नाम को सुनकर पुनः काँप गया। 'विसे वाला कैलीक्रेटीस ?' मेरे मन में प्रश्न उठा। तो सभी बातें सच हैं ? 'हे भगवान् !'

मैंने सुना वह कह रही थी :

"·····मेरे प्यारे आज मैं तुम्हें देखना चाहती हूँ·····आज दो हजार साल बाद मैं तुम्हें देखने के लिये बेचैन हो उठी हूँ·····"

और काँपती उँगलियों से वह उस ममी पर लिपटा कपड़ा खोलने लगी, उसने उस लाश का मुख खोल दिया, फिर वह न जाने क्या भुजंग की भाँति फुफकारती रही जो मैंने नहीं सुना। शायद उसके मन में भारी भय और भयानक संघर्ष चल रहा था। फिर वह उससे बोली :

"तुम्हें उठाऊँ प्यारे ?·····हाँ मैं तुम्हें उठा कर चला सकती हूँ····· उसी भाँति जब तुम पहली बार मुझसे मिले थे·····"

और उसने उस लाश पर अपने दोनों हाथ फैला दिये। वह कड़ी पड़ गई यहाँ तक कि उसका शरीर ऐंठ गया और उसके नेत्र जैसे जम गए और मैंने देखा·····मैंने···हौली ने देखा···और मेरा आतंक और सजीव हो उठा। मुझे लगा बस अब अवश्य मर जाऊँगा।·····'हे भगवान्', मैंने मन ही मन कहा :

"मुझे इस जादूगरनी से बचा।" मैंने फटे नेत्रों से देखा वह मुर्दा उठने लगा···जैसे वह लम्बी नींद लेकर सीधा उठ रहा हो·····!!

परन्तु तभी आयशा बोल उठी !

"क्या लाभ ? इससे क्या लाभ ? तुम जीवित तो हो जाओगे कैलीक्रेटीज़ ! पर तुम में आत्मा मैं कहाँ से लाऊँगी ? नहीं, नहीं ! यह व्यर्थ है क्योंकि ऐसे तो तुम मेरे चलाये, मेरे बुलाये बोलोगे, अपनी ओर से नहीं·····नहीं-नहीं तब जो कुछ तुम करोगे मेरी आत्मा के बल से करोगे स्वयं अपनी से नहीं···"

और उसने अपना शरीर ढीला कर दिया और हाथ हटा लिये, लाश फिर वैसे ही गिर गई···

वह उसी भाँति कुछ देर खड़ी रही फिर पृथ्वी पर झुक गई और अब जो कुछ मैंने देखा उससे मेरा रोम-रोम काँप ही नहीं उठा बल्कि मेरा अंतस भी घृणा से भर गया। आयशा उस मुर्दे के ठंडे होठों पर अपने गुलाब की पँखुड़ी के समान लाल होठों को दबा रही थी। एक मुर्दे से वासना युक्त प्रेम! यह अमानुषिक ही नहीं मुझे अप्राकृतिक भी लगा। मैं और अधिक न देख सका और उलटा मुड़ कर पीछे चलने लगा उस अंधेरे में दीवार का सहारा लिये निःशब्द मैं उसे उसी वीभत्स क्रिया को करते हुए छोड़ कर वापस चला आया। मार्ग में दो जगह गिरा और उठकर चला। जब मोड़ आया तो मुझे ऐसा लगा मैंने अपना सही मार्ग खो दिया है·····और एक बार फिर मैं काँप गया। मेरा मस्तिष्क चक्कर खा रहा था। और दिशा-ज्ञान भी मेरा ठीक नहीं रहा था। अपने आपको भाग्य पर छोड़ कर और यह सोच कर कि न जाने और क्या विभीषिकाऐं देखना मेरे भाग्य में लिखा है मैं चलता ही गया। करीब आधे या पौन घंटे में मैं उसी सीढ़ी के पास आ पहुँचा जहाँ से शायद मैं गया था। अब और चलना मेरे लिये असंभव हो गया था। मैं वहीं सीढ़ी पर सिर रख कर बैठ गया·····मेरा रोम-रोम अत्यंत थक गया था। जाने मैं तब भी कैसे जीवित बचा रहा?

जब मुझे होश आया तो उस समय सीढ़ी के ऊपर से भोर का उजाला झाँक रहा था। झटपट उठा और सीढ़ी चढ़ कर उसी राह अपने कमरे में आ गया। अब जैसे मेरी जान में जान आई।

हालाँकि मैं अब भी उसी पहाड़ में बन्दी था—उन्ही मुर्दों के बीच और आयशा के अखंड राज्य की छाया में था परन्तु फिर भी यहाँ आकर एकबारगी मेरे जी में संतोष हो गया जैसे संकट अब टल गया था। मैंने पटिया सरकाकर मार्ग बंद कर दिया और शैया पर आ लेटा। मुझे पता नहीं मैं कब सो गया या बेहोश हो गया।

× × × ×

१४

जब मेरी आँखें खुलीं तब सुबह नौ बज चुके थे। जौब जाने कब से खड़ा मेरे उठने की राह देख रहा था। मैंने उठकर देखा मेरे अच्छे अनुचर ने प्रातः

काल मेरे नित्य कर्म के लिये सब कुछ तैयार कर दिया था। जब मैं फारिग होकर बाल काढ़ने लगा तो वह बोला :

"कम्बख्त लोग प्रातःकाल दाढ़ी बनाने को पानी भी गर्म नहीं करते....."

फिर सोच कर बोला :

"गर्म पानी तो यह एक दूसरे को उबाल कर खा जाने के लिए ही करते हैं शायद !.....यह बात तो निश्चय है कि इन जंगलियों के बीच आकर आपने बड़ी भारी गलती की ! इनसे बचकर वापस जाना तो मेरी समझ में असम्भव है। यह मुर्दों के साथ रहते हैं, जंगली, गन्दे...सचमुच मूर्ख ही यहाँ आते हैं। भला कोई बुद्धिमान भी यहाँ आकर फँसना चाहेगा ?"

मैं चुपचाप उसकी बातें सुन रहा था। बाल काढ़ने के बाद मैंने अपने कपड़े झाड़ने चाहे पर ब्रुश था नहीं, अतएव जौब से कपड़ा लेकर ही फटकारने को कहा। मैं सोच रहा था :

'जौब गँवार तो है पर कितनी ठीक बात कह रहा है ! इन जंगलियों में हम मूर्ख ही फँस गए भला कौन यहाँ फँसना चाहेगा। कम से कम मुझे यह तो निश्चित सा ही लगा कि हम वापस तो यहाँ से कभी न लौट पावेंगे। क्या मालूम किस दिन आयशा आवेश में आकर हमारा खातमा कर दे और यदि वह न भी मारे और जाने की भी आज्ञा दे दे तो यह एमैहैग्गर गर्म पानी में उबाल कर खा जायँगे.....मैंने कल्पना की कि हम भागे जा रहे हैं और एमैहैग्गर हमारा पीछा तेज भाला लेकर कर रहे हैं। बिलाली भी है, और उसके हाथ में गर्म पानी वाला बर्तन है...आगे अब और राह नहीं है, दलदल शुरू हो गया है। और मैंने तब वह कुत्सित विचार त्याग दिया। नहीं ! नहीं ऐसा कभी नहीं होगा। क्यों नहीं होगा ? पर इसका उत्तर मेरे पास कुछ नहीं था। मैंने अपने मन को स्वयं ही आश्वासन दिया। मनुष्य आशा पर ही तो जीता है। मैंने भी भविष्य के लिये कामना ही की।' फिर मुझे हठात् लिओ का ध्यान हो आया। मैंने जौब से उसकी हालत पूछी तो वह उदासी से बोला :

"वह वैसे ही है.....यही हाल रहा तो नहीं बचेगा.....हाँ वह लड़की उसकी खिदमत बहुत अच्छे तरीके से कर रही है जैसे वह बपतिस्मा प्राप्त की हुई इसाई स्त्री ही हो। यदि मैं कुछ बोलता हूँ अथवा कुछ उसके लिए करना

चाहता हूँ तो न जाने क्या अपनी जंगली भाषा में बकती है·····लाल आँखें दिखाकर मुझे घुड़कती है···और निश्चय ही गाली देती है क्योंकि उसकी मुद्रा से ऐसा ही प्रकट होता है।"

"और तुम क्या करते हो?" मैंने हँस कर पूछा। मैं सोच रहा था कि यह मेरा पुराना सेवक समझता है कि सेवा और प्रेम करना केवल इसाईयों का ही एक मात्र अधिकार है और वह भी उनका जो बपतिस्मा प्राप्त किये हुए हों। पर मुझे उसकी बातों में आनन्द आ रहा था। मैंने उसे चुप देखकर फिर अपना प्रश्न दुहराया, वह बोला :

"मैं उससे झुककर कहता हूँ कि 'यह मेरे मालिक हैं। इनकी सेवा करना मेरा कर्तव्य है और मैं अवश्य इसे करूँगा।' तो वह दाँत किटकिटाती है। कल रात उसने अपने कपड़े के नीचे से एक तेज धार का अस्त्र निकाला और मेरी ओर घूर कर देखा। मैंने अपनी पिस्तौल निकाल ली। बस फिर वह मेरा चक्कर देने लगी और मैं उसका। हम दोनों गोल घूमने लगे और वार की प्रतीक्षा करने लगे। सच मैं बिल्कुल नहीं डरा। वह औरत! और फिर मेरे पास पिस्तौल! भला मुझे क्या डर? फिर उसने अपना अस्त्र फेंक दिया और जोर से हँस दी। मैंने पिस्तौल नीची कर ली···मुझे यह औरतें अच्छी नहीं लगतीं। खूबसूरत भले ही हों पर हैं तो जंगली···हैवान!"

फिर न जाने क्या सोच कर बोला :

"यह हमें ईश्वर की ओर से दण्ड मिल रहा है और मेरे विचार से वह अभी आधा भी पूरा नहीं हुआ है। जब वह पूरा होगा तो हम भी इन्हीं मुर्दों के साथ हमेशा के लिये यहीं रह जायँगे···अब चलूँ लिओ के भोजन का प्रबन्ध करूँ···"

मैंने सब कुछ सुन कर सोचा जौब कितना ठीक कह रहा था। कपड़े पहन कर मैं उसी ममी बनाने वाले कक्ष में कुछ खाने गया और कल रात ही की भाँति गूँगी लड़कियों ने फिर उसी प्रकार का खाना मुझे लाकर दिया। खाना गर्म था और दूध बिल्कुल ताज़ा। तबियत खुश हो गई।

जब मैं लिओ के कक्ष में पहुँचा मैंने देखा वह खतरनाक हालत में था। उसे शायद सन्निपात हो गया था जो वह ऊटपटाँग बक रहा था। वह एकदम

शून्य मस्तिष्क हो गया था। उसने मुझे नहीं पहचाना। मैंने यूस्टेन से पूछा तो वह एकदम रो दी। प्रत्यक्ष था कि उसे उसके बचने की कोई आशा न थी। मैंने तभी निश्चय किया कि हो सके तो मैं जोर देकर आयशा को यहाँ लाकर लिओ का इलाज उससे कराऊँगा। मुझे कुछ सहारा-सा हो गया था कि वह अवश्य उसे ठीक कर सकेगी।

तभी बिलाली आया। उसका वही भव्य रूप उस समय भी उसकी गरिमा को बढ़ा रहा था। उसने लिओ को देखा और सिर हिला कर बोला :

"आज रात मर जायगा !"

"हे भगवान् !" मेरे मुँह से निकल गया। मेरा मन उदास हो गया। मेरा लिओ कैसे बचे ?

"मेरे बनमानुष ! चलो तुम्हें वह 'जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य है' दर्बार में बुला रही हैं। आज वह न्याय करेंगी। जानते हो किसका ?···उनका जिन्होंने तुम पर प्रहार किया था।"

और वह मुझे लेकर चल पड़ा। गुफा के द्वार पर आकर बोला :

// "कल तो जाने कैसे बच गए मेरे बनमानुष, पर आज जमीन पर लेटना भूल न जाना !!" // R/C

हम लोग शीघ्र उस बड़ी बीच की गुफा में पहुँच गये जिसमें होकर पहले-पहल आये थे। इसकी दीवारों पर अगणित चित्र और मूर्तियाँ खुदी हुई थीं जैसा मैं पहले ही कह चुका हूँ। कई आदमी डरे हुए उसमें अन्दर धँसे चले जा रहे थे। हम भी भीड़ में मिल गये। कोई किसी से नहीं बोल रहा था।

उस चौड़ी गुफा में दोनों ओर बीस-बीस फीट के फासले पर द्वार खुलते थे। बिलाली ने मुझे बतलाया कि वह अन्दर जाने के मार्ग थे। अन्दर उसने कहा कि मुर्दों की कब्रें थीं जिनमें अब भी ममी रखे थे। वह इतने थे कि जिनकी गणना असम्भव थी। हम चलते-चलते आखिर कोई चालीस मिनट में उस गुफा के छोर पर पहुँच गए। यहाँ सामने की ओर तीन फीट ऊँचा एक चबूतरा दीवार के सहारे पूरी लम्बाई में बना हुआ था जो ऊपर से काफी चौड़ा था। चबूतरे के ऊपर से भी दोनों तरफ बड़ी गुफा की दीवारों में द्वार खुलते थे। यह वैसा ही चबूतरा था जैसा बिलाली के यहाँ हमें उन एमैहैगर लोगों से लड़ते समय उस

गुफा में मिला था। पर यहाँ सभी कुछ अत्यन्त विशाल था। बिलाली ने मुझे बतलाया कि उन ऊपर के द्वारों से भी अन्य कब्रों में जाने का मार्ग था। उसने कहा :

"पुत्र यह पहाड़ अन्दर से पोला है और लाखों (ममी) लाशों से भरा पड़ा है परन्तु खास बात यह है कि सभी लाशें बिल्कुल नई हालत में रखी हैं जब कि वह हजारों साल पुरानी हैं।"

उपस्थित समुदाय में स्त्री-पुरुष दोनों थे परन्तु सभी के मुखों पर भय और विषाद की गहरी छाया झलक रही थी। चबूतरे के बीचोबीच काली लकड़ी—शायद आबनूस—की बनी एक बुरी सी पर बहुत बड़ी कुर्सी पड़ी थी जिसमें स्थान-स्थान पर हाथी दाँत के टुकड़े जड़े हुए थे। सामने ही एक लकड़ी का चौकोर टुकड़ा था जो पैरदान था और उस कुर्सी में ही जड़ा हुआ था। तभी एक ओर से कोई उच्च स्वर से पुकारा, फिर दो चिल्लाये, फिर सभी चिल्लाने लगे।

"हिया ! हिया !! हिया !!!"

जैसे बिजली मार गई हो। सारा समुदाय पृथ्वी पर औंधा लेट गया। केवल मैं अकेला उस भयंकर परिस्थिति में ऐसे खड़ा रहा जैसे उस कत्ले-आम में से अकेला बचा हुआ आदमी था। सैनिक हिल उठे और चबूतरे के दोनों ओर खड़े हो गए। फिर गूँगे और बहरे पुरुष आये फिर स्त्रियाँ और अंत में ऊँची इकहरे शरीर वाली अपना पूरा शरीर श्वेत कपड़े में लपेटे हिया आई··· वह 'जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य था।' वह रानी की सी शान से चबूतरे पर चढ़ी और उस कुर्सी पर बैठ गई। कोई नहीं हिला, सब पड़े रहे। तब वह मुझसे यूनानी भाषा में बोली :

"हौली ! यहाँ आकर मेरे पैरों के पास बैठ जाओ और देखो मैं न्याय करूँगी।"

मैंने सिर झुकाया और आज्ञा का पालन किया।

"रात शायद सोये नहीं ?" उसने पूछा। मेरा हृदय काँप उठा। कहीं इसे पता तो नहीं चल गया ? पर मैंने साधारणतया उत्तर दिया :

"मैं अच्छी नींद न ले सका।"

"यही हाल मेरा रहा", वह बोली। वह यूनानी में ही बोल रही थी कि उसे सिवा मेरे और कोई न समझ पावे। फिर उसने यह वार्ता यहीं रोक दी और अरबी में कहा :

"अपराधी लाये जाँय," उसके बोल में आज्ञा थी।

सेनाध्यक्षा झुकी और अपने सिपाहियों को लेकर एक ओर चली गई।

गहरा सन्नाटा छा गया। एमैहैग्गर पड़े रहे और कोई-कोई सिर उठा कर बड़े कष्ट से हिया को देखते रहे। वह बहुत ही कम सब के बीच आती थी। उसका मुख तो सिवा मेरे किसी ने देखा ही नहीं था पर उसके वस्त्र देखने में ही मानों उन्हें संतोष मिलता था। 'वह जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य हैं' जाने 'कैसी हैं ?' यही सबकी जिज्ञासा बनी हुई थी।

आखिरकार उस नीरवता को चीरते हुये गुफा के दूसरे छोर से लोगों के चलने की आवाज और मशालों का उजाला दिखाई दिया। वह धीरे-धीरे बढ़े चले आ रहे थे।

सैनिकों ने उन बीस अपराधियों को लाकर चबूतरे के सामने खड़ा कर दिया। मैंने देखा उनके चेहरे मृत्यु और आने वाली यातना के भय से सूख गये थे। उनके नेत्र स्थिर और शून्य हो गए थे। अन्य लोगों की भाँति वह भी पृथ्वी पर लेटने ही वाले थे कि रानी बोल उठी :

"नहीं, नहीं। खड़े रहो। बाद में तो शायद तुम्हें इतना लेटना पड़े कि फिर उठने ही का नाम न लो," और वह वही मीठी हँसी हँस दी।

उनके सूखे हुए मुख एक बार फिर भय भय से विकृत हो गए। उन पर मानो आतंक छा गया था। थोड़ी देर फिर सन्नाटा खिंच गया ! आयशा बारी-बारी से एक-एक अपराधी को अपनी पैनी दृष्टि से देख रही थी। अंत में वह मेरी ओर मुड़ी और बोली :

"हे मेरे अतिथि ! क्या तुम इन आदमियों को पहचानते हो ?"

"हे रानी ! मैं प्रायः इन सभी को पहचान गया हूँ," मैंने उत्तर दिया और देखा कि एमैहैग्गर लोगों की आँखें मेरी ओर अग्नि की लपटें फेंकने लगीं।

"तब वह सारी कथा कहो जो मैंने सुनी है।"

मैंने सारी बातें कम से कम शब्दों में जोर से कहकर सुनी दी। मेरे कहने के बाद रानी ने कहा :

"ब्रिलाली !"

मानो यहीं कहना काफी था। उसने पढ़े ही पढ़े मेरी कथा की पूरी तरह से पुष्टि कर दी। कोई और साक्षी नहीं ली गई। ठंडे, तीखे और स्पष्ट स्वर से वह बोली :

"तुमने सुन लिया ? अब तुम्हें क्या कहना है ? क्यों न अब कयामत की मार तुम पर पड़े और·····" वह कहते-कहते रुक गई। मुझे आश्चर्य हो रहा था उसके उस समय के स्वर को सुन कर। इस समय वह कठोर स्वर से शासन कर रही थी। यह अजीब स्त्री थी जो जैसा मौका होता था वैसा ही अपना स्वर भी बना सकती थी।

कोई नहीं बोला। सन्नाटा खिंचा रहा। आखिर थोड़ी देर बाद एक अधेड़ आदमी डरते-डरते बोला। वह चौड़ी छाती वाला, सुन्दर और गिद्ध की भाँति पैने नेत्रों वाला था, उसने कहा :

"हे हिया ! तुम्हारे सामने हम मिट्टी के समान हैं, तुम महान् हो। हमारे ऊपर रहम करो ! तुम्हारी कोई आज्ञा उस काले आदमी के विषय में नहीं पहुँची थी और इसीलिये एक औरत, जो अब मर गई है, के बहकाने से हमने उसे अपनी रीति के अनुसार खा लेना चाहा था तभी ये गोरे हम पर वार कर बैठे, हम पागल हो गए थे जो इनसे जूझ गए। हमें बड़ा अफसोस है···तभी से हम पश्चाताप की अग्नि में जल रहे हैं···हे रानी ! हे 'वह जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य है' हम पर तरस खाओ, हमें न मारो। कम से कम यही करो कि हमें दलदलों में भगा दो जहाँ हम चाहे मरे, चाहे जियें पर हमारी हत्या न कराओ···हे हिया···"

वह एक प्रकार से घिघिया रहा था, पर उसकी निगाहों से स्पष्ट था कि उसे दया की तनिक भी आशा नहीं थी।

खामोशी छा गई। कोई कुछ नहीं बोला। मैंने देखा सामने एमैहैग्गर पड़े थे और उनके सामने साँप के मुँह में चूहे के समान वे अपराधी सिर झुकाये खड़े थे। बगल में सैनिक सन्नद्ध थे। दीवालों पर मूर्तियाँ उस तीव्र प्रकाश में मानों

साँस बाँधे उस विचित्र न्याय को देख रही थीं, और सबके बीच वह बर्बर रानी भयंकर बनी बैठी थी। मैंने तभी देखा कि इतनी सुन्दर स्त्री भी कितनी कठोर दिखाई दे सकती है।

मैंने सुना वह साँप की तरह फुफकारने लग गई थी, पहले केवल फुफकारी सी निकली फिर धीमे से वह बोली :

"कुत्तों ! नीचों !" और उसकी आवाज़ उठ गई। यहाँ तक कि अब वह उस गुफा में टकरा कर गूँजने लगी। ऐसा लगता था जैसे तुरही बज रही थी। वह कह रही थी :

"आदमखोर अत्याचारियों ! तुम्हारे ऊपर दो अभियोग हैं, तुमने गोरे अतिथियों पर आक्रमण किया और यही तुम्हारी मृत्यु के लिये काफी है···और दूसरा अभियोग इससे भी बड़ा है···तुमने मेरी···हिया की आज्ञा की अवहेलना की है। क्या मेरे नौकर बिलाली ने तुम्हें नहीं बताया था कि यह न मारे जायँ ? क्या तुम्हें छुटपन से ही नहीं सिखाया गया कि 'हिया' की आज्ञा अनिवार्य है ? क्या हिया का कानून बदल सकता है ? एक ही झटके के साथ चाहे यह पूरा पहाड़ बैठ जाय, चाहे सूर्य अपनी यात्रा रोक दे पर 'हिया' की आज्ञा नहीं लौट सकती। नरक के कुत्तों ! तुम स्वयं नीच हो। तुम मेरे सामने बिल्कुल बच्चे हो परन्तु तुम दुष्टता में डूबे हुए हो, तुम दंड के भागी हो···मैं आज्ञा देती हूँ कि तुम्हें यातना वाली गुफा में ले जाकर कौयर की वही यातनाऐं दी जायँ जो आज से सात हजार वर्ष पहले भी दी जाती थीं—कल सूर्योदय के पहले यदि फिर भी तुममें से कोई बचे तो उसकी हत्या कर दी जाय !"

आतंक की लहर गुफा में चारों ओर फैल गई। हल्की मर्मर एक कोने से दूसरे कोने तक छा गई। अपराधियों को उनका दंड सुना दिया गया था। वह अब सिसक कर रोने लग गए थे और दया की भीख माँग रहे थे। परन्तु आयशा पर उसका कोई असर नहीं पड़ा।

मेरा हृदय उनकी करुण पुकार सुन कर द्रवित हो उठा। मैंने भी आयशा से उनकी सिफारिश की पर वह टस से मस न हुई। वह यूनानी में मुझसे बात कर रही थी। मैं यहाँ यह कह दूँ कि उसकी बोली कितनी स्पष्ट थी और बावजूद विद्यालय में यूनानी पढ़ने के मेरी बोली उस संगीत को नहीं पाती थी। कुछ शब्द

भी इन बाईस शताब्दियों में बदल गए थे। वह पहली बोली बोलती थी और मैं आधुनिक। उसने मुझसे कहा :

"हौली ! यदि मैं इन नृशंस लोगों पर दया दिखाऊँ तो मेरा भय फिर कहाँ रहेगा। तुम इन्हें नहीं जानते, यह अब भी तुम्हारे खून के प्यासे हैं। यह भूखे भेड़ियों की भाँति हैं और धोखे से अपने शिकार पर टूट पड़ते हैं। मेरे पास तो केवल एक ही अंगरक्षकों की सेना है और यह हैं हजारों। मेरा राज्य आतंक का है। आतंक वह कि जिसके कारण हृदय थर्रा उठे !" और उसने अपने हाथ की उँगलियाँ हिलाईं जैसे कह रही हो 'ऐसे' और वह कहती गई :

"....." मैं इन्हें सदा नहीं मारती। एक पीढ़ी या दो पीढ़ियों में एक बार इन्हें इकट्ठे मरवाना पड़ता है तभी इन पर भय चढ़ा रहता है क्योंकि मेरा राज्य अनुमान से कहीं अधिक कल्पना का है जिसे कोई नहीं पा सकता। मुझे शौकिया इन्हें मरवा डालने का भी शौक नहीं क्योंकि भला इनसे मेरा क्या हानि-लाभ हो सकता है पर···पर···," और वह रुक गई और मुझे कपड़े में से देखने लगी···

"···पर ?" मैंने पूछा।

"ओह ! हौली !" वह बोली, "आकाश में बादल यहाँ-वहाँ डोला करते हैं निरुद्देश—देखे हैं तुमने ? ऐसा लगता है जैसे निरर्थक कहीं वह इधर से उधर घूमते हैं परन्तु उनके पीछे जानते हो क्या होता है जो उन्हें डुलाता है ! पवन हवा ! वह उद्देश से चलती है पर उसे कोई नहीं देखता···"

"मेरी समझ में नहीं आया," मैंने उत्सुकता से पूछा।

वह तनिक हँसी, फिर बोली :

"मेरे विचार और मेरी आज्ञाऐं उन बादलों की तरह हैं जो अनर्गल निरुद्देश दिखाई देते हैं परन्तु इनके पीछे मेरा सधा हुआ उद्देश है जो हमेशा ठीक बैठता है···वह हमेशा से रहा आया है·····"

मैं उसके उस विशाल उदाहरण, उसके अनिश्चित काल के अनुभव और बुद्धि की पराकाष्ठा के सामने झुक गया।

उसने पुनः कठोर स्वर में अरबी में कहा :

"जैसी मेरी आज्ञा है·····वैसा ही हो !!"

न्याय हो चुका था·····।

× × × ×

१५

जब बंदी हटा दिये गए तो आयशा ने हाथ से इंगित किया और तमाम दर्शक लेटे ही लेटे पीछे खिसकने लगे। वह इसी तरह करीब सौ गज़ तक रेंगे फिर खड़े हो गए और वहाँ तीन बार सिर झुकाकर चले गए। थोड़ी देर तक उनके पद-चाप सुनाई देते रहे फिर सब शांत हो गया। अंगरक्षक भी सब चले गए, केवल चार गूँगी युवतियां रह गई थीं। मैंने उचित अवसर जान कर आयशा से कहा कि वह चल कर लिओ को देख ले पर वह न मानी। बोली :

"अभी नहीं। इस बीमारी में रात तक कोई नहीं मरता·····और फिर जब बीमारी उसे पूर्ण रूप से दबा कर उसे अंत तक न पहुँचा दे तब तक इलाज व्यर्थ था।"

मैं चुप हो गया। भला मैं उसे चलने को कैसे मजबूर कर सकता था ? मैं धीरे से जाने के लिये उठा कि वह बोली :

"मेरे हौली ! आओ मेरे साथ। मै तुमसे बातें करना चाहती हूँ और फिर तुम्हें आज मैं इस गुफा की अद्भुत बातें भी बतलाऊँगी।"

सच बात तो यह है कि वह स्वयं एक सुन्दर मकड़ी थी जिसके भूलभुलैया डालने वाले जाले में मैं फँस गया था। मैं उससे, जो कुछ भी वह कहती, उसका विरोध कर ही नहीं सकता था। मैंने फिर सिर झुकाया और स्वीकृति दे दी। उसने तुरंत उन गूँगी-बहरी युवतियों को इंगित किया और उनमें से दो आगे और दो हमारे पीछे दीपक लेकर चलने लगीं।

वह बोली :

"ओह ! हौली ! देखी हैं तुमने ऐसी अद्भुत गुफाएँ कहीं और ? यह निश्चय ही संसार की सब से आश्चर्यजनक कब्रें हैं। आठ सहस्र वर्ष पूर्व इन लोगों ने यह बनानी शुरू की थीं। कौयर की ध्वंस हुई नगरी में तुम्हें

दिखाऊँगी। वे लोग यहीं इस पहाड़ के पीछे की ओर बहुत बड़े मैदान में रहते थे। वह अपनी सभ्यता की चरम सीमा पर पहुँच चुके थे परन्तु ये लोग भी मिश्र के लोगों की भाँति अपने जीवितों से अधिक अपने मृतकों की परवाह करते थे। उन्होंने यह पूरा पर्वत, हाँ पूरा पर्वत, पोला कर दिया था। क्या समझते हो अजनबी! यह गुफाएँ कितने आदमियों ने कितने वर्षों में कठोर चट्टान काट कर बनाई होंगी?"

"ओह! रानी!" मैंने गुफा की छत देख कर उत्तर दिया।

"·····हज़ारों-लाखों आदमी इसमें लगे होंगे·····", "और कई पीढ़ियों तक", उसने वाक्य पूरा किया। फिर वह बोली :

"कौयर मिश्र से भी पुराना था·····शायद बहुत पुराना था!" अब हम एक विचित्र बहुत बड़ी गुफा में पहुँच चुके थे। यहाँ भी और स्थानों की भाँति एक दीवाल के सहारे बड़ा चबूतरा था जो गज़ भर ऊँचा था। उस पर एक बड़ी पत्थर की कुर्सी पर एक आदमी की मूर्ति बैठी थी। यह वृद्ध था और मैंने देखा कि वह ठीक वैसा लगता था जैसा मैंने उस खाने वाली गुफा के चित्र में देखा था जिसकी ममी बनाई जा रही थी। चबूतरे के ऊपर प्राचीन चीनी भाषा की लिपि के समान किसी भाषा में कुछ खुदा हुआ था। आयशा बोली: "यहाँ की इस भाषा को इस लंबे समय में मैंने बहुत कुछ पढ़ना सीख लिया है·····यह गुफा उनकी शायद आखिरी गुफा थी—जब कौयर की सभ्यता का अंत होने वाला था·····" और उसने उन गूँगी युवतियों से दीपक ऊँचा करने को कहकर पढ़ना शुरू किया। वह भाषा सुनने में बहुत ही विचित्र लगती थी। उसका अर्थ जो मुझे आयशा ने समझाया यह था :

"संसार के महान् नगर कौयर के बनने के चार सहस्र दो सौ उनसठवें वर्ष में यह गुफा टिस्नो—कौयर के राजा ने बनवा कर पूरी की। तीन पीढ़ियों में यह बन कर पूरी हुई। इसमें राजा तथा इसके बनाने में अगणित गुलाम और बंदी काम आये। आसमान के ऊपर आसमान में रहने वाली शक्ति राजा और उसके संबंधियों तथा प्रतिष्ठित नागरिकों की आत्माओं को शांति दे और उनकी निद्रा तब तक निर्विघ्न बनी रहे जब तक वे फिर न जाग उठें। ये सब उन्हीं की कब्रें हैं।"

मेरे आश्चर्य की सीमा न रही। आयशा बोली : "हौली ! देखा तुमने ये आखिरी कब्रें हैं। मैं इनके उजड़ जाने के दो सहस्र वर्षों बाद यहाँ आई थी और फिर मुझे दो सहस्र वर्ष और हो चुके हैं। इसका अर्थ है कि कौयर आठ हज़ार साल से भी पहले था !"

मैं उस प्राचीन गरिमा·····इतनी प्राचीन कि जिसका ध्यान मन में भय उत्पन्न करता था—उसके सामने झुक गया। वह चक्करदार मार्ग से फिर मुझे एक ओर गुफा में ले गई जो गोल और काफी ऊँची और बड़ी थी। इसके बीचो-बीच एक बहुत बड़ा गोल छेद था जो एक गोल पत्थर से ढँका हुआ था। ढँका हुआ पत्थर भी काफी मोटा और खाँचे में फँस कर बैठा हुआ था। उसे दिखा कर आयशा ने मुझसे पूछा :"

"बताओ हौली ! यह क्या है ?"

"मुझे पता नहीं लगता", मैंने उत्तर दिया। वह चुपचाप बायें ओर घूम गई और एक दीर्घ द्वार के सामने जाकर ठहर गई। यह शायद उस गुफा में आने का मुख्य द्वार था। दीपक ऊपर उठवा कर उसने फिर पढ़ा। लाल रंग से दीवाल पर उसी प्रकार के अक्षरों में कुछ लिखा था। रंग अब भी चटकीला और नया प्रतीत होता था। वह पढ़ने लगी :

"मैं जूनिस·····कौयर के महान् मंदिर का पुजारी, आज उदास मन से, इस कौयर की चार हज़ार आठ सौ तीन वें वर्ष में लिखता हूँ·····क्योंकि इतने ही वर्षों पहिले यह महानगर बना था·····कि आज यह नगर ध्वंस हो गया है। कौयर अब नहीं रहा। आह ! अब वह नाच-गाने व दावतें यहाँ के दीर्घ प्रकोष्ठों में कभी नहीं होंगे। अब कौयर संसार का महानगर नहीं रहेगा न वह अखंड राज्य कर सकेगा·····न यहाँ के जहाज़ सूर्य जहाँ छिपता है और जहाँ से उगता है वहाँ तक व्यापार कर सकेंगे ! कौयर·····और उसके अधीन सौ महानगर, उसकी नहरें, उसके बंदरगाह यह सब ध्वंस हो जायँगे। उनमें केवल जंगली हंस डोलेंगे और भेड़ियें तथा उल्लू बोलेंगे या कभी शायद कोई बर्बर जाति आकर रहने लग जाय। पच्चीस पूर्ण चंद्र भरी रातों से कौयर पर कहर टूट पड़ा है·····बीमारी के बादल यहाँ मँडरा रहे हैं—इस बादल में से वायु को दूषित करने वाली दुर्गंध चारों ओर फैल कर भयानक

सडाँध फैला रही है·····कौयर और उसके सौ महानगरों के निवासी सहस्रों की संख्या में मर-मर कर खत्म हो रहे हैं। आबाल, वृद्ध पागलों की भाँति आपस में कट रहे हैं और मर रहे हैं। इस संहार का कोई अन्त नहीं है। लोग मर रहे हैं। इस संहार का कोई अन्त नहीं है। लोग मर रहे।हैं···उत्पत्ति बंद है··· जो इससे बच भी गए हैं वे भूख से मर रहे हैं···

"मृतकों की संख्या इतनी अधिक है कि कौयर के नियमों के अनुसार उनके शरीर ममी बना कर भी नहीं रखे जा सकते। अतएव उनके शव इस पृथ्वी के छिद्र से नीचे···जहाँ पर्वत का मध्य है और जो इतना पोला है कि जिसमें सब कुछ समा सकता है—वे फेंक दिये गए हैं···वे वहीं अंतिम दिन की प्रतीक्षा में पड़े रहेंगे।

"कुछ आदमी अब भी शेष हैं पर वे जहाजों में बैठ कर उत्तर की ओर समुद्र की राह जल को चीरते चले गए हैं।

"मैं···जूनिस···कौयर का अकेला अवशेष···शायद कोई और भी उन सौ महानगरों में बचा हो तो मुझे उसका मालूम नहीं है···दुख से भर कर यह लिख रहा हूँ···मैं यहीं अपनी ही सभ्यता के बीच मर रहा हूँ···हाय! कौयर में अब कभी दीपक भी नहीं जलेगा। मंदिरों में कभी पूजा नहीं होगी। महल सूने हैं। राजकुमारियाँ, सेनानी और सुन्दरियों से किसी समय भरी यह नगरी अब उजाड़ हो गई है···"

मैंने दीर्घ श्वास खींचा। उस उजाड़ की भयानक कहानी थी। मेरे रोंगटे खड़े हो गए। मैं उस अकेले बचे हुए आदमी की उस समय की स्थिति को सोच कर ही काँप उठा। कैसा लगा होगा उस महानगर के एक मात्र बचे हुए व्यक्ति को जब वह इतनी लाशों पर बैठ कर मन्द दीप के प्रकाश में उस राष्ट्र का इतिहास दीवाल के एक छोटे से भाग पर लिख रहा होगा। भयानक! वीभत्स!! और फिर भी कितना आश्चर्यजनक और महान्! मेरे मन में कौयर के ध्वंस का कल्पित नकशा खिंच गया···

"और यही बचे हुए लोग जो उत्तर चले गए, शायद मिश्र के प्रथम पुरुष हैं? तुम्हारा क्या विचार है हौली?" उसने मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

"मुझे नहीं मालूम है रानी", मैंने गंभीरता से उत्तर दिया : "पर यह संसार ओह ! सचमुच बहुत ही पुराना है !!"

"पुराना ?" वह भी गंभीर स्वर से बोली :

"आह ! सभ्यता पर सभ्यता जाने कब से चली आई हैं और एक-एक कर सब उजड़ गई। उजड़ी भी ऐसी कि उनका नाम-निशान ही नहीं बल्कि उनकी याद भी दुनिया से उठ गई। समय ! समय !! हौली !! यह सब को खा जाता है। इसकी भूख न कभी मिटी न मिटेगी। कौयर के लोग सभ्यता की चरम सीमा पर पहुँच कर गिरे और ऐसे गिरे कि संसार का उनका यह श्रेष्ठ महानगर आज जंगल बन गया है। पर वे लोग पत्थर पर अपनी याद छोड़ गए हैं। क्या मालूम कभी समुद्र अथवा भूकंप इसे भी गिरा कर मिटा दे ? तब यह पहाड़, यह गुफाएँ भी ढह जायँ और यहाँ ढूह के ढूह पत्थर ही पड़े मिलें। इस संसार में कुछ भी तो नया नहीं है। सभी कुछ था पर समय में मनुष्य उसे भूल कर फिर ढूँढ़ता है। जानते हो हौली ? यह एक पुरानी यहूदी कहावत है !····· परन्तु मेरे विचार से कौयर के सभी लोग नहीं मर गए थे क्योंकि उनके तो सौ महानगर ही थे। उत्तर से बाद में जंगली बर्बर जातियाँ आई थीं। शायद अरब की ही हों। और उन्होंने कौयर की स्त्रियों से संतान उत्पन्न की और वे हैं यह मिश्रित वर्ण एमैहैग्गर जो अपने पूर्वजों की कब्रों में रहते हैं। जो भी हो कौयर के लोग महान् थे। उन्होने संसार में दिग्विजय की और तब तक की जब तक विजय करने को और कुछ नहीं बच गया। तब वे यहाँ शांतिपूर्वक अपने शिल्पों, अपने गायक तथा अपनी वाराङ्गनाओं से घिरे रहने लगे। वे शिकार खेलते, गृहस्थ में सुखी रहते और उनके बच्चे उनके वंश को उज्वल करते थे। हौली ! मैं पुरानी अवश्य हूँ और कई विद्याओं में पारंगत भी हूँ परन्तु उस युग में मेरी पहुँच नहीं होती·····वह जो होकर गुज़र गया·····वह मेरे लिये भी तुम्हारी ही भाँति अंधकारपूर्ण है। ·····आओ हम नीचे चलें वहाँ मैं तुम्हें वह हड्डियाँ दिखाऊँगी जो यहाँ से नीचे गिराई गई थीं। तुमने कभी ऐसा दृश्य नहीं देखा होगा !!"

वह बगल की एक पतली गुफा में होकर चल पड़ी। अब हम बीच की बड़ी गुफा में आ गए थे। थोड़ी दूर अंदर जाकर आयशा एक गलियारे में

बाँई ओर घूम गई और यहाँ हमें सीढ़ियाँ दिखाई दीं। दीपक आगे कर हम उतरने लगे। छोटी-छोटी कोई सत्तर सीढ़ियाँ उतर कर हम एक और गलियारे में पहुँचे। आयशा अब चक्करदार रास्ते से जाने लगी। हठात् वह एक स्थान पर जाकर रुक गई और बोली :

"हौली आगे धीरे-धीरे चलना। कहीं ऐसा न हो कि अपना संतुलन खो बैठो।"

मैं चौकन्ना हो गया। थोड़ी दूर पर धुँधले दिन का प्रकाश छा रहा था। मैं कह नहीं सकता वह प्रकाश उस पर्वत के गर्भ में कहाँ से और कौन से छिद्रों से आ रहा था। गलियारा यहीं समाप्त हो जाता था और अब जो दिखाई दिया उससे मेरे रोंगटे खड़े हो गये। यह स्थान ठीक उस स्थान के नीचे था जहाँ से कौथर के मुर्दे नीचे फेंक दिये गए थे। ऊपर से यह कम से कम साठ फीट नीचे था। हम इस समय एक बहुत ही विशाल गोल गढ्ढे के ऊपरी किनारे पर खड़े थे। कितना बड़ा था वह मृत्यु का गह्वर! यदि किसी ने रोम में सेंट पीटर्स (चर्च) गिर्जे का ऊपरी गुम्बज देखा हो तो वह कुछ-कुछ इस गड्ढे का अंदाज़ा लगा सकता था क्योंकि यह उससे लगभग आठ गुना बड़ा था। उफ़! इतना बड़ा गह्वर मैंने कभी नहीं देखा था और उसमें क्या पड़ा था? हे भगवान! उसमें हज़ारों-लाखों आदमियों की सफेद हड्डियाँ उस प्रकाश में वीभत्स रूप से चमक रही थीं। कितना भयानक था वह सब? ऊपर से फेंकी हुई लाशें जैसे जिसे संतुलन मिला वैसे ही ठहर गई थीं और इन सहस्रों वर्षों में यहीं सड़ कर सूख गई थीं। हड्डियों की एक खास बदबू होती है, जो भली नहीं लगती, वह यहाँ विद्यमान थी। उस खुश्क जगह में कोई-कोई लाश तिरछी, कोई आड़ी ठहरी हुई मानों हमें ही देख रही थी। और भी वीभत्स रूप उनका था जिन पर की खाल सूख कर अब भी हड्डियों के चारों ओर चिपक रही थी। यह बहुत ही भयानक लग रही थी। मनुष्य का मरा हुआ रूप और वह भी इतनी लाखों की संख्या में मुझे भयानक ही नहीं बल्कि घृणास्पद भी लगा। 'क्या यही है मनुष्य का अन्त?' मेरे मन में बार-बार प्रश्न होने लगा 'और इतना भयानक अन्त!!' मेरे मुँह से भय मिश्रित आश्चर्य से एक चीख निकल गई। उस चीख का जो परिणाम निकला वह और भी भयानक था। मेरी आवाज़

उस गोल गुंबज के भीतर अट्टहास करती हुई गूँज गई और उस गूँज को, स्वयं अपनी आवाज को सुन कर मैं भय से काँप उठा। एक हड्डी की सफेद खोपड़ी जो हजारों साल से निर्विघ्न रूप से दो और हड्डियों के बीच सब से ऊपर टिकी हुई थी उस आवाज से अपना सन्तुलन खो कर लुढ़की। वह सीधी हमारी ओर लुढ़कती आई ओर उसके झटके से और हड्डियाँ, और भी और फिर और·····वह सभी खड़खड़ा उठीं और नीचे बैठ गईं। गड्ढा कितना गहरा था इसका प्रमाण लगाना कठिन था पर वह जो ऊपर तक भरा हुआ था अब ऊपर से तीस फीट के करीब खाली हो गया। उन हड्डियों की चरमराहट देर तक उस गुंबज में गूँजती रही। मेरा मन उनके प्रति घृणा और एक विचित्र शून्य भाव से भर गया। मैंने तुरन्त मुँह फेर लिया और आयशा से कहा :

"यह सब भयानक बीमारी के कारण मरे थे·····चलो यहाँ अधिक ठहरना ठीक नहीं होगा", और मैं मुड़ कर चल दिया। आयशा ने चलते-चलते कहा :

"हाँ ये रोग-ग्रस्त हो कर मरे थे और उनके शरीर ममी नहीं बनाये जा सके। पर कौयर के लोग अपने मुर्दों को कमाल की ममी बना कर रखते थे। मिश्री लोग तो उनके भेजे बाहर निकालते थे और उन्हें कुरूप कर देते थे। हजारों वर्षों बाद उनकी ममी पारदर्शी त्वचा की हो गई हैं। पर इन्हें देखो! ये कौयर की सन्तानें! केवल एक उबलती दवाई से जो वह अपने मुर्दों के शरीर में सुईनुमा किसी नली से डाल देते थे, उन्हें वैसे का वैसा ही रखने में दक्ष हो गए थे।·····आज भी इतने हजारों साल बाद उनके मुर्दे ऐसे लगते हैं जैसे अभी सोये हों।" अब वह एक ओर एक द्वार में घुस गई। यह एक लम्बा गलियारा था। आयशा की आज्ञा से गूँगी-बहरी युवतियों ने दीपक ऊपर उठा कर मार्ग दिखाया। कोई दस कदम जाकर वह बाँये फिर एक ओर घूम गई। दीपक के उजाले में मैंने देखा यह एक छोटा कमरा था। यहाँ दीवारों के सहारे दो लम्बी पत्थर की चौकियाँ थीं और उन पर पीले वस्त्र पहिने मुर्दे अनंत निद्रा में सो रहे थे। उनके कपड़ों पर बहुत महीन धूल की तह जमी हुई थी जो सहस्र वर्षों से एकत्रित हो गई थी परन्तु वह इतनी नहीं थी जैसी

हजारों साल में होनी चाहिये थी क्योंकि यहाँ इन चट्टानों में, इस पर्वत के गर्भ में भला धूल का प्रवेश भी कहाँ था और वहाँ था भी क्या जो धूल बन कर जमता। सिर और पैरों के पास वैसे ही चित्रित पात्र छोटे-बड़े कई रखे थे पर वहाँ आभूषण, सुवर्ण-रजत अथवा अस्त्रादिक कुछ भी नहीं थे जैसे कि मिश्र में ममियों के साथ मिले थे। आयशा ने मुझसे एक ओर लेटी ममी का कपड़ा खोलने को कहा। मैंने हाथ बढ़ाये पर न जाने किस अज्ञात भय से मेरे हाथ पीछे हट गए। उस स्थान की विभीषिका ने ही जैसे मुझे दबोच लिया था। वह हँसी और उसने स्वयं बढ़ कर उस मुर्दे के कपड़े को खोलना प्रारम्भ कर दिया। पीले कपड़े के अन्दर और पतले कपड़े लिपटे मिले। उसने उन्हें भी खोल दिया। मैंने देखा वह मुर्दा एक स्त्री का था जो अब कटि तक नग्न हो चुकी थी। कैसे कहूँ वह उस समय अपनी चिर निद्रा में सोई हुई कैसी लग रही थी? उसकी आयु यही कोई तीस अथवा पैंतीस वर्ष की थी और वह श्वेत पाषाण की भाँति गोरी, हाथी दाँत की स्निग्धता से परिपूर्ण और यौवन के लावण्य से छलछला रही थी। उसकी कमान सी काली भ्रू और लम्बी काली बन्द पलकें, उसकी मांसल देह सब ऐसे थे जैसे वह अभी सोई हो। थोड़ी देर तक तो मैं भ्रमित हो गया और स्वयं तर्क करने लगा कि यह हजारों साल पुरानी हो ही नहीं सकती। उसके एक पुष्ट पीन स्तन के बगल से घने बादल के समान नीले केश नीचे बह गए थे दूसरे स्तन और उसकी सुडौल, गोरी, मांसल बाँह के बीच एक नवजात, सुन्दर, स्वस्थ शिशु था। इतना अच्छा लग रहा था वह दृश्य और फिर भी इतना भयावना कि मेरे नेत्र न जाने क्यों अश्रुपूर्ण हो आये। शायद यह सोच कर कि माता इसी बच्चे के प्रसव में मर गई थी और अपने साथ इस अबोध को भी कब्र में घसीट ले गई थी। वह अबोध बेचारा! पर फिर ध्यान आया कि वह शिशु बड़ा होकर फिर भी तो ऐसा ही रखा जाता। फिर भी तो धूल में मिल जाता। आह वह जो अब होता तो जाने कितने हजार साल का होता। मेरी निगाहें उस मुर्दे से हट कर आयशा पर ठहर गईं···जो बाईस सौ तेईस सौ वर्ष पुरानी थी। मेरा मस्तिष्क इन सभी असंभव और अमानुषिक बातों से धीरे-धीरे अपना संतुलन खो रहा था ऐसा मुझे लगा क्योंकि यहाँ मेरी विद्या, मेरा ज्ञान कुछ भी तो इन रहस्यों की जड़ में पहुँचने में मेरी सहायता नहीं करता था।

दूसरी ओर के मुर्दे को मैंने स्वयं उघाड़ा, वह एक वृद्ध था जिसकी घनी घुँघराली दाढ़ी थी। यह शायद उस स्त्री का पति था जो उसके बहुत बाद मरा और जब मर गया तो जो उस समय जीवित थे उन्होंने उसे वहीं उसकी पत्नी के पास ला लिटाया कि "लेटा रह···यहीं लेटा रह···इस अमर निद्रा में निर्विघ्न ऐसे ही सो जा जैसे तेरी स्त्री और तेरा बच्चा सो रहे हैं," जाने कितने हजार साल निकल गए थे उन्हें मरे और आज हमारे दीपों की रोशनी उन पर पड़ी। आज फिर एक बार मनुष्य के नेत्रों ने उन्हें उघाड़ कर देखा था। मैं यही सोच रहा था।

आयशा मुझे पंद्रह-बीस कोठरियों में और ले गई जहाँ इसी प्रकार मुर्दे सजे रखे थे। सभी अच्छी हालत में थे। आगे चल कर कुछ ऐसे भी मिले जो छूते ही राख की भाँति गिर गए। आयशा ने मुझे बताया कि या तो ये वे थे जिनमें वह दवा ऊपर से लगा दी गई थी, अंदर नली द्वारा नहीं डाली गई थी, या वे जो जाने किस जल्दी के कारण अच्छी प्रकार ममी न बनाये जा सके थे।

आयशा मुझे जाने कितने कमरों में घुमाती रही और उन सभी में लाशें बनी रखी थी; आखिर में हम एक बड़े कमरे में आये, यहाँ भी दो लाशें लेटी थीं, पर ये दोनों एक ही पत्थर पर लेटी थीं। आयशा ने स्त्री का कपड़ा खोला और मैंने पुरुष का। दोनों के हृदयों में छुरे के गहरे घाव थे। पुरुष की बाँह पर स्त्री का सिर टिका हुआ था। स्त्री के उन्नत उरोज जो उस समय भी दूध के फेन सदृश श्वेत और स्निग्ध थे उस पुरुष के वक्षस्थल से बिल्कुल सटे हुए थे। नीचे कुछ लिखा था। आयशा ने पढ़ा :

"मृत्यु में विवाह।"

मेरी आँखें मिंच गई और मैं उस अतीत की याद करने लगा जिसमें यह स्त्री और पुरुष विचित्र परिस्थिति में मार डाले गये थे। क्षण भर को ऐसा लगा मानो मैंने समय की गति को रोक दिया है और मैं उसके सारे रहस्यों को जान गया हूँ।

मैंने दूर बहुत दूर अतीत में देखा—ऊपर बीच की गुफा के चबूतरे पर जहाँ आयशा बैठी थी, दाढ़ी वाले कई सुगठित राजसी पुरुष खड़े हैं और उनके आगे भव्य श्वेत दाढ़ी वाले पुजारी अपनी दृढ़ और कठोर मुद्राओं में खड़े हैं। बीच में यही सुन्दरी श्वेत वस्त्र और स्वर्णाभूषण पहने खड़ी है। इतनी श्वेत है यह

कि कपड़े भी इसके रंग के सामने फीके दिख रहे हैं और इसके शरीर में इतनी स्वर्णिम चमक है कि स्वर्णाभूषण भी लज्जित हो उठे हैं। यह फूल से कोमल मानो हवा से हिलती हुई खड़ी है।·····और उसी समय एक ओर से चमकदार वस्त्राभूषणों से अलंकृत कई दीर्घाकाय पुरुष आते हैं। उनकी तलवारें बगल से लटक रही हैं और उनके पीछे चौड़े फलक के ऊँचे भाले हैं। उनके बीच में एक कठोर मुद्रा वाला पुरुष है जिसे देख कर यह युवती घबरा जाती है। तभी न जाने किधर से एक सुन्दर युवक जान पर खेल कर भागा आता है और इस युवती से लिपट जाता है। यह भी उसके अंक से ऐसे लिपट जाती है जैसे बेल वृक्ष पर चढ़ जाती हो और वे आपस में एक दूसरे का चुम्बन करते हैं। तभी भयानक हलचल मच जाती है। उस नवागंतुक की आज्ञा से जो शायद कोई राजा मालूम होता है, वह प्रेमी पकड़ लिया जाता है और आह! उसके हृदय में मूँठ तक तलवार घुसा दी जाती है, रक्त अजस्र धाराओं से गिरकर उस चबूतरे को गीला कर देता है। फिर विद्युत गति से वह युवती उसी तलवार को हत्यारे के हाथ से छीन कर अपने हृदय में भोंक लेती है···और फिर हल्ला होने लगता है···और फिर जैसे सब चले जाते हैं। सबके जाने के बाद वे दोनों लाशें उठ कर आपस में लिपट जाती हैं·····"

मेरा अतीत का स्वप्न हठात् समाप्त हो गया। आयशा ने मेरे कंधे पर हाथ रख कर पूछा :

"क्यों कैसा लगा रहा है?"

"ठीक हूँ," मैंने संक्षिप्त में उत्तर दिया और चलने को उद्यत हो गया।

"और देखोगे हौली या बस?" उसने पूछा और वह कहती गई, "अभी तुम चाहो तो मैं तुम्हें टिस्नो की कब्र में ले चलूँ जहाँ वह कौयर पराक्रमी शासक, वह जिसके काल में यह गुफाऐं बनकर समाप्त हुई थीं, आडंबर और शान-शौकत के साथ सो रहा है। वहाँ ऐसा लगता है जैसे वह सोकर संसार को चुनौती दे रहा है कि वह केवल धूल है और कुछ नहीं। वहीं इस तमाम पहाड़ की शिल्पकला और कौयर के लोगों की सभ्यता चरम सीमा पर अपना प्रदर्शन कर रही है। चलोगे?"

"नहीं," मैंने उत्तर दिया :

"हे रानी ! अब मैं इन्हें और अधिक नहीं देख सकूँगा, मेरा मन भर गया है···मुझे यहाँ से बाहर ले चलो।"

वह हँसी और बोली :

"चलो," पर कहती गई, "और इन्हीं मुर्दों के बीच में हजारों साल से रहती हूँ। यही मेरे महल के विशाल प्रकोष्ठ हैं और यहीं मेरा विस्तृत राज्य है। एक दिन ऐसा भी आयेगा जब तुम नहीं रहोगे। आज कल का नहीं बल्कि हजारों वर्षों बाद जन्मने वाला भी नहीं रहेगा, मैं तब भी रहूँगी। पर नहीं ! मैं भी अमर नहीं हूँ। मुझे भी एक दिन मरना ही होगा, चाहे वह समय दस सहस्र वर्षों बाद या एक लाख या दस लाख साल बाद आवे, मरना मुझे भी पड़ेगा। तब मैं भी इसी भाँति ठंडी देह लिये यहीं इन्हीं के बीच पड़ी रहूँगी शायद उससे भी अधिक समय तक जितनी कि मैं जीवित रही। और फिर भी हौली, उससे समय की अनंत गति में कोई अंतर नहीं आयेगा क्योंकि न कभी उसका अंत किसी ने जाना है न आरंभ। यह पृथ्वी कब की है कौन जाने और जाने कब तक रहेगी, पर एक न एक दिन मरना इसे भी पड़ेगा···हाँ प्रकृति की गति रुकने के साथ यह भी निर्जीव हो जायगी···मैं जो कहती हूँ अपने लंबे अनुभव से कहती हूँ···हौली ! और इन दो हजार सालों में भी अभी तक मैंने प्रकृति के सारे रहस्य नहीं जाने हैं। शायद दस लाख साल में भी कोई न जान पाये।"

"हे रानी ! तुमने अभी टिस्नो की कब्र के बारे में कहा था परन्तु वह तो बाद का राजा था। उससे पहले की कब्रें कहाँ है ?" मैंने जिज्ञासा दिखाई।

"वे और नीचे हैं," आयशा ने उसी भाँति उत्तर दिया, उसके स्वर में विरक्ति भरी हुई थी।

"कितनी गुफाएँ और कितनी लाशें होंगीं यहाँ ?" मैंने मूर्खतापूर्ण प्रश्न किया। वह हँसी और बोली :

"तुमने कभी महासमुद्र की मछलियाँ गिनी हैं हौली ?"

और वह चुप हो गई। यह सच था। हजारों सालों में मरने वालों की भला क्या गणना थी ?

मैं जब अपने कक्ष में आया, उदास था। जौब ने बताया लिओ को हालत और भी बिगड़ गई है, मैंने क्षण-भर को सोचा :

"मैं जीवित हूँ अथवा मरा हुआ ? कहीं इतने मुर्दों के बीच मर तो नहीं गया हूँ।" और मैं आँख मींच कर लेट गया। थोड़ी देर लेटा होऊँगा कि मेरे पास आयशा की एक गूँगी दासी आई और उसने इंगित किया। मैं तुरन्त उठकर उसके साथ चला गया। आयशा अपने उसी पर्दों से घिरे कक्ष में शैया पर बैठी हुई मेरी प्रतीक्षा कर रही थी।

× × × ×

१६

आयशा ने शैया पर लेटे-लेटे मेरा स्वागत किया। मैं शैया के पैताने जाकर बैठ गया। वह बोली :

"हौली ! सच जानो तुमसे बातें करके मेरा मन खुश होता है। दो सहस्र वर्षों से मैं अकेली रही हूँ और कभी किसी से खुल कर वार्ता नहीं कर पाई हूँ। मेरे अभिन्न साथी यह मुर्दे और इनसे भी बदतर यह बर्बर एमैहैग्गर लोग रहे हैं। तुम निश्चय ही अच्छी बातें करते हो·····वैसे तुम्हारी आयु तो अभी बहुत ही छोटी है परन्तु फिर भी तुममें सोचने का गुण है। तुम जब नाना भाषाएँ बोलते हो तो मुझे वह अतीत का समय याद हो आता है जब मैं यूनान, एथेंस, अरब और जेरूसलम में उन दाढ़ी वाले पुजारियों से धार्मिक अन्ध-विश्वासों के बारे में बहस करती थी। ओफ ! वे कितने भयंकर व्यक्ति थे जो विवाद में हारते समय हत्या तक करने पर आरूढ़ हो जाते थे !! आह ! हौली ! स्मृति की रुचि बहुत कटु होती है। उसे केवल आशा रूपी दाँतों से ही चबाया जा सकता है !! अन्यथा वह जीना दूभर कर दे।·····हौली तुम चुप क्यों हो ? क्या उदास हो ? लो मैं तुम्हारे सामने अपना रूप फिर खोलती हूँ···इसे देखो और जितना देख सको उतना देखो क्योंकि ऐसा रूप संसार में कहीं नहीं है ! आह ! उन दुष्ट भेड़ियों ने, उन जेरूसलम के कठोर पुजारियों ने भी मुझे घूर कर सुन्दर कहा था। पर वह कुत्ते न जाने कब के मर गए···कम्बख्त विरक्त बनते थे परन्तु मेरे रूप से भीतर ही भीतर कामुक हो उठते थे।" अब वह साँप की तरह बलखाती हुई अँगड़ाई लेने लगी। उस समय मैं हतबुद्धि हो गया था। उसने

कुछ नहीं कहा और न कोई भूमिका ही बाँधी। जल्दी से अपने लम्बे केशों में हाथ डालकर बन्धन खोल दिये। मेरी आँखें चौंधिया गईं। वह अपने उसी दमकते रूप में खड़ी थी। उसके पैरों के पास वह ऊपर का कपड़ा गिर गया था। मैंने उसके मुख की ओर देखा और मेरी श्वास तीव्र गति से चलने लगी। इस समय वह सुन्दरी वासना में अलसाई-सी पुलकित प्रतीत हो रही थी। उसमें पहली रात्रि का वह भयानक रूप तनिक भी नहीं था। कितना परिवर्तन था उसमें! फिर उसने वाराङ्गनाओं की भाँति भ्रूभंग किया और अँगड़ाई लेते हुये इठलाने लगी। मुझे ऐसा लगा कि उसके हीरक के समान दमकते शरीर से विद्युत की लहरियाँ प्रस्फुटित होकर बिखर रही थीं। इस समय वह एफ्रोडाईट बनी हुई थी जो संसार को अपनी वासना भरी श्वासों से पागल करने पर तुल गई थी। इस समय उसके हाथों से अग्नि की लपट नहीं निकल रही थी बल्कि अब तो वह रह-रह कर किलोल करती हुई हँस रही थी। वह शैया पर बैठ गई उसके उन्नत उरोज उसके नीचे गले की पोशाक में से झाँकने लगे। उन गोलाकार मांस-पिंडों के बीच का गह्वर वह भँवर था जिसमें कोई भी मनुष्य एक बार गिर कर जीवित बाहर नहीं निकल सकता था।···मेरी प्रज्ञा जाती रही··· मेरी बुद्धि, मेरी प्रतिष्ठा, मेरा मान, सभी कुछ मानो मैं भूल गया था। मैं जो स्त्री जाति के प्रति अपने पूर्व अनुभव से उदासीन हो गया था, अब वासना के तीव्र प्रवाह में पड़ा उसके थपेड़ों में हिलोरें लेने लगा। वह मानो सब कुछ देख रही थी और उसे अपनी विजय का गर्व हो रहा था। वह मुस्कुराई और बोली :

"हौली! मेरे हौली! यहाँ बैठो।" और उसने शैया पर अपने पास बैठने को मुझे इंगित किया और फिर कहा :

"यहाँ से तुम मुझे जी भर कर खूब देखो···परन्तु देखना तुम आपे से बाहर न हो जाना क्योंकि मैं पहले-ही कह चुकी हूँ, मैं तुम्हारे लिये नहीं हूँ·· और हाँ···मुझे दोष भी न देना कि मेरे रूप ने तुम्हें जड़ बना दिया है···कि अब तुम अपना ही हृदय स्वयं खाये जा रहे हो।"

वह फिर हँस दी। तनिक देर बाद पुनः कहने लगी :

"हौली! मेरी ओर देखो। मेरे अंग-प्रत्यङ्ग को देखो और कहो मैं कैसी लगती हूँ। क्या सचमुच सुन्दरी नहीं हूँ? क्या मेरे एक भी अंग से संसार

की किसी भी स्त्री का वही अंग अधिक सुन्दर है ? आह ! हौली ! सच कहना, क्या कोई स्त्री मेरे बराबर तो क्या, मेरे पैर की धूल भी होने लायक है ?"

मैं चुप बैठा उसकी रूप सुधा को अतृप्त नेत्रों से देखता रहा। वह फिर हँसी और उसकी दृष्टि अपनी कमर पर बँधी स्वर्ण की उस पेटी पर पड़ी जिसके जोड़ पर सामने दो सर्प आपस में गुँथे हुए थे। वह हठात् चौकी फिर बोली :

"शायद तुम समझते हो मेरी कमर मोटी है ? नहीं यह तो बहुत ही पतली और रोम रहित स्निग्ध है। यह नाग की पेटी ही बेडौल है जो कमर को अच्छी तरह नहीं कस पाती। ओह ! यह साँप बड़ा चतुर है। यह जानता है कि उस कमर में लिपटना अच्छा नहीं होता जो उसके लिये नहीं होती !···देखो···यहाँ लाओ अपना हाथ !···हाँ यहाँ फिराओ और देखो मैं कितनी स्निग्ध त्वचा वाली और सुडौल हूँ···आह ! हौली ! इतनी जोर से नहीं ! देखो तुम्हारी उँगलियाँ मुझे चुभती हैं···नहीं, नहीं मेरी नग्न देह को स्पर्श न करो···वस्त्र के ऊपर ही हाथ रखो···यह नग्न देह तुम्हारे लिये नहीं है···"

अब मैं पागल हो गया था। उसने जब अपनी कमर देखने को कहा था तो मैं एकदम मतवाला होकर उसकी कमर में हथेली फिराने लगा था। आह ! कितना सुखद और उष्ण स्पर्श था वह ! कितनी स्निग्ध और कितनी कोमल देह थी उसकी !···और एक बार तो हाथ फिराते हुए मेरी उँगलियाँ कमर से नीचे उसकी नग्न देह से भी जा लगी थीं परन्तु उसी समय उसने मुझे झटक दिया था। आह ! मैं अपनी सुध-बुध खोकर और सहन नहीं कर सका उसके पास भूमि पर घुटनों के बल बैठ कर प्रेम-प्रदर्शन करने लगा। मैं आखिर तो इंसान था और वह सामान्य नारी से कहीं अधिक थी। मैंने उस अपने दिमाग की बिगड़ी हुई अवस्था में कई भाषाओं की मिली-जुली बोली में उससे कहा :

"हे सुन्दरी ! हे आयशा ! मैं तुम्हें प्यार करता हूँ। तुम मुझे स्वीकार कर लो और मैं तुम्हें इतना प्यार···इतना प्यार करूँगा कि शायद ही संसार में किसी पुरुष ने किसी स्त्री से न किया होगा और यदि तुम कहो तो मैं इसी क्षण तुम्हें अपनी जान दे सकता हूँ।" मूर्खता में मैं न जाने क्या-क्या बक गया। उसने मेरी ओर एक बार आश्चर्य से देखा फिर हँसने लगी और बोली :

"मैं सोच रही थी कि तुम्हें घुटनों के बल गिराते कितनी देर लगेगी। पर मेरा विचार था कि तुम इतने शीघ्र नहीं गिरोगे क्योंकि तुम बुद्धिमान हो। खैर मुझे बड़ी खुशी हुई है। आह! हजारों साल से मैंने यह दृश्य नहीं देखा है। पहले मेरे सामने···मेरे रूप के सामने लोग गिरा करते थे। अब आज तुमने गिरकर मेरी सदा से जाग्रत वासना को और भी भड़का दिया है। जानते हो हौली, हम स्त्रियाँ पुरुषों को अपने पैरों पर गिरा देख कर कितनी संतुष्ट होती हैं? हाँ यह हमारी ही जाति को वरदान है···पुरुषों को नहीं!!" और वह हँसने लगी फिर बोली :

"हौली तुम मेरा वस्त्र चूम सकते हो क्योंकि चूमने से कोई निशान नहीं पड़ता सिवा तब जब कि हृदय उसे स्वीकार न कर ले।" और मानो वह अपना खेल खेलने पर पूरी तरह से तैयार बैठी थी। वह मेरे पास जरा झुक गई। अब उसके केश मेरी भ्रू पर लग रहे थे और उसके शरीर की सुगंध मुझे मदहोश करने लगी थी। मैंने न जाने कब उसी अवस्था में उसे आलिङ्गन में बाँधने को बाँहें फैला दीं और मैंने देखा···

वह सीधी तन कर झटके के साथ खड़ी हो गई और उसने एक हाथ मेरे सिर के ऊपर फैला दिया। मुझे ऐसा लगा जैसे बर्फ के समान ठंडी वस्तु उसमें से गिर कर मेरी हड्डियों को जमाने लगी। पलक मारते ही मेरा नशा उतर गया और मैं फिर वास्तविकता और परिस्थिति का अनुभव करने लगा।

"काफी तमाशा हो गया हौली!" वह तनिक कठोर स्वर से बोली : "तुम अच्छे और नेक आदमी हो···उठो·····मैंने तुम्हें क्षमा कर दिया है·····पर हौली! स्त्री के लिये क्षमा करना और अपनी शक्ति का उपयोग न करना बड़ा कठिन हुआ करता है·····आईंदा सावधान रहना·····मैंने कहा था प्रकृति के बहुत से रहस्यों को मैं जान गई हूँ चाहे सब को न सही और वह रहस्य ही मेरी शक्ति है·····मैं तुम्हें जहाँ तुम इस समय बैठे हो भस्म कर सकती हूँ·····परन्तु नहीं···हौली! मैंने तुम्हें क्षमा कर दिया है क्योंकि तुम सोचने वाले आदमी हो···उठो और मुझसे बुद्धि और ज्ञान की बातें करो।"

मैं उठ कर शैया पर बैठ गया और अब मुझे अपनी कमजोरी पर शर्म आ रही थी। मैं वैसे तो होश में आ गया था और मुझे मेरी खोई हुई प्रज्ञा भी

मिल गई थी फिर भी उस भयानक स्त्री के संपर्क में मैं काँप रहा था ठीक वैसे जैसे तूफान के बाद भी पेड़ के पत्ते काँपा करते हैं। मैं भला उससे उस समय कैसे कहता कि पिछली रात्रि मैंने छिप कर उसकी प्रज्वलित वासना का रूप देखा था जब वह उस ठंडे शव से लिपट रही थी और उसे चूम रही थी।

तभी वह मेज पर रखे पानी को दिखा कर बोली :

"देखो ! हौली इसमें कितनी झलक आती है और चली जाती है पर बाद में पानी ही पानी रह जाता है। वैसा ही स्वच्छ और ठंडा। मेरे कई रूप हैं··· वह आते हैं·····अपना रंग दिखाते हैं और चले जाते हैं परन्तु मैं वहीं हूँ जहाँ हूँ·····निर्विकार। दमकती हुई !···अजर ! अमर !!"

मैं अब अपने को काफी सँभाल चुका था। उसने मुझे एक फल खाने को दिया जो मैंने लेकर खा लिया। वह बोली : "मनुष्य का असली भोजन वही था और मांस आदि भोजन तो विष हैं।" फिर उसने कहा :

"मेरे हौली ! मुझे बताओ उस मसीहा ने क्या किया ? उसका मनुष्य जीवन और प्रकृति के बारे में क्या विश्लेषण था ? और अब रोम, यूनान, मिश्र और और भी बर्बर देशों में कौन-कौन राजा हैं ?·····मुझे सब बताओ क्योंकि उस काल में जब की बात मैं कह रही हूँ रक्त, मदिरा, ठंडा लोहा और स्त्री यही प्रधान विषय थे। अब जाने क्या हैं ? मुझे बताओ अब क्या मनुष्य इससे परे कुछ और सोचने लगा है ?"

मैंने उसे जितना मुझसे हो सका अपने इसाई धर्म की संक्षिप्त में व्याख्या की और सिद्धांत समझाये। उसकी समझ में तो वैसे सब आ गए पर वह उन्हें एक को भी नहीं मानी। सिर हिलाती रही, पर जब स्वर्ग और नरक का विषय आया तो वह गंभीर हो गई और सब कुछ सुन कर बोली :

"हाँ ये दो बातें मेरी समझ में अवश्य आती हैं।"

फिर मैंने उसे बताया कि उसके देश अरब में भी एक धार्मिक नेता हुआ थ जिसे वहाँ के लोग पैगंबर मानते हैं और उसने भी एक नया मत फैलाया था।

सब सुनकर वह बोली :

"ओह ! तो तब से अब तक दो नये धर्म पृथ्वी पर उपज आये ! मैं इनसे पहले के और कई जानती हूँ और उससे भी पहले निश्चय और भी अनेक

होंगे·····कौयर की सभ्यता से पहले और फिर उसके भी पहले धर्म का उपजना, धर्म का प्रवर्तन भी संसार के लिये नई बात नहीं है। मनुष्य आकाश को देखकर उससे पूछता है तेरे उस पार क्या है? वह अंत के भय से काँप उठता है और फिर·····और फिर वह स्वार्थ की भावनाओं में खो जाता है। फिर उसे इलहाम होने लगते हैं···और हौली! जानते हो तब क्या होता है?·····एक नया धर्म पैदा हो जाता है।" उसने मेरी ओर विचित्र नेत्रों से देखा मानों कह रही हो, 'यह सब मैंने देखा है·····ओह! सब बहुत पुराने खेल हैं···क्यों क्या विचार है?' मैं चुप रहा। उसके ज्ञान और चिरकाल से संचित अनुभव के सामने मैं बोल भी क्या सकता था? फिर वह उसी भाँति बोली :

"प्रत्येक धर्म अपने अनुयायियों को आशा की ज्योति दिखाता है। जो बुरा है वह उसके धर्म में नहीं है वह अन्यों के लिये है जो स्वधर्म नहीं मानता!··· यह सब कितने थोथे बबूले हैं! धर्म, सभ्यता समाज·····यह बनते हैं और चले जाते हैं···कुछ नहीं रहता हौली! कुछ नहीं रहता और संसार का चक्र चलता रहता है। ओह! यदि मनुष्य केवल इतना जान लेता कि ज्योंति बाहर से नहीं बल्कि उसके उर से ही उत्पन्न होती है···जो वह डगर डगर ढूँढ़ता है वह तो उसी के अंदर है·····कि उसे मुक्ति स्वयं सिद्ध होकर ही मिल सकती बाह्य उपासना और लगाव से नहीं, तो इतना बखेड़ा संसार में भला क्यों मचता? वह अपनी बुद्धि के अनुसार मूर्तियाँ बनाकर उसे ही भजता है...क्यों करता है ऐसा...? क्यों नहीं अपने को ही जीतने का प्रयत्न करते हुए संसार को जीत ले?"

मैं उसके अतीत काल की विचारधारा और मानसिक विश्लेषण सुनकर हैरत में रह गया। इस स्त्री में अगाध ज्ञान का भंडार था···वह तो जैसे आधुनिक सभ्यता और तर्क से भी परिचित थी·····मैंने अनुभव किया कि इससे विवाद में जीता नहीं जा सकता था क्योंकि वह तो एक जलती हुई मशाल थी जिसके पास पहुँचते ही मेरी बुद्धि से उपजे हुए थोथे विचार बर्फ के छोटे टुकड़ों के समान पिघल जाते थे। उसका मस्तिष्क छूरे से तीक्ष्ण, उसका अनुभव हजारों साल का और उसकी बुद्धि महासमुद्र की भाँति गहरी थी। प्रकृति उसकी

आशा में खड़ी रहती थी क्योंकि उसने उसके रहस्यों को जान लिया था। मुझे चुप देखकर वह फिर कहने लगी :

"···तुम अरब के पैगंबर को नहीं मानते···तुम उसके सिद्धांतों का उपहास करते हो क्योंकि तुम उसके अनुयायी नहीं हो। यही होता आया है। यह भी कोई नई बात नहीं है···अब एक देवता को वह मानते हैं पर उन दिनों अरब में देवता भी उतने ही थे जितने शायद मनुष्य थे। अल्लत, साबा, अल-उज़ा, मन्ना, वाडु, सावा, यागुत्थ और मुराद का अश्व·····क्या नाम था उसका !·····हाँ·····यौक·····और नस्र—वह जो हमयार का बाज था·····और न जाने कितने थे·····याद करके मैं तुम्हें अब भी कोई एक हजार तक गिना सकती हूँ·····देवताओं का बाजार भरा पड़ा था·····और ·····और·····जब मैं इनके विरुद्ध···इन व्यर्थ के विश्वासों के विरुद्ध उन धर्माधिकारियों से बोलने खड़ी हुई तो वह मुझे मार डालने को लालायित हो उठे थे ! पर ऐसा सदा ही होता है···पर उस समय भी वे दुष्ट मेरे सौंदर्य की आराधना को तैयार थे उन्हें विरोध मेरे शरीर से थोड़े ही था। था तो केवल मेरे विचारों से···उससे भी बढ़कर अपने विरोध से"··· मैं मुर्झाया बैठा था। उस अद्भुत स्त्री ने मुझे दंग कर दिया था। कठोर शासिका, वासना और प्रेम की देवी, ज्ञान की भंडार, अनुभव की पराकाष्ठा पर पहुँची हुई, सौन्दर्य की प्रतिमा—मानो वह सभी एक ही शरीर में इकट्ठी हो गई थी। थोड़ी देर बाद वह कहने लगी :

"हौली तुम डर गए हो और शायद तुम्हें अपनी कमजोरी पर लज्जा भी हो रही है। परन्तु वह स्वाभाविक ही था। ऐसा कोई पुरुष संसार में पैदा नहीं नहीं हुआ है जो मेरे रूप को देखकर विचलित न हो उठे और फिर मेरे शरीर का स्पर्श करने के उपरांत तो पुरुष का मेरे चरणों पर गिरना जैसे अवश्यम्भावी ही है। तुम भी पुरुष हो। जो हुआ वह तो होना ही था·····छोड़ो·····पर यह बताओ कि क्या तुम इसलिये घबरा रहे हो कि मैं तुम पर अपना मत, अपने सिद्धांत और अपने विचार लाद दूँगी ?"

वह हँसने लगी। मैंने आश्चर्य से पूछा : "तो तुम भी·····"

"क्यों नहीं···", उसने वाक्य पूरा किया : "मैं भी सैद्धांतिक हूँ और तुम्हें अपना शिष्य बनाऊँगी···और फिर मैं और तुम सारे संसार को अपने विचारों से भर देंगे·····हाँ···पर·····अभी नहीं·····अभी मुझे अपने प्रियतम की प्रतीक्षा करनी है·····अब हौली ! तुम जाओ·····मैं भी शीघ्र दवा बना कर तुम्हारे लिओ के लिये, जिसे बिलाली शेर कहता है, लाती हूँ·····"

और वह करवट बदल कर सो गई। मैं उठ कर नीची गर्दन किये चला आया।

× × × ×

१७

मैं अपने कमरे में पहुँचा ही था कि जौब घबराता हुआ आया और चिल्ला कर बोला :

"चलिये चलिये···लिओ·····"

"लिओ·····क्यों ?" मैं एकदम चौंक पड़ा।

"वह मर रहा है·····अब समय·····"

"हे भगवन् !" मैं उछल पड़ा और भागा हुआ उसके कमरे में पहुँचा। मैंने देखा वह दम तोड़ रहा था। मेरा दिल भर आया पर मैं क्या कर सकता था। यूस्टेन और जौब रोने लग गए थे। मुझे अपने ऊपर ग्लानि होने लगी। मेरा बेटा, मेरा लिओ मर रहा था और मैं उस सुन्दरी जादूगरनी से प्रेम कर रहा था·····आह ! स्त्री भी कितनी मायाविनी होती है ! तभी मुझे ध्यान आया कि यदि इस समय भी आयशा आ जाय·····तो शायद उसकी औषधि कुछ काम कर जाय·····वह कहती तो थी कि उसकी दवा अंत समय में ही अच्छा काम करती थी। परन्तु मुझे वैसे कोई आशा न रही।

लिओ उस समय क्षीण साँस लेता हुआ अन्तिम समय के अनुसार हाथ-पैर पटक रहा था। उसके नेत्र भी स्थिर से हो चुके थे। यूस्टेन और जौब फफक-फफक कर रो रहे थे। मैं हाथ पर हाथ रखे दुख में डूब चुका था····· और असहाय की भाँति कभी-कभी मुँह फेर लेता था। आखिर जौब से और न

देखा गया और वह कमरे के बाहर गलियारे में जाकर रोने लगा। उसने लिओ को गोद में जो खिलाया था। कुछ ही क्षण बाद वह एकदम भागा आया और घबरा कर चिल्लाया :

"हे भगवान ! बचाओ ! इस गलियारे में एक मुर्दा चला आ रहा है····· अरे यह हम कहाँ·····"

मुझे तुरंत लगा कि आयशा आ गई थी। वही अपने सफेद कपड़े में लिपटी आ रही होगी। मैं उसके स्वागत के लिये खड़ा हो गया। एक पल और निकल गया। द्वार पर मैंने देखा···वह "जिसकी आज्ञा मानना अनिवार्य था", सीधी खड़ी थी वैसी ही सफेद कपड़े से लिपटी। मेरे जान में जान आ गई। मुझे लगा डूबते को सहारा मिल गया था। यूस्टेन ने उसे देखा और भय से काँपती हुई एमैहैग्गर लोगों की रीति के अनुसार वह पृथ्वी पर औंधी लेट गई। जौब फिर चिल्ला उठा :

"अरे यह आई वह लाश·····यह", और भाग कर कोने में छिप गया।

मैंने घबराते हुए कहा : "तुम ठीक समय पर आ गईं आयशा·····देखो मेरा लिओ·····मर रहा है।"

"घबराओ नहीं", वह बोली, "यदि अभी तक वह जीवित है तो मैं उसे अपनी औषधि से ठीक कर दूँगी।" फिर उसने जौब की ओर मुड़ कर देखा और वह आतंक से चीख उठा। मुझे उसकी मूर्खता पर क्रोध भी आया परन्तु मैं चुप ही रहा। वह फिर बोली :

"यही है वह तुम्हारा नौकर जो कल जल में दिखा था ? और क्या यही रीति तुम्हारे देश में है कि अतिथि जब आवे तो नौकर भागे और चिल्लाये ?"

"वह डर गया है आयशा !" मैंने नम्र स्वर से कहा और कहता गया :

"वह तुम्हारे इस सफेद लिपटे हुए कपड़े को देख कर, तुम्हें मुर्दा समझ कर डर गया है·····"

वह हँसी फिर बोली :

"और यह लड़की शायद वही है जो अपने को तुम्हारे लिओ की स्त्री मानती है !·····ठीक है। इन दोनों को यहाँ से बाहर जाने को कहो। मैं नहीं चाहती कि हर कोई ऐरा-गैरा मेरी विद्या और चमत्कार को देखे।"

मैंने तुरन्त यूस्टेन से अरबी में और जौब से अंग्रेजी में उसकी आज्ञा कह सुनाई। जौब तो जैसे इसी के लिये राह देख रहा था। भाग कर गलियारे में जा खड़ा हुआ परन्तु यूस्टेन जो आयशा की उपस्थिति से ही काँप रही थी इस समय विचित्र द्वंद में पड़ गई थी। एक ओर उसकी आज्ञा और दूसरी ओर उसका मरता हुआ प्रेमी! वह फुसफुसा कर मुझसे बोली :

"मेरे मालिक, हे बनमानुष! मुझे यहाँ से बाहर न भेजो। हर स्त्री को अधिकार होता है कि वह अपने पति की मृत्यु-शैया के पास रहे·····आह! मैं बाहर नहीं जाऊँगी", और वह सुबकने लगी।

"यह स्त्री क्यों नहीं जा रही है हौली?" आयशा ने गुफा के दूसरी ओर दीवाल पर खुदी हुई कुछ मूर्तियों को देखते हुए पूछा। मैंने उसे कारण बता दिया। सुनकर वह एकदम अपनी एड़ी पर घूम गई और कड़ी पड़ गई। उसने केवल एक शब्द कहा परन्तु मुझे लगा वह एक ही शब्द मृत्यु की विभीषिका दिखाने के लिये पर्याप्त था·····उँगली उठा कर कठोर स्वर से वह यूस्टेन से बोली, "·····जाओ·····" बस! और यूस्टेन भय से विह्वल, दुख से जर्जर, रेंगती हुई कमरे से बाहर निकल गई।

आयशा हँसी और उसने मुझसे कहा :

"तुमने देखा हौली! यह स्त्री मेरी आज्ञा की अवहेलना करने का साहस कर रही थी···शायद यह आज दोपहर को उस समय वहाँ नहीं थी···" उसका इशारा उसके न्याय की ओर था।

अब वह लिओ के पास खड़ी थी। उसे देख कर कहने लगी : "यह तुम्हारा पुत्र सुंदर पुरुष है·····", और वह झुक कर उसे देखने लगी। दूसरे ही क्षण वह उसका मुख देख कर उछल पड़ी और हड़बड़ा कर पीछे लड़खड़ाती, गिरती हुई चली गई और दीवाल से टकरा गई तथा भयानकता से चीख उठी। उसकी हृदयद्रावक पुकार सुन कर मैं घबरा गया और मेरा दिल धक् से रह गया। मैंने समझा लिओ·····और मैं अधिक नहीं सोच सका·····मैं चिल्लाया, "क्या है आयशा·····क्या वह·····।" साँप की तरह फुफकारती हुई वह धीरे से मुझे घूरती हुई बोली :

"कुत्ते ! तूने मुझसे इसे अब तक क्यों छिपाया था ?" और वह मेरी ओर हाथ बढ़ाये आगे बढ़ी जैसे वह मुझे भस्म करने ही आ रही हो।

मैं भयानकता से चीख उठा। आतंक ने मेरे सिर के बाल खड़े कर दिये थे। मैं हकबका गया : "क्या ? क्या ? आयशा ?"

तुरन्त उसका वह भयानक रूप जाता रहा। परन्तु न जाने किस बात ने उसे कुछ ऐसा कर दिया था कि हँस भी रही थी और रोती भी जाती थी। वह बोली :

"ओह ! हौली ! शायद तुम जानते नहीं थे पर सुनो मेरे हौली सुनो··· यही मेरा कैलीक्रेटीस है·····यही है मेरा वह प्यारा जिसकी प्रतीक्षा मैं दो हजार वर्षों से देख रही थी·····यही है वह·····वह फिर मुझे लेने आ गया है·····हा·····हा·····मैं जानती थी वह जरूर आयेगा·····कैलीक्रेटीस ! कैलीक्रेटीस !! मेरे प्यारे !!!"

मैंने सोचा, 'बेवकूफ स्त्री', पर मैं उससे यह नहीं कह सका। मुझे भय था कि यह अगर इसी भाँति मूर्खता में पड़ी रही तो लिओ मर जायगा और तब यह कुछ भी न कर सकेगी। मैं चिल्लाया :

"आयशा ! यही तुम्हारा कैलीक्रेटीस है तो बचाओ इसे जल्दी·····वरना फिर यह तुम्हारे हाथ नहीं आने का·····!!"

"हाँ-हाँ !" वह चिल्लायी और उसने अपने वस्त्रों में से मिट्टी की चित्रित एक छोटी सी शीशी निकाली जो लकड़ी की डाट से बन्द थी। वह काँपती उँगलियों से उसे खोलने लगी पर वह उससे खुलती नहीं थी। मैंने शीशी उसके हाथ से झट से छीन ली और दाँत लगा कर डाट खोला। एक बूँद उस शीशी की दवा मेरी जीभ पर जा गिरी। वह अत्यन्त मीठी स्वाद की थी। मुझे एकदम चक्कर सा आया और दूसरे ही क्षण मेरी आँखें खुल गईं। वह बोली : "जल्दी-जल्दी इसे इसके मुँह में डाल दो।" मैंने देखा लिओ की आखिरी घर्राहट चल रही थी। मैंने उसका मुँह खोला और आयशा ने मेरे इंगित करने पर उसके सुनहले केश पकड़ कर उसका हिलता सिर रोका और दवा उसके मुँह में डाल दी। जैसे शोरे का तेजाब हिलाने पर आग देता है वैसे ही मुँह में दवा के गिरते ही आग और भाप सी निकली। मैंने मुँह बन्द कर दिया। मैंने देखा आयशा पत्ते की भाँति काँप रही थी। मेरा दम मुँह में

आ गया था। एक बात अवश्य हुई और वह यह कि दवा मुँह में गिरते ही लिओ की मरण यंत्रणा एकदम रुक गई और वह चुपचाप हो गया। साँस जो मद्धिम स्वर से चल रही थी उसका वेग बढ़ गया था।

परन्तु उसकी पलकें अब भी यातना से पलटा खा रही थीं। मैंने देखा कि आयशा का मुख जो घबराहट में खुल गया था, तीव्र यातना और संशय से पल-पल सफेद पड़ता जा रहा था। उसके नेत्रों के नीचे एक कालिमा सी छाने लगी थी और उसके वे गुलाबी होंठ सूख कर लिओ के होंठों जैसे हो गए थे। उसे देखकर ही पता लगता था कि वह स्वयं यह तय नहीं कर पाई है, कि लिओ निश्चय ही बच जायगा। वह असीम वेदना से काँपती हुई लिओ का सिर अब भी अपने हाथों में लिये बैठी थी। मैं और न सह सका। मैंने हकला कर पूछा :

"क्या···हुआ···क्या बहुत देर···हो गई ??" और मेरा स्वर भर्रा गया।

उसने कोई उत्तर नहीं दिया। सिर्फ दोनों हाथों से अपना मुँह छिपा लिया और वह वहाँ से उठ कर एक ओर जा खड़ी हुई। तभी मैंने सुना लिओ ने एक गहरी साँस ली और साश्चर्य देखा कि वह, जिसे हम मरा हुआ समझने लगे थे, करवट बदलकर सो गया। मेरे मुँह से खुशी की चीख निकल गई।

"तुमने देखा ?" मैंने फुसफुसाकर उससे पूछा। "हाँ", वह उसी तरह बोली : "मेरा कैलीक्रेटीस बच गया है···अगर एक क्षण और देर हो जाती तो···ओह !" और वह आगे न बोल सकी। फफक कर रो उठी। उस खुशी में मेरी भी पलकें भींग गईं। वह "जिसकी आज्ञा मानना अनिवार्य थी" इस समय साधारण स्त्री की भाँति रो रही थी···जिससे अपने को सँभाला भी नहीं जा रहा था····· वह बड़ी देर तक रोती रही और मेरे बहुत समझाने पर किसी तरह वह रुकी। मैंने देखा वह रोती हुई भी अतीव सुन्दरी प्रतीत होती थी।

आँसू पोंछ कर उसने गला साफ किया और नाक साफ की फिर कहने लगी :

"हौली ! मेरे मित्र ! मुझे क्षमा करो कि मैं तुमसे जाने क्या कह गई····· देखो आखिर मैं एक औरत ही तो हूँ !! आह ! यह पाँच मिनट जो मैंने अब बिताये उन दो हजार वर्षों से भी लंबे कटे हैं, तुमने आज ही तो अपने धर्म के अनुसार मुझे स्वर्ग और नरक के लोगों का वर्णन किया था ! सड़सठ पीढ़ियाँ ! बाईस सौ वर्ष ! मैं नरक की यातना झेलती रही हूँ जिसमें मुझे मेरी अतीत की

संचित स्मृतियाँ खाती रही हैं। वह मुझसे भुलाये नहीं भूलती। न मुझे किसी का साथ मिला है न आराम, न मृत्यु और न शांति···मैं तड़पती रही हूँ। और अब जब मेरा प्यारा मेरे इतने निकट आ गया तो भी मैं न जान सकी कि वह आ गया है। ओह! मैं कल ही इसे देखने क्यों न आ गई? अगर कहीं एक पल देर हो जाती तो मेरी आशाओं पर पानी फिर जाता और मुझे एक बार फिर जाने कितने और हजार वर्षों तक उसी यातना में तड़पना पड़ता? हौली मैं इतने वर्षों जीकर प्रकृति के कुछ रहस्यों को जान कर भी भविष्य के एक पल के बारे में भी नहीं जानती···वरना क्यों मेरा प्रियतम कल से इस बीमारी की यातना झेलता?·····

"हौली! मेरी कथा सुनो! यह वह कथा है जो तुमने न कभी सुनी होगी न कभी सुनोगे चाहे तुम्हें मैं दस हजार वर्ष का जीवन दे दूँ···क्योंकि ऐसा करने की शक्ति मेरे पास है·····

"और अब! मेरा स्वर्ग मुझे मिल गया है···मैं बाल-बाल उस नरक में एक बार फिर गिरने से बच गई हूँ·····अब यह बारह घंटे तक सोता रहेगा और इसी बीच बीमारी उसे छोड़ जायगी···और तब वह पूर्ण स्वस्थ हो जायगा····· मेरे लिये·····अपनी आयशा के लिये·····।"

उसने लिओ के सुनहले केशों में स्नेह से उँगली फिराई और फिर झुककर उसकी भ्रू चूम ली। कितनी ममता थी उस समय उसके नेत्रों में कैसे कहूँ? पर मैं मूर्ख उस समय ईर्षा से जल रहा था।

थोड़ी देर तक वह लिओ को प्रसन्न प्रेम भरी दृष्टि से देखती रही फिर एक-दम उसका वह रूप बदल गया। हठात् वह मुझसे बोली :

"मैं भूल गई थी···वह जो युवती यूस्टेन थी न? वह लिओ की कौन है? दासी या··· ···"

और उसकी आँखें उत्तर की प्रतीक्षा में आधी मिंच गईं। मैंने कंधे झटकाये और उत्तर दिया :

"मुझे पता नहीं पर मेरे विचार से उसने एमैहैगर रीति से लिओ से विवाह कर लिया था·····"

मैंने स्पष्ट देखा कि आयशा चाहे जितनी पुरानी क्यों न थी, उसकी स्त्री सुलभ ईर्षा नहीं गई थी, उसका मुख काला पड़ गया और वह फुफकारी भरती हुई बोली :

"तब उसे मरना ही होगा·····हाँ···और अभी।"

"क्यों ?" मैं चीख उठा, "भला उसने कौन सा अपराध किया है ? यदि उसका प्रेम करना अपराध है तो यह तो तुमने स्वयं भी किया है ! और फिर उसने जो दिया है वह पाया भी तो है। क्योंकि लिओ भी तो उसे चाहता है·····कम से कम उसने उसके प्रेम को स्वीकार तो किया ही है !!"

"ओह हौली ! तुम सचमुच भावुक और मूर्ख हो ! जानना चाहते हो इसका दोष क्या है ? तो सुनो। यह मेरे और मेरे प्रियतम के बीच दीवाल बनकर खड़ी है·····क्या यह थोड़ा है ? मैं जानती हूँ कि मैं अपनी शक्ति से इसे उस स्त्री से छीन सकती हूँ क्योंकि संसार में एक भी ऐसा आदमी या औरत नहीं है जो मुझसे मेरे कैलीक्रेटीस को छीन कर ले जा सके। ओह हौली ! मेरी शक्ति विकराल है जिसके सम्मुख कोई ठहर ही नहीं सकता। परन्तु मैं प्रेम चाहती हूँ·····कि वह मुझे प्रेम से अपनाये·····भय से नहीं और जब तक यह नीच स्त्री बीच में रहेगी उसे यह प्रलोभनों में अवश्य फँसायेगी·····दुनियाँ में सदा से रूप की सेवा हुई है···मेरे उस जमाने में भी यही हाल था और आज भी है। पुरुष स्त्री के प्रति सच्चा तभी तक रहता है जब तक प्रलोभन और नया जादू उस पर नहीं चल जाता। उस समय वह अधिक तनी हुई रस्सी की भाँति बीच से टूट जाता है। पुरुष स्त्री के सौंदर्य के पीछे दौड़ाया जा सकता है और स्त्री का सौंदर्य हाट में बिकता है···जानते हो हौली ? ससार में हर वस्तु का मोल है। मेरी इच्छा का मोल मँहगा है और मँहगी तौल में पासँग नहीं चढाया जाता ! फिर···?"

मैं उसके तर्क से चुप पड़ गया। परन्तु मैं फिर भी यूस्टेन को व्यर्थ ही नहीं मरने देना चाहता था। वह फिर बोली :

"उसे आज की रात निगल जायगी···कल का सबेरा यूस्टेन नाम की किसी जीवित स्त्री को नहीं देखेगा·····मैं अपने अखंड साम्राज्य की एकमात्र अधीश्वरी हूँ·····मेरे और मेरे प्रियतम के बीच की चट्टान भी वह क्यों न हो···

उसे मैं चुटकियों के बीच मसल डालूँगी···उसने अपने अच्छे दिन मेरे प्रेमी की भुजाओं में बिता लिये यह क्या थोड़ा है ? प्रेम से व्यतीत किया हुआ एक घंटा क्या सदियों के दुख से भारी नहीं बैठता ?"

"नहीं, नहीं ऐसा करना पाप होगा !" मैंने हाथ उठा कर विरोध किया। मैंने कहा :

"कम से कम हे आयशा ! अपना स्वार्थ सिद्ध करने के हेतु प्रेम करने वाली एक निर्दोष स्त्री के खून से अपने हाथ न रँगो···क्योंकि···।"

और भावावेश में मैं आगे कुछ न कह सका।

"यह पाप है ?" उसने प्रश्न करके मानों मेरा वाक्य पूरा किया। फिर वह हँसी और बोली :

"हे हौली ! मैं तो समझती थी तुम में कुछ बुद्धि है पर देखती हूँ कि तुम तो बिल्कुल पागल हो। मैं पूछती हूँ क्या अपने सामने का रोड़ा हटाना पाप है ? यह पृथ्वी सशक्त की ही निधि है यह बात क्या झुँठाई जा सकती है ? जो कमजोर हैं वही तो सशक्तों के भोजन हैं। शेर जंगल का राजा है क्योंकि वह अन्यों को मार कर खा जाता है। बड़ी मछली छोटी को खाकर जीवित रहती है···हम लोग फलादिक को खा जाते हैं·····मनुष्य जानवरों को खा जाता है···तो फिर यह सभी पाप है ? जानते हो हौली ! जानदार कोई भी प्राणी, जानदार वस्तु से ही अपनी क्षुधा बुझा सकता है···निर्जीव पत्थर से नहीं। हमारा प्रत्येक ग्रास दूसरे से छीना हुआ होता है क्योंकि यदि उसे हम न खाँय तो उसे कोई दूसरा खाता। और···" फिर वह कुछ विचारों में खोई सी ऊपर की ओर देखती हुई बोली :

"मैं तो समझती हूँ कि बुराई सदा बुराई ही पैदा नहीं करती। कठोर अत्याचारी शासक के राज्य में उसके भय के कारण बाहर से शत्रु आक्रमण नहीं करते और इस तरह वह अशांति और हत्या नहीं होती। परन्तु कभी-कभी साधु प्रकृति के राजा अपने राष्ट्र को दास बना देते हैं। मनुष्य जब वार करता है तो वह नहीं जानता उससे भविष्य में क्या होने वाला है। वह कुछ समझता है पर होता वही है जो समय के अथक चक्र में पहले से लिखा होता है····· जानते हो भाग्य का हाथ जब ललाट में रेखा खींचता है तो उसे विश्व की कोई शक्ति नहीं रोक सकती ?"

मैंने देखा कि मैं उससे विवाद में नहीं जीत सकता था क्योंकि उसके सिद्धान्त और उसकी विचाराधारा में पाप-पुण्य, भला-बुरा और आत्मा और अन्तरात्मा से उठी हुई कमजोरियों का कोई स्थान न था, परन्तु यह भी स्पष्ट था कि उसकी बातें अक्षरशः सत्य थीं।

अब मुझे यूस्टेन का बचाना कठिन मालूम होने लगा था फिर भी आखिरी प्रयत्न में मैं लग गया। मैंने कहा :

"आयशा ! तनिक शांत हृदय से सोचो। इसी स्त्री के कारण आज तुम्हें तुम्हारा कैलीक्रेटीस मिल पाया है। इसी ने अपनी जान खतरे में डाल कर उसे उन जंगली लोगों से बचाया था···और आज तुम अपने प्रियतम के मिलने की खुशी में उसी की लाश पर चढ़ कर उसका स्थान लेना चाहती हो ? भयानक है तुम्हारा न्याय आयशा ! यह निश्चय ही अत्याचार है। तुम स्वयं कहती हो कि तुमने कैलीक्रेटीस को क्रोध में मार डाला था क्योंकि उसकी यूनानी स्त्री एमिनार्टस को वह न छोड़ सका था·····और तुम्हें परिणाम में क्या मिला ? दो सहस्र वर्षों का निरंतर दुख !"

वह आश्चर्य से आँखें फाड़ कर मुझे देखने लगी। फिर शेरनी की भाँति फुदक कर मेरे पास आ गई और उसने मेरी बाँह पकड़ कर पूछा :

"अजनबी ! यह सब तुमने कैसे जान लिया ? एमिनार्टस का नाम तो मैंने तुमसे पहले कभी नहीं लिया था ?"

मुझे एक बार भीतर ही भीतर कँपकँपी आ गई। 'अरे मैं यह क्या कह गया ? अगर इसे उस रात का मेरा छिप कर देखना पता चल गया तो यह मुझे जीवित नहीं छोड़ेगी',···मैंने बिजली की फुर्ती से सोचा और बोला :

"शायद यह मैंने स्वप्न देखा हो·····इन कौयर की गुफाओं में स्वप्न भी तो मुझे विचित्र होते हैं···परन्तु अब तुम्हारी बातों से मालूम हुआ कि इसमें कुछ सचाई भी है·····हाँ तो क्या मिला तुम्हें उस पाप से ? दो हजार साल की घोर यातना। और अब फिर तुम उसे दुहराने को प्रस्तुत हो उठी हो। क्या तुमने यह भी सोचा है कि यदि तुमने यूस्टेन की हत्या कर दी तो यह—लिओ उसे क्या समझेगा·····? वह जो उसे इतना चाहता है ?"

"उसके बारे में तो बात साफ है·····", उसने शान्त भाव से कहना शुरू किया, "कि यदि मैं यूस्टेन और तुम्हें भी मार डालूँ तब भी कैलीक्रेटीस को तो मुझे प्यार करना ही पड़ेगा·····वह हर हालत में मेरा बनेगा·····उसी भाँति जिस तरह यदि मैं तुम्हें मारने पर तुल गई तो तुम्हें मरना ही पड़ेगा·····परन्तु ·····जो तुम कहते हो वह भी किसी अंश तक सच हो सकता है क्योंकि न जाने क्यों यह मुझे तनिक दबाता है·····खैर यह तो शायद मैं तुमसे कह ही चुकी हूँ कि मुझे जुल्म, जुल्म करने के ही लिये पसन्द नहीं है·····खैर उस स्त्री को तुरन्त मेरे सामने बुलाओ·····मैं इस समय दयालु हूँ·····जल्दी····· क्योंकि सम्भव है मेरा विचार फिर बदल जाय।"

मेरे मन में खुशी की एक लहर दौड़ गई·····मैंने समझा मेरी कोशिशें सफल हो गई थीं। मैं उठ कर गलियारे में गया और मैंने यूस्टेन को बुलाया। वह वहीं एक बड़े से पात्र की आड़ में पृथ्वी पर पड़ी सुबक रही थी। मेरे बुलाते ही वह भागी आई और शंकित नेत्रों से उसने काँपते हुए पूछा :

"क्या वह मेरा·····मालिक·····मेरा पति मर गया·····आह ! नहीं मत कहो कि वह अब नहीं है·····।"

मैंने देखा उसका सुंदर मुख दुख से कितना मलीन हो रहा था जिसे देख कर हृदय बैठने लगता था। मैंने मुश्किल से अपने को रोक कर उत्तर दिया :

"नहीं·····लिग्रो जिन्दा है·····वह 'जिनकी आशा मानना अनिवार्य है' उसने उसे बचा लिया है।"

वह दीर्घ श्वास लेती हुई मेरे साथ अन्दर चली आई और आयशा को देख कर एमैहैग्गर रीति के अनुसार पृथ्वी पर औंधी लेट कर रेंगने लगी। थोड़ी देर बाद वह उसके पैरों के पास जाकर रुक गई।

"उठ", आयशा ने उससे कहा।

वह सिर झुका कर खड़ी हो गई, कुछ देर सन्नाटा छाया रहा रहा। फिर धीरे से आयशा ने लिग्रो की ओर उँगली उठा कर पूछा :

"यह तेरा कौन है ?"

"यह मेरा पति है", यूस्टेन ने दबी जबान में धीरे से संक्षिप्त उत्तर दिया।

"यह तेरा पति कैसे हुआ ?"

"मैंने इसे अपने देश की रीति से पति बनाया है, हे हिया !"

"तूने यह जुर्म किया है···अजनबी पर एमैहैग्गर रीतियाँ लागू नहीं हो सकती अतएव यह विवाह नहीं माना जा सकता···यह इसी क्षण से खारिज समझा जाय···सुन···! तूने शायद जो कुछ किया भावनाओं में आकर अनजाने में किया, इसीलिये तू क्षम्य है अन्यथा तुझे मृत्यु दंड दिया जाता···जा···यहाँ से अपने घर चली जा और कभी इस आदमी से मिलने, इससे बात करने या इस पर आँख उठा कर देखने का भी साहस न करना···मैं तीसरी बार फिर कहती हूँ कि यदि अब की बार मेरी अवज्ञा हुई तो तुझे मरना ही होगा···जा !···यह तेरे लिये नहीं है।"

पर यूस्टेन खड़ी रही, गई नहीं।

"जा···चली जा···औरत ! फौरन !" आयशा ने उँगली उठा कर अपनी आज्ञा कड़े स्वर में दोहराई।

"नहीं हे हिया," यूस्टेन कहा, "मैं नहीं जाऊँगी, यह मेरा पति है···मैं इसे प्यार करती हूँ···मैं इसे छोड़कर कभी नहीं जा सकती···तुम्हें क्या अधिकार है जो तुम मुझे मेरे पति को छोड़ने की आज्ञा देती हो।"

मैंने देखा आयशा के मुख पर क्रोध थोड़ा झलक आया और उसके सारे शरीर में एक कंपन हो उठा। मैंने समझा यूस्टेन का अंत आ गया था। मैं घबरा कर लैटिन में बोला :

"हे आयशा ! यह स्त्री प्रेम में पागल हो उठी है। यह तो प्रकृति बोल रही है···इस पर दया करो !"

"और तभी यह जीवित भी है", आयशा ने वाक्य पूरा किया :

"अन्यथा यह मृत्यु की ठंडी गोद में कभी की सो गई होती।" फिर यूस्टेन को संबोधन करती हुई वह बोली :

"चली जा···एक बार फिर कहती हूँ···इससे पहले कि···"

"नहीं नहीं···मैं नहीं जाऊँगी···मुझे भी मार डालो यदि तुम में शक्ति है। मैं इसे छोड़कर नहीं जाऊँगी", और वह रोने लगी।

आयशा एकदम तड़पी···सर्प की भाँति। मैं देखने भी नहीं पाया कि उसने बल खाया और यूस्टेन के सिर पर अपना दाँया हाथ रख दिया। हाथ भी नहीं केवल तीन उँगलियाँ ही और जब उसने वह उँगलियाँ हटाई तो जो कुछ मैंने देखा उससे मेरे मुँह से भय मिश्रित आश्चर्य की चीख निकल गई। जहाँ उँगलियों का स्पर्श हुआ था वहाँ बाल बर्फ की भाँति सफेद हो गए थे···यूस्टेन के नेत्र बन्द हो गए थे। वह अपने हाथों से मुँह छिपा रही थी।

"हे भगवन्!" मैं दीर्घ श्वास लेकर बोला क्योंकि मुझ पर भय आंतक बन कर चढ़ गया था। यह स्त्री थी या कोई बला! केवल इच्छा-शक्ति से इसने उसके बाल सफेद कर दिये थे! आयशा केवल हँसी फिर बोली :

"तू समझती है मैं तुझे मार नहीं सकती? देख वह दर्पण ले और अपना मुख देख!" उसने प्रातःकाल जौब द्वारा रखे गए दर्पण की ओर इशारा किया और मुझसे कहा कि मैं उसे वह दिखाऊँ। जब मैंने उसे दर्पण दिखाया तो यूस्टेन ने घबरा कर वह सफेद दाग देखे जो चाँदी की तरह चमक रहे थे···फिर देखे··· फिर देखे···और वह चीख मार कर भूमि पर गिर पड़ी। आयशा बोली :

"चली जा बदजात औरत! यहाँ अब कभी न आना। मैं तुझे तेरे इन्हीं सफेद दागों में पहचानूँगी और यदि फिर तू मुझे कभी दिखाई दी तो याद रख तेरी हड्डियों को तेरे बालों से भी ज्यादा सफेद कर दूँगी···समझी?···चली जा···!"

यूस्टेन फफक कर रोती हुई उठी और बाहर चली गई। मैं अब भी घबराया हुआ खड़ा देख रहा था। मेरे हृदय में यूस्टेन के लिये असह्य वेदना थी पर आयशा की शक्ति और अमानुषिक मानसिक चेतना ने मेरी अस्थियाँ कँपा दी थीं। मैं किंकर्त्तव्यविमूढ़-सा खड़ा यूस्टेन को जाते देख रहा था। तभी मैंने सुना। आयशा उसी अपने स्वाभाविक स्वर से कह रही थी :

"ओह हौली! इतना मत डरो···मैंने कोई जादू नहीं किया है···मैं तो जादू जानती ही नहीं यह मैं तुम से कह चुकी हूँ···यह तो दूसरी शक्तिसे मैंने उसके बाल सफेद कर दिये थे···खैर वह तुम्हारी समझ में नहीं आयेगी···पर जो कुछ किया उसे डराने को ही किया था अन्यथा मैं उसे मार ही डालती···पर छोड़ो उसे···अब मैं अपने मालिक कैलीक्रेटीस को अपने कक्ष के पास ले जा रही हूँ और तुम और तुम्हारा वह गोरा नौकर भी वही दूसरे कमरे में आ जाओ···

अब मैं स्वयं अपने प्रियतम की सेवा करूँगी·····कि जब वह आँख खोले तब उसकी दृष्टि मुझ पर पड़े। पर हौली! एक बात का ध्यान रहे·····मैं नहीं चाहती कि तुम आगे पीछे इसे यूस्टेन कैसे गई या मैं कौन हूँ, यह सब कुछ भी बताओ! सावधान!"

वह बलखाती हुई चली गई और मैं गूँगा-बहरा-सा खड़ा रह गया। उस रात मैं लिओ के कमरे में सोया। लिओ बिना हिले-डुले गहरी निद्रा में पड़ा रहा और मैं भी खूब सोया पर मुझे भयावह स्वप्न दिखाई देते रहे। उस उँगली लगाकर केश सफेद करने वाली घटना से तो मेरी आत्मा काँप उठती थी। ओह! वह किस गजब की फुर्ती से साँप की तरह बल खाती हुई हिली थी और पलक मारते ही सब-कुछ हो गया था। वह उसे उस समय मार डालती तो शायद मुझे ऐसा भय न लगता; पर वह दृश्य मेरी आँखों से हटता नहीं था। स्वप्न में मुझे यह बहुत सताता रहा। दूसरा स्वप्न अत्यंत भयंकर था जो मैंने देखा। उस मृत्यु के अथाह गह्वर से हड्डी के ढाँचे निकलने लगे·····ओह! वह तो निकलते ही चले आते थे। हजार, दस हजार·····लाख·····दस लाख·····अरे इनका तो कहीं अंत ही नहीं था·····

वह सब कवायद करने लगे·····फौज·····हड्डी के पुतलों की अनंत फौज·····जिनकी पसलियों में होकर सूर्य की किरणें आर-पार निकल रही थीं·····कड़ाकड़ कड़ाकड़ शब्द करती हुई वह वीभत्स सेना चली आ रही थी। वह कौयर के मैदानों में आगे बढ़ने लगी···वहाँ जहाँ किसी समय उनकी राजसी राजधानी थी····· उनके लिये पुल गिर गए···उन पर होकर वे महानगर में घुस गए·····द्वार···दीर्घ द्वार अपने आप खुल गए·····वह वीथियों, राज-पथों पर चले जा रहे थे·····कड़ाकड़ !! कड़ाकड़ !!·····उनके भवन, महल, फव्वारे, मंदिर भव्य थे···ऐसे जैसे संसार में कभी नहीं देखें·····परन्तु उन्हें किसी ने नहीं अपनाया, किसी ने उनका स्वागत नहीं किया, केवल एक हड्डी का ढाँचा जबड़े खोल कर चिल्लाता रहा : 'कौयर अब नहीं रहा! राजसी कौयर का अंत हो गया···आह!'

वह चलते गए, चलते गए। उनकी हड्डियाँ बजती रहीं और शून्य में टकरा-कर गूँज बन गईं! ओह! वे चारों ओर घूम कर फिर बाहर निकले···वह पुल

पर से फिर बाहर आ गए·····उन्हें किसी ने नहीं पूछा···वह आये और पहाड़ पर चढ़ने लगे·····डूबते सूर्य की किरणें अब उनकी आँखों के गड्ढों में भयानकता से चमकने लगीं·····वह मकड़ी की भाँति हाथ-पैर खड़खड़ाते ऊपर चढ़ने लगे और·····और···अब वह वहीं उसी छेद के पास जाकर एक-एक कर नीचे गिरने लगे·····एक दो·····सौ·····हजार·····लाख·····दस लाख·····जाने कितने·····और फिर सब-कुछ शांत हो गया।

मैंने डर कर आँखें खोल दीं और आयशा को अपने और लिओ के बीच पाया। वह केवल छाया जैसी लग रही थी। मैंने भय से नेत्र फिर मूँद लिये। फिर खोले। कोई नहीं था। मैं फिर सो गया। जब जागा तो जौब मेरे पास खड़ा था। लिओ अब भी सो रहा था।

एक घंटे के पश्चात् आयशा आई और खुशी में भर कर बोली :

"ओह हौली ! अब तुम देखोगे मेरा प्यारा जाग कर कितना स्वस्थ हो उठेगा·····।"

और सचमुच उसी क्षण लिओ जाग उठा। उसने दोनों हाथ सीधे किये और अँगड़ाई लेते हुए उसने अपने ऊपर झुकी हुई स्त्री को भुजाओं में बाँध कर चूम लिया शायद यूस्टेन के धोखे में क्योंकि उसने उससे अरबी में कहा :

"कहो यूस्टेन ! तुमने अपना सिर क्यों बाँध रखा है ? क्या दाँतों में पीड़ा अधिक है ?"

और फिर वह अँग्रेजी में बोला :

"ओह ! मैं तो भूखों मरा। जौब कहाँ मर गया जाने·····और यह हम कहाँ आ गए ?"

"ओह ! लिओ", जौब ने उत्तर दिया, "तुम्हें बोलते सुन कर हमारी जान में जान आ गई है·····पर तुम बोलो मत और अभी उठो भी मत·····मैं तुम्हारा शोरबा वहीं लाता हूँ पर यह स्त्री·····अगर यह हट जाय तो·····!" वह अब भी उससे बुरी तरह डर रहा था।

'यह स्त्री', सुन कर लिओ चौंका। उसने पूछा :

"यह स्त्री ? यह कौन है ? यूस्टेन कहाँ है ?"

अब आयशा पहली बार बोली और मैंने आश्चर्य से सुना कि वह साफ़ झूठ बोल रही थी :

"वह तुम्हें छोड़ कर जाने कहाँ चली गई है·····पर तुम चिन्ता न करो·····तुम्हारी सेवा के लिये मैं उपस्थित हूँ", लिओ उसके कोमल स्वर और मुर्दे के समान कपड़े से लिपटे चेहरे को देख कर आश्चर्य से देखता रह गया पर बोला कुछ नहीं। शोरबा वह एक दम भूखे की भाँति पी गया और फिर डकार लेकर करवट बदल कर सो गया। फिर शाम को जागा। उठते ही वह मुझसे अपने बारे में और तरह-तरह के प्रश्न करने लगा; पर मैंने उसे टाल कर केवल इतना कहा :

"लिओ ! अभी तुम सो जाओ। कल सुबह बात करना।"

दूसरे दिन भोर में जब वह जागा तो आयशा भी मौजूद थी। उसने जब मुझसे पूछा तो मैंने उससे कहा कि वह स्त्री उस देश की रानी थी और हमारे ऊपर उसकी कृपा दृष्टि थी। वह अपनी इच्छा से ही अपना मुँह ढँके रखती थी। मैंने हालाँकि अँग्रेजी में ही बात की थी; पर फिर भी मुझे भय था कि कहीं मुख देख कर आयशा कुछ का कुछ अर्थ न लगा बैठे। मुझे उसके वह शब्द याद थे जब उसने मुझे सावधान किया था। वह रात आराम से निकल गई क्योंकि लिओ जब शोरबा पीकर फिर सो गया तो आयशा तुरन्त अपने कक्ष में चली गई थी। अब हम लोग आयशा के पास के ही कक्षों में आ गए थे।

दूसरे दिन लिओ जब सुबह उठा तो वह बिल्कुल स्वस्थ था। उसकी पसली का घाव अब बिल्कुल पुर गया था और अब उसका वह सुन्दर शरीर फिर दमकने लगा था। आयशा की औषधि सचमुच कमाल की थी जिसने उस भयानक बीमारी के बाद उसे इतनी जल्दी स्वस्थ और बलवान बना दिया था।

उठते ही उसने मुझसे प्रश्नों की झड़ी लगा दी और सभी कुछ मानो एक ही वाक्य में जान लेना चाहा, उसके प्रश्न अधिकतर आयशा के बारे में थे। क्योंकि वह उस सिर ढकी हुई स्त्री को देखने को लालायित हो उठा था। मुझे भय था कि कहीं कोई बात मेरे मुँह से न निकल जाय, खास कर जब एक बार बीच में मुझे बुलाकर आयशा सावधान कर चुकी थी। मैंने बड़ी कठिनाई से उसे टाला और कहा कि 'उसके' बारे में सब बातें वह स्वयं ही मौका देख कर

बतलायेगी। बाकी, स्थान इत्यादि तथा उसकी बीमारी, आयशा की औषधि, सभी के बारे में मैंने उसे बता दिया। परन्तु जब वह यूस्टेन के बारे में छान-बीन करने लगा तो मेरे सामने फिर दिक्कत आ गई। मैंने कहा :

"वह लड़की ! मुझे पता नहीं कब और कहाँ चली गई··· ·शायद यह भी उससे ही जाना जा सकेगा।"

वह चुप हो गया परन्तु उसके चेहरे से पता लगता था कि वह यूस्टेन की कितनी याद कर रहा था। मुझे तभी पता लगा कि वह उस युवती को कितना चाहने लगा था। लिओ ने फिर पूछा :

"अच्छा चाचा ! यह तो बताओ यह जो रानी है, वह है कैसी ?"

"जैसी उसकी मधुर वाणी है, जैसा उसका छरहरा गोरा शरीर है वैसी ही वह सुन्दरी भी है", मैंने संक्षिप्त उत्तर दिया। उसकी जिज्ञासा प्रत्यक्ष थी कि वह बहुत बढ़ गई थी।

थोड़ी देर बाद आयशा आई और उसे देखकर चली गई। मुझे आश्चर्य हो रहा था कि अब उसका व्यवहार लिओ के प्रति अत्यंत आदरपूर्ण और सेवा-भाव लिये हुए था। जब कि मैं समझे बैठा था कि वह लिओ को प्रथम बार होश आते ही अपना सुन्दर मुख और शरीर दिखायेगी।

एक गूँगी दासी तभी हमारे पास आई और उसने कहा कि 'वह जिसकी आज्ञा मानना अनिवार्य है' हमें बुला रही थी, वैसे अब हमें आज्ञा थी कि जब चाहें हम उसके कक्ष में जा सकते थे। परन्तु लिओ ने उससे कहा :

"पहले मैं कुछ खाना चाहता हूँ।"

वह भागी हुई लौट गई और थोड़ी ही देर बाद हमारे लिये नाश्ता आ गया। मैंने और लिओ ने छक कर वह स्वादिष्ट भोजन किया और तब हम आयशा के पास चल दिये। हमेशा की तरह वह अपनी उसी शैया पर बैठी थी, जब हम पहुँचे तो वह उठी और पर्दों तक आई। वहाँ उसने सर्प की भाँति लचक कर, बाँह फैला कर हमारा स्वागत किया। हमारा तो नहीं क्योंकि मैं तो अब बिल्कुल छोड़ दिया गया था···लिओ का ही स्वागत किया गया था। लिओ जो इस समय अपने फ्लानैल के 'सूट' में जँच रहा था और इतना लम्बा, तगड़ा और सुन्दर लग रहा था। उसने सिर थोड़ा झुकाकर मानो उस अभिवादन को राजा की भाँति स्वीकार

किया। वह इतना सुन्दर लग रहा कि हठात् मुझे उसकी पूर्वज सुन्दरी एमिनार्टस की याद हो आई जिसका वह वंशज था; परन्तु जिससे उसकी सूरत थोड़ी-सी भी नहीं मिलती थी। एमिनार्टस के साथ ही साथ मेरी निगाहें आयशा की ओर उठ गईं और मैं इस विचित्र दो हजार तक चलने वाले प्रेम को देख कर आश्चर्यचकित रह गया। आयशा स्वागत करने के बाद बोली :

"मेरे मालिक ! मेरे अतिथि ! तुम्हें एक बार फिर अपने पैरों पर खड़े देख कर तुम्हारी इस सेविका को अत्यंत प्रसन्नता है। विश्वास करो कि यदि समय से तुम्हें अपनी संजीवनी औषधि न खिलाती तो तुम कभी न बच पाते; परन्तु अब भय करने की कोई बात नहीं है, क्योंकि अब तुम ठीक हो और अब मैं स्वयं तुम्हारी देख-रेख करूँगी·····अब कोई डर नहीं होगा।" मैं समझ गया कि वह कहना चाह रही थी कि अब भविष्य में कोई रोग नहीं लग सकेगा।

लिओ ने सिर झुकाया और तब बेहतरीन अरबी में उसने उसे धन्यवाद दिया, वह बोला :

"एक अजनबी यात्री के ऊपर जो तुमने इतनी कृपा की यह निश्चय ही बहुत प्रशंसनीय कार्य है और मैं मुक्त-कंठ से तुम्हारा आभारी हूँ।"

"नहीं मेरे मालिक ऐसा न कहो। संसार में कोई भी सुन्दरता को नष्ट होते नहीं देख सकता; क्योंकि यह मिलती ही कहाँ है। ओह ! मैं तो तुम्हारे आने से ही इतनी संतुष्ट हुई हूँ कि कैसे कहूँ। धन्यवाद देकर मुझे शर्मिन्दा न करो।"

लिओ ने चकित होकर उसे देखा फिर मुझसे अँग्रेजी में कहा :

"चाचा ! हम तो फूलों के बीच आ गए हैं। ऐसा लगता है···यह तो बड़ी ही सभ्य स्त्री है·····और देखो तो ओह ! इसकी बाँहें कितनी सुन्दर हैं !····· और हाँ चाचा ! तुमने मेरी अनुपस्थिति में तो इसे खूब ही लुभाया होगा ?"

वह था तो मेरा बेटा पर मुझसे भी चूकता नहीं था, यह शायद मैं पहले ही कह चुका हूँ।

मैंने उसे चुप रहने को कहा; क्योंकि मैंने देखा आयशा आँख की कोर से मेरी ओर देख रही थी, जिससे मैंने समझा कि वह मेरे ऊपर कुछ शक कर रही थी। वह बोली :

"मुझे विश्वास है कि मेरे नौकरों ने तुम्हारी सेवा में कुछ भी नहीं उठा रखा होगा फिर भी यदि कोई कष्ट हो तो मुझसे कहो; क्योंकि जो भी हो सकेगा वह हम करने के लिये तैयार हैं। वैसे हमारी जगह जरा पुरानी और आरामदेह कम अवश्य है। कहो और कोई तकलीफ तो नहीं है या और कुछ पूछना तो नहीं है ?

"हाँ", लिओ ने पूछा, "हे रानी ! मुझे मेरी यूस्टेन का पता नहीं लग सका है·····वह कहाँ है ?"

"ओह ! वह लड़की ! हाँ मैंने वह देखी तो थी·····पर वह शायद चली गई कहीं·····पता नहीं कहाँ·····यह जंगली लोग भला बीमारी में कब सेवा-सुश्रूषा कर सकती हैं ? यह स्त्रियाँ क्षणिक लगाव ही रखती हैं।"

लिओ को सुनकर आश्चर्य और दुख दोनों हुआ।

"यह विचित्र बात है", वह बोला, "परन्तु उसका और मेरा तो·····" और वह एकाएक चुप हो गया।

आयशा केवल हँस दी और उसने फिर वह विषय ही बदल दिया। उसकी हँसी की मधुरता लिओ पर छा रही थी·····मैं देख रहा था और एक विचित्र ईर्ष्या से मेरा मन तिक्त हो उठा था !

× × × ×

१८

थोड़ी बातों के उपरांत आयशा ने हमें बिलाली के साथ कौयर की वह भयावनी और विचित्र गुफाएँ देखने भेजा। इस समय जौब भी हमारे साथ था। अब की बार हम दूसरी ही गुफाएँ देखने गए। गुफाओं की तो वहाँ कमी थी ही नहीं और सभी जगह लाशें भरी पड़ी थीं; पर अब हमने उस हड्डियों के ढेर के अतिरिक्त एक स्थान ऐसा देखा जहाँ ममीनुमा लाशें एक के ऊपर एक चिनी रखी थीं, ऐसा लगता था जैसे ढेर सारे आदमी इकट्ठे काट कर पटक दिये गए हों।

जौब जो पहले ही यहाँ आकर घबराया हुआ था इन दृश्यों को देख कर ऐसा डरा कि उसकी चीख निकल गई। उसे इस तरह चिल्लाते हुए देख बिलाली ने जो कुछ कहा उसे मेरे द्वारा वैसे अनुवाद करते हुए तो उसका भय और बढ़ गया और वह दुख में डूबा हुआ उदास हो गया। बिलाली ने कहा था : "ऐसा क्यों डरते हो ? शीघ्र ही तुम भी इसी भाँति यहाँ रख दिये जाओगे।"

गुफाओं को देख कर हम जब लौटे उस समय तीसरा पहर हो गया था। आते ही खाना इत्यादि खाकर हम सो गए। शाम को छै बजे हम आयशा के पास फिर पहुँचे और उसने उसी भाँति लिओ का स्वागत किया। उसने लिओ को वह पत्थर का 'बड़ा' दिखाया जिसके जल में दूर-दूर तक के दृश्य दिखाई देते थे, जिन्हें देख कर वह आश्चर्यमिश्रित भय से उसे देखने लगा। जौब को जब उसमें परछाईं दिखाई गईं तो वह भय से चीख उठा। लिओ ने उससे पूछा :

"हे रानी ! क्या इससे भविष्य के बारे में भी जाना जा सकता है ?"

वह केवल सिर हिला कर चुप हो गई और उसने मेरी ओर ऐसे देखा जैसे कहना चाह रही हो, 'अगर यही संभव होता तो मेरे प्रियतम तुम इतने पास थे और क्या मैं तुम्हारी सेवा में न आ जाती ?'

उसने यह भी बताया कि उसमें कोई जादू नहीं था। हम भी अपनी अतीत की स्मृति अथवा अपनी देखी हुई वस्तु पुनः उसमें देख सकते थे अगर हमें वह सब अब भी याद हों; मैंने और लिओ ने लंदन के सेंट पौल्स गिर्जे और पार्लियामेंट की इमारत उसमें बुलाई और उन्हें आयशा को भी दिखाया; पर क्योंकि हमें सिवा उनके बड़े आकार के उनमें की गई पच्चीकारी और महीन काम याद नहीं थे, वह इमारतें खूबसूरत दिखाई नहीं दीं। जौब से कह कर उसके सत्रह भाई-बहिनों की आकृतियाँ बुलवाईं; परन्तु क्योंकि वह इतना घबराया हुआ था कि उनके चेहरे अच्छी तरह याद नहीं कर सका था, अतएव जो परछाईं आईं वह लम्बी-लम्बी छितरी हुई और भयानक दिखाई दीं। नतीजा यह हुआ कि जौब का आतंक बढ़ गया और वह भयानकता से चीख उठा। वह बोला :

"यह जादू है·····भयानक जादू है···कहाँ लन्दन, कहाँ यह कब्रस्तान ! हे भगवन् इन जादूगरों से और खासकर इस मुर्दे के शरीर वाली स्त्री से बचा !!"

उसी समय बिलाली ने आने की अनुमति माँगी। एक गूँगी ने आकर इशारों से सूचना दी। आयशा ने सिर हिला दिया। बिलाली उसी भाँति औंधा रेंगता हुआ आया और बोला :

"हे 'वह जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य है' तुम्हारी आज्ञा से सब-कुछ तैयार है·····अब चलने के लिये समय हो आया है·····"

"अच्छा तुम जाओ।" आयशा ने स्वीकृति दी। जब वह उलटा चला गया तो वह बोली :

"मेरे मालिक और अतिथि! आज मैंने तुम्हारे मनोरंजन के लिये एक नाच कराया है, है तो वैसे यह जंगलियों का ही पर फिर भी मनोरंजन के लिये अच्छा है।"

मुझे सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि मैं नहीं समझता था कि यह शुष्क प्रकृति वाले एमैहैग्गर लोग भी गाना, बजाना और नाचना जानते थे।

हम लोगों को लेकर वह गुफाओं के बाहर कौयर के बड़े मैदान की ओर पहाड़ के पीछे की ओर खुले में चली। यहाँ एक बड़ी पत्थर की चट्टान थी जो ऊपर से बिल्कुल चौरस थी। यहीं वह नाच होने वाला था। हमारे पीछे एक विशाल गुफा का मुहाना था जिसके करीब पन्द्रह कदम आगे तीन कुर्सियाँ पड़ी थीं, जिन पर जाकर आयशा, लिओ और मैं बैठ गए। जौब हमारे पीछे खड़ा हो गया। उस समय वहाँ अँधेरा फैल रहा था और हमें आश्चर्य था कि भला इस अँधेरे में हम नाच किस प्रकार देख सकेंगे। लिओ ने पूछा तो वह थोड़ी हँस कर बोली : "अभी तुम सब समझ जाओगे।"

वह कह भी न चुकी थी कि सामने से अगणित काली छायाएँ हाथ में बहुत मोटी और बड़ी मशालें लेकर भागते आते हुए दिखाई दिये। ये लोग शायद पहाड़ की ओट में हमारे आने की प्रतीक्षा में ही बैठे थे। मैं समझ गया कि नाच का कार्यक्रम शुरू हो गया। मशाले ऊँची लपटें फेंकती हुई धू-धू कर जल रही थीं। कोई-कोई तो दस-दस फीट ऊँची लपटें फेंक रही थीं।·····अब वह पास आ गए और साफ दिखाई देने लगे थे। लिओ चिल्ला उठा :

"अरे यह तो मनुष्यों के शरीर जल रहे हैं·····शायद जीवंत·····नहा-नहीं यह वह ममी हैं·····!!" मैंने भय से तन कर देखा, वह ममी ही थीं··· लाशें धू-धू कर ऐसे जल रही थीं जैसे लाख की बनी हों।

मशालची और पास आ गए और हम से करीब बीस कदम के अंतर पर उन्होंने वह लाशें एक पर एक इकट्ठी चौकोर घेरा बना कर रख दीं : मैंने देखा और मेरे रोंगटे खड़े हो गये। वह लाशें चटचटा कर इतनी भभक कर जल रही थीं कि उनके नाक, मुँह, कान से एक-एक फुट की लपटें बाहर गर्जन करती हुई निकल रही थीं। हठात् एक आदमी कूद कर आया और उसने एक लाश का जलता हुआ हाथ झटके के साथ तोड़ लिया और उसे लेकर हमारे सामने दूसरी दिशा में भागा, जहाँ तीन ओर पर्वत थे। उसने उस जलते हाथ को घुमा कर पर्वत पर एक स्थान पर मारा·····आग वहाँ रखी एक स्त्री के मुर्दे में लपक कर लग गई। मैंने देखा उसके लंबे केश जलने लगे थे। अब वह उस हाथ को लेकर पास ही रखी दूसरी लाश में, फिर तीसरी में, चौथी···और इसी तरह तीनों ओर रखी लाशों को जलाने लगा। थोड़ी ही देर में हमारे सामने पहाड़ पर तीन ओर लाशें जलने लगीं·····वह फिर चला और एक और अर्ध-चंद्राकार में सजी लाशों को जला आया···और फिर, और फिर···और पूरा पर्वत लाशों से जल उठा!···भयानक दृश्य था वह! सारा स्थान उनके उज्ज्वल प्रकाश से भर उठा।

'नीरो' ने अपना उद्यान इसाईयों को जीवित बाँध कर जला कर प्रकाशित किया था। हमारा मनोरंजन ममियाँ जला कर किया जा रहा था। भयानक! वीभत्स! केवल गनीमत यही थी कि हमारे लिये मुर्दे ही थे, जीवित मनुष्य नहीं थे।

मेरे मन में एक विचित्र प्रकार की घृणा भर गई। यह सीज़र और सिकंदर की लाशें और न जाने किन कठोर शासकों, धर्माधिकारियों की लाशें थीं जो अब जल कर भस्म हो रही थीं। मनुष्य जला कर खाक किये जा रहे थे। कितना अकिंचन था मनुष्य का जीवन! कितना अस्थायी! कितना क्षणिक! जीवित मिट्टी यह जानकार भी कि वह मिट्टी है अपने ही रूप को जलता देख कर प्रसन्न हो रही थी। और वह एमैहैग्गर लोग कौयर के प्राचीन सैनिकों, राजाओं और महापुरुषों की लाशों को जो अपने समय में संसार को दिग्विजय करने वाले थे,

अब ईंधन की भाँति निरंतर रूप से जल रहे थे। एक लाश आधे घंटे जलती थी और जब वह टखने तक जल जाती तो उसके स्थान पर एक नयी रख दी जाती थी·····लाश ! केवल लाश ! जिसमें यह भेद नहीं देखा जाता था कि वह किसकी थी। वह उस समय बस ईंधन थी और कौयर की उन गुफाओं में जैसे उनका कोई अंत न था·····हजारों जल गई थीं पर अब भी जैसे उनकी अगाध ढेरी में तिल मात्र की कमी नहीं दिखाई देती थी। उन लाशों की लंबी-लंबी भयानक छायाएँ दूर-दूर तक फैल रही थीं जो लगती थीं जैसे उन मृतकों की ओर प्रतिशोध के हेतु खड़ी की गई धुँधली आत्मा के वीभत्स रूप हों। मैं भौचक्का होकर देख रहा था। वह सचमुच ही अपूर्व दृश्य था जो शायद मैं संसार में कहीं और नहीं देख सकता था।

"हौली ! मैंने तुमसे कहा न था कि मैं तुम्हें वह दृश्य दिखाऊँगी जो आज तक कभी किसी ने न देखा, न देखेगा ?" उसी समय कोमल कंठ से आयशा ने मेरा ध्यान भंग किया। मैंने देखा लिओ भयमिश्रित आश्चर्य से देख रहा था··· जौब ने तो आँखें मींच ली थीं पर वह·····वह जिसकी आज्ञा मानना अनिवार्य थी, अविचलित थी। उसे देखकर मालूम होता था कि वह उस प्रकाश का आनंद ले रही थी। वह फिर कहने लगी :

"और हौली ! क्या यह आश्चर्यजनक दृश्य नहीं है ? और देखो यह बताता है कि जीवन कितना महत्वशील है। मरने के बाद कौन जानता है कि उसके शरीर का क्या होगा ? क्या हजारों साल पहले इन सामंतों, सैनिकों, पुजारियों और दार्शनिकों को यह मालूम था कि एक दिन उनके शरीर जंगली लोग अपने नाच में जला देंगे ? ओह हौली ! जो कुछ है जीवन है·····इसी में जो चाहे कर लो·····भोग लो·····बाद में कुछ नहीं है !!"

अब सामने नगाड़े बजने लगे थे, शायद दूसरा खेल प्रारम्भ होने को था।

कोई डेढ़-सौ पुरुष और इतनी ही स्त्रियाँ कूदती हुई आईं और आमने-सामने खड़े होकर वे लोग पैर चलाने लगे। यह उनका नृत्य था जो बिलकुल भावहीन और घृणास्पद मालूम होता था। पुरुषों ने शेरों की और स्त्रियों ने चीतों की खालें ओढ़ रखी थीं और उनके सिरों पर उन्हीं जन्तुओं के सिर चढ़े हुए थे। ऐसा लगता था जैसे शेर और चीते लपक-लपक कर उछल-कूद मचा

रहे हों। वैसे पैर उठाते समय उनमें एक समचालन और गति तो थी, परन्तु हमें वह बिलकुल अच्छा नहीं लगा।

थोड़ी देर बाद वह एक प्रेत-नृत्य करने लगे। इसमें उन्होंने दिखाया कि एक मनुष्य को वह जीवित गाड़ना चाहते थे पर वह काबू में नहीं आता था, पूरा नाच निःशब्द था·····केवल भयावने हाथ-पैर चल रहे थे।

हठात् एक बहुत ही तगड़ी स्त्री जो आधी आयु को पहुँच गई थी चिल्लाने लगी :

"मुझे एक काली बकरी चाहिये·····मैं एक काली बकरी लेकर रहूँगी··· मुझे एक काली बकरी लाओ !!"

और उसका स्वर धीरे-धीरे बढ़ने लगा। वह पथरीली भूमि पर गिर कर छटपटाने लगी और चिल्लाती जाती थी। बहुत ही बुरा दृश्य था वह ! तुरंत नर्तकों ने उसे तीन ओर से घेर लिया केवल हमारी ओर से नहीं घेरा जिससे हम देख सकें। फिर उनमें से एक ने कहा :

"इस पर शैतान चढ़ गया है·····भागो और इसके लिये एक काली बकरी लाओ।"

स्त्री चिल्लाये जा रही थी, "मुझे एक काली"···। वह लोग उससे बोले :

"चुप रह····· देख तेरे लिये आदमी बकरी लाने गया है·····देख वह लाता ही होगा।"

पर वह न रुकी, तीखी आवाज में वह चट्टान पर फिसलती-तड़पती चिल्लाई :

"मुझे एक काली बकरी·····"

"अच्छा ! ओ शैतान की बच्ची ! ठहर जा ! देख अभी आती है तेरी काली बकरी·····!"

और इसी भाँति वह स्त्री और वह आदमी तब तक चिल्लाते रहे जब तक कि पास ही के बाड़े में से एक व्यक्ति बकरी न ले आया।

बकरी को वह आदमी सींग पकड़ कर घसीट कर लाया था। उसे देखते ही वह स्त्री चिंघाड़ी :

"क्या यह काली बकरी है ?"

"हाँ, हाँ, काली है", वह बोला। फिर स्वगत उसने कहा :

"कहीं इसे इसके पेट पर सफेद दाग न दीख जाय, लाओ मैं इन्हें हाथ से छिपा लूँ", उसने उसे हाथ से छिपा कर एक और व्यक्ति से कहा : "काटो-काटो इसका गला·····कहाँ है रकाबी ?"

"वाह ! काली बकरी·····काली बकरी·····मुझे इसका रक्त दो····· देखते नहीं मुझे यह अवश्य ही चाहिये", वह स्त्री चिल्लाई।

फिर एक ओर तो वह चिल्लाती रही और दूसरी ओर रकाबी ढूँढ़ी जाने लगी जो शायद उस जी उकता देने वाले नाटक में और बहुत देर बाद मिलती थी, हम तिक्त मन लिये बैठे रहे। आखिर कोई दस मिनट बाद वह रकाबी मिल गई और तब वह बकरी छुरे से काट दी गई। उस औरत ने तब तक चिल्ला कर हमारा जीना क्या हमारे धैर्य की सीमा को ही खा डाला था। बकरी कटते समय 'आ·····'कह कर जोर से मिमियाई और उसका खून रकाबी में भर कर उस स्त्री को पिला दिया गया जो उसे झपट कर एकदम पी गई और पीते ही बिल्कुल ठीक हो गई। हाथ-पैर सीधे करके वह कंबख्त मुस्कुराई और फिर अन्य नर्तकों में जा मिली। मरी बकरी का शरीर लहूलुहान पड़ा रहा।

हमने समझा अब खेल खत्म हो गया था और हम उठने को ही हुए थे कि सामने से एक विचित्र जंतु उछलता हुआ आया। मैंने देखा वह बनमानुष-सा लग रहा था। उसी समय दूसरी ओर से एक शेर निकला·····अब मालूम हुआ कि यह आदमी थे जो उन जानवरों की खालें ओढ़े हुए थे। बनमानुष और शेर एक दूसरे के सामने खड़े हो गए। अब एक बकरा निकला, फिर सींग लटकाये एक बैल, फिर हिरन, फिर गीदड़ फिर अनेकानेक प्रकार के रंग-बिरंगे बकरे, इनके बाद और बहुत से जानवर आये जिन्हें मैंने कभी देखा ही नहीं था। जब सब आ गए तो वह उछलने-कूदने लगे और उसी-उसी जानवर की भाँति दहाड़ने, गर्जने और मिमियाने लगे। एक आदमी तो इतनी लंबी, मगर की खाल ओढ़े था कि वह उसके पीछे-पीछे घिसटती चली जा रही थी, इनमें अजगर भी थे जो सर्पों की भाँति भयंकर फुफकार मार रहे थे। सारा स्थान धीरे-धीरे जानवरों की धमा-चौकड़ी और बोलियों से गूँजने-लगा। हम आँखें फाड़कर थोड़ी देर देखते रहे। तत्पश्चात् हम ऊब गए और

वह नाच का प्रदर्शन ऐसा था कि खतम ही नहीं होता था। आखिरकार मैंने आयशा से पूछा :

"क्या मैं और लिओ इन जलती लाशों को घूम कर देख सकते हैं ?"

उसने सिर हिलाकर स्वीकृति दे दी, हम लोग घूमते हुए लाशों को देखने लगे। हम एक ओर कुछ दूर निकल गए तो हमने देखा कि एक चीता सबसे जाने कब अलग होकर हमारी ओर अँधेरे ही अँधेरे आ रहा था। हम कुछ और बढ़े। वह चीता एक चट्टान की घनी छाया में पहुँचकर फुसफुसाकर बोला :

"आओ·····यहाँ आओ·····"

मैं उसे सुनकर सन्न हो गया। वह यूस्टेन थी। लिओ ने मुझसे पूछना कोई जरूरी नहीं समझा और उसके पास जाने लगा; क्योंकि यह साफ था कि वह भी उसके स्वर को पहचान गया था। मैं भी भय से काँपता हुआ उसके पीछे चला। कोई पचास कदम पर हम लोग पहाड़ की आड़ हो गए थे और यहाँ काफी अँधेरा भी था। यहाँ यूस्टेन ने वह चीते की खाल सिर से हटा दी और फुसफुसाकर लिओ से बोली :

"ओह ! मेरे प्यारे ! आखिर मैंने तुम्हें ढूँढ़ ही लिया ! 'वह जिसकी आज्ञा मानना अनिवार्य है' मेरे विरुद्ध हो गई है और जरा सी चूक हो जाने पर वह मुझे मरवा डालेगी···मेरी जान खतरे में है···पर मेरे मालिक ! मैं तुम्हें कैसे छोड़ूँ ? मैं जो तुम्हें इतना चाहती हूँ !! और मेरे देश की रीति के अनुसार तुम मेरे हो और मैंने तुम्हें मरने से बचाया भी था। फिर भी क्या तुम मुझे ठुकरा दोगे ? मुझे जाने को कहोगे ?' और वह फफक कर रोने लगी। उसका दम मानो घुट रहा था।

"नहीं प्यारी यूस्टेन ! भला मैं तुम्हें क्यों छोड़ने लगा ? मैं तो तुम्हें ढूँढ़ रहा था·····चलो हम रानी के पास चलें और उनसे सारी वार्ता कह सुनायें।" लिओ ने मानो सच्चे दिल से उत्तर दिया।

"नहीं नहीं", यूस्टेन ने आँखें फाड़ कर कहा : "वह हमें मरवा डालेगी··· तुम उसकी शक्ति नहीं जानते·····बनमानुष जानते हैं; क्योंकि इन्होंने उसे देखा है···इन्होंने निश्चय ही तुमसे कह दिया होगा कि किस तरह मुझे 'हिया' ने जबर्दस्ती भगाया था। आह ! अब मुझे पाने का केवल एक मार्ग है·····

चलो भाग चलें·····इन दलदलों में से मैं तुम्हें निकाल ले चलूँगी·····मैं मार्ग जानती हूँ·····शायद हम बचकर निकल जायँ·····"

मैंने घबराकर कहा : "लिओ···भगवान के लिये होश में आओ·····"

"नहीं", वह बीच ही में बोल पड़ी। "भागो, क्योंकि यहाँ मृत्यु हर क्षण हम पर मँडरा रही है। इनकी बातें सुन कर समय नष्ट न करो···कौन जाने वह शायद अपनी शक्ति से हमारी बातें भी सुन रही हो·····चलो प्यारे !"

उसी समय चाँद ऊपर निकल आया और उसके प्रकाश में मैंने देखा··· यूस्टेन के सिर पर माथे के ऊपर तीन सफेद निशान चाँदी की तरह चमकने लगे। मेरा अंतस उन्हें देखकर काँप गया और मैं लिओ जो कि सचमुच ही उस स्त्री के कहे में आकर भागने को तैयार हो गया था, उससे कहने ही वाला था कि वह ऐसी मूर्खता न करे कि·····, हमारे पीछे एक स्त्री के मृदुल हास्य का स्वर फैल गया। मैंने मुड़कर देखा, भय से मेरा खून जम गया— 'वह जिसकी आज्ञा माननी अनिवार्य थी' स्वयं खड़ी थी ! मैंने समझ लिया अब रक्तपात अवश्यंभावी था और वह भी शायद मुझसे ही प्रारंभ हो; क्योंकि वह निश्चय ही मेरे ऊपर शक करेगी·····

यूस्टेन से आयशा की ओर देखा नहीं गया। वह हाथों से आँख ढँक कर काँपने लगी। लिओ जो आयशा की शक्ति से अपरिचित था उसी भाँति मूर्खतापूर्वक झेंपा हुआ खड़ा था जैसे किसी स्त्री के साथ कोई अपरिचित आदमी अकेले पकड़े जाने पर हो जाता है।

सन्नाटा खिंचा रहा। कोई नहीं बोला। आयशा ठंडे नेत्रों से घूर कर देख रही थी। उसके पीछे बिलाली और दो गूँगे सैनिक खड़े थे, जिनके भालों के फलक अब चाँदनी में चमचमा रहे थे। मेरा भय से बुरा हाल था। वह चंद घड़ियाँ मैंने जाने कैसे काटीं कैसे लिखूँ ! ऐसा लगा जैसे घंटों हम उसी भयानक स्थिति में खड़े रहे थे।

आखिर आयशा अत्यंत नम्र स्वर में लिओ से बोली :

"मेरे मालिक ! मेरे अतिथि ! इतना न शर्माओ। शेर और चीता। वाह ! कितने अच्छे लग रहे थे तुम लोग !!"

"क्या बकती है ?" लिओ ने अँग्रेजी में कहा जिसे सुनकर मैं और घबरा गया। कहीं वह मुख-मुद्रा से समझ न गई हो ?

आयशा मुड़ी और उसी नम्र स्वर में यूस्टेन से बोली :

"और तू यूस्टेन ! मैं तो तुझे छोड़कर आगे निकल ही गई थी पर तेरे सफेद बालों ने तुझे पकड़ा दिया। अच्छा-अच्छा। शाबास यूस्टेन ! जब नाच समाप्त हो गया तो तूने प्रेम करने का ठीक मौका ढूँढ़ा। मैं समझ रही थी कि मेरी नौकरानी यूस्टेन मेरी अवज्ञा कभी नहीं कर सकेगी···और समझी थी कि तू यहाँ से कहीं दूर चली गई होगी···! शाबाश !!"

"मुझसे खेलो मत", दुखी यूस्टेन ने घिघिया कर कहा :

"मुझे मार डालो, जिससे यह खेल हमेशा के लिये समाप्त हो जाय !!"

"नहीं ! नहीं ! ऐसा भला क्यों ?" आयशा उसी स्वर में बोली", प्रेमा-लिङ्गन में उष्ण होठों का स्पर्श प्राप्त करने के बाद एकदम कब्र के ठंडे मुँह में जाना तुम्हें कैसे भाया ?"

उसने उन गूँगों की ओर इंगित किया। उन्होंने यंत्र-चालित की भाँति लपक कर यूस्टेन की दोनों बाहें पकड़ लीं। परन्तु उसी समय लिओ ने गजब कर दिया और मैंने समझा अब मृत्यु निश्चित थी। उसने गाली दी और वह उस आगे वाले गूँगे पर टूट पड़ा। उसने उसे एक ही धक्के में दे मारा और उस पर चढ़ बैठा और घूसा तान कर मारने को उद्यत हो गया। मैंने उसे रोकते हुए घबराये स्वर में कहा : "लिओ···!"

पर आयशा ने बीच ही में हँस कर कहा :

"मेरे अतिथि ! तुम सचमुच बलवान हो और तुमने इसे बड़ी अच्छी पटक दी। तुम्हारी भुजाओं में इतनी बीमारी के पश्चात् भी अपार बल है। परन्तु अब उस आदमी को छोड़ दो···न मारो···और मेरी आज्ञा का पालन करने दो, देखो रात ठंडी हो रही है, मैं चाहती हूँ तुम्हारी यूस्टेन मेरे आतिथ्य में अंदर चले। जिसे तुम चाहते हो निश्चय ही उसका मैं भी भला क्या बिगाड़ सकती हूँ···और यह गूँगा तो भला बिगाड़ ही क्या सकेगा ?"

मैं भीतर ही भीतर काँप उठा था; क्योंकि मैं देख रहा था, आयशा के अंदर आग सुलग कर अब दहकती भट्टी हो गई है, जो जब विस्फोट करेगी तो····· और मैं अधिक नहीं सोच सका।

अब हम लोग आयशा के कक्ष में आ गए थे। वह जाकर अपनी उसी शैया पर तकियों के सहारे बैठ गई। अब उसने अपना काला लबादा उतार दिया था। उस सफेद कफन जैसे महीन कपड़े में लिपटी हुई वह उस समय मुझे विकराल लग रही थी। उसने उँगली के इशारे से बिलाली और जौब को बाहर जाने को कहा और गूँगों से दीपशिखाएँ ऊँची कराईं, तत्पश्चात् उन्हें भी संकेत से बाहर भेज दिया। अब उसके पास केवल एक गूँगी सुन्दरी युवती रह गई थी जो शायद उसकी बहुत ही कृपापात्र थी। सामने मैं और लिओ खड़े थे और यूस्टेन लिओ के बाईं ओर कुछ दूर पर खड़ी थी।

थोड़ी देर बाद वह मुझसे बोली :

"बोलो हौली ! यह सब क्या है ? मैंने तुम्हारे ही सामने इस पापिन को यहाँ से चले जाने की आज्ञा दी थी और तुम्हारे ही कहने से इसे छोड़ा था। क्या तुम ही इसे अब यहाँ लाये थे ? क्या तुमने भी मेरी बात नहीं मानी ? बोलो हौली ! सच-सच सब कुछ कह डाला; क्योंकि मैं झूठ सुनने की आदी नहीं हूँ।"

"यह जो कुछ हुआ सब अकस्मात ही हुआ है, हे रानी ! मैं कुछ नहीं जानता", मैंने स्पष्ट स्वर में कहा।

"मुझे तुम्हारा विश्वास है हौली", उसने ठंडे स्वर से उत्तर दिया, "केवल तुम्हारा·····और अब इसका अर्थ है कि सारा दोष बस इसी नीच स्त्री का है।"

"इसमें भला दोष क्यों होने लगा, हे रानी ?" लिओ मेरे इशारा करने के बावजूद बोल उठा :

"इसमें कोई दोष नहीं है। इस नरक जैसे स्थान की प्रथा के अनुसार इसने मुझसे विवाह कर लिया है और यदि किसी को आपत्ति होनी थी तो सर्व प्रथम मुझे ही होनी थी, परन्तु मैं तो इससे सहमत हूँ·····अगर प्रेम करना, विवाह करना पाप है तो मैं भी दोषी हूँ·····यदि इसे दंड देती हो तो मुझे भी दो·····", फिर वह एकदम चिल्लाकर बोला :

"·····और अगर तुमने फिर इन गूँगे-बहरों को इसे, मेरी यूस्टेन, को पकड़ने को कहा तो मैं अब की बार उसके टुकड़े कर डालूँगा·····!!"

मैंने देखा आतंकग्रस्त यूस्टेन के मुख पर यह सुन कर एक सन्तोष की लहर फैल गई, जिसे देख कर निश्चय ही आयशा भीतर तक जल उठी होगी, प्रत्यक्ष में वह चुप रही। फिर लिओ की बातों का कोई उत्तर न देकर वह धीमे परन्तु वज्र कठोर स्वर से यूस्टेन से बोली :

"ओ तिनके के समान व्यर्थ, चिड़िया के हल्के पर के समान ओछी और हल्की स्त्री ! क्या तुझे मालूम नहीं था कि मेरी आँधी रूपी इच्छा तुझे ऐसे उड़ा देगी जैसे कभी तेरा अस्तित्व ही नहीं था ? बोल तेरा इतना दुस्साहस कैसे हुआ ?

और तब मैंने जो कुछ देखा उससे मेरी आँखें फटी की फटी रह गईं। मैंने देखा यूस्टेन के शरीर का कंपन बन्द हो गया और वह सीधी खड़ी हो गई। वह जानती थी कि उसकी प्रतिद्वंद्विनी उससे कहीं अधिक सशक्त है, उसके हाथों उसकी मृत्यु निश्चित है फिर भी वह सिर झुकाये बिना उसके सामने खड़ी हो गई, 'जिसकी आज्ञा मानना उस देश में अनिवार्य थी'···! मैंने उसके मुख पर अपूर्व साहस और विजय की मुस्कान देखी। निर्भीक स्वर में वह बोली :

"हे 'वह जिसकी आज्ञा मानना अनिवार्य है', मैंने यह सब जानबूझ कर किया; क्योंकि मेरा प्रेम मेरी कब्र से अधिक गहरा है, और इस आदमी के बिना, जिसे मैंने पहिली दृष्टि में ही अपना लिया था, मेरा जीवन मृत्यु से भी बदतर है। इसीलिये मैंने सोचा कि अपने प्यारे को पाने के लिये यदि जीवन भी जाता है तो जाय। मैं जानती हूँ कि तुम बीच में पड़ गई हो और तुम पर मैं विजय नहीं पा सकती। परन्तु मैं अब मरने से नहीं डरती; क्योंकि मेरे स्वामी ने अभी तुमसे भी कहा है कि वह मुझे प्यार करता है।"

आयशा शैया से उठने लगी पर फिर न जाने क्या सोच कर बैठ गई।

"मेरे पास जादू नहीं है·····", उच्च कंठ से गुफा को गुँजाती हुई यूस्टेन बोली। उसका स्पष्ट स्वर तीखी धार के समान सुनाई देने लगा था। वह कहती गई :

"·····और न मैं कहीं की रानी हूँ, न मैं अमर ही हूँ·····परन्तु हे रानी ! किसी स्त्री का प्रेम से ओत-प्रोत हृदय जल में नहीं डुबोया जा सकता चाहे वह कितना ही गहरा क्यों न हो·····हाँ वह कभी नष्ट नहीं हो सकता। मैं स्त्री हूँ और एक स्त्री दूसरी स्त्री की आँखों की बात सर्वप्रथम पहचानती है। तुम्हारी आँखों की पट्टियाँ मुझे धोखा नहीं दे सकतीं हे हिया·····!"

आयशा सुन कर चुप रही तो वह फिर कहने लगी :

"सुनो ! मैं मरने को उद्यत हूँ। मनुष्य का सब से बड़ा भय मृत्यु ही होता है; परन्तु जब वह उससे भी नहीं डरता तब भला वह काहे से डरे। मैं जानती हूँ कि तुम मेरे प्यारे से प्रेम करती हो और इसीलिये मुझे बीच से हटा देना चाहती हो। मैं मर कर जाने कहाँ जाऊँगी मैं नहीं जानती परन्तु अपने प्रेम से ओत-प्रोत हृदय की ज्योति में यह अवश्य देखती हूँ कि····· वह मुझे प्यार करता है·····यह तो मैं पहले ही जानती थी·····यहाँ नहीं·····वहीं अपनी गुफा में, कि यह मेरा प्यार, उपहार में मुझे कब्र दे रहा था·····मुझे इसका पूरा भान हो गया था परन्तु फिर भी मैंने इससे मुँह नहीं फेरा·····मैंने मृत्यु को जान कर अपनाया है और वह अब मेरे सामने खड़ी है। परन्तु तुम भी हे रानी ! सुन लो कि मुझे मार कर, मेरे खून से रंग कर तुम इस मेरे प्यारे को कभी नहीं पा सकोगी·····कभी नहीं·····तुम चाहे आकाश में स्थित चाँद और तारों की भाँति ही सुन्दर क्यों न हो पर वह तुम्हें कभी नहीं अपनायेगा·····नहीं·····नहीं·····तुम चैन से उसे कभी नहीं पा सकोगी··· हा !·····हा !·····हा !·····!!!"

वह शायद उत्तेजना के कारण पागल हो गई थी।

तभी मानो बिजली-सी कौंध गई। आयशा तड़प कर न जाने कब खड़ी हो गई थी। वह चीखी : "खामोश !" मैंने उसे चिल्लाते कभी नहीं सुना था। ओफ कितना भयंकर प्रतिशोध था उस एक शब्द में ! मैं समझ गया ज्वालामुखी अब विस्फोट होने वाला था। आतंक से मेरे सिर के बाल खड़े हो गए। आयशा तन कर खड़ी हो गई और उसने अपना दायाँ हाथ यूस्टेन की ओर फैला दिया। यूस्टेन ने अपने हाथों से अपनी आँखें मींचने का असफल प्रयत्न किया। वह काँप रही थी। मैंने देखा, एक तीव्र प्रकाश

आयशा के हाथ में से निकल कर यूस्टेन के ऊपर पड़ने लगा था। यूस्टेन की आँखें फैल गईं, नथुने फूल गए और होंठ सूख गए। आयशा ने एक शब्द भी नहीं कहा था। उस सन्नाटे में हमने देखा, उसने अपने दोनों हाथ सामने फैला दिये और उन्हें घुमा कर झटका दे दिया। वह शायद क्रोध से पत्ते की भाँति काँप रही थी। और तभी यूस्टेन की भयानक आर्त पुकार गुफा में गूँज गई। बिजली की फुर्ती से वह अपनी जगह दो बार घूमी और फिर पीछे गिर गई। वह निश्चल हो गई थी·····! लिओ और मैं दोनों दौड़ कर उसके पास पहुँचे·····देखा·····वह मर चुकी थी·····उस अज्ञात विद्युत ने, जो आयशा के हाथ से निकल कर यूस्टेन पर गिरी थी, शायद उसे जला दिया था।

लिओ हकबका गया पर दूसरे ही क्षण जब उसे होश आया वह खतरनाक बन उठा। उसका मुख क्रोध से लाल हो उठा और वह शेर की भाँति गर्जता हुआ भयानकता से हिंस्र पशु की भाँतिं आयशा पर लपका। परन्तु आयशा जैसे इसके लिये तैयार खड़ी थी। वह जैसे उस नतीजे पर पहले ही पहुँच चुकी थी। उसने जब उसे अपने ऊपर लपकते हुए देखा तो केवल एक हाथ आगे कर दिया और लिओ लड़खड़ाता हुआ पीछे जा गिरा। मैंने उसे बड़ी कठिनता से सँभाला। मुझे उस स्त्री की अमानुषिक और विचित्र शक्ति का अनुभव पहले ही से था अन्यथा इतने लंबे-चौड़े जवान को उसका केवल एक हाथ के इशारे से रोक कर गिरा देना निश्चय ही मुझे बेहाल कर देता। बाद में मेरे पूछने पर लिओ ने मुझे बतलाया कि कोई अज्ञात इतनी जोर का धक्का उसके सीने में लगा था कि वह पीछे जा गिरा था। इससे भी बढ़ कर बात यह थी, उसने कहा, कि उसे ऐसा मालूम हुआ जैसे उसके शरीर की सारी शक्ति स्वतः बाहर खिंच गई हो।

अब लिओ के मुख पर भय की रेखायें उभर आई थीं। तभी आयशा नम्र स्वर में बोली :

"मुझे क्षमा करो मेरे अतिथि! मैंने तुम्हें अपने न्याय से शायद डरा दिया हो।"

"क्षमा ?" लिओ चीखा। उसके मुख पर क्रोध फिर झलक आया था। वह कहता गया : "क्षमा और तुझे हत्यारी ! ओह ! भगवान ! मैं इसे मार ही डालूँगा !" और वह अपनी मुट्ठियाँ भींच कर दाँत किटकिटाने लगा।

मैंने आँख मीच कर संसार से बिदा ली; क्योंकि मैंने समझ लिया कि अब अंत आ गया था। तभी आयशा धीरे से बोली :

"नहीं, नहीं ! तुम नहीं समझते तभी जाने क्या-क्या बक रहे हो ? परन्तु अब समय आ गया है जब मैं तुम से सारी बातें कह दूँ। तुम मेरे प्यारे हो··· ओह तुम मेरे कैलीक्रेटीस ! आज मैं बहुत ही अधिक प्रसन्न हूँ।" फिर वह यूस्टेन की लाश की ओर उँगली दिखा कर बोली :

"इसके लिये दुख न करो···यह नाचीज थी···यह तुम्हारे योग्य नहीं थी···मैंने इसे जला दिया है···धूल में मिला दिया है·····आओ मेरे कैलीक्रेटीस !" और वह आगे बढ़ी।

"खबरदार जो आगे बढ़ी, हत्यारी", लिओ चिल्लाया :

"तू झूठ बोलती है···मेरा नाम कैलीक्रेटीस नहीं है···मेरा नाम लिओ विंसे है···हाँ कैलीक्रेटीस किसी समय मेरा पूर्वज अवश्य था यह तो मैं मानता हूँ परन्तु उससे अब क्या ?"

वह सुनकर हर्ष से पुकार उठी :

"ओह ! तो तुम यह सत्य जानते हो कि वह तुम्हारा पूर्वज था ! सुनो ! तुम ही वह फिर जन्मे हो···तुम ही मेरे कैलीक्रेटीस हो···तुम मेरे पास फिर आये हो मेरे स्वामी !"

"चुप रह नीच स्त्री ! मेरा नाम कैलीक्रेटीस नहीं है और न मैं वह हूँ··· और रही बात तेरे स्वामी होने की तो सुन कि मैं तुझे अपनाने के बजाय नरक में रहने वाली भुतनी से प्रेम करना अच्छा समझूँगा !"

"ऐसा ? नहीं नहीं ! यह तुम इसलिये कह रहे हो कि तुम मुझे बिल्कुल भूल गए हो प्यारे ! समय भी तब से अब तक बहुत हो चुका है। पर मैं अब भी वैसी ही अतीव सुन्दरी हूँ !"

"मुझे तुझसे घृणा है हत्यारी ! घृणा ! हाँ घृणा ! मैं तेरी अपवित्र मुखाकृति नहीं देखना चाहता," लिओ ने मुँह बिचका कर कहा।

वह हँसी और फिर बोली :

"और थोड़े ही समय में तुम मेरे घुटनों के पास रेंग कर बैठ जाओगे कैलीक्रेटीस।·····आओ अब हम प्रेम करें·····क्योंकि अब भेद खोलने का सही अवसर आ लगा है···यहीं इसी स्थान पर···इसी स्त्री की लाश पर हम एक दूसरे से मिल जाँय···तभी मेरे प्रेम की विजय होगी·····"

उसने झटके के साथ वह सफेद कपड़ा खींच डाला,·····और अब वह अपनी उसी कसी सफेद पोशाक में जिसका गला बहुत नीचा था और अपने उसी सुवर्ण की बनी पेटी पहने खड़ी थी···दमकती हुई, उसके रूप की दामिनी मानो तड़प उठी। वह उन महीन कपड़ों के ऊपर ऐसे खड़ी थी जैसे वीनस समुद्र के फेनों से उठ आई हो, जैसे गेलेशिया की पत्थर की मूर्ति हिल उठी हो या जैसे कोई अतीत की सुन्दर आत्मा अपनी कब्र फोड़ कर बाहर आ खड़ी हुई हो। वह आँखों में प्रेम भरे लिओ की आँखों में देख रही थी और मैंने देखा लिओ की बँधी मुट्ठियाँ धीरे-धीरे खुल गईं। वह अपलक नेत्रों से उस अपूर्व सौंदर्य को देख कर हैरान हो रहा था। उसकी वह क्रोध की मुद्रा पहले आश्चर्य में और फिर उस दमकते सौंदर्य की प्रशंसा में बदल गई। इतना ही नहीं क्योंकि थोड़ी ही देर में उसके नेत्रों में एक चाह उठी, एक विचित्र चमक पैदा हो गई और वह ऐसा हो गया जैसे उस भयानक सौंदर्य का शिकार हो गया हो जिसका हृदय बरबस बाहर खिंचा चला आ रहा हो। मैं देख रहा था अपलक नेत्रों से उस जादूगरनी को जिसके सुवर्णमय शरीर से सौंदर्य सूर्य के आलोक की भाँति फूट-फूट कर बिखर रहा था·····उसके नीचे गले के वस्त्र से उसके पीन, गोल, हिम के समान श्वेत, गुलाब के समान लाल, स्वर्ण के समान चमकीले और हाथी दाँत के समान स्निग्ध, उन्नत, उरोज आधे से भी अधिक बाहर झाँक रहे थे। मैं जो लिओ से दूनी आयु का था स्वयं वासना से भ्रमित हो उठा तो वह तो अभी युवक ही था उसका प्रवाह में बह जाना स्वाभाविक ही था। मैं कहते शर्माता हूँ कि उस समय मैं अपने बेटे के ही विरुद्ध ईर्षा और ग्लानि से भर गया था। मुझे इतना क्रोध हो आया था कि मैंने जाने किस अज्ञात शक्ति से अपने को उस पर टूट पड़ने से रोका। धिक्कार है मुझे जो एक स्त्री के पीछे मैं अपने ही पुत्र का शत्रु बन गया था। उसी समय लिओ ने हाँफ कर कहा :

"हे भगवान ! यह कैसी औरत है ?"

"हाँ औरत ! केवल औरत·····और वह भी तुम्हारी औरत कैलीक्रेटीस !" वह अपनी हंसग्रीवा सदृश गोल मांसल श्वेत भुजाओं को फैलाकर मुस्कुराती हुई बोली।

लिओ उसकी ओर बढ़ने लगा। उसकी दृष्टि बीच में पड़ी यूस्टेन की लाश पर पड़ी। वह ठिठका, फिर भर्राये स्वर से बोला :

"यह कैसे हो सकता है ? तुम हत्यारी हो·····वह मुझे प्यार करती थी।" परन्तु उसे देखकर तथा उसके क्षीण स्वर से यह स्पष्ट झलक रहा था कि वह अब तक यूस्टेन के प्रेम को भूल गया था और जो कुछ उसने कहा केवल अनजाने ही कहा था।

"ओह ! यह कुछ नहीं !" उसने साँसों में ही कहा, उसका स्वर उस समय ऐसा लगा जैसे मंद मलयानिल मंदार पुष्पों की झाड़ियों से होकर निकल गई हो···वह बोली ही सुनने वाले को मदहोश कर देती थी। वह पुनः बोली : "ओह ! प्यारे ! उसे भूल जाओ ! यदि मैंने पाप किया है तो मेरी सुन्दरता से उसका भरौला भर दो। मैंने उसे तुम्हारे प्रेम के मारे मारा है·····इसलिये उस चिड़िया को भूल जाओ·····भूल जाओ·····आओ मेरे प्राणाधार !!"

लिओ को मानो झटका लगा·····वह बढ़ा और मैंने देखा दूसरे ही क्षण उसकी भुजाओं में आयशा आ चुकी थी। नीचे यूस्टेन की लाश पड़ी थी।

मेरा सिर नीचे झुक गया। लिओ विन्से कैसे इतना घृणित हो गया····· कैसे इतना कृतघ्न हो गया कि अपनी प्रिया की लाश पर ही दूसरी स्त्री····· उसी की हत्यारी के आलिङ्गन में बँध गया। वह अपने होठों से उसके गुलाबी होंठ चूम रहा था। मैं देखता रहा·····मेरा मन जलता रहा·····जाने उन्हें उस अवस्था में कितने युग बीत गए·····!

हठात् वह हिल उठी और सर्प की भाँति बलखाती हुई उसके आलिङ्गन से अलग हो गई। लिओ पागलों की भाँति अतृप्त खड़ा था। आयशा हँसी और बोली :

"मैंने कहा न था कि मुझे देख कर तुम सब कुछ भूल जाओगे ? मेरे कैलीक्रेटीस ! आखिर तुमने अपनी प्रिया को पहचान ही लिया।"

लिओ अब शर्म से झुक गया। आयशा ने झट अपने को वस्त्रों से फिर ढँक लिया और ताली बजाई। जब गूँगे आये तो उसने यूस्टेन की लाश हटाने का इशारा कर दिया।

जब वे उसे घसीट कर ले जाने लगे तो वह फिर हँसी और कहने लगी :

"कौयर की गुफाओं में मुर्दों से मुर्दा जा मिला···धूल में धूल मिल गई···।"

घिसटती हुई यूस्टेन की फटी आँखें मुझे मानो घूर रही थीं·····मैंने आँखें मींच लीं क्योंकि मुझसे वह न देखी गई। जब मैंने आँखें खोलीं आयशा ने अपने वह वस्त्र उतार दिये थे और वह अपने ज्वलंत रूप में खड़ी थी। उस पर एक विचित्र नशा चढ़ गया था·····वासना से वह उद्दीप्त हो उठी थी·····एक अनन्त आनन्द को मानो वह प्राप्त हो गई थी। वह अपनी मातृभूमि अरब के कवियों की भाँति भावुक होकर गाने लगी·····वाह! कितना कोमल कंठ था उसका! उसने गाया :

"रेगिस्तान में उगे हुए पुष्प की भाँति प्रेम अनमोल वस्तु है!

वाह! यह अरब के 'अलो' पुष्प की भाँति है जो केवल एक ही बार खिल कर हमेशा के लिये मुर्झा जाता है!

यह जीवन के शून्य में तूफान पर जगमगाते तारे की भाँति ज्वलंत होता है·····

उसके ऊपर आत्मा का सूर्य और उससे चिपट कर अक्षय स्वर्ग की मलयानिल चलती रहती है·····

यह प्यारे के पदचाप को ही सुनकर प्रफुल्ल हो उठता है और तब वह उसे तोड़ लेता है!

अहा! वह रक्तांशु पुष्प उसके हाथ में कैसा सजता है·····

पर हाय! वह उसे सूँघ कर फेंक देता है!

ओह! जीवन की उदास लंबी यात्रा में प्रेम ही प्राण है·····

प्रेम ही मुर्झाने के लिये, मरने के लिये है·····

नहीं!···नहीं! वही अमर है!!

संसार के अंधकारपूर्ण शून्य मार्ग में प्रेम ही ज्योति है!

निराशाभरे पथ में प्रेम ही सहारा है।

बाकी सब व्यर्थ है·····वह जल पर घिरी छाया की भाँति है।"

फिर लिओ के कंधे पर अपना कोमल हाथ रख कर मुक्त कंठ से गाने लगी :

"मेरे प्रियतम ! मैंने तुम्हें कब से प्रेम किया है यह तुम क्या जानो ?

परन्तु आज मुझे मेरी प्रतीक्षा का फल मिल गया है। मैंने तुम्हें पहले एक बार देखा था परन्तु तब तुम मुझे न मिले·····!

और जब तुम चले गये, ऐ मेरे प्यारे !

मैंने अपनी प्रतीक्षा के बीज को मन रूपी कब्र में दाबे रखा, अपनी आशा के सूर्य के सहारे मैंने उसे पाला·····

और पश्चात्ताप के आँसुओं से सींच कर उसे अपने ज्ञान की श्वास से बड़ा किया !

और अब ! मेरा परिणाम मुझे मिल गया है·····

मेरा प्रियतम मुझे फिर हमेशा के लिये मिल गया है·····अब धुँधली रात्रि गहरी घाटियों में डूब गई है।

और वह देखो हर्षोन्मत्त होकर ऊषा ने पहाड़ की चोटी को चूम लिया है।"

दो सहस्र वर्षों के उपरांत मैंने अपना स्वामी पाया है·····

और अब हम लाखों वर्ष आनन्द भोगेंगे·····!!"

उस संगीत ने हम पर मोहिनी कर दी थी—

लिओ और मैं उस दर्दभरे मीठे स्वर को सुन कर मदहोश हो रहे थे। हठात् वह रुकी और लिओ का मुख अपनी कोमल गोरी हथेलियों में लेकर बोली :

"तुम शायद झूठ समझ रहे हो मेरी बातें ! नहीं···नहीं···इस तरह संशय और अविश्वास की मुद्रा न बनाओ ! सूर्य अपना पथ भूल सकता है, ऊषा अपना घोंसला भूल सकती है पर मैं·····आयशा अपने कैलीक्रेटीस से झूठ नहीं बोल सकती ! ओह ! मेरे प्रियतम तुम्हें मैं नहीं भूल सकती·····मेरी आँखें ले लो और मैं तुम्हारा स्वर सुन कर तुम्हें पहचान लूँगी···हाँ, और तुम मेरे कान भी ले लो तो भी एक हजार आदमियों में मैं तुम्हारी भ्रू छूकर तुम्हें पहचान लूँगी और यदि इतने पर भी विश्वास न हो तो मेरी आँखें, कान, स्पर्श सब कुछ ले लो और तब मेरी आत्मा तुम्हारे सामने आते ही चिल्ला उठेगी, 'वह रहा मेरा प्यारा ! मेरा कैलीक्रेटीस !"

लिओ और मैं आश्चर्य में भरे चुप खड़े रहे तो वह फिर कहने लगी :

"हे कैलीक्रेटीस ! अब तुम मेरे साथ चलना और मैं तुम्हें जीवन की अमर ज्योति में नहला कर अमर कर दूँगी···हाँ तब तुम अनंतकाल तक मेरे साथ भोग करना ! पर अभी चलो पहले तुम्हारा संशय दूर कर दूँ···हौली यह दीप उठा लो !"

मैंने तुरंत दीप उठा लिया और अब हम तीनों चल दिये। उस कक्ष के दक्षिण की ओर एक पर्दा लटक रहा था जिसे उठाते ही लम्बी सीढ़ियाँ दिखाई दीं···मैं हैरान था·····कहाँ ले जा रही थी यह हमें ? परन्तु उस समय सोचना और तर्क करना मानो अंधकार में सुई ढूँढ़ना था। हम सीढ़ियाँ उतरने लगे। हम साठ सीढ़ियाँ उतर गए। तब एक और गुफा मिली। यहाँ से फिर हम पच्चीस सीढ़ियाँ उत्तर की ओर उतरे। यह सारी सीढ़ियाँ छोटी-छोटी और गुफा की चट्टान में कटी हुई थीं। मैंने देखा सीढ़ियों के दोनों ओर की दीवाल लगातार हाथ लगने से निहायत चिकनी हो गई थी। सीढ़ियाँ भी, जो करीब सात इंच ऊँची थीं, बीच से सब तीन-तीन इंच के करीब घिस गई थीं। मुझे आश्चर्य हुआ कि यही सीढ़ी इतनी कैसे घिस गई जब कि अन्य सभी सीढ़ियाँ ठीक थीं :

सीढ़ियों के नीचे द्वार पर एक ओर पर्दा लटक रहा था, जब हम उसमें से बाहर निकले तो मेरी दृष्टि अब भी मुड़ कर उन घिसी सीढ़ियों पर पड़ी और तभी शायद आयशा ने मुझे देख लिया। वह बोली :

"ओह ! हौली ! तुम घिसी चट्टान को देखकर आश्चर्य कर रहे हो ? मेरे ही पैरों ने···हाँ मेरे ही छोटे और कोमल पैरों ने इन्हें इतना घिस दिया है···आह दो हजार साल तक हर दिन···और कभी-कभी दिन में दो बार-तीन बार मैं इन पर से चढ़ती-उतरती रही हूँ·····देखो ! पत्थर भी मेरे स्पर्श से कट गया है·····ओह मेरे कैलीक्रेटीस ! इतने उदास क्यों दिखाई देते हो ?" और उसने उसका हाथ अपने हाथों में ले लिया।

लम्बे गलियारे में होते हुए उस दीपक के प्रकाश में हम लोग बढ़ने लगे। काफी दूर पर हमें एक कक्ष मिला जिसके द्वार पर उसी भाँति का एक पर्दा लटक रहा था। मैं समझ गया यह वही स्थान था जहाँ उस रात मैं छिप कर आया

था जब आयशा आग की लपटें निकालती हुई अपनी प्रतिद्वंद्विनी उस यूनानी एमिनार्टस को कोस रही थी। मैं जिस मार्ग से आया था वह भी सामने की ओर से दिखाई दे रहा था।

अब हम लोग उस कक्ष में, जो वास्तव में एक कब्र थी, घुस गए थे।

× × × ×

१६

आयशा ने कहा : "यहाँ मैं दो हजार साल से भी अधिक नित्य सोई हूँ·····देखो·····!!"और उसने एक ढाई फीट ऊँची चौकी की ओर इंगित किया।

"और यह है मेरा प्यारा···आह ! उसे मैंने क्रोध में मार डाला था····· क्योंकि इसकी मिश्री सुन्दरी स्त्री एमिनार्टस ने इसे मुझे नहीं लेने दिया था··· और मैंने उस पाप का फल दो हजार साल तड़प कर पाया है···पर अब मेरा कैलीक्रेटीस समय पर चढ़कर फिर मेरे पास आया है·····हौली ! तब मुझे मालूम न था कि मैं केवल इच्छा से भी मार सकती थी और इसीलिये मैंने उसे भाले से मारा था·· पर अब मुझे मेरा प्यारा मिल गया है···। मैं जानती थी मेरा बिछुड़ा प्रियतम, मेरा रूठा स्वामी एक बार फिर मुझे ढूँढ़ता हुआ आयेगा··· हे कैलीक्रेटीस दो हजार साल से मैं तुम्हारे ही लिये कौमार्य धारण किये हूँ— मैं तुम्हारे प्रति सच्ची रही हूँ।"

वह तब बगल के एक चबूतरे के पास गई जहाँ एक लाश लेटी हुई थी··· वही जिसके ठंडे होठों से प्रेम करते मैंने उस रात उसे देखा था और उसने कहा :

"आज मैं अपने प्यारे को वह चीज दिखाऊँगी जो उसे आश्चर्यचकित कर देगी·····क्या तुम तैयार हो ?"

लिओ और मैं दोनों चकित डरी हुई दृष्टि से देख रहे थे। बोलने का साहस ही जैसे बचा नहीं था।

"डरो मत," वह बोली, क्योंकि जो तुम देखोगे वह कभी था और अब फिर मौजूद है···वही···बिल्कुल वही!" और उसने उस लाश का कपड़ा हटा दिया।

हमने देखा और भौचक रह गए। सामने पत्थर फिर लिओ का ठीक रूप एक और व्यक्ति लेटा हुआ था। मैंने उसे देखा और फिर लिओ को····· बाल बराबर भी अंतर नहीं था। ऐसा लगता था जैसे वह लिओ का दर्पण में प्रतिबिंब हो·····वही आँखें, वही नाक, सुनहले केश·····वही बनावट··· और भय से मेरे मुख से चीख निकल गई। लिओ बेहद घबरा गया था और उसके माथे पर पसीना झलक आया था। आयशा ने उसे देखा और वह उसके पसीने अपने हाथ से पोंछती हुई बोली :

"मेरे प्रियतम! डरो मत! यह कोई विचित्र और भयावह बात नहीं है। इस पृथ्वी पर मनुष्य अपना पहला ही रूप लेकर फिर-फिर जन्मते हैं·····केवल उनकी याद किसी को नहीं रहती·····दो सहस्र वर्ष बाद अब तुम ठीक वैसे उत्पन्न हुए हो·····ऐसे सभी होते हैं·····इस सूर्य के लिये यह कुछ भी नया नहीं है क्योंकि यह उन्हें बार-बार देखता आया है। मैंने कौयर के मुर्दे रखने की विधि अपने ज्ञान और अनुसंधान से खोज निकाली थी ताकि मेरा प्यारा हमेशा मेरी आँखों के सामने बना रहे। मैंने इसे ममी बनाकर यहाँ रख दिया·····दो हजार साल इसी के सहारे मैं रही हूँ·····कितनी स्मृतियाँ हैं! आह! कितना दुख था मेरा मेरे प्रियतम!"

फिर अपने आँसू पोंछ कर वह कहने लगी :

"आज जीवित और मृत मिल गए हैं अब मुझे मृत की आवश्यकता नहीं है···अब मेरे यौवन का सुप्रभात खिल उठा है·····अब दुख तेज हवा के सामने बादलों की भाँति छितर गया है···अतीत की स्मृतियाँ अब मधुर संगीत-मय होकर वर्तमान के प्रकाश में पर्वत-शिखर पर पड़ी बर्फ के समान पिघल गई है, अब अतीत और वर्तमान के रुदन···और हास्य एक स्वर होकर पहाड़ों की गहरी घाटियों में गूँजेंगे·····कि देखो समय की अबाधगति का कोई अंत नहीं है·····प्यार करने वाले सदा मिलते रहे हैं·····मिलते रहेंगे।"

परन्तु जैसे उसके उस मानसिक विश्लेषण का लिओ पर कोई प्रभाव नहीं

पड़ा। वह उस दृश्य को और अधिक नहीं देख सका। उसने अपनी आँखें हाथों से ढँक लीं और चीख उठा : "ढक दो उसे·····ढक दो उसे !"

आयशा ने कैलीक्रेटीस की लाश को ढँक दिया। वह जैसे अपने जीवित कैलीक्रेटीस की अवज्ञा कर ही नहीं सकती थी।

"अब मुझे इसकी आवश्यकता नहीं है," वह कह उठी और अपनी चौकी के पास से एक दुनाली बोतल निकाली जो मिट्टी की ही थी जिसके एक मुख पर एक धौंकनी सी बँधी थी। वह उसे लाश के पास ले आई फिर एक बार उस लाश को चूमकर कहा, "बिदा ! अब तुम मुझे जीवित मिल गए हो," और फिर उस दूसरी नली को उसकी ओर कर दिया। धीरे-धीरे धौंकनी चलाती हुई वह उस दूसरी नली से एक तेज तेजाब की तरह की कोई वस्तु उस पर छिड़कने लगी। उसने धीरे-धीरे उसका पूरा शरीर उस तरल पदार्थ से भिगो दिया और हट गई।

सन्-सन् की आवाज आने लगी। हमने देखा उसमें से तेज भाप निकलने लगी और थोड़े ही समय में पूरी गुफा उस तेजाबी धुएँ से भर उठी। बीच-बीच में खट-खट की आवाज भी आई जैसे हड्डियाँ टूट रही हों और जब धुँआ साफ हुआ तो मैंने आँखें फाड़कर देखा कि लाश वहाँ नहीं थी। थोड़ी सी सफेद राख अवश्य बची थी वह भी बहुत ही थोड़ी। इतनी तेज औषधि थी वह कि न केवल अस्थियाँ बल्कि नीचे का पत्थर भी थोड़ा जल कर उड़ गया था जिसमें दरारें पड़ गई थीं। उस राख को आयशा ने उठा लिया और कुछ अपने शरीर में लगाया और बाकी हवा में उड़ाती हुई बोली :

"धूल उड़ गई·····अब जीवन का प्रारम्भ है !" तत्पश्चात् उसने हमें वापस लौटने की आज्ञा दे दी। जब हम अपने कक्ष में आये, हमने देखा जौब सो रहा था। मैंने देखा वह हमारा पुराना पवित्र हृदय वाला अनुचर नींद में सब भय से मुक्त बेखबर सो रहा है। वह, जो उस स्थान में हर बात से चौंकता और डरा करता था और उसे हर कोई स्त्री या पुरुष गर्म बर्तन लाने वाला प्रतीत होता था, यदि यूस्टेन का मरना और कैलीक्रेटीस की लाश देखता तो शायद मर ही जाता।

लिओ और मैं आयशा की विचित्र बातों और जो दृश्य देखे थे उससे हैरत में भरे हुए थे·····दिमाग इतना थक गया था कि बोलना भी हम भूल गए थे। अपने कक्ष में आकर हम चुपचाप बैठ गए।

करीब घंटे भर बाद हमें होश आया और तब लिओ जो खोया-सा लग रहा था अब वास्तविकता पर आया। उसने दीर्घ श्वास खींचकर कहा :

"आह ! किस बुरी घड़ी में मैंने उस मिट्टी के पात्र पर लिखी बातें पढ़ी थीं ! न मैं उसे पढ़ता न इन मनहूस कब्रों में आने की ज़िद करता।" फिर वह रोने लगा और यूस्टेन की याद करता हुआ कराहता रहा। "वह मेरी प्यारी कितनी अच्छी थी और उसकी निर्मम हत्या मेरे सम्मुख कर दी गई। मैं भला करता भी क्या ?" और फिर आयशा की याद करके वह काँप उठा। उसने उसे भला-बुरा नहीं कहा क्योंकि वह उससे डरता था। "कहीं वह अब भी अपने जादू से हमारी बातें न सुन रही हो। वह कहने लगा·····और धिक्कार है मुझे जो मैंने अपनी प्रिया की लाश पर खड़े होकर उस हत्यारी को प्यार किया ! आह ! चाचा ! मैं बहुत ही नीच हूँ ! पर न जाने उसमें क्या है जो मैं खिंचा हुआ उसकी ओर चला जाता हूँ ठीक ऐसे जैसे लोहा चुम्बक की ओर चला जाता है। मैं जानता हूँ मैं कल भी ऐसे ही करूँगा·····! मैं उससे बच नहीं सकता····· यह दो हजार साल की विचित्र स्त्री मेरे लिये वह समस्या बन गई है जो शायद कभी हल नहीं होगी···चाचा ! मैं अब इसके हाथ बिक गया हूँ···क्योंकि वह कहती है मैं उसका कैलीक्रेटीस हूँ ! आखिर उस लेख की प्रत्येक बात ठीक निकली हैं···अभी जाने और क्या-क्या देखना बाकी रह गया है···मैं यहाँ से यदि मुक्त भी कर दिया जाऊँ तब भी शायद आयशा को एक बार देखने के बाद अब कभी छोड़कर जा न सकूँगा···परन्तु एक बात निश्चय है···मैं उससे भय खाता हूँ पर मन ही मन उससे घृणा करता हूँ···बहुत···उसका सौंदर्य भयानक है··· वह आग है जो सब को जला डालती है !!"

मैंने कहा : "चलो भाग चलें।" वह केवल मुस्कुरा दिया। मैंने देखा वह एक फीकी मुस्कान थी। मैं स्वयं जानता था कि यदि किसी अज्ञात शक्ति द्वारा यह मौका भी मुझे दिया जाता तब भी मैं आयशा को छोड़ कर कभी न जाता··· मुझे वह कौयर की मनहूस गुफाएँ कैम्ब्रिज के अपने घर से ज्यादा पसन्द थीं और

फिर मैं व्यर्थ के सोच में पड़ गया। गोया हम भाग रहे हैं और आयशा को जब पता चला है तो उसने बिलाली को हमें ढूँढ़ने भेजा है···और वह स्वयं अपने पत्थर के पात्र में जल में हमारी गति देख-देखकर आदमी पर आदमी हमारे पीछे दौड़ा रही है···सम्पूर्ण एमैहैग्गर लोग हमारी खोज में लग गए हैं···इत्यादि··· फिर मेरा ध्यान टूटा। लिओ कह रहा था :

"वह संसार में सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी है ! उसके समान न कभी कोई थी न कोई शायद होगी। परन्तु वह है भयानक और शैतान। पर उसके पर्दे को हटाकर जिसने उसका मुख देखा है, उसकी संगीतमयी भाषा सुनी है, उसके गूढ़ ज्ञान को सुना है···वह निश्चय ही उसे छोड़कर कहीं नहीं जा सकता···वह विकराल जादू-गरनी है, जिसके पंजे सुन्दर और मुलायम हैं परन्तु जिसमें मृत्यु की विभीषिका छिपी हुई है !"

मुझे यह विश्लेषण बहुत ही ठीक जँचा। मैंने कहा : "लिओ ! तुम्हें कदाचित् आश्चर्य हो पर जब से उसे मैंने देखा है उसे पाने की लालसा मेरे हृदय में हूक-सी बन गई है···"

"चाचा ! इसमें ईर्षा का स्थान मेरे लिये नहीं है क्योंकि मैं उससे अंतस से प्रेम नहीं करता। फिर यह हाल तो उन सभी का होगा जो भी उसे देख लेंगे। यही तो उसमें खूबी है !"

न जाने हम कब तक सोचते रहे। रात गहरी हो चुकी थी।

× × × ×

२०

करीब दस बजे सुबह जब हम सोकर उठे, जौब हमारे सामने खड़ा था। वह अब भी विचारमग्न था। उसने हमें देखा और बोला : "भगवान् की कृपा है कि अपने मालिकों को जीवित देख रहा हूँ···इस स्थान में जो समय भी निकल जाय वही बहुत है।" जब मैंने उससे यूस्टेन की मृत्यु के बारे में कहा तो वह भय से विचलित हो उठा। वैसे वह उसे स्वयं बिल्कुल पसन्द नहीं करता था पर वह उसकी हत्या से दुखी हो गया। यूस्टेन उसे अरबी में 'सूहर' कहती तो वह

अंग्रेजी में उसे 'फाहिया' कहा करता था परन्तु आयशा द्वारा उसकी हत्या सुनकर वह घबरा उठा। वह बोला :

"साहब यह जो स्त्री लगती है (उसका अर्थ आयशा से था) यह वास्तव में मनुष्य नहीं है। शैतान है जो कब्र में से उठ कर यह सब भयानक खेल कर रही है···वह असल में मुर्दा है—भूत है···मुझे भय है कि यह जादूगरनी लिओ जैसे सुन्दर और स्वस्थ युवक को नुकसान पहुँचाये बिना न रहेगी।"

"पर उसने तो इसे जीवनदान दिया है!" मैंने कहा, "उसी की औषधि से तो यह मृत्यु के द्वार से लौट आया था!"

"और अब वह इनकी आत्मा को बदले में ले लेगी और इन्हें भी अपनी ही भाँति जादूगर बना देगी," वह स्थिर भाव से बोला।

मैं चुप हो गया पर वह कहता ही गया, "कल रात स्वप्न में मेरी माँ मुझ से इस भयंकर जादूगरनी के बारे में जाने क्या-क्या कह रही थी! इतनी भयानक बातें थीं वह कि भय से मेरे सिर के बाल खड़े हो गये थे!!"

"यह विचित्र देश विचित्र लोगों से भरा पड़ा है जौब! यह बात तो मैं भी मानता हूँ।" मैंने उत्तर दिया।

जब मैंने पूछा कि लिओ कहाँ है तो वह बोला कि वह प्रातःकाल ही उठकर घूमने निकल गया था। फिर वह कहने लगा :

"साहब! कल रात मैंने स्वप्न में अपने पिता को देखा था। वह लम्बी कमीज पहने विचित्र लम्बी सूरत बनाये कहने लगे—'मेरे बेटा! अब तू शीघ्र मेरे पास आने वाला है। तू इस संसार को अब छोड़ देगा'।"

मैंने देखा वह कितना गम्भीर था। मैंने उससे कहा :

"क्या व्यर्थ की बातें करते हो जौब? भला इन बातों से इतना उदास हुआ जाता है? और फिर स्वप्न का अस्तित्व ही क्या है?"

वह सिर हिलाकर तुरन्त बोला :

"नहीं, नहीं मालिक? मैं जो कहता हूँ वह सत्य है। मैं यहाँ से बच कर कैम्ब्रिज कभी नहीं जा सकूँगा, यह निश्चय समझना। मेरे पिता ने कहा था कि इस मनहूस कौयर में मैं सदा के लिये वैसे ही सो जाऊँगा जैसे यह मुर्दे सो रहे हैं पर मेरे बाद आप दोनों बहुत सावधान रहना। आह! यह कितना भयङ्कर स्थान

है। यहाँ खाना खाते समय ऐसा लगता है जैसे उसमें विष है। इधर-उधर इस चूहे के बिल जैसे अँधेरे में चलते समय भय रहता है कि बगल से कोई चाकू या भाला न घुसा दे। पीठ काँपती रहती है कि कोई पीछे से वार न कर बैठे और बार-बार मुड़-मुड़कर देखना पड़ता है। वह बेचारी यूस्टेन! क्या उसकी मरने की उम्र थी पर कुत्ते की मौत मार दी गई। यहाँ हत्या जुर्म नहीं है और न पाप है। वैसे वह मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं थी क्योंकि थी वह बिल्कुल बदचलन और फाहिया! क्योंकि सभ्य स्त्रियाँ इस तरह पुरुषों पर नहीं लदतीं परन्तु फिर भी उसकी मृत्यु भयानक हुई और मुझे मरना तो है ही, पर चाहता हूँ कोई मुझे गर्म बर्तन से न मार दे।"

"फिजूल बात!" मैंने उसे फटकारा और वह चुप हो गया। वह बोला : "अच्छा साहब मैं हुज्जत नहीं करूँगा क्योंकि मैं जानता हूँ कि आप से जीत नहीं सकता। जाने दीजिये।"

पर मैं देख रहा था कि वह कितना उदास था। उस अपने बीस साल पुराने अनुचर के दुख ने मुझे भी दुखी कर दिया। कितना अच्छा, सीधा और ईमानदार व्यक्ति था वह। मेरा दिल भर आया।

नाश्ते के समय लिओ घूम कर लौट आया था। मैंने उससे जौब की बातें कहीं। सुनकर वह भी उदास हो गया और बोला :

"कहीं व्यर्थ ही मन की कमजोरी से मर न जाय? वैसे प्रत्यक्ष में उसके मरने का कोई कारण नहीं है।"

"हाँ और खासकर जब तुम कैलीक्रेटीस बने हुए हो," मैंने छेड़ा। वह तुरन्त बोल उठा :

"चाचा! खाना खा लेने दो। मुझे तो उस स्त्री की याद आते ही मेरी आत्मा काँपने लगती है।"

उसका उतरा हुआ चेहरा देख कर फिर मैंने चुप रहना ही उत्तम समझा। नाश्ता करने के उपरांत हम घूमने निकल गए। बाहर हमने देखा कि कुछ आदमी हल चला रहे थे, इस दृश्य को देखकर मेरी तबियत खुश हो गई क्योंकि यही एक वह सभ्य बात थी जो हमारे संसार में भी हुआ करती है।

जब हम लौटे बिलाली हमारी राह देख रहा था। उसने कहा हमें 'वह जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य था', बुला रही थीं। हम तुरन्त उसके कक्ष की ओर चल दिये, आयशा के अधिकाधिक संपर्क से वासना, आश्चर्य और भय यह तीनों बढ़ जाते थे परन्तु घृणा तनिक भी नहीं होती थी। उसके बुलाने पर यह असंभव था कि कोई न जाय। उसी भाँति हमें गूँगी स्त्रियों ने मार्ग दिखाया और जब हम अंदर पर्दों में पहुँच गए और अन्य सभी चले गए तब आयशा ने अपना आवरण हटा लिया, लिओ को देख कर उसने अपनी गोरी बाहें फैला दीं और वह उनमें खिंचा चला गया, अब की बार वह पहले से भी अधिक मदमस्त होकर उसके होठों को चूम रहा था·····इतना जितना सभ्यता के विरुद्ध कहा जा सकता था। आयशा उस गाढ़ालिङ्गन से अत्यधिक प्रसन्न थी। यह उसकी आँखों की चमक और श्वासें बता रही थी। मुझे आश्चर्य और मन ही मन क्रोध भी था कि आखिर वह इस वासनोन्मत्त प्रेम का प्रदर्शन मेरे सामने करके मुझे क्यों जलाया करती थी।

उसने अपना गोरा हाथ उसके सिर पर रख दिया और उच्छ्वसित होकर बोली :

"मेरे कैलीक्रेटीस! मुझे अपनी बना कर क्या तुम्हें आश्चर्य होगा? सुनो मैं तुम्हें एक रहस्य बताती हूँ, मैं तेइस सौ साल की हूँ और अभी जवान हूँ क्योंकि मैंने प्रकृति के उस रहस्य को जान लिया है जो मुझे समय की गति से बचा कर रखता है। मुझे पाने के लिये पहले तुम्हें भी मेरी ही भाँति बनना पड़ेगा। मैं अमर तो नहीं हूँ क्योंकि अमर तो प्रकृति स्वयं भी नहीं है परन्तु मैंने जीवन की आत्म-ज्योति में स्नान करके अपने बाह्य शरीर को इतना दृढ़ बना लिया है कि समय के बाण उसे नहीं छेद सकते। मैंने इतने समय तुम्हें पाने के लिये प्रतीक्षा की थी और अब तुम्हें भी अपना सा बना कर लाखों वर्ष तुमसे भोग करूँगी!·····मेरे प्रियतम मैं जानती हूँ तुम्हारे लिये और रुकना असंभव सा हो रहा है परन्तु अभी नहीं····· अभी तो तुम मुझे यदि देर तक देखते भी रहोगे तब भी तुम्हें अधिक प्रतीक्षा भी नहीं करनी होगी क्योंकि आज ही सायंकाल मैं तुम्हें उस जीवन-ज्योति के ज्वलंत स्थान पर ले चलूँगी और अगर सब ठीक हुआ और वह स्थान अब भी वैसा

ही मिला और मैं मार्ग न भूली तो कल शाम तक हम उस स्थान में पहुँच जायँगे। प्यारे तब यौवन का अखंड प्रवाह बहेगा और मैं तुम्हारी स्त्री बन जाऊँगी !!"

लिओ उत्तर में कुछ बड़बड़ाया। उसका क्या अर्थ था आज तक मेरी समझ में नहीं आया। फिर वह मुझसे बोला :

"और हे हौली ! तुम भी उस ज्वाला में स्नान कर लेना·····क्योंकि मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ। तुम तब हमेशा हरे बने रहोगे·····तुम वैसे तो पुराने ख्यालों को मानते हो और तुम्हारे सिद्धांत भी व्यर्थ ही से जँचते हैं पर यह निश्चय है कि तुम बुद्धिमान पुरुष हो···तुम सुन्दर स्त्री के सम्मुख उसे प्रसन्न रखने वाले वाक्य अच्छी तरह और शीघ्र बना कर कहने में दक्ष हो !" मैंने देखा वह यह कह कर मुस्कुरा रही थी।

"अच्छा चाचा ! तो यह ठाठ थे तुम्हारे !"

लिओ ने अपनी स्वाभाविक मुस्कुराहट से मुझसे फुसफुसाकर कहा। पर मैंने उसकी बात अनसुनी कर दी। मैं आयशा को संबोधन करते हुए जितना गंभीर बन सकता था उतना बने हुए बोला :

"धन्यवाद आयशा ! यदि संसार में ऐसा भी कोई स्थान है जहाँ जाकर शरीर विनाश को प्राप्त होने से रुक जाता है तो भी मुझे वह नहीं चाहिये क्योंकि मैं इतना लंबा जीवन नहीं चाहता। जब मृत्यु मुझे समेटती हुई आये तो मैं उसे खाली हाथ नहीं लौटाना चाहता क्योंकि संसार मेरे लिये बहुत सुखकर साबित नहीं हुआ है। यह पृथ्वी हमारी कठोर-हृदया माता है जो अपने बच्चों को खाने को पत्थर और चट्टान देती है; पीने को उन्हें जहरीला पानी और भोगने को दुख मिलते हैं। ऐसी हालत में मैं जीवन का बोझा ढोना नहीं चाहता·····यह स्मृतियाँ ही जब विकराल हो उठती हैं तब लंबे जीवन की स्मृतियाँ तो यातना बन जायँगी। तब हमारे सामने पीढ़ी-दर-पीढ़ी मरती जायँगी और हम जीवित रह कर क्या सुख पायेंगे ? पत्ता तो हरा बना रहेगा और शायद उसमें तुम्हारी तरह दमक भी आ जाय पर·····वह अंदर से बिल्कुल मरा हुआ होगा·····दुख की वह निरंतर गुँथ जाने वाली कड़ियाँ जंजीर बन जायँगीं और जीवन विषाद का पहाड़ बन जायगा·····आह ! वह घुन अंदर

ही अंदर उस रूप की ज्वाला को कुरेदा करेगा·····नहीं-नहीं·····मैं अमर नहीं होना चाहता।"

"ओफ़ हौली! तुम तो सचमुच मूर्ख हो। अजर और अमर व्यक्ति जीवन की उन शक्तियों और रहस्यों को जान कर क्या आनन्द नहीं भोगता? वह सर्वशक्तिमान बन कर संसार पर राज्य करता है!!"

"क्या हैं वे वस्तुएँ·····क्या हैं वे शक्तियाँ जिन्हें पाकर वह आनन्द भोग सकता है?" मैंने कहा, "क्या वह सब पानी के बुलबुलों की भाँति नहीं होते? ·····ओह रानी! चाह का कभी अन्त नहीं हुआ है·····और क्या अधिक जीकर मनुष्य की तृष्णा मिट जाती है? अपार धन राशि क्या मनुष्य को शांति दे सकती है या संसार का साम्राज्य उसका मन भर सकता है? नहीं···! और यदि ज्ञान की वृद्धि ही मानी जाय तो क्या सदियों से जाने ज्ञान के बाद ज्ञान का अंत आ जाता है·····? जितना मनुष्य जीता है उतनी ही उसकी समस्या बढ़ती जाती है·····क्या दस सहस्र वर्ष मनुष्य जी कर सूर्य और आकाश की थाह पा लेता है? ओह आयशा! और अधिक जान लेने की चाह मनुष्य को अन्दर ही अन्दर चैन नहीं लेने देती, वह घुन की तरह उसे खाती रहती है और बाह्य रूप में वह जिसकी स्मृतियाँ हजारों साल पुरानी हैं·····वह सुन्दर और जवान बना रहता है। क्या फायदा उस जवानी से जब मन बुड्ढा हो जाय·····?"

"ओह! हौली", वह दीर्घ श्वास लेकर लिओ के आलिङ्गन में ही लिपटी बोली, "प्रेम! यही वस्तु उसे सदियों जीवित रखती है,·····इसी के सहारे युग पर युग बीत जाते हैं हौली! इसी की श्वास स्वर्गिक और इसी का संगीत अलौकिक होता है! यह क्यों तुम भूल गए?"

"प्रेम!" मैंने कहा, "यह हो सकता है आयशा! परन्तु वह जिसके प्रेम का प्रतिकार कभी न मिला हो·····वह जिसने प्रेम कभी न पाया हो, फिर वह कैसे जीवन को और लम्बा करके यातनाओं को भोगे? नहीं, हे रानी! मैं तो अपनी मृत्यु जब वह आये उसे ठुकराना नहीं चाहता। यदि शरीर अनन्त काल तक बना रहे तो यह भी निश्चय है कि यह मांस और रुधिर अपने साथ जुड़ते हुए दुख, बुराइयाँ और पाप के घड़े को भी भरता ही रहता है। मैं तो

यहाँ से जाना ही अच्छा समझता हूँ क्योंकि तब मेरी आत्मा उस पवित्र स्थान पर पहुँच जायगी जहाँ केवल सुख ही सुख है·····! जो कुमारी के कौमार्य से भी पवित्र, पुष्प की गन्ध से भी अधिक सुवासित और मनुष्य की आकांक्षाओं से बहुत परे है।"

आयशा खिलखिला कर हँस पड़ी। ऐसा लगा मानो पुष्प बिखर कर फैल गया हो। उसने अपने को बलखाते साँप की भाँति लिओ के आलिङ्गन से मुक्त कर लिया था। वह बोली :

"हौली। तुम बिल्कुल तुरही के समान बजते हो। परन्तु जो कुछ तुमने कहा वह सब व्यर्थ ! जो कुछ तुमने कहा शायद किसी विश्वास से कहा और तुम्हारी खोज पर्दे के पीछे छिपे हुए किसी अपरिचित की खोज के समान है। परन्तु तुम इतना समझ लो कि अलग-अलग धर्मावलंबियों का अलग-अलग स्वर्ग होता है। पर हौली ! छोड़ो इसे और सोचो तुम बूढ़े हो गए हो और शक्तिहीन होकर रेंग रहे हो; भयानकता से खाँसते हुए श्वास लेने का निष्फल प्रयत्न कर रहे हो। सोचो तो क्या तुम उस समय जब तुम्हें मेरे द्वारा मिल सकने वाला यह अक्षय यौवन याद आयेगा ? जानते हो मनुष्य कैसी विडंबना में रहता है ? अंधकार में जब वह ठोकरें खाता हुआ भटकता है उस समय यदि कोई उसे दीप लाकर दे तो वह उसे फेंक देता है। क्यों ? क्योंकि वह तो सितारा पकड़ना चाहता है ? कहो यह क्या बुद्धिमत्ता है ? उल्लास उसके चरणों पर अठखेलियाँ करते हुए कहता है, मुझे ले लो पर वह तो सितारा लेगा, भला उससे कैसे सन्तुष्ट हो ? वह सुन्दरता को दुतकार देता है क्योंकि वह उस मिली हुई निधि से भी और सुन्दर वस्तु चाहता है। हौली ! ऐसों के लिये मधु भरे होंठ नहीं तरसा करते क्योंकि वह उनकी महत्ता नहीं जानते। वह दौलत छोड़ देते हैं क्योंकि उन्हें सारे संसार का धन चाहिये ! हौली मैं तुम्हारा ही सिद्धांत उलटा कर के तुम पर ही अब मारती हूँ। तृष्णा में तुम्हारा मन भ्रांत हो गया है। जो मिला है उससे तुम सन्तुष्ट नहीं रह सकते। तुम दया के पात्र हो !"

मैं उससे कैसे कहता कि उसे देखने के उपरांत मैं तो बस उसी का हो गया था और अब जब वह मुझे नहीं मिल सकती थी मेरा अधिक जीना तो मेरे दुखों

को बढ़ाना ही था। शायद अकेला होता तो कह भी देता पर लिओ के सामने भला यह रहस्य कैसे खोलता। मैं चुप रह गया। आयशा ने वह विषय ही छोड़ दिया। वह केवल हँसती रही। फिर हठात् उसने लिओ का मुँह अपने हाथों में लेकर उससे पूछा :

"कैलीक्रेटीस ! मुझे एक बात बताओ। तुम आखिर मुझे ढूँढ़ते हुए यहाँ आये कैसे ? तुम्हें भला मेरा सूत्र कैसे लगा ? तुमने कल रात कहा भी था कि कैलीक्रेटीस·····वही जिसका शरीर मैंने तुम्हें दिखाया था, तुम्हारा पूर्वज था·····मुझे बताओ प्यारे ! क्योंकि यह बात मेरी समझ में नहीं आई है।"

और तब लिओ ने अपने पिता से लेकर उस लोहे के सन्दूक और मिट्टी के पात्र वाली सारी बातें और एमिनार्टस का लेख यह सब मानो एक ही साँस में कह सुनाया। सब सुन कर उसने एक बार मेरी ओर प्रशंसायुक्त नेत्रों से देखा और फिर बोली :

"हौली ! तुम वास्तव में उच्च मनुष्य हो। तुम्हें मैं क्या दूँ जो तुम्हारा ऋण चुका सकूँ। तुमने अपने मित्र के पुत्र को पुत्रवत् तो पाला ही पर मेरे कैलीक्रेटीस को भी पाला है·····और हाँ·····तुम्हें याद है मैंने तुमसे कहा था कि बुराई हमेशा बुराई ही नहीं उपजाती। देखो यह कितनी सच निकली है। नील की पुत्री एमिनार्टस ने मुझसे शत्रुता के नाते अपने वंशजों से मुझे मारने और बदला लेने के लिये लिखा था और इसका फल यह हुआ कि दो हजार साल के बिछुड़े फिर मिल गए।" फिर वह स्वतः कहने लगी :

"कैलीक्रेटीस तुम दो हजार साल पहले भी ऐसे ही थे। पर तब तुम मुझसे कितने विमुख रहते थे और आज तुमने मुझे अपना लिया है। तुम वास्तव में महान् हो जो दो हजार साल तक प्रतीक्षा कराने के उपरांत मुझे अपनाने स्वयं आ गए। तुमने मेरी शून्य में गूँजती हुई पुकार को सुन लिया", और वह फिर उससे लिपट गई।

मैं नीचे देखने लगा था। जब मैंने आँख उठाई वह आलिङ्गन से अलग हो चुकी थी, वह उठी और पास ही एक ताक में से एक बड़ा छूरा उठा लाई। पास आकर उसने वह छूरा म्यान से बाहर निकाल लिया जो प्रकाश में तड़प उठा। उसने उसे मेज पर रख दिया। फिर वह पृथ्वी पर घुटने के बल लिओ

के सामने बैठ गई और हठात् उसने अपनी छाती पर से वस्त्र खींच डाला। मैंने देखा उसके नग्न स्तन हाथी दाँत के समान चमक उठे। मेरी साँस रुक गई। फिर वह उत्तेजित स्वर में बोली :

"कैलीक्रेटीस। यह वही छूरा है जिससे मैंने तुम्हें मारा था···तुम्हारी माता ने तुम्हें मुझे मारने के लिये लिखा था। लो यह छूरा और चाहो तो मुझे मार डालो।"

लिओ ने उसके सौंदर्य को भरपूर नेत्रों से देखा फिर उठ कर उसे अपनी बलिष्ठ भुजाओं में ऊपर उठा लिया और बोला :

"मेरी आयशा। तुम जानती हो मैं तुम्हारा कभी कुछ नहीं बिगाड़ सकता। चाहे उसके लिये भी क्यों नहीं, जो कल मर चुकी है। मैं तुम्हारे अधीन हूँ, तुम्हारा दास हूँ। मैं भला तुम्हें कैसे मार सकता हूँ? इससे पहले तो मैं स्वयं ही आत्महत्या कर लूँगा।"

"तब तो तुम मुझे प्यार करने लगे हो मेरे कैलीक्रेटीस," वह मुस्कुराई।

फिर उसने पूछा : "और अब मुझे अपने देश के बारे में बताओ, क्या वहाँ बहुत सभ्य लोग रहते हैं? क्या वह रोम की भाँति प्रबल साम्राज्य है? वहाँ तो तुम लौटकर जाओगे ही क्योंकि मैं भी नहीं चाहती कि तुम मुझे लेकर यहाँ इन कौयर की मनहूस गुफाओं में रहो। ओह! एक बार जब तुम भी मेरी भाँति लंबी आयु वाले तथा प्रकृति के रहस्यों को जानकर असाधारण शक्ति संचित कर लोगे तब हम दोनों यहाँ से तुम्हारे इंगलैंड चलेंगे·····घबराओ नहीं·····वहाँ का मार्ग भी मैं ही ढूँढ़ निकालूँगी। मुझे वह ज्ञान भी प्राप्त है। तब हम वहीं रहेंगे। ओह! दो हजार साल से मैं इसी प्रतीक्षा में रही थी कि कब मेरा प्रियतम आये और कब मैं इन मनहूस कब्रों और असभ्य लोगों को सदा के लिये छोड़ूँ। आज मेरा मन खुशी से नाच रहा है क्योंकि आज मुझे नित्य की उदासी से अब अवकाश मिल गया है—हम लोग तुम्हारे इस इंगलैंड·····इंगलैंड ही है न? हाँ वहीं चलेंगे·····और तब तुम वहाँ के राजा बन जाना।"

"नहीं! वहाँ तो हमारी रानी मौजूद है," लिओ झट से बोल उठा।

"कुछ नहीं, कुछ नहीं·····वह हटा दी जायगी ऐसे·····!"

और उसने हथेली से हवा को काटकर दिखाया। हम दोनों ही तब एकदम चिल्ला उठे :

"नहीं, नहीं आयशा !·····ऐसा न कहो·····अपनी रानी के बजाय तो हम ही मर जाना पसंद करेंगे।"

"विचित्र बात है यह," वह आश्चर्य से बोली, "तब तो संसार कुछ बदल गया दिखता है। जब मैं कौयर आई थी तब ऐसा नहीं होता था, तब रानी और राजा को प्रजा प्रेम नहीं करती थी।"

हमने उसे समझाया कि अब शासकों का दृष्टिकोण और प्रजा के साथ बर्ताव बिल्कुल बदल गया था, हमने यह भी कहा कि हमारी रानी नेक और शांतिप्रिय थी जिसे उसके राज्य में सभी चाहते थे। बाद में उसे यह भी बतलाया कि राज्य की असली बगडोर अब रानी के हाथ में नहीं बल्कि जनता के प्रतिनिधियों के हाथ होती थी जिन्हें वे लोग चुन लेते थे·····वह जो कम से कम पढ़े लिखे और ग़रीब थे वही अपने प्रतिनिधियों की सरकार बनवाते थे क्योंकि उनका बहुमत था।

"ओह ! प्रजातंत्र !" वह मानो प्राचीन बातें सोचती हुई बोली :

"पहले भी प्रजातंत्र असफल होते थे क्योंकि बाद में उनमें कोई न कोई नृशंस लोगों को बहका कर सत्ता को हथिया लेता था, नृशंस जनता द्वारा पूजा जाता था।"

"सो तो अब भी ऐसा होता है," मैंने स्वीकृति दी।

"ओह ! तब तो हम उस नृशंस की हत्या कर देंगे और तब मेरा कैलीक्रेटीस वहाँ का राजा बनेगा," उसने मानो आखिरी न्याय दे दिया था।

मैंने तुरन्त कहा कि इंगलैंड में मनुष्य को मारना तमाशा नहीं था और यदि कोई ऐसा काम करता था तो वह कानून की निगाह में अपराधी ठहराया जाता था।

सुनते ही आयशा हँसी। बोली :

"क्या कहा ? कानून ? क्या तुम नहीं जानते हौली कि मैं कानून से ऊपर हूँ और कल कैलीक्रेटीस भी मेरी ही भाँति हो जायगा। उत्तर की वायु पर्वत को नहीं झुका देती·····कानून हमें न झुका सकेगा, समझे ?"

मैं चुप हो गया, फिर उसने हमें जाने के लिये आज्ञा दे दी, वह बोली :

"आज सायंकाल से पहले ही हम यहाँ से चल देंगे। तुम लोग तैयार रहना·····परन्तु हाँ·····अधिक सामान और कपड़े मत लेना·····तीन दिन के अन्दर हम लौट आवेंगे और तभी हम इंगलैंड जाने का पूरा प्रबन्ध करेंगे··· अब तुम लोग जाओ और विश्राम करो। मैं भी थोड़ा विश्राम करने के उपरांत चलने का उपक्रम करती हूँ।"

जब मै वहाँ से अपने कक्ष को चला तो मेरे मन में भाँति-भाँति के प्रश्न उठने लगे। यह रानी! अब इंगलैंड जायगी। यही तो वह कह रही है। भला उसे जाने से रोक ही कौन सकता था? वह सर्वशक्तिमान जो थी, और जब वह वहाँ पहुँच जायगी फिर? फिर क्या होगा?

मैं मन ही मन काँप उठा। उसकी शक्ति तो जानता ही था। यह हमारे समाज में जाकर निश्चय ही हलचल पैदा कर देगी, ओह! इंगलैंड के लोग ठट्ठ के ठट्ठ इस दो हजार साल की स्त्री को देखने आयेंगे! और यह अपनी आदतों से लाचार जाने वहाँ कैसा व्यवहार करेगी·····यह सारे संसार को अपनी मुट्ठी में कर लेगी इसमें तो मुझे बिल्कुल ही शक न था। वह महत्वाकांक्षा वाली स्त्री तो थी ही·····भला वह अपनी अमानुषिक और अप्राकृतिक शक्ति काम में लाये बिना कैसे रहेगी यह भी मैं जानता था। मुझे तो यह भी शक था कि यदि वह मारी भी जाती तो भी शायद न मरती। लिओ के सामने जो छूरा उसने रखा था वह भी निश्चय ही परीक्षा रूप में ही था क्योंकि इतनी चतुर थी वह कि उसने साथ ही साथ अपने वह पीन उन्नत मांसल स्तन खोलकर वासना से लिओ को उद्वेलित कर दिया था। यह तो मुझे विश्वास था कि वह साधारण भावुकता के वश होकर ऐसा नहीं कह सकती थी।

मुझे यह सारी कथा विचित्र मालूम हो रही थी। मैंने सोचा और इस निष्कर्ष पर पहुँचा: 'अवश्य ही भावी इस स्त्री के द्वारा ही संसार में कोई नया रहने का नियम या कोई ऐसी नई रीति लाने वाली थी जिससे संसार की हमेशा से प्रचलित रीति ही बदल जाय! उसकी शक्ति, उसका सौंदर्य, उसकी आशा सभी पराकाष्ठा को पहुँची हुई थी जिनकी अवज्ञा, अवहेलना अथवा

वंचना नहीं हो सकती थी। हे भगवान्? क्या होने वाला है!' मैंने सोचा और सोने की कोशिश की।

× × × ×

२१

थोड़े वस्त्र, पिस्तौलें और हल्की राइफलें लेकर हम तीनों निश्चित समय से थोड़े ही पहले आयशा के कक्ष में जा पहुँचे। वह काला लबादा ओढ़े तैयार बैठी थी। हमें देख कर हँस कर बोली :

"तो तुम तैयार हो ? अच्छा है·····अब तुम्हें जीवन का सब से बड़ा आश्चर्य देखने को मिलेगा!"

"तैयार हैं आयशा! पर मुझे तुम्हारी बातों पर विश्वास नहीं हो रहा है।" मैंने किंचित डरते-डरते कहा कि कहीं बुरा न मान जाय।

"ओह! हौली!" वह हँसी, "तुम ठीक उन प्राचीन काल के यहूदियों की भाँति हो जो कभी किसी की बात का विश्वास नहीं करते थे। छोड़ो·····पर तुम शीघ्र ही इस ज्योति को स्वयं देखोगे। वह देखो पात्र का जल अब भी उस मार्ग को सुरक्षित और जाने के योग्य दिखा रहा है!"

मैंने पात्र में झाँक कर देखा तो जल में कुछ गहरे अंधकार में लिपटे पहाड़, दर्रे इत्यादि दिखे। मैंने आँखें फेर लीं, यह पात्र मेरे लिये आज भी एक रहस्य ही बना हुआ है। और न जाने क्यों जब-जब मैंने उसमें देखा मेरा मन काँप उठा।

हम लोग बीच की बड़ी गुफा में होकर शाम के उजाले में बाहर आ गए जहाँ केवल एक ही पालकी खड़ी थी। इसके उठाने वाले छै गूँगे थे और इनके साथ-साथ मेरा पुराना मित्र बिलाली भी खड़ा था जिसे देख कर मेरे मन में एक प्रकार का स्नेह उमड़ आता था। एक ही पालकी वहाँ क्यों थी? हमारे लिये क्यों न थी? मेरे मन में विचार आया पर फिर मुझे ध्यान आया शायद इसलिये हो कि सब के बीच वह हमें समान स्थान देकर अपनी मर्यादा न गिराना चाहती हो अथवा वह उनके आश्चर्य की केंद्र न बनना चाहती हो

कि उसने हमें समान अधिकार दिये हैं। जो कुछ भी हो पर हम पैदल चलने के प्रबन्ध से बहुत प्रसन्न हुए क्योंकि उन गुफाओं में बँधे रहने के उपरांत आज ही तो हमें खुला मैदान घूमने को मिला था। परन्तु एक और आश्चर्य यह था कि उस समय वहाँ सिवा हमारे, बिलाली के और उन पालकी वालों के और कोई नहीं था·····दूर-दूर तक एक आदमी भी नहीं दिखाई देता था। शायद यह उसकी आज्ञा से सन्नाटा छाया हुआ था या अकस्मात् ही, पर था वातावरण निःशब्द और शांत! मुझे समझते देर नहीं लगी कि वह अपना प्रस्थान गोपनीय रखना चाहती थी।

हम लोग बिना किसी समारोह इत्यादि के चल दिये और थोड़ी ही देर में उस अत्यन्त आकर्षक हरे-भरे और विस्तृत मैदान के बाहरी भाग में पहुँच गए जहाँ नाना प्रकार के चटकीले पुष्प खिले हुए थे और दीर्घाकार वृक्ष पंक्ति से लगे संध्या की मनोरम और मन्द-मन्द बयार में हिल रहे थे। मुझे कौयर के उन महान् लोगों के अथक परिश्रम और उस विराट् योजना पर अत्यधिक आश्चर्य हुआ कि कैसे थे वे उच्च कोटि के मनुष्य जिन्होंने उस स्थान के समुद्र के समान भरे हुए जल को पहाड़ काट कर ऐसा निकाला कि बाद में भी वहाँ जल एकत्रित नहीं हुआ और फिर क्या अद्भुत स्थान चुना था उन्होंने अपनी राजधानी बनाने का कि वाह! जिधर देखो उधर ही निगाहें ठहर जाती थीं। यह हाल तो अब था जबकि सब कुछ कौयर का उजड़ चुका था और खंडहर बिखरे पड़े थे·····जाने तब कैसा रहा होगा जब कौयर सभ्यता के आकाश में सितारे की भाँति चमकता रहा होगा! ओह! वह कौयर! और उसके सौ शहर! कैसे कमाल के लोग थे वे! मैं तो कहूँगा कि आधुनिक काल की स्वेज़ नहर और माउंट सिनिज़ की गुफा भी उस कौयर के कटोरेनुमा मैदान के सामने कुछ भी नहीं थीं। उस कटोरे का पानी निकाल कर बाहर फैला देना अद्भुत बात थी। शीतल वायु चल रही थी और हम प्रकृति का आनन्द लेते हुए बढ़ रहे थे।

एक घंटा चलने के उपरांत हम कौयर के उस भग्नावशेष के पास पहुँच गए जिसे बिलाली ने उस दिन मुझे दूर से दिखलाया था। अब वह महानगर साफ दिखाई दे रहा था। प्राचीन बेबीलोन अथवा थीबिस से वह खास बड़ा नहीं था। चारों ओर रहा होगा कोई पन्द्रह मील का घेरा और जिस ओर से

हम जा रहे थे उस ओर उसका बाहरी परकोटा प्रायः सभी सुरक्षित था····· टूटा हुआ नहीं था। वह बहुत ऊँचा तो नहीं था पर फिर भी कम से कम चालीस फीट ऊँचा जरूर था। वैसे तो कौयर की रक्षा वह भयानक दलदल ही करने को काफी थे पर यह भी सुन्दरता और शायद गृहयुद्ध अथवा कलह को काबू में रखने के लिये बनाया गया था। परन्तु पास जाकर हमें आश्चर्य हुआ क्योंकि वह दीवाल जितनी ऊँची थी उतनी ही मोटी थी और तभी शायद अब तक बची हुई भी थी। वैसे वहाँ की जमीन भी नीचे धसक गई थी। वह बड़ी-बड़ी चट्टानें थीं जो पहाड़ से काट कर असंख्य हाथों ने जाने कितनी नर-बलि, पशु-बलि देने के बाद वहाँ लाकर रखी थीं। इतने साफ अच्छे कटे हुए पत्थर थे वह कि उन्हें देख कर एक आश्चर्यमिश्रित भय होता था।

खाई कई जगह अब भी पानी से भरी हुई थी और यह करीब सत्तर या अस्सी फीट चौड़ी थी। एक स्थान पर पत्थर के ढेर पड़े थे जो खाई के बीच होकर अंदर जा रहे थे। हम उन्हीं पर होकर अंदर गए। यह एक पुराने पुल के भग्नावशेष थे। मैंने नीचे झाँककर देखा, वह अब भी कहीं-कहीं पोला था। पुल बहुत बड़ा और चौड़ा था। उस समय मुझे उस हजारों साल पुराने दृश्य को देखकर रोमांच सा हो आया था। आगे जाकर पत्थर इधर-उधर लुढ़क गए थे। और हम तनिक कठिनाई से उस पर होकर ऊपर चढ़े जहाँ किसी समय एक दीर्घ द्वार रहा होगा और जहाँ अब केवल नीचे का मोटा पक्का फर्श और दोनों ओर मोटी दीवालें खड़ी थीं। फर्श पर कहीं-कहीं दर्जों में घास भी उग आया था। अब हम कौयर की राजधानी में प्रवेश कर चुके थे। ओह! मैं कैसे कहूँ मैंने क्या देखा। काश! मेरे पास उस समय की उठी हुई मेरी भावनाओं को लिखकर दिखाने के लिये शब्द होते! सामने ही एक दीर्घ मार्ग था जो नीचे से पक्का था। उस पर करीने से कटे हुए चौकोर मोटे पत्थर बिछे थे। इतनी मजबूत दर्जें थीं कि अब भी उस पर बहुत थोड़ी मिट्टी और घास जम पाई थी। ढाल उसका इतना अच्छा था कि तनिक भी पानी उस पर नहीं ठहरता था। टेम्स नदी के चौड़े घेरेदार पुल से भी वह करीब ढाई गुना चौड़ा था। यह शायद उस जमाने का राज-पथ था। हम आगे चले। जहाँ उन दिनों फुलवारियाँ और बाग रहे होंगे वहाँ अब घनी झाड़ियाँ लदी हुई

थीं परन्तु उन के बीच से जाने वाले मार्ग अब भी सुरक्षित थे क्योंकि वह नाना प्रकार के पुष्पों के आकार के पक्के बने हुए थे। पत्थर सभी एक रंग के थे। इमारतें प्रायः सभी टूट गई थीं जिनके पत्थर टूट कर बिखर गए थे। दीवालें मोटी-मोटी और कहीं-कहीं अब भी चिकनी थीं! कहीं-कहीं पच्चीकारी युक्त सुन्दर मोटे स्तम्भ अब भी खड़े थे। उन पर छत नहीं थी। मैंने एक ऊँचे टीले पर चढ़ कर देखा। खंडहर मीलों तक फैले हुए थे। आगे चलकर हमें और भी स्तंभ खड़े मिले जो सभी नारियल के तने के समान गोल और स्निग्ध थे। महानगर के बीच करीब आठ एकड़ जमीन पर ऊँची दीवालों के खंडहर पड़े थे जिनकी नीवें और कहीं-कहीं दीवालें भी बनी हुई थीं। वह एक प्राकारों से खिंची हुई इमारत रही होगी जिसे देखकर ही मैंने अनुमान लगाया कि हो न हो यह कोई मंदिर था। हम लोग अंदर गए। एक के अंदर दूसरा प्राकार इस तरह कोई सात बने हुए थे। बाहरी प्राकार से भीतरी छोटा होता जाता था। दीवालें सब पत्थर की थीं और स्थान-स्थान पर सुन्दर स्तंभ खड़े थे। पत्थर पृथ्वी पर भी बिछे थे और उनकी जड़ावट इतनी मजबूत थी कि उन हजारों वर्षों में उनके बीच तनिक भी घास नहीं उग पाई थी। धूल भी बहुत ही कम थी शायद इसलिये कि कौयर में जहाँ चारों ओर दलदल ही दलदल थे वहाँ धूल उड़ती भी तो कहाँ से। पहाड़ चट्टानों का था और समुद्र से धूल आती नहीं थी। अंदर के प्राकारों में खंभे बहुत मोटे, स्निग्ध और सुन्दर थे। उन पर विचित्र आकृतियाँ खुदी हुई थीं। इस मंदिर का बाहरी तोरण बहुत ही ऊँचा रहा होगा क्योंकि इसकी एक ओर की दीवाल अब भी खड़ी थी। दीवालों का तो यहाँ कहना ही क्या था! पचास फीट मोटी और पहाड़ जैसी मजबूत थीं। खंभे बीस फीट तक मोटे वहाँ मौजूद थे जिनकी ऊँचाई सत्तर-अस्सी फीट से कम न थी।

मंदिर में घुसते ही मेरा मन बोला कि कौयर की सभ्यता नष्ट होने के उपरांत आयशा के अतिरिक्त हम ही थे वह मानव जो वहाँ पहुँच सके थे। उस भव्य गरिमा ने मुझे मानों दबा लिया था :

तोरण के पास जाकर आयशा बोली :

"बाँई ओर·····।" और वह लिओ का सहारा लेकर पालकी से उतर पड़ी। फिर कहने लगी :

"आगे के घेरे में मेरे कैलीक्रेटीस ! एक बड़ा कमरा बना था·····यह वही स्थान है जहाँ दो हजार साल पहले मैं, तुम और वह मिश्री एमिनार्टस आकर रात को ठहरे थे। उसके बाद· आज ही मैं यहाँ आई हूँ·····शायद वह अब भी हो !"

और तब हम उसके पीछे-पीछे चलने लगे। मैंने देखा बिलाली कितना उदास था। वह कौयर के उन खंडहरों से भय खाता था। मुझे आश्चर्य हुआ कि यह एमैहैग्गर लोग कौयर के मुर्दों के साथ और वह उनकी कब्रों में ही रहने से तो डरते नहीं थे और डरते थे तो उन खँडहरों से जो कभी उनके घर थे। पर बिलाली ने मुझसे कहा कि यह स्थान इसलिये भयानक था कि यहाँ उन मृतकों की आत्माएँ घूमा करती हैं।

एक प्राकार को टूटी-फूटी सीढ़ियाँ चढ़कर हमने पार किया और भीतरी घेरे में पहुँचे। सामने ही एक बड़ा कक्ष दिख रहा था जो वैसे तो किसी समय सुन्दर रहा होगा, पर इस समय उजाड़ दिखाई दे रहा था पर वैसे वह टूट हुआ न था। उसे देखते ही आयशा उँगली उठा कर बोली :

"वह है ! वह ! देखो तो वह अभी तक ठीक है।"

और तब उसने गूँगों को इंगित किया जिन्होंने तुरन्त अपने कपड़ों के अन्दर से लालटेनें निकाल कर जला लीं। मैंने देखा कि इन लालटेनों में 'ममी' काट कर जलाई जाती थीं। वह टुकड़ा पानी में भिगो कर बत्ती के स्थान पर रख दिया था जो कम से कम दो घंटे जलता रहता था। उसके बुझने पर दूसरा टुकड़ा डाल दिया जाता था। ममी के दीप उज्वल और साफ रोशनी फेंकते थे। उन दीपों के सहारे अब हम उस सामने के कमरे में घुस गए जो अँधेरा था। यह एक दीवाल पोली करके बना दिया गया था और इसके बीचोबीच एक पत्थर की लम्बी-चौड़ी मेज थी जिससे अन्दाजा लगता था कि वह रहने का कमरा था। शायद द्वारपाल उसमें रहा करता हो।

हमने उस स्थान को, जितना हम उस अंधकारपूर्ण स्थान को कर सके, साफ किया और फिर बैठ कर खाना खाने लगे। ठंडा मांस और जल लेकर हम खाना खाने बैठे तो आयशा हमसे दूर जा बैठी। जब हम खा चुके तो वह बोली :

"ओह ! मेरे कैलीक्रेटीस ! यह मांस भोजन बर्बरों का लक्षण है। यह

शरीर के लिये लाभदायक नहीं होता। तुम जब उस जीवन-ज्योति की लपट में नहा कर निकलोगे तो मेरी भाँति केवल गेहूँ के आटे की रोटियाँ, फल और दूध ही खाया करोगे·····वह खाना सब से अच्छा खाना है। और जानते हो मैं तुम्हें आज रात यहाँ क्यों लाई हूँ ?·····," हठात् वह उछल कर पूछ बैठी। फिर स्वयं शांत हो गई और धीरे से कहने लगी :

"इसलिये कि तुम्हें वह स्थान दिखा दूँ जहाँ आज से दो हजार साल पहले तुम्हारे शव को मैंने अपने हाथों लिटाया था। ओह ! वह दृश्य अब भी मेरी आँखों के सामने भयानकता से घूम जाता है ! तुम मर गए थे·····मैंने तुम्हें मार डाला था और फिर मैं रोई थी। तुम्हें फिर वह मिश्री एमिनार्टस और मैं उठा कर यहाँ लाई थीं और देखो अब भी तुम ठीक उसी जगह लेट रहे हो।"

लिओ यह सुनते ही एकदम उछला और उस स्थान से परे हट गया। पर जैसे आयशा ने उसे देखा ही नहीं। वह कहती गई : "और अब जब चाँदनी खिली होगी मैं तुम्हें संसार की अद्‌भुत वस्तु दिखाऊँगी जिसे आज तक किसी ने नहीं देखा है। मैंने दो हजार साल पहले उसे देखा था ! ओह ! यह कौयर के लोग महान् थे ! महानतम थे ! इनकी सभ्यता उच्चतम थी !"

"क्या है वह वस्तु आयशा ?" मैंने पूछा।

वह हँसी फिर बोली :

"चाँद को मुखरित होकर अपना प्रकाश फैलाने दो और तुम स्वयं उसे देखना·····हौली ! अधीर न होओ !"

× × × ×

२२

रात गहरी हो चुकी थी। चाँद पूर्ण प्रकाश से उन खंडहरों को स्थान-स्थान पर चमका कर एक अद्‌भुत दृश्य का प्रदर्शन कर रहा था। हम उस कक्ष से बाहर निकाल कर भग्नावशेषों पर चढ़ कर आगे बढ़ रहे थे। ओह ! मैं अब फिर असहाय सा लगता हूँ ! कैसे उस परियों के से लोक की उस चाँदनी में लगने वाली सुन्दरता को लिखूँ ! मेरी कलम फिर धोखा देने लगी है ! वह अवशेष

जब ऐसे थे तो कैसा रहा होगा वह महानगर ? आठ हजार साल पहले का वह संसार का सर्वश्रेष्ठ केंद्र ! उसकी भव्य गरिमा, उसकी प्राचीनता, उसका वह सौंदर्य मनुष्य को रोमांचित करने के लिये काफी थे। सुन्दर दीर्घ प्राकार, ऊँचे-ऊँचे पंक्तिबद्ध स्तंभ, प्राकार के अन्दर प्राकार·····अगणित प्राकार ! नीरवता, चाँदनी में चमकने वाले वह घिसे हुए पत्थर और विशाल तोरण ? ये सभी कला के जीते-जागते उदाहरण मानों उन कौयर की आत्माओं का आवाहन कर रहे थे ! कितना सुन्दर था वह सब और कितना भयंकर ! उसकी प्राचीनता ही आतंकित करने के लिये पर्याप्त थी। उन विशाल इमारतों की चाँदनी में पड़ी हुई दीर्घ छायाएँ मानों उन अतृप्त आत्माओं का रूप था जिनमें चलते समय भी भय की सिहरन शरीर में दौड़ जाती थी। हम न जाने कब तक खड़े उस मनोरम, अद्‌भुत और स्मृति को कुरेदने वाले दृश्य को देखते खड़े रहे तभी हमें आयशा की मधुर वाणी सुनाई दी :

"आओ !"

और हम मंत्र-मुग्ध की भाँति उसके पीछे चलने लगे। वह कहने लगी : "अब हम भीतर के प्राकार में जायँगे। वहाँ मैं तुम्हें संसार का सब से बड़ा आश्चर्य दिखाऊँगी। मैं तुम्हें कठोर चट्टान का वह सुन्दर पुष्प दिखाऊँगी जो स्वयं आश्चर्य का केंद्रीभूत है·····वह समय की गति से सुरक्षित है क्योंकि वह स्वयं वहाँ खड़ा-खड़ा समय का उपहास करता है। वह मानव के हृदय में लालसा भर देता है परन्तु फिर भी वह अप्राप्य है क्योंकि उसका पर्दा न कोई उठा सका है न उठायेगा !"

और इससे पहले कि हम और कुछ पूछें आयशा झटके से सामने आने वाले एक विशाल तोरण में घूम गई। अन्दर चन्द्र प्रकाश तीव्र गति से छिटक रहा था। जो कुछ हमने देखा उससे एकदम हमारे मुँह से आश्चर्य की चीख निकल गई। सौ गज लम्बे और सौ गज ही चौड़े एक पक्के प्राङ्गण के बीच गहरे रंग के एक पत्थर की विशाल गेंद बनी रखी थी। यह नीचे एक चौकोर काले पत्थर पर टिकी हुई थी। गेंद करीब पचास फीट मोटी और चिकनी बनी हुई थी। मैंने बच्चों की किताबों में और खिलौने ऐसे जरूर देखे थे। पर इतनी बड़ी पत्थर की एक गेंद हो भी सकती है कभी सोचा भी नहीं था·····

मेरी निगाहें जब ऊपर उठीं और वहाँ जो कुछ मैंने देखा उससे एक बार मेरी साँस रुक गई और हृदय की गति भी मानो रुक गई। श्वेतमर्मर की बनी हुई एक विशाल नग्न स्त्री उस पर खड़ी आगे को झुक रही थी। उसके पीछे बड़े-बड़े पंख फैले हुए थे। यह मूर्ति उत्तम श्वेतमर्मर की चट्टान का गर्भ काट कर बनाई गई थी जो इतने हजारों साल बाद भी चाँदनी में ऐसी चमक रही थी जैसे नई हो। वह ऐसी झुकी खड़ी थी मानो अपना बोझ अपने ही पंखों से तौल रही हो। उसकी कटि के नीचे के भाग में एक पत्थर में ही खुदे पत्ते के आकार से उसकी मर्यादा छिपी हुई थी। उसकी पीन जँघाएँ, नितंब तथा स्तन सब नग्न थे। वह अपनी दोनों सुडौल बाँहें फैलाये खड़ी थी और नीचे देख रही थी। वह करीब तीस फीट ऊँची थी परन्तु उसकी सारी देह इतनी अच्छी छटाई से बनी थी कि वह अद्‌भुत मालूम होती थी। परन्तु सब से बड़ा आश्चर्य यह था कि वह अपने सिर और ग्रीवा को एक कपड़े में छिपाये खड़ी थी। यह भी पत्थर में छटा हुआ था और जाली के कपड़े की भाँति पारदर्शी बनाया गया था। इस कपड़े के नीचे उसका बाँयाँ स्तन भी छिपा था जो उस कपड़े सहित उन्नत उठा हुआ था, उसका दायाँ स्तन नग्न था और अब उसका एक भाग टूट गया था। आयशा ने बाद में बताया कि जब वह पहले वहाँ गई थी वह स्तन भी साबित था। मैं देर तक इसे देखता रहा और वह उस चाँदनी रात में चमचमाती हुई हमें मानो बुलाती रही। वह इतनी सुन्दर मुखाकृति और यौवन से परिपूर्ण शरीर वाली थी कि निगाहें उस पर एक बार ठहर कर हटती नहीं थीं, लिओ उसे एकटक देख रहा था।

"यह कौन है ?" मैंने आखिर थोड़ी देर बाद आयशा से पूछा।

"तुम सोचकर अपनी बुद्धि से नहीं बता सकते ? ओह ! हौली ! कहाँ गया तुम्हारा ज्ञान ?·····यह सत्य की देवी है जो दुनिया के ऊपर खड़ी है। इसका सुन्दर मुख ढँका हुआ है और यह अपने बच्चों से कह रही है कि आओ मेरा पर्दा हटा कर मेरा सुन्दर मुख देखो। यह देखो नीचे क्या लिखा है। यह निश्चय ही उन कौयर के लोगों के धर्म का महान् विषय रही होगी·····शायद उनकी धार्मिक पुस्तकों में भी इसका उल्लेख होगा।"

और तब वह उस नीचे के पत्थर के पास जड़े हुए पत्थर में खुदे अक्षरों को पढ़ने लगी। मैंने देखा अक्षर बिल्कुल स्पष्ट थे और देखने में विचित्र प्राचीन

चीनी भाषा जैसी दिखाई देती थी। उसने पढ़ा और अनुवाद करके बताया लिखा था:

"आह ! क्या संसार में ऐसा कोई नहीं है जो मेरा घूँघट हटाकर मेरा मुख देखे ? मेरा मुख बहुत ही सुन्दर है ! जो मेरा घूँघट हटायेगा मैं उसी की हो जाऊँगी और मैं उसको शान्ति, ज्ञान और बुद्धि रूपी बच्चे दूँगी·····"

एक आवाज, "हे देवी ! तेरे पीछे सब फिरते हैं और वह सभी तुझे पा लेना चाहते हैं पर देख ! तू कुमारी, जैसी आई थी, वैसी ही चली जायगी ! समय की गति बहती चली जायगी पर तुझे वर कभी न मिलेगा, संसार में स्त्री के गर्भ से उत्पन्न न कभी कोई था और न कोई ऐसा होगा जो तेरा घूँघट हटा कर तेरा सौन्दर्य देख सके, मृत्यु ही तेरा पर्दा हटायेगी बस···उसी से तेरा विवाह होगा··· और वह देखो ! सत्य की देवी रो रही थी।"

मैं भौंचक सुनता रहा।

"तुमने सुना ?" आयशा बोली, "इन प्राचीन कौयर के लोगों की देवी यही थी और उन्होंने इसी के नाम पर मन्दिर बनवाये, मठ बनवाये, विशाल चट्टानों को काट कर उनमें जान फूँक दी। जानते हुए भी कि वह इसे कभी नहीं पा सकेंगे ! कितनी बड़ी विडंबना थी यह !!"

"कितना बड़ा सत्य है", मैंने कहा, "सत्य को न किसी ने पाया और न कोई कभी पायेगा·····आज भी लोग इसी की खोज में लगे हैं पर कितना असम्भव है यह अनुसन्धान !!"

"यह सब से बड़ा आश्चर्य है," लिओ ने कहा।

"परन्तु मेरे लिये यह इतना नहीं है कैलीक्रेटीस ! जितने तुम हो क्योंकि मैंने तुममें इसे पा लिया है", आयशा ने लैटिन में कहा। बिलाली के सामने वह अपने प्रेम की बात प्रगट नहीं करना चाहती थी।

मैंने फिर एक बार उस विशाल मूर्त्ति को देखा जो चंद्रमा के धवल प्रकाश में जगमगा रही थी। कितनी सुन्दर थी वह और वह विशाल गोला ! मैं देर तक उसे देखता रहा। उस गोले पर कुछ रेखाएँ खुदी हुई थीं जो शायद दुनिया के नाना देशों की सीमा थीं पर उस प्रकाश में मैं उन्हें साफ नहीं देख सका। मेरे मन में अब भी यही दुख है कि मैं उसे एक बार फिर दिन के उजाले में न देख सका। जहाँ तक मेरा विचार है, कौयर के लोग शायद विज्ञान से भी परि-

चित थे और उन्हें दुनिया के गोल होने का और उसके भिन्न-भिन्न देशों के नक्शे भी मालूम थे। उनकी महान कला का उदाहरण तो सामने ही खड़ा था। उन सत्य के पुजारियों के सामने मेरा सिर झुक गया। जब हम चाँदनी से मुखरित उन प्रांगणों को पार करते हुए बाहर आये उस समय मैं कौयर के लोगों के प्रति श्रद्धा से नत हो गया था।

× × × ×

२३

उषा की प्रथम किरण जब फैली गूँगों ने हमें जगा दिया। उस भग्नावशेष में जब आँखें खुलीं तो क्षण भर को स्मृति ही मानो लुप्त हो गई, दूसरे ही क्षण ध्यान आया कि हम आठ हजार साल पुराने एक महान नगर के सुनसान खंडहरों में पड़े हैं जहाँ निश्चय ही हजारों साल से कोई मानव नहीं आया था। चारों ओर निस्तब्धता छाई थी। चाँद अभी-अभी डूब गया था। हम उठे और नित्य-कर्म से निवृत होकर पास ही संगमर्ममर के बने एक फव्वारे के पास पहुँच कर स्वच्छ जल से मुँह-हाथ धोये। यह एक प्राकृतिक चश्मा था जिसे कौयर के लोगों ने श्वेतमर्मर से फूल काटकर सुन्दर रूप से सजा रखा था। अद्‌भुत पच्ची-कारी थी उस पर जो अभी तक टूटी नहीं थी। निर्मल जल कल-कल नाद करता बहा चला जा रहा था। बाहरी प्राङ्गण के उत्तरी छोर पर आयशा उसी भाँति काले लबादे से ढँकी खड़ी थी, मुझे ध्यान हुआ कि वह उसी सत्य की देवी की भाँति थी जिसका मुख छिपा हुआ था। मुझे समझते देर न लगी कि उसी मूर्ति को देख कर आयशा ने अपना उज्वल मुख छिपा रखा था कि उसे आकर वही पावे जो उसे पाने का असली हकदार था। मैंने देखा आज उसका वह सदा-का ऊँचा रहने वाला सिर झुका हुआ था। अन्य समयों में वह ऐसा उन्नत रहता था कि यदि हजार उसी के शरीरों वाली स्त्रियाँ काले लबादे ओढ़ा कर मेरे सामने लाई जातीं तो भी मैं उनमें से उसे पहचान लेता। जब हम उसके पास पहुँचे तो उसने हँसकर हमारा स्वागत किया, परन्तु मैंने देखा कि वह हँसी कितनी म्लान थी, लिओ ने उसका अभिवादन किया और फिर उससे लैटिन में पूछा :

"कैसी सोई हे रानी ?"

"ओह ! मेरे कैलीक्रेटीस ! रात बहुत ही बुरी बीती। विचित्र भयानक स्वप्नों ने मुझे दबा लिया। पर मै अब सोचती हूँ कि भला मेरा कोई बिगाड़ ही क्या सकता है।" फिर मैंने सुना वह अत्यंत करुण स्वर से जो स्त्रियों को किसी भावी भय के कारण हो जाया करता है, कहने लगी :

"जाने क्या होने वाला है ? मै तनिक सो गई थी और जब जागी तुम आये पर मुझे न मिले। मुझसे अलग हो गए। ओह ! मेरे प्राण ! मैंने जैसे तुम्हारी प्रतीक्षा में सदी पर सदी बिता दी है क्या तुम भी मेरे लिये इससे सौवाँ समय बिता सकोगे ? कम से कम मेरे बारे में अपने हृदय में कुछ करुणा तो रखना !"

वह इतने करुण स्वर से यह सब कह रही थी कि लगता था अब फफक कर रो पड़ेगी। लिओ उसे सुनकर द्रवित हो उठा। उसने स्नेह से उसके सर पर हाथ रखा और मानो उसे सांत्वना दे रहा था। आयशा मानों चौंक उठी और अब अपने प्रकृतिस्थ स्वर में जल्दी से बोली :

"ओह ! अब व्यर्थ समय नष्ट नहीं करना चाहिये। शीघ्र चलो क्योंकि अभी पूरा एक दिन और चलना है·····"

पाँच मिनट बाद ही हम उस भग्न नगर में होकर जीवन की अमर ज्योति देखने चले जा रहे थे। वह कितना भव्य लग रहा था ! चारों ओर गहरी नीरवता छाई हुई थी। बहुत शांत वातावरण था। पक्के फर्श पर हमारे पदचापों की प्रतिध्वनि स्पष्ट सुनाई दे रही थी। मैंने देखा आयशा सिर झुकाये पालकी में बैठी थी। उस स्त्री को इस प्रकार बैठे देख कर मुझे आश्चर्य हो रहा था। वह जिसने कभी किसी के सामने सिर नहीं झुकाया था आज जाने उसे क्या भय हो गया था इस प्रकार उदास बैठी थी।

परन्तु जब हम थोड़ी देर बाद उन खंडहरों में होकर उस नगर के पिछली ओर बने दीर्घ परन्तु टूटे द्वार में से बाहर निकले, उस समय सूर्य की प्रथम रश्मियाँ चारों ओर फैलने लगी थीं और जैसे-जैसे धूप फैलती गई आयशा की उदासी भी दूर होती गई। अब हम कौयर के खंडहरों से दूर बीहड़ वन में होकर चले जा रहे थे। प्रभात की वह बेला, वह मंद मलयानिल ! अत्यंत सुखकर लग रहा था।

चढ़ाई पर पहुँचते ही आयशा हँस पड़ी। मैंने साश्चर्य देखा कि एक बार फिर उसकी हँसी कितनी मधुर और लुभावनी हो गई थी, वह बोली :

"थोड़ी देर मुझे रात्रि के स्वप्नों ने उदास कर दिया था, मैं सोचती हूँ यह इसीलिये था कि तुम मेरे कैलीक्रेटीस उसी स्थान पर लेट गए थे जहाँ तुम उस अतीत काल में मरे पड़े थे। उन्हीं दुखद स्मृतियों ने मुझे चिंता युक्त कर दिया था। पर अब अंधेरा भाग गया है। देखो कितनी निर्मल और सुहावनी धूप फैल रही है। यह जंगली एमैहैग्गर लोग कहा करते हैं कि कौयर में मृत आत्माऐं आती हैं अब मुझे भी इनकी बातों का विश्वास हो गया है—ओह ! यह स्थान बहुत बुरा है मैं यहाँ अब कभी नहीं आऊँगी !!"

मुझे हठात् यह बात सूझी कि जब पुराना कैलीक्रेटीस अब लिओ बनकर सामने ही मौजूद है तो भला उसकी आत्मा अब कौयर में कैसे भटक सकती थी और मैंने अपनी शंका उससे कह सुनाई। वह सुनकर तनिक देर चुप रही फिर बोली :

"ओह हौली ! तुम निश्चय ही मौका नहीं चूकते। मेरा इशारा कैलीक्रेटीस की आत्मा की ओर न था।"

फिर वह स्वयं ही भुनभुनाई परन्तु वह भी मैंने सुन ली। वह कह रही थी :

"वह···वह मिश्री स्त्री ! आह ! वह अब भी मेरा पीछा नहीं छोड़ रही है। और शायद अब यूस्टेन !"

यूस्टेन का नाम सुनते ही मेरा मन थर्रा गया तो क्या वह अब भी हमारे साथ लगी हुई थी।

आयशा थोड़ी देर कुछ और सोचती रही फिर मानो वह सब कुछ विषाद भूल कर एक बार फिर प्रकृतिस्थ हो गई। एक विस्मृत खुले स्थान में घनी छाया में हम रुके और यहीं हमने भोजन किया। मैंने और जौब ने फिर वही मांस खाया, पर लिओ ने न जाने क्यों मांस खाने से इनकार कर दिया। उसने आयशा के साथ रोटियाँ व फल खाकर ही अपनी भूख मिटाई। लिओ को न जाने क्या हो गया था जो एकाएक वह मांस से विमुख हो गया और ऐसा कि वह आज भी मांस नहीं खाता है।

करीब दो बजे मध्याह्न हम एक विशाल पवत की जड़ में पहुँच चुके थे जहाँ से वह गहरा पर्वत ज्वालामुखी के फैले होंठ के समान चट्टान उठाये खड़ा

था। वह सीधा खड़ा था जिस पर चढ़ना असंभव सा प्रतीत हो रहा था। दो हजार फीट ऊँचा रहा होगा वह और देखने में भी विकराल लग रहा था। उसकी सीधी चढ़ाई देखकर मेरा मन दहल उठा। मैंने लिओ से कहा : "कहीं इस पर चढ़ने को न कहे यह ?"

पर वह तो मंत्र-मुग्ध जैसा सब कुछ करने पर तुला हुआ था।

आयशा यहाँ पालकी से उतर पड़ी और बोली :

"अब यहाँ से हमारी मेहनत शुरू होगी, अब हम पैदल पर्वत पर चढ़ेंगे और ये लोग हमारे साथ नहीं चलेंगे।"

फिर वह बिलाली से बोली :

"तुम इन आदमियों को लेकर यहीं ठहरो, हम कल मध्याह्न तक लौट आवेंगे यदि किसी कारण न भी आये तो हमारी प्रतीक्षा देखना।"

"जो आज्ञा हे 'वह जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य है !" बिलाली ने सिर झुकाकर उत्तर दिया और वह कहता गया :

"अगर यहीं प्रतीक्षा करते हम वृद्ध भी हो जायँ, मरणासन्न भी हो जायँ, तब भी यहाँ से नहीं हिलेंगे !!"

मैं आयशा का इरादा सुन कर सोच ही रहा था कि किस प्रकार उस पर्वत पर चढ़ सकेंगे कि वह मुझसे बोली :

"और हाँ हौली ! तुम अपने नौकर को भी यहीं छोड़ दो क्योंकि यह गँवार है और न इसमें इतना साहस और विवेक ही है कि यह उन महत्वपूर्ण दृश्यों को देखकर समझ सके। उलटे यह बुरी तरह डर जायगा और शायद मर जाय। वह अद्‌भुत ज्योति हर एक की निगाहों में पड़नी भी नहीं चाहिये !"

मैंने उसकी सारी बात जौब को जब अंग्रेजी में सुनाई तो वह मेरा भोला पुराना सेवक अत्यंत दीन बन गया और मुझसे बालकों की भाँति मचलकर कहने लगा :

"नहीं, नहीं मेरे मालिक ! ऐसा न करो। मुझे भी अपने साथ ले चलो। मेरे लिये इससे भी भला-बुरा और क्या होगा। इन लोगों के साथ तो मुझे यहाँ गूँगा बन कर रहना होगा और फिर पीछे से यह मुझे गर्म बर्तन रख कर मार डालेंगे ! मालिक ! मुझे साथ ले चलो।"

मैंने आयशा को उसकी बातें बतला दीं। उसने कंधे झटक कर कहा :

"इसकी मर्जी ! पर यदि इसे कुछ हो गया तो मुझसे कुछ न कहना। चलो, खैर, यह इस तख्ते और लालटेन को ले चलेगा।"

उसके सामानों में जो लम्बा पर बहुत हलका तख्ता बँधा हुआ था और जिसे अब तक एक गूँगा सेवक ला रहा था अब मैंने ध्यान से देखा। मैं इसे अब तक पर्दे ठीक करने की लकड़ी समझ रहा था जिसे मैंने सोचा कि वह सेवक सामान उठाने की सुविधा के लिये लाया था पर अब वह तख्ता महत्व का निकला। हमारी अद्भुत खोज में जाने उसका कौन-सा स्थान था।

जौब ने उसे उठा लिया। मैंने देखा वह निहायत मजबूत और हल्का था। मैंने और लिओ ने उसे एक ओर टिका कर झुकाना चाहा पर वह मानो पत्थर का था जो एक इंच भी नहीं झुका। आयशा हँस पड़ी बोली :

"इस पर व्यर्थ अपनी शक्ति क्यों व्यय कर रहे हो आगे चलो, वहाँ साहस और बल का परिचय देना।"

अब तक बिलाली इत्यादि करीब दो सौ गज दूर पर पहाड़ की ओट झाड़ियों में चले गये थे। जाते-जाते बिलाली ने मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर दबाया था। मैंने देखा कि वह व्यक्ति मुझसे स्नेह करने लगा था।

आयशा एकदम मुड़ी और पहाड़ पर चढ़ने लगी। वह फुदक कर एक भीमाकार चट्टान पर चढ़ गई और हमें भी उसका अनुसरण करना पड़ा। वह वहाँ से उछली और दूसरी चट्टान पर, फिर तीसरी, फिर चौथी, इसी प्रकार चढ़ती गई और हम उसके पीछे उछलकर चढ़ने लगे। वह उछलती हुई अद्भुत लग रही थी। उसकी फुर्ती देख कर हमें आश्चर्य हो रहा था। वह निर्भीक सिर उठाये अपने इकहरे शरीर को साधे चढ़ी चली जा रही थी। पहाड़ जैसा कि नीचे से सीधा दिखाई दे रहा था, चढ़ने पर पता लगा कि ऐसा नहीं था। फिर भी बड़ी सीधी और कठोर चढ़ाई थी। एक-दो स्थान तो ऐसे भयंकर थे कि उनसे पीछे मुड़कर देखा भी न जाता था। वैसे चढ़ाई तो सीधी थी पर फिर भी थके नहीं थे। केवल जौब के लिये उस तख्ते को लेकर साधते हुए चढ़ना थोड़ा असुविधाजनक अवश्य था।

करीब पचास फीट ऊपर जाकर हमने नीचे देखा। हम कोई साठ या सत्तर फीट चढ़ने के स्थान से बगल में हो गये थे क्योंकि हमारी चढ़ाई इस प्रकार की थी जैसे केकड़े यहाँ-वहाँ कूद कर चढ़ते हैं।

यहाँ पहाड़ का वह भाग अन्दर धँस गया था। हम उसमें घुस गए। पहले वह मार्ग सँकरा था फिर चौड़ा होता चला गया। वह स्थान मानो उस पर्वत का खुला पुष्प द्वार था क्योंकि उसकी बनावट बिल्कुल पंखड़ी जैसी थी। हम अन्दर धँसते चले गये। अब हम पहाड़ की त्वचा के अन्दर घुस गए थे। कठोर अनगढ़ चट्टानों से वह सुरंग घिरी हुई भयानक लग रही थी। दोनों ओर भीमाकार वह चट्टानें प्रति पग ऊँची होती चली जा रही थीं। यह मनुष्य के हाथों का बना मार्ग नहीं था क्योंकि यह बिल्कुल प्राकृतिक लगता था। 'कदाचित भीतर कभी ज्वालामुखी फटा हो और उसकी गर्म हवा इसी मार्ग से चट्टानों को फाड़कर बाहर निकल गई हो,' मैंने सोचा क्योंकि कौयर की गुफाओं की बनावट और यहाँ के पत्थरों में बहुत अन्तर था। इस मार्ग में हम पचास गज तक अन्दर चले गये। अन्त में वह मार्ग सामने से बन्द हो गया और दाहिनी ओर एक अँधेरी गुफा दिखाई देने लगी। यहाँ आयशा के कहने से दोनों लालटेनें जला ली गईं। आगे-आगे एक लालटेन हाथ में लेकर आयशा मार्ग दिखाती हुई गुफा में घुस गई और हम उसके पीछे-पीछे चले। दूसरी लालटेन मैंने ले ली। ओफ! थोड़ी ही देर बाद मालूम हो गया कि यहाँ मार्ग कितना भयंकर था। गुफा बहुत सँकरी तो न थी पर अधिक चौड़ी भी नहीं थी। उसकी फर्श उबड़-खाबड़ और पथरीली थी जिसमें कई स्थान पर गहरे गड्ढे भी थे। अँधेरे में उनमें गिर कर हाथ-पैर आसानी से टूट सकते थे। एक बड़ी कठिनाई यह भी थी। कि वह गुफा सीधी नहीं थी। उसमें अगणित स्थानों पर घूम-घूम कर आगे जाना पड़ता था और पूरी गुफा में थोड़ी-थोड़ी ढलाई बराबर चली आ रही थी। आयशा गड्ढों पर कूदती, तेज परिचित कदमों से आगे बढ़ी चली जा रही थी। लिओ और मैं उसका चुपचाप अनुसरण कर रहे थे। केवल जौब अंग्रेजी में उस स्थान, उस देश, उस रानी और अपने भाग्य को कोसता हुआ चढ़ रहा था। हम शायद उस गुफा में घंटे भर चलते रहे और तत्पश्चात् उसके दूसरे छोर पर निकले। तेज आँधी का झोंका आया

और दोनों लालटेनें भक से बुझ गईं। यह स्थान वैसे तो खुला था, यहाँ प्रकाश बहुत ही क्षीण था। परन्तु अब सूर्य उतर चुका था और सब से बड़ी बात यह थी कि यहाँ चारों ओर कम से कम तीन-तीन हजार फीट ऊँचे पहाड़ खड़े थे। गुफा के द्वार से हम करीब दस कदम पर जाकर रुक गए। सामने एक अथाह गढ्ढा था जिसका तल नहीं दिखता था। प्रकाश इतना क्षीण था कि उस मृत्यु के गह्वर का दूसरा छोर भी नहीं दिखता था। उसे देखकर मेरा अंतस काँप गया। लिओ फटी दृष्टि से उसके तल को देखने का निष्फल प्रयत्न कर रहा था। जौब तो उसे देख घबरा गया और उसके मुँह से चीख निकल गई। वह पृथ्वी के गर्भ को फाड़ता हुआ जाने कहाँ अनंत तक चला गया था। मैंने देखा वह भयंकर था। निरंतर बिजली पर बिजली शायद वहाँ सहस्रों वर्षों से गिरती रही थी और तल को खोदती चली गई थी। उसके अंदर गहरा अभेद्य अंधकार था। यहीं आकर हम खड़े हो गए। हवा का यह हाल था कि मानो तूफान छूट निकला था। उसके भीषण थपेड़ों में सीधा खड़ा रहना भी असंभव हो रहा था। भयानक स्थान था वह जिसे देखकर भय से मेरे रोम खड़े हो गए। अब अंधकार में हमारी आँखें कुछ-कुछ वहाँ देखने लगी थीं। जहाँ हम खड़े थे उस स्थान से एक पत्थर आगे की ओर उस अथाह गह्वर के ऊपर होता हुआ निकल गया था। इस पत्थर का आकार विचित्र था उसका उदाहरण केवल एक ही चीज से दिया जा सकता है। वह कुछ-कुछ मुर्गे के पैर में लगी हुई ऐंड़ के समान था जो हमारी ओर से चल कर आगे चंद्राकार मुड़ कर कोई अस्सी गज चला गया था। जहाँ से वह निकला था वहाँ मोटा और आगे पतला होता चला गया था। आगे वह दूसरी ओर जुड़ा हुआ नहीं था। वह लम्बा दाँत सा अधर एक ओर से दूसरी ओर निकला हुआ ठीक मुर्गे की ऐंड़ जैसा दिखता था। आयशा ने कहा हमें उसके ऊपर होकर आगे जाना है और बिना एक शब्द भी कहे वह उस पर चलती हुई आगे बढ़ गई। मजबूरी थी, हम डरते-डरते आगे बढ़े, पर उस विकराल दाँत पर पैर रखते ही काँप उठे। तूफान भाँय-भाँय कर रहा था। अंधकार बढ़ता जा रहा था। नीचे मृत्यु का अथाह गह्वर था। दिल हिल उठा। भय से पसीना आ रहा था। आगे बढ़ने का साहस ही नहीं होता था। तभी आयशा का कंठ सुनाई दिया :

"आगे बढ़ो हौली ! आगे बढ़ो ! कहाँ गया तुम्हारा साहस ? न हो तो घुटनों के बल इस पर सरको। आँखें नीचे पत्थर पर कर लो और शरीर को साधे चले आओ।" मैंने देखा वह निर्भीक, शरीर को साधे, तनिक आगे झुकी चली जा रही थी उसके वस्त्र हवा में फरफरा रहे थे। उसका साहस दर्शनीय था। तभी वह फिर चिल्लाई :

"हौली ! अगर साहस नहीं होता है तो हटो पीछे और मेरे कैलीक्रेटीस को बढ़ने दो। रुको मत चले आओ क्योंकि यहाँ रह जाना भी मृत्यु को आवाहन करना है।"

मैं और अधिक न सहा सका। सामने एक स्त्री, चाहे वह कितनी भी विचित्र क्यों न थी, पर थी तो स्त्री ही; ताना मार रही थी। मेरे पौरुष को धक्का लगा और मैं उसी क्षण दाँत पर चढ़ गया पर दूसरे ही क्षण तूफान ने मुझे हिला दिया। एक बार तो मैंने समझा···गए···पर फिर सँभल गया। अब खड़े रहने का साहस हवा हो गया। और मैं हाथों और घुटनों के बल बैठ गया और जैसे आयशा ने कहा था वैसे ही सरकने लगा। मैं कुछ आगे बढ़ गया और मैंने हृदय को बड़ी कठिनाई से रोका···मैंने पैरों के बीच से देखा, मेरे पीछे जौब उस तख्ते को साधे और भी अधिक कठिनता से रेंग कर बढ़ रहा था। सब से पीछे इसी भाँति लिओ आ रहा था।

"सँभल कर !!" आयशा अंधकार में चिल्लाई :

"नीचे इसका तल नहीं है विश्वास जानो·····जरा चूक गए तो गए यहाँ बचत की गुंजाइश है ही नहीं···मेरे कैलीक्रेटीस ! बस यही अंतिम परीक्षा है·····देखो मैं कितनी निर्भीक हूँ·····यह सच है कि मेरा कुछ बिगड़ नहीं सकता परन्तु फिर भी मैं सचेत हूँ·····सावधान ! इसी तरह सरकते चले आओ।···अरे ! अरे !" वह एकाएक चिल्ला उठी जिसे सुनकर हमारे रोंगटे खड़े हो गए। मैंने आँख उठा कर देखा। आयशा का काला लबादा हवा से फूल गया और एकदम जितने में वह उसे पकड़े उसके शरीर को छोड़ कर उड़ गया। अब वह अपनी उसी सफेद मुर्दों की सी कफनी में लिपटी दिखाई दे रही थी। वह शीघ्र ही सँभल गई और बढ़ने लगी। अब वह तूफान पर तैरती हुई दैवी आत्मा सी प्रतीत हो रही थी। वह फिर चिल्लाई :

"सावधान हौली ! सावधान मेरे कैलीक्रेटीस ! बढ़े चले आओ, जरा भी न चूकना। पत्थर पर आँखें गड़ा दो ! यहाँ से गिर कर फिर बचाव नहीं है !!"

और हम उस चट्टान के लम्बे दाँत से चिपट कर सरकने लगे। हमारे शरीर काँप रहे थे, अङ्ग के जोड़-जोड़ दुख रहे थे, तूफान भयानकता से गर्जन कर रहा था जो शायद सहस्रों वर्षों से ऐसे ही चलता आ रहा था और जिसका शायद कभी अंत भी नहीं था। हमारे केश उड़ रहे थे, वस्त्र फरफरा रहे थे।

हठात् वह रुक गई। परन्तु वह स्वाभिमानिनी बैठी नहीं, उसी भाँति खड़ी रही, फिर बोली :

"अब यहीं थोड़ी देर रुकना होगा·····देखो ! सामने गहन तिमिर है, यह इस समय अभेद्य है !!" मैंने देखा जाने किस कारण से सामने इतना अंधेरा था कि कुछ भी दिखाई नहीं देता था। तभी वह फिर कहने लगी :

"ठहरो ! अभी प्रकाश फैलने वाला है·····परन्तु शीघ्रता करना क्योंकि वह बहुत ही क्षणिक होगा।"

हम पत्थर पर लिपटे बैठे रहे। अब मैं आयशा के बिल्कुल पीछे बैठा था, मेरे पीछे कैलीक्रेटीस और फिर जौब ! हठात् मेरे ऊपर केश लहराने लगे····· आयशा के सिर का जूड़ा हवा से खुल गया था और उसके स्निग्ध घुँघराले केश लहराने लगे। उसकी सुगन्ध से मैं उस भयानक स्थान में भी मदहोश होने लगा। तभी सामने से भाले की भाँति पचासों मील मोटे उस पहाड़ को फोड़ कर प्रकाश फैलाने लगा। पल भर में ही यह तेज-पुञ्ज आयशा के सामने उस पत्थर के दाँत के अंतिम छोर पर पड़ने लगा। वह इतना तीव्र था कि उसके प्रकाश में उस चट्टान के खरदरे दाने भी दिखने लग गए। अब हमने देखा—

सामने कोई दस या बारह गज की दूरी पर एक विशाल गोल चट्टान खड़ी थी जिसके चारों ओर आगे निकले होंठ के समान पंखुड़ी की भाँति फैल रहे थे। उसके मध्य भाग में धुरी पर टिकी एक भीमाकार गोल मीनार तुली हुई कभी-कभी तूफान के झटकों के साथ हिल रही थी·····इसका ऊपरी भाग हमारी सीध में करीब १२ फीट की दूरी पर था और यहाँ भी पाषाण के होंठ निकल रहे थे, बीच में अतल रूपी अभेद्य अंधकार था·····वह कठोर होंठ निकल कर मानों

मृत्यु का आह्वान कर रहा था ! आयशा ने बिना भूमिका बाँधे शीघ्र वह लंबा तख्ता माँगा जिसे मैंने जौब से लेकर उसे दिया तो वह चीखा :

"नहीं ! नहीं ! मेरे मालिक ! यह भी भला पार किया जा सकता है···? नहीं·····यह मुझसे न होगा·····कभी न होगा·····!!"

तब तक आयशा ने वह तख्ता एक ओर उस मृत्यु के भीषण होंठ से और दूसरी ओर उस दाँत के छोर से अड़ा दिया और अपना पैर उस पर रख कर जूड़ा बाँधा फिर वह तीर की तरह, पर तुले हुए और मंथर पगों से उस भयानक पुल को पल भर में पार कर गई ! उधर से उसका मधुर कंठ बोला :

"हौली ! बैठे-बैठे सरको जल्दी ! प्रकाश देर तक नहीं रहेगा।"

एक बार मैं झिझका। हे भगवान ! अब तो इसे पार करना ही पड़ेगा ! फिर बढ़ा। पर जैसे ही छोर पर पहुँचा दिल जोर से धड़कने लगा। मृत्यु ! मृत्यु ! अब क्या करूँ ? भय से रोंगटे उठ गए तभी वह फिर चिल्लाई :

"डरते हो हौली ! पीछे हटो। आगे मेरे कैलीक्रेटीस को आने दो।" ओह ! कितनी निर्दयी थी वह स्त्री ! कितना छेदती थी ! 'नहीं ! इससे तो मरना अच्छा' दिल कड़ा किया और भगवान् को स्मरण करके आगे बढ़ गया। जाने कौन सी शक्ति मुझमें आ गई थी और दूसरे ही क्षण मैं दूसरी ओर पहुँच गया। वह पत्थर हिलने लगा। आयशा ने कहा :

"इन हजारों सालों में इसका संतुलन थोड़ा बिगड़ गया है पहले यह नहीं हिलता था·····।"

वह पूरा वाक्य कह भी नहीं पाई थी कि लिओ उस पुल पर चल कर तेजी से साँस बाँधे एकदम हमारी ओर आ गया। आयशा उसके साहस से फूली न समाई। बोली : "मेरा प्यारा कैलीक्रेटीस यूनानी रक्त से बना है। कितना वीर। और साहसी है यह !" प्रकाश अब कम होने लगा था। आयशा ने कहा :

"हौली ! शीघ्र बुलाओ अपने उस नौकर को·····अन्यथा वह कभी इधर नहीं आ सकेगा·····देखो रोशनी जा रही है।" और मैं चिल्लाया। मेरी आवाज न जाने कहाँ तक उस पोली गुफा में गूँज गई।

"जौब ! जल्दी ! जौब ! जल्दी !"

"नहीं·····नहीं·····यह मुझसे·····नहीं·····होगा !"

"बको मत·····!" मैंने आज्ञा दी·····

"मालिक !·····!" वह असहाय सा पुकारा।

"बढ़े आओ·····हाँ·····शाबाश !! आओ·····हाँ·····और····· और·····!" मैं उसे बढ़ते और सरकते देख कर बढ़ावा देने लगा परन्तु वह बढ़ता तो जाता था, साथ-साथ चिल्लाता भी जाता था·····भयानकता से चीत्कार कर रहा था वह ! वह इतनी बुरी तरह सरक रहा था कि नीचे का तख्ता हिल रहा था। मुझे भय था कि कहीं यह इस तरह उस तख्ते को सरका न दे और तभी जब वह उस मौत के आधे मार्ग में पहुँचा था कि रोशनी बन्द हो गई। पहिले से भी अभेद्य अंधकार फैल गया और साथ ही जौब की भयावनी चीत्कार गूँज गई।

"बढ़े आओ·····बढ़े आओ·····मेरे जौब !" मैंने बढ़ावा दिया और तख्ता बड़े जोर से काँपा। मैंने समझ लिया जौब गया पर तभी जौब का हाथ उस पत्थर के होंठ पर बजा और मैंने विद्युत के स्फुरण के साथ उसका वह हाथ पकड़ लिया। एक आवाज हुई और तख्ता नीचे अंधकार में विलीन हो गया। ओह ! मुझे कितना जोर लगाना पड़ा था। परन्तु शायद मेरे शरीर में भगवान् ने ऐसे ही अवसरों के लिये अमानुषिक पशु-बल भर दिया था। मैंने भीम शक्ति लगा कर उसे खींचा। लिओ ने मुझे पीछे से पकड़ लिया था। था। जहाँ हम खड़े थे वह चट्टान बुरी तरह हिल रही थी।

"आह ! मेरे मालिक !!!" हाँफते हुए जौब ऊपर आ गया। वह स्वेदश्लथ हो रहा था। तूफान अब भी छूट रहा था। तख्ता एक बार कहीं बहुत नीचे टकराया और खो गया।

"अब वापस कैसे जायँगे ?" लिओ ने घबरा कर पूछा।

पर आयशा ने उसका कोई उत्तर नहीं दिया। वह प्रसन्न थी। वह घूमी और उस पत्थर के पिछले ओर चली गई। हमने उसका अनुसरण किया।

× × × ×

२४

वह चट्टान का गोला काफी बड़ा था। उसकी परिधि के पिछले छोर पर पहुँच कर आयशा मुझसे बोली :

"हौली ! यहाँ से नीचे कूद पड़ो !"

मैंने पैर हवा में चला कर देखा, कहीं सहारा नहीं था। मैंने कहा :

"यहाँ तो मैं न जाने कहाँ गिर पड़ूँगा···!"

"तो गिर पड़ो !" वह मानो हँसी दबा कर बोली।

जीवन में कभी-कभी ऐसे क्षण आते हैं जब विश्वास ऐसा दृढ़ हो जाता है कि जीवन का भय भी तौल में उससे हलका बैठता है। मुझे उसकी बात लग गई। तो क्या वह मुझे मार डालना चाहती है या यह मेरी परीक्षा ले रही है ? मैंने सोचा, 'इससे मरना अच्छा' और मुझे उस मृत्यु के गह्वर से बच कर निकल आने के बाद अब मानो जीवन का मोह ही नहीं रहा।

"कूदता हूँ", मैंने अपना निश्चय सुना कर मानो चुनौती दी।

"कूदो !" वह दृढ़ता से बोली। मैं कूद पड़ा, फुट दो फुट मैं चट्टान से लग कर फिसला फिर हवा में तैर गया। मेरा हृदय बैठने लगा। मैंने समझ लिया मौत नीचे जहाँ कहीं भी तल था मेरी प्रतीक्षा देख रही थी। 'वहीं क्यों न मार दिया इसने मुझे !' फिर एक विचार आया और तभी मेरे पैर नीचे कठोर भूमि पर टिक गए। यह सब पल भर में हो गया। मैं कोई तीन हाथ नीचे जा टिका था। बस ! मेरी जान मुझे वापस मिल गई। तभी लिओ भी ऊपर से मेरे ऊपर कूद पड़ा और हम दोनों लुढ़क गए। फिर भद्दी तरह से जौब आया और अंत में हवा में फूल सी तैरती आयशा आकर नीचे टिक गई। यहाँ तूफान तनिक भी नहीं था। मैंने माचिस निकाली और जलाई। वह उसी प्रकार जल उठी जैसे मेरे कैंब्रिज के कमरों में जलती थी हमने लालटेनें

जला लीं। प्रकाश फैल गया। मैंने देखा हम एक दस फीट लम्बे-चौड़े कक्ष में खड़े थे जो आधा प्राकृतिक कटा हुआ और आधा मनुष्य द्वारा छिला हुआ प्रतीत होता था। नीचे वह उसी चट्टान में से कटा था और उसकी फर्श व दीवालें सब अनगढ़ थीं। हम तीनों परेशानी में थे पर आयशा शांत भाव से खड़ी थी। जब प्रकाश फैला तो वह कहने लगी :

"मुझे भय था कि कहीं वह हिलती हुई चट्टान लुढ़क न जाय क्योंकि तुम्हारे भारी वजन और झटकों से वह बुरी तरह लुढ़कने लगी थी। पर अब बहुत अच्छा हुआ जो हम सब सही-सलामत आ गए क्योंकि उस अतल गह्वर में एक बार गिर कर फिर बचना असंभव था। पर यह जो तुम्हारा नौकर है इसका बिलाली ने जो नाम रखा था वह वास्तव में बिलकुल ठीक ही था। यह सचमुच सूहर है·····इसने तख्ता गिराकर हमारे लौटने का मार्ग बन्द कर दिया है। मैं अभी यह निश्चय नहीं कर पाई हूँ कि लौट कर इसे कैसे पार करेंगे।"

फिर वह थोड़ी देर चुप रहने के बाद बोली :

"हौली ! बता सकते हो यह स्थान क्या है ?"

लिओ ने और मैंने सिर हिला दिया तो वह बोली :

"क्या तुम विश्वास कर सकते हो कि यहाँ किसी समय एक आदमी रहा करता था ? यह कक्ष उसका घर था और यहीं वह वर्षों रहा था···वर्षों ! हर बारहवें दिन वह पर्वत के उस मुहाने पर जाता जहाँ से हम अंदर घुसे थे···"

"क्यों ?" मैंने उत्सुक होकर बीच में ही पूछा तो वह बोली :

"लोग उस पर अपार भक्ति रखते थे। वे उसके लिये वहाँ भोजन, पानी और तेल रख देते थे जिसमें से जितना उससे उठता वह लेकर अन्दर आ जाता था···! हाँ, वह बड़ा बुद्धिमान और पहुँचा हुआ आदमी था। उसका बड़ा नाम था और वह स्वयं संसार से उदासीन रहता था। उसको लोग 'नूत' कहते थे। वह ऋषि दार्शनिक था और प्रकृति के अद्भुत रहस्यों से परिचित था, उसी ने इस जीवन की अमर ज्योति को पृथ्वी के गर्भ में घुसकर खोज निकाला था, जिसकी लपटों में नहाने से मनुष्य प्रकृति के समान ही स्थायी···हाँ बहुत समय तक स्थायी हो जाता है। अब हम वहीं चल रहे हैं···परन्तु हे हौली ! वह नूत

भी तुम्हारी ही भाँति जड़ था। इतना बड़ा रहस्य जानते हुए भी वह स्वयं उसका उपभोग नहीं करता था। कहा करता था कि मनुष्य मरने के ही लिये होता है···प्रकृति के साथ निरंतर जीने के लिये नहीं। उसने इसीलिये इस भेद को सबसे छिपा कर रखा···ओह हौली! उस ज्योति को देखकर तुम दंग रह जाओगे वही प्रकृति का का रक्त है···वही प्रकृति का जीवन है···"

वह कहती गई :

"···जब मैं पहले-पहले इस इस देश में आई···जानते हो मेरे कैलीक्रेटीस कैसे आई? छोड़ो वह मैं तुम्हें फिर किसी दिन बताऊँगी···हाँ तो यहाँ आकर मैंने इस ऋषि नूत के बारे में सुना और मैं यहाँ आकर उस गुफा के मुहाने पर उसके बाहर आने की प्रतीक्षा करती रही। और जब वह आया तो मैं उसी के साथ अंदर···यहाँ चली आई। ओह! उस समय मुझे अब भी याद है मैं इस अतल गह्वर को पार करते समय भय से थर्रा उठी और तब मैं यहीं उसके साथ तूफानों के बीच रहने लगी। वह सर्वशक्तिमान व्यक्ति था और बहुत ही वृद्ध तथा कुरूप भी था। मैं उससे डरती थी, परन्तु फिर मैंने उसे अपनी नग्न सुन्दरता से, अपनी हाजिर-जवाबी और चाटुकारी से फुसला कर एक दिन उस ज्योति के बारे में सब कुछ जान लिया। वह मुझे वह अद्भुत दृश्य दिखा लाया। मेरी आँखें फटी की फटी रह गईं और मेरी उत्कंठा उस ज्योति की सतरंगी लपटों में स्नान करने को तीव्र हो उठी पर उसने मुझे ऐसा न करने दिया। मुझे भय हुआ कहीं यह मुझे मार न डाले और मैं मन मसोस कर रह गई, आखिर मैंने सोचा थोड़ी प्रतीक्षा करना ठीक होगा क्योंकि नूत बहुत वृद्ध था। मैं उसकी मृत्यु की बाट जोहने लगी···।"

"···फिर ??" लिओ ने उत्कंठा से पूछा।

"फिर!" वह बोली, "फिर तुम मेरे कैलीक्रेटीस! उस यूनानी एमिनार्टस के साथ एक दिन मुझे मिले। तब तक मैं एमैहैग्गर के जंगलियों की रानी हो गई थी। कैसे? यह भी मैं फिर किसी समय बताऊँगी·····और जब मैंने तुम्हें देखा, मैं तुम्हारे ऊपर मर मिटी·····मैंने तुम्हें पाना चाहा पर तुम न माने। पर मैंने हार नहीं मानी और मैं तुम्हें यहीं उस एमिनार्टस के साथ लाई। मुझे इस कक्ष में आते ही नूत का भय लगा पर संयोग प्रबल था। मैंने देखा वह

यहीं, जहाँ तुम बैठे हो मरा हुआ मिला। मेरे साहस को स्वतंत्रता मिली··· और मैंने देखा उस ज्योति को पाने की मैं ही एकमात्र स्वामिनी बन गई थी। उल्लास और आनन्द से मेरा रोम-रोम पुलकित हो उठा और मैंने तुम्हारे शरीर को चिपटा लिया परन्तु तुम मुझसे छिटक कर दूर जा खड़े हुए और एमिनार्टस ने तुम्हें अपनी बाँहों में समेट लिया। मैं क्रोध का घूँट पी गई। इसके बाद मैं तुम्हें जीवन की उस पवित्र ज्योति के पास ले गई और मैंने न न होकर लपटों में स्नान किया। एक तो मेरी सुन्दरता वैसे ही अद्‌भुत थी और अब उस ज्योति में स्नान करने के उपरान्त मैंने अनुभव किया मैं दमकने लगी थी। मेरा रोम-रोम सौन्दर्य का केन्द्र हो गया·····और मैंने तब तुमसे कहा कि तुम उस यूनानी स्त्री को छोड़ कर मेरी भुजाओं में आ जाओ और उस लपट में स्नान कर के अमर हो जाओ परन्तु तुमने मेरी ज्योति से चकाचौंध अपने नेत्रों को हाथों से ढँक लिया और अपना मुँह एमिनार्टस·····उस जादूगरनी के वक्ष में छिपा लिया। ओह ! मैं क्रोध से फुँफकार उठी और तब मैंने तुम्हारा ही भाला लेकर तुम्हारी बगल में घुसेड़ दिया·····तब तक मैं जानती न थी कि मुझे मारने के लिये तब शस्त्र की आवश्यकता नहीं रही थी·····मैं तो केवल इच्छा शक्ति से मार सकती थी।·····उसके बाद मैं कितनी रोई·····कितनी रोई····· ओह ! मेरा दुख मुझे खाये जा रहा था। जब मुझे अमर जीवन मिला तो साथ ही साथ अनन्त दुख मिला·····काश ! मैं उस समय मर सकती ! मुझे याद है फिर मैं और एमिनार्टस तुम्हें किस प्रकार उठा कर ले गई थीं और उसी रात्रि हमने कौयर के उसी कक्ष में पड़ाव डाला था जहाँ कल हम ठहरे थे। कौयर तब भी ऐसा ही ऊजाड़ था। वह तब भी दो हजार साल से खंडहर था। आह ! मेरे कैलीक्रेटीस ! कितनी प्रतीक्षा करायी है तुमने इन दो हजार सालों में !! मेरा दुख मुझे भीतर ही भीतर घुन की भाँति खाये जा रहा था। परन्तु अब मैं बहुत खुश हूँ·····तुम मुझे फिर मिल गए हो ! अब हम कभी अलग नहीं होंगे !"

हम हतबुद्धि होकर चुप सुन रहे थे। वह लिओ के पास गई और अत्यन्त करुण स्वर से बोली :

"यही है मेरे प्रेम की गाथा मेरे प्रियतम ! यह मेरे रक्त से लिखी गाथा है·····वह रक्त जो सदियों तड़पा किया क्योंकि उसे कभी शान्ति नहीं मिली। यह संसार बुराई और भलाई दोनों का मिश्रित स्थल है·····जिसमें बुराई अधिक है जो सत्य को चारों ओर से घेरे हुए है। मैंने तुमसे वही सत्य कहा है जिसे मैंने बुराई हटाकर अपने लम्बे अनुभव से प्रकृति के गर्भ में से बाहर निकाला है। आह ! एक पाप करने का मुझे भीषण दंड मिल चुका है·····मैंने दारुण दुख झेला है !!"

तभी मैंने नीचे धूल में से एक छोटी सी चीज उठाई। प्रकाश में देखा वह एक पीला पर मजबूत मनुष्य का दाँत था। आयशा ने उसे देखा और तपाक से बोली :

"नूत का अवशेष ! देखो हौली ! यही बचा है उस दार्शनिक का जो प्रकृति के महान् रहस्यों को भी जान गया था !"

मेरा मन तिक्त हो उठा। मैंने कहा :

"क्या करता वह कुरूप वृद्ध इतना जी कर ? वह सचमुच बुद्धिमान था जो अमर न बना·····यदि ऐसा कोई स्थान है भी तो मैं फिर कहता हूँ कि मैं उसमें स्नान नहीं करना चाहता·····मैं प्रकृति के नियमों का उल्लंघन नहीं करूँगा···!"

"छोड़ो हौली !" यह बोली, "तुम तो यहूदी हो·····", फिर वह लिओ से अत्यन्त करुण स्वर से बोली :

"मेरे कैलीक्रेटीस ! मेरे प्रियतम ! अब हम उस अग्नि परीक्षा में जा रहे हैं। शायद मैं तुमसे हमेशा के लिये ही छिन जाऊँ ! क्या जाने ! मेरा दिल धड़कता है·····और हाँ हम दोनों अमर जीवन भी प्राप्त करके लौटेंगे यह भी निश्चय ही है·····पर छोड़ो इस बात को·····मेरे प्यारे ! मैंने दो हजार साल घोर यातना भोगी है। पश्चात्ताप की अग्नि में दहकती रही हूँ और आज उस अमर लपट में जाने से पहले मैं तुमसे पूछती हूँ कि क्या तुमने मुझे मेरे पाप के लिये क्षमा कर दिया है ?·····आओ मेरे प्राणाधार ! मेरा घूँघट हटा कर मेरा मुख देखो·····मुझसे भय न करो·····ऐसा ही समझो जैसे मैं कोई किसान की बेटी हूँ·····बिल्कुल ग्रामीण युवती। मेरा हाथ थाम कर

मुझसे कहो क्या तुम मुझे प्रेम करने लगे हो ! बोलो मेरे कैलीक्रेटीस ! क्योंकि मुझसे अब और दुख नहीं भोगा जाता·····मेरी सुन्दरता, मेरा अतीत यह सब भूल जाओ·····मुझे केवल अपनी दासी समझ कर अपना निर्णय दो !"

कितनी वेदना, कितना करुण रस और कितना प्यार भरा था उसके कंठ में, मैं कैसे कहूँ ? मेरे नेत्र भर आये और मैंने मुँह मोड़ कर पोंछ लिया। मैंने देखा लिओ जो अब तक सर्प से डरी हुई चिड़िया के समान उसके सामने रहता था अब उसकी बातें सुन कर विचित्र वेदना से भर उठा। उसने एक हाथ से उसका कोमल हाथ पकड़ा और दूसरे से उसका वह महीन कपड़ा मुँह से हटा दिया और आँखों में आँसू भरे वह बोला :

"मेरी आयशा ! मैं तुम्हें अपने हृदय के अतल तल से प्यार करता हूँ·····इतना जितना मैंने कभी नहीं किया·····इतना कि मैं तुम्हें यूस्टेन की हत्या के लिये भी क्षमा करता हूँ·····इतना जितना जीवन भर और कभी न कर सकूँगा·····!! बाकी बातों से मुझे कोई मतलब नहीं है·····तुम जानो या वह जिसने तुम्हें बनाया·····या वह जिसने तुम्हें अमर किया·····!"

आयशा यह सुनते ही मुस्कुरा उठी। उसका मुख गर्व से उठ गया। वह कहने लगी :

"ओह ! आज मैं कितनी प्रसन्न हूँ ! मेरे मालिक ने मुझे राजाओं की भाँति क्षमा कर दिया है। और देखो ! मैं भी उसे भेंट दूँगी···मैं इस क्षमा को प्रतिदान बिना नहीं लूँगी·····!", और वह घुटने के बल बैठ गई। उसने लिओ का एक हाथ अपने सिर पर रख लिया और कहने लगी :

"देखो ! मैं अपने मालिक के सामने झुकती हूँ !" और फिर उसके होंठ उठ कर चूम लिये और उसी धुन में कहती गई :

"अब स्त्री अपने पति को चुंबित कर रही है·····आज·····अभी आयशा कैलीक्रेटीस की स्त्री हो गई है·····" फिर उसने लिओ के हृदय पर हाथ रख कर कहा :

"मुझे उस पाप की शपथ है, मुझे उन प्रतीक्षा की सदियों की शपथ है, जिनकी वेदना में मेरा पाप धुल गया है। मुझे मेरे प्यार की शपथ और उस आत्मा की शपथ जिससे जीवन उपजता है, वह जीवन जिसका अन्त फिर फिर

कर वही आत्मा है·····,इन सब की शपथ लेकर मैं कहती हूँ कि मैं इसी क्षण से जब इन दो हजार सालों के उपरान्त आज मैं स्त्री हो गई हूँ·····स्त्री····· सुहागिन स्त्री ! कि बुराई का त्याग करती हूँ, मैं केवल अच्छाई से ही सम्पर्क रखूँगी·····।

"मैं शपथपूर्वक कहती हूँ कि अपने लंबे अनुभव और ज्ञान से इच्छाओं को दबाते हुए सही रास्ते से कभी नहीं भटकूँगी·····जो मेरा कैलीक्रेटीस चाहेगा वह ही मेरे लिये प्रिय होगा·····समय की गति तूफान जैसी है, आया निकल गया और आया और गया और फिर आया·····इसका कोई अन्त नहीं है। इसी तूफान पर चढ़ कर मेरा कैलीक्रेटीस फिर आ गया है !·····मैं और अधिक शपथ नहीं लूँगी क्योंकि कहने से क्या बनता है·····आयशा जो कहती है वही करके दिखलायेगी·····!

"और होली ! तुम मेरे विवाह के साक्षी हो·····यह मेरा पति है और मैं इसकी स्त्री ! यह अन्धकार मेरे विवाह मण्डप का, चंदोवा है। हमारी विवाह की शपथ तूफान पर लिखी गई है जो सारे संसार में तथा स्वर्ग में भी यह सन्देश फैला देगी कि कैलीक्रेटीस और आयशा मिल गए हैं·····कि वह तब तक साथ रहेंगे·····जब तक कि प्रकृति जीवित रहेगी·····! जब तक यह दुनिया घूमा करेगी !! होली तुम मेरे विवाह के साक्षी हो !"

मैं भौचक होकर उसे देख रहा था। वह उसी भाँति उन्मत्त होकर पागलों की भाँति कहती गई :

"और देखो ! वर-दक्षिणा में अपने पति को मैं अपना अद्भुत सौंदर्य, अपना अपार ज्ञान और अगाध धन देती हूँ ! संसार के राजा इसके पैरों पर लोटेंगे, दार्शनिक इसके सामने सिर झुका कर चलेंगें और रूपवती युवतियाँ इसके पौरुष और रूप को देख कर विचलित हो उठेंगी और जिधर यह पग रखेगा वहाँ वह आँखें बिछा देंगी ! मेरे कैलीक्रेटीस तुम मनुष्यों के हृदय की बात ऐसे जान लोगे जैसे पुस्तक में पढ़ रहे हो। तुम मिश्र के स्फिंक्स की भाँति युग पर युग पर बीत जाने पर भी बने रहोगे और लोगों के लिये पर्वत के समान दिखोगे !···तुम उनके लिये सदा एक समस्या बने रहोगे।

कोई तुम्हारी महानता नहीं जान पायेगा ! और देखो मैं तुम्हें फिर एक बार चूम-कर पृथ्वी, समुद्र और अन्तरिक्ष सब का सम्राट् बनाती हूँ ! गरीब से गरीब और अमीर से अमीर तुम्हारे दास बन कर रहेंगे। जहाँ चाँद पानी में निरन्तर झलका करता है, जहाँ सूर्य की किरणें तेज भाले की नोक जैसी तीक्ष्ण होती हैं और जहाँ तूफान गर्जता है वह सभी तुम्हारा साम्राज्य होगा ! इन्द्रधनुषी आकाश और हिमाच्छादित सुदूर उत्तरी ध्रुव से वासना जाग्रत करने वाला दक्षिणी ध्रुव यह सब तुम्हारा होगा ! पृथ्वी हरीतिमा की करधनी पहने तुम्हें लुभायेगी और तुम रोग, भय और जरावस्था से मुक्त होगे ! तुम्हारी हथेली के गड्ढे में संसार का दुख और सुख होगा···संसार तुम्हारी उँगलियों पर तुम्हारी इच्छानुसार नर्तन करेगा !···

"और···अब मैं तुम्हें अपनी चिर सुरक्षित निधि देती हूँ। वह जो तूफान, अच्छाई-बुराई, बल और मृत्यु भी अब तुमसे नहीं छिन सकती ! वह जो अभी तक अमूल्य और अप्राप्त बनी रही है···! लो मेरा कौमार्य मैं तुम्हें अर्पण करती हूँ। तुम मेरे साथ भोग-विलास अनन्त समय तक करो और मुझे मेरे स्त्रीत्व का अक्षय सुख दो !"

उसने लिओ का गाढ़ालिङ्गन कर उसे फिर चूम लिया। वह उच्छ्वसित हो रही थी।

हठात् वह उसी सर्प की गति से हटी और लालटेन हाथ में लेकर एक ओर चल दी। उस कोठरी के उत्तर की ओर दीवाल में अन्दर ही अन्दर खुदी सीढ़ियों पर वह चढ़ने लगी। हमने उसका अनुसरण किया। वह कहती जा रही थी :

"···और अब मैं तुम्हें वहाँ ले जा रही हूँ जहाँ हर कोई नहीं पहुँच सकता। नूत फिर आयशा और अब तुम मेरे कैलीक्रेटीस ! बस हम तीन ही इसे पायेंगे··· हाँ वह जीवन !···वह सुख !···वह आनन्द !···आओ मेरे प्रियतम चलो !!"

करीब पन्द्रह मिनट तक हम उन अनगढ़ सीढ़ियों पर चट्टान के भीतर ही भीतर चढ़ते रहे। फिर हम एक प्रकोष्ठ में पहुँचे जो काफी लम्बा-चौड़ा था। यहाँ से हमने दीवाल के सहारे चट्टान के अन्दर सीढ़ियों पर उतरना शुरू किया। हम करीब एक घंटा उन पर उतरते रहे। शायद तीन सौ या साढ़े तीन सौ सीढ़ियाँ थीं ! ओफ ! अब हम न जाने कितने नीचे पृथ्वी के गर्भ में घुस

गए थे। सूचीभेद्य अन्धकार था और हमारी लालटेनें हमें मार्ग दिखा रही थीं। जब सीढ़ियाँ खतम हुईं तो हम एक ऐसे कक्ष में पहुँचे जिसके दूसरी ओर एक झरोखा था। सामने एक विस्तृत गोल सूखा तालाब था जो घेरे में करीब सौ गज रहा होगा। नीचे वह बहुत गहरा था और पतला होता चला गया था, यहाँ तक कि उसके पेंदे में सब ओर से दीवालें मिल गई थीं। वह कुछ-कुछ कुप्पी की भाँति था। आयशा ने कहा हमें उसमें उतरना था। मैं आश्चर्य में था क्योंकि वह इतनी सीधी उतरी हुई दीवालें थीं कि उन पर उतरना तो दूर फिसल कर भी नीचे नहीं पहुँचा जा सकता था। आयशा बाईं ओर घूमी और एक छोटे से द्वार में घुस गई। हमने अनुसरण किया। यहाँ फिर सीढ़ियाँ मिलीं, यह गोल-गोल चक्करदार नीचे चली गई थी; हम उतरते गए। जब वह समाप्त हुई तो हमने अपने को एक द्वार के सामने पाया। आगे चलने पर हम ठीक वहीं पहुँच गए थे जहाँ पहुँचना मैंने ऊपर से असम्भव समझा था। यहाँ से वह ऊपर का स्थान ओफ! कितना ऊँचा था और ऐसा लगता था कि हम मृत्यु के तल में पहुँच गए थे। यहाँ आवाज मेघ के समान गूँजती थी। आयशा ने हमें चुप रहने का संकेत किया। जौब अपनी आदत के अनुसार चीख पड़ा था तभी उसने वर्जन करते हुए चुप रहने को कहा था। बाद में उसने बताया था कि वहाँ बोलने से चट्टानों के गिरने का भय रहता था। ऐसा ही नूत ने उसे बताया था। जब मैंने उससे पूछा था कि क्या बाहर के पृथ्वी के धमाके यहाँ तक न आ सकते थे तो वह हँस कर बोली थी : "अरे हौली! तुम तो ज्ञानी होकर भी नासमझी की बातें करते हो। जानते हो यह स्थान पृथ्वी के धरातल से आधा मील नीचा है!"

वहाँ पहुँच कर अब आयशा ने दाहिनी ओर बने एक बहुत ही नीचे द्वार में प्रवेश किया। यह कुल चार फीट ऊँचा था। हमें उसमें बेहद झुककर जाना पड़ा। अन्दर एक ढलुआ गुफा थी जो जैसे-जैसे आगे जाती सँकरी होती जाती थी। करीब अस्सी फीट जाने पर वह घूम गई, अब हम फिर दाईं ओर घूम गये थे। इसी भाँति न जाने कितने चक्कर खाते हुए हम आगे बढ़ने लगे। एक स्थान पर तो वह इतनी नीची हो गई कि हमें लेट कर आगे सरकना पड़ा। पन्द्रह फीट बाद वह गुफा चौड़ी हो गई और ऊँची भी हो गई। करीब आधा

घंटा चलन के बाद हम एक बहुत बड़ी गुफा में निकले जहाँ क्षीण गुलाबी रोशनी फैल रही थी। यहाँ हवा स्वच्छ और जीवनदायक लग रही थी। हमारे प्राणों में स्फूर्ति भर उठी। दीवालें और छत सब प्राकृतिक कटे हुए थे और फर्श कठोर चट्टान की थी। यह स्पष्ट था कि यहाँ मनुष्य का हाथ कहीं नहीं लगा था। जब यह ज्वालामुखी फटा होगा और अन्दर से गर्म भाप तूफान की भाँति चट्टानों को फोड़कर निकला होगा तभी यह दरारें पृथ्वी के गर्भ में पड़ गई होंगी। ओफ ! वह समय कैसा रहा होगा जब सारी पृथ्वी ही पत्ते की भाँति काँप उठी होगी और मेरा कलेजा इस विचार से ही दहल गया।

आयशा आगे बढ़ती गई। सात ऐसी ही बड़ी गुफाएँ और पार की और हम नीचे ढाल पर उतरते ही चले गए। गुलाबी प्रकाश बढ़ता ही गया। अन्त में हम एक गोल ऊँची गुफा में पहुँचे जहाँ पृथ्वी पर सफेद रेत बिछा था। गुलाबी प्रकाश जाने कहाँ से फूट रहा था जो दीवालों को चमका रहा था। यहाँ वायु मनुष्य में मानो नया प्राण फूँक रही थी। दूर एक ओर से बड़ा भारी अर्राटा हो रहा था। ऐसा लगता था जैसे हजारों दीर्घ पेड़ एक साथ टूट रहे हों अथवा पहाड़ पर पहाड़ टूट रहा हो !

"अहा ! सब वैसा ही है ! सब ठीक है मेरे कैलीक्रेटीस !" इतनी देर बाद आयशा खुशी से चिल्लाती हुई बोली। अब तक शायद उसको उस स्थान के बारे में कुछ संशय था कि कहीं इन दो हजार सालों में कुछ परिवर्तन न हो गया हो। मैं समझ नहीं सका कि वह भीम गर्जन करती हुई क्या शक्ति थी जो पर्वतों को गुँजा रही थी। हमने जब उस स्थान को भी पार किया तो आयशा चिल्ला उठी :

"वह देखो ! वह रहा जीवन ज्योति का अमर स्तम्भ ! वह देखो इसकी धड़कन से पृथ्वी में प्राण धड़कते हैं···! यही है वह प्राणों का केन्द्र बिन्दु जहाँ से सारे संसार में प्राण का जागरण होता है ! यही है वह ज्योतिर्मयी ज्वाला जिससे सारा संसार शक्ति संचित करता है ! यही है प्राणों का प्राण···जीवन का जीवन···परन्तु यह भी अमर नहीं है ! यह भी एक दिन शायद करोड़ों वर्ष बाद शांत हो जायगा···तब पृथ्वी भी चन्द्र की भाँति मर जायगी···!!"

वह खिलखिला कर हँस रही थी, वह आगे बढ़ी। यह बहुत ही लम्बी गुफा थी जो उज्ज्वल गुलाबी प्रकाश से चमचमा रही थी। पृथ्वी पर सफेद रेत बिछा था जो उस गुलाबी आभा में मोतियों सा मालूम होता था। मैंने देखा उसके दूसरे छोर पर तीव्र प्रकाश फैल रहा था···न जाने कहाँ से अर्राता हुआ भीम गर्जन हो रहा था। हम थोड़ा और आगे बढ़े और हठात् मुझे एक विचित्र नवीन स्फूर्ति और आनन्द का अनुभव होने लगा। यहाँ तक कि मैं ठहाका लगाकर जोर से हँसने लगा। मुझे आश्चर्य हुआ कि लिओ और जौब जो इस देश में आने के बाद कभी नहीं हँसा था, अब खिलखिला कर हँसता हुआ उछलने लगा। आयशा चिल्लाई :

"वह देखो ! जीवन का अमर स्तम्भ घूम रहा है ! पृथ्वी के गर्भ में स्नान करने को उद्यत हो जाओ ! अरे ! यही है वह जीवन का स्रोत ! इसी से संसार के मनुष्य, जन्तु और वृक्ष प्राण खींचते हैं। आओ मेरे कैलीक्रेटीस इसमें स्नान करो क्योंकि पृथ्वी का साम्राज्य तुम्हारी प्रतीक्षा देख रहा है !"

और तभी अर्राटा बढ़ने लगा। दूर सामने चट्टान में एक कटा हुआ बड़ा सा छेद था जिसमें से प्रकाश फूट रहा था ! और आवाज बढ़ने लगी···बढ़ी··· और बढ़ी हमने देखा एक धुँआदार विशाल स्तंभ जाने कहाँ से पृथ्वी के गर्भ में घूमता हुआ उस जगह भीम गर्जन करता लुढ़कता हुआ आया। वह साक्षात इंद्रधनुष जैसा नाना रंगों की लपटों से दहक रहा था। हमें उसका केवल ऊपर का छोर ही दिखाई दे रहा था। अंदर वह जाने कितना मोटा था! उसमें से दस-बारह गज तक लपटें निकल कर फैलने लगीं और उनके प्रकाश से गुफा उज्ज्वल हो उठी। उसमें से रंगीन भाप सा निकल रहा था मेरे नेत्र फटे के फटे रह गए। उस ज्वलंत अग्नि के स्तंभ के चलने से वज्र गर्जन हो रहा था। न जाने वह पृथ्वी के गर्भ में कहाँ अन्दर ही अन्दर घूम रहा था। वह बाईं ओर से आया और करीब चालीस सेकेंड में घूमता हुआ दाँयी ओर पृथ्वी के अंदर खो गया। उसके आगे बढ़ने के साथ गड़गड़ाहट कम होती चली गई और थोड़ी देर बाद वह स्थान फिर पूर्ववत् हो गया। गुलाबी आभा फिर फैलने लगी। मैं जड़वत् हो गया, क्या था यह मोटा खंभा जो अन्दर ही अन्दर अपने आप चलता था ? कौन सी थी वह अज्ञात और भीम शक्ति जो इसे सृष्टि के आदि से

अन्त तक निरंतर घुमाती रहती थी। मैं उस अद्‌भुत दृश्य का वर्णन कैसे करूँ क्योंकि शब्दों से मैं उसकी भीषणता, उसका कठोर गर्जन और उसकी ज्वलंत आभा को प्रकट नहीं कर सकता। परन्तु यह स्पष्ट था कि उस दहकते हुए स्तंभ में प्रकाश सतरंगी और अत्यन्त आकर्षण पूर्ण था। उसकी बादलों की सी गड़-गड़ाहट इतनी रौद्ररूप वाली थी कि हम तीनों भय से विह्वल हो गए और हमारे कलेजे दहल उठे। आयशा प्रसन्नता से अट्टहास करती हुई मोती बिखेर रही थी। वह बोली :

"आगे आओ···। आगे आओ मेरे कैलीक्रेटीस! और अबकी बार इसमें··· इसकी लंबी लपटों में खड़े होकर स्नान करना! तुम अजर और तब तक के लिये अमर हो जाओगे जब तक यह स्वयं घूमता रहेगा! आओ मेरे प्रियतम यह आखिरी परीक्षा है···बस इसे पार करते ही तुम नवीन जीवन पाओगे।"

और वह फिर खिलखिलाने लगी, लिओ भयभीत सा हो गया। शायद वह उस दहकती हुई लपट से डर गया था। परन्तु वह बोला कुछ नहीं, आयशा ने उसे देखा और कहा :

"डरते हो मेरे प्रियतम?"

"नहीं", उसने अद्‌भुत साहस से उत्तर दिया। वह बोला, "नहीं मेरी आयशा मैं नहीं डरता! मैं इस लपट में अवश्य घुसूँगा चाहे मैं मर ही क्यों न जाऊँ!"

"और मैं भी!"

"और मैं भी!"

मैं और जौब एक साथ चिल्ला उठे। आयशा ने सुना और वह फिर हँस पड़ी, न जाने उस स्थान में क्या विचित्रता थी जो मेरे शरीर में एक नवीन यौवन का उन्माद चढ़ आया और विद्युत गति के समान स्फूर्ति मेरे रोम-रोम में भर गई। मैं परमानन्द का अनुभव करने लगा था। शायद उदासीन जौब का भी यही हाल हो रहा था और वह आश्चर्यजनक अवस्था में हँसता-कूदता हुआ पागल सा हो रहा था। आयशा मेरी ओर देखकर हँसकर बोली :

"ओह हौली! तुम? तुम भी नहाओगे?"

"हाँ मैं भी नहाऊँगा···" मैंने उत्तर दिया।

"तुम तो मनाकर रहे थे न, हे यहूदी ?" उसने कटाक्ष किया।

"हाँ पर न जाने मैं अब क्यों ऐसा हो गया हूँ·····मेरे इच्छा इस अग्नि शिखा में घुसने के लिये प्रबल हो उठी है ?"

"ठीक है, ठीक है हौली ! तब तो निश्चय ही तुम्हारी बुद्धि बिलकुल ही जड़ नहीं हो गई है। मैं स्वयं इसमें दूसरी बार नहाऊँगी···इससे मेरी सुन्दरता निश्चय ही द्विगुणित हो जायगी ! यदि न भी हुई तो कम से कम यह मेरा कुछ बिगाड़ तो नहीं सकती।"

और तभी दूर से गड़गड़ाहट की आवाज बढ़ने लगी। आयशा चिल्लाई : "आगे आओ, मेरे प्यारे ! आगे ! हाँ, यह वस्त्र सब उतार दो क्योंकि यह जल जायँगे···पूरे शरीर में इस जीवन शक्ति का स्पर्श होने दो···।"

फिर उसे न जाने क्या सूझी। शायद उसने देखा कि लिओ कुछ झिझक रहा था। वह बोली :

"मेरे कैलीक्रेटीस ! पहले मैं स्नान करूँगी। मुझे देख कर फिर तुम लपट में आ जाना···" और उसने एक झटके के साथ अपने वस्त्र उतार दिये। अधोवस्त्र उतारने के पहले उसने अपने एड़ी चुम्बी केश सामने कर लिये और फिर नग्न कटि पर वही सुवर्ण का सर्प बाँध लिया। ओह ! कितनी सुन्दर लग रही थी वह नग्न मोहिनी। उसका स्वर्ण शरीर उस बढ़ती हुई गुलाबी आभा में दमक रहा था। यौवन का अजस्र स्रोत बहने लगा था। उसका सौंदर्य मानो प्रति पल अधिकाधिक आकर्षक होने लगा था। गड़गड़ाहट बढ़ने लगी थी। तभी वह फिर चिल्लाकर बोल उठी :

"जब मैं पहले इसमें नहाती थी तब मेरे मन में उस यूनानी सुन्दरी के प्रति घृणा थी परन्तु आज मेरे हृदय में असीम शांति और सदभावना भरी हुई है। मैं अब इन्हीं भावनाओं को लेकर इस अग्नि में से होकर निकलूँगी कि सदा नेक बनी रहूँ। हे मेरे प्रियतम। जब तुम इसमें घुसो अपने हृदय से बुराई का नाम मात्र भी हटा देना···अपनी आत्मा के पंखों को ढीला कर दो, अपनी जननी के निर्मल चुम्बन की याद करो ! उस महानता का ध्यान करो जो तुम्हारे अन्दर स्वर्ण की किरणों पर आरूढ़ होकर दिगन्तों में फैल जाना चाहता था। इस समय जो बीज तुम बोओगे वही आगे आने वाले युगों में तुम्हें अपना फल

देंगे···सावधान ! बुराई को पास न आने देना !···तैयार हो जाओ क्योंकि जीवन का यह अवसर कभी हाथ नहीं आयेगा !!"

फिर कुछ देर वह स्तब्ध रही। मैंने देखा वह अद्भुत साहस बटोर रही थी। बादलों का गर्जन पास आ रहा था···!

वह लपक कर लिओ के गले से उसी नग्नावस्था में लिपट गई। लिओ भी अब तक अग्नि परीक्षा के लिये वस्त्रादिक उतार चुका था। अब वह केवल कटि-पर एक जाँघिया सा पहने खड़ा था। वह उच्छ्वसित स्वर से बोली :

"ओह ! मेरे प्यारे ! मेरे प्रियतम ! तुम क्या कभी जान सकोगे मैंने तुम्हें कितना प्यार किया ?"

और उसने उसे चूम लिया, वह मानो वासना से पागल हो उठी थी। फिर उसी सर्प की गति से वह उससे अलग हुई और···

वह लुढ़कता हुआ प्रकृति का जीवन स्तंभ सतरंगा प्रकाश फैलता, अर्राता हुआ आ गया। उसमें से दीर्घ लपटें निकल कर फिर फैलने लगीं। उसके बज्र गर्जन से कान के पर्दे फट रहे थे। वह कितना भयानक था फिर भी कितना सुन्दर और आभा पूर्ण।

आयशा विद्युत गति से कूदकर उसमें जा खड़ी हुई। मैंने देखा वह उस लपट में जाकर उसे आह्वान करती हुई दोनों सुडौल बाँहें फैलाये खड़ी थी, उसने अपना सारा शरीर हिलाया और तब वह उसके अंश को अपने शरीर पर मलने लगी, वह मुँह खोले उसे अंदर तक खींच रही थी। फिर वह उसमें निश्चल खड़ी हो गई, लपटें उसे चारों ओर से घेर रही थीं। उसके मुख पर एक अमर मुस्कान झलक रही थी, वह उस अग्नि की साक्षात् देवी बनी खड़ी थी ! वे लपटें उसके घुघराले केशों में घुसकर सुवर्ण रेखा की नाईं चमकीं ! उसके हाथी दाँत के समान स्निग्ध और गौर उन्नत स्तनों पर खेल गईं ! अहा ! वे कितने सुन्दरतम दिखाई दे रहे थे ! और उसके वह सुडौल माँसल कंधे उसमें दमकने लगे। उसके केश सामने से हट गए थे और उसकी दीर्घ और सुन्दर नाभि तक चमक रही थी। वह स्वर्ग की अप्सरा सी दिख रही थी। उसके नेत्रों में एक अद्भुत सौंदर्यमयी छवि आ गई थी ! वह उद्दीप्त उस लौ के समान ही चमकने लगी थीं ! ओह ! मैं कैसे कहूँ वह कैसी लग रही थी।

अब भी जब मुझे उसका वह रूप याद आ जाता है तो मुझे मदहोशी हो आती है ! काश मैं अपना आधा जीवन देकर भी एक बार फिर उसके उस रूप को देख सकता।

परन्तु तभी एकदम···इतनी जल्दी कि मैं कह भी नहीं सकता उसके मुख पर एक विचित्र और अवर्णनीय परिवर्तन छा गया, ऐसा परिवर्तन जो आज तक मेरी समझ में नहीं आया और हठात् उसकी वह अमर मुस्कान गायब हो गई और उसके स्थान पर एक शुष्क क्रूर मुद्रा छा गई। वह सौंदर्य का केंद्र उसका मुख अपना लावण्य छोड़ गया और ऐसा लगने लगा जैसे वह सिकुड़ गया हो। वह गोलाई, वह यौवन का उन्माद उससे एकदम खो गया और वह ऐसा प्रतीत होने लगा जैसे युगांतर की यातना उस पर फैल गई हो। उन नेत्रों की वह वासनापूर्ण चमक खो गई और उनमें विषाद की गहरी कालिमा छा गई। पलक मारते मैंने देखा उसका सारा शरीर अपनी सुडौल आकृति छोड़ गया और मानो कुछ झुकने लगा।

मैंने अपनी दोनों आँखें हाथों से मलीं क्योंकि जो मैं देख रहा था उस पर मुझे स्वयं विश्वास नहीं हो रहा था। पर जब फिर देखा तो वह विशाल अर्राता हुआ स्तंभ पृथ्वी के गर्भ में जा चुका था। गड़गड़ाहट कम हो गई थी। और जब वह चला गया तो आयशा लिओ की ओर बढ़ी. पर ओह ! अब उसकी चाल में वह स्फूर्ति और यौवन का उन्माद नहीं था ! उसने अपना हाथ उठा कर लिओ के कंधे पर रखना चाहा। मैंने उसकी गोलाई और त्वचा का तनाव ढीला हो गया था। उसकी हड्डी उभर आई थी। वह पतला दिखाई दे रहा था। और···और···ओह !···उसका मुख मेरी आँखों के सामने बुढ्ढा हो रहा था ·····वृद्ध·····वृद्ध !!

लिओ ने उसे देखा और वह हतप्रभ हो गया। जौब ने एक चीख लगाई और वह मूर्छित होकर गिर गया।

"क्या हुआ ? क्या हुआ मेरे कैलीक्रेटीस ?" वह चिल्लाई। आह ! उसकी वह मधुर संगीतमयी वाणी अब नहीं सुनाई दी। आवाज भर्रा गई थी।

"क्यों क्या हुआ मुझे ? वह घबराकर उसी घरघराते स्वर से चिल्लाई, "मुझे बताओ मेरे कैलीक्रेटीस ! अमर स्तंभ की ज्वाला भी क्या बदल सकती

है···? नहीं ! नहीं !" और उसने अपना हाथ जो अब बिल्कुल पतला हो गया था, कठिनता से उठा कर अपने सिर पर लगाया और ओह ! वह वीभत्सता कैसे कहूँ·····वह लंबे-लंबे घुँघराले केश पृथ्वी पर गिर गए !!

"वह देखो ! वह देखो ! वह सिकुड़ रही है·····ओह ! वह सिकुड़ रही है !···उसके मुख से झाग निकल रहे हैं···अरे ! अरे !" लिओ चिल्लाया।

और आयशा सिकुड़कर पृथ्वी पर गिर गई। वह इतनी सिकुड़ गई कि उसकी कटि का स्वर्ण सर्प उतर कर नीचे गिर गया·····वह छोटी होती गई और उसकी आँखों पर घिनौनी झिल्ली और मैल छा गया·····ओह ! वह अब बिल्कुल बंदर जितनी रह गई थी और उसके वह सुन्दर हाथ अब केवल सूखे ठूँठ पूँजे रह गए थे। उसका वह श्वेतमर्मर जैसा रंग मटमैला, पीला और कुछ कुछ पारदर्शी हो चला था। उसने अपना सिर छुआ और चीख उठी। शायद उसे अब पूर्ण रूप से अपनी स्थिति का पता लग गया था। भयानक थी उसकी वह घर्राहट मिली चीख और अब वह ठीक मिश्री ममी जैसी लग रही थी ! और आह ! वह चीखी, चीखी, फिर चीखी ! और इतना चीखी कि और न चीख सकी और लुढ़क गई। उसके शरीर और मुख पर अब लाखों झुर्रियाँ पड़ गई थीं; आँखें गड्ढों में घुस गई थीं और उसकी काया सिकुड़कर झुककर बंदर जितनी रह गई थी उसका गंजा सिर अब भी उतना ही बड़ा था। वह पृथ्वी पर पड़ी हुई केवल हल्के-हल्के हिल रही थी।

तभी लिओ ने चीख मारी और वह बेहोश होकर गिर गया। दो मिनट पहले संसार की जो सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी स्त्री थी जिसके एक कटाक्ष में त्रिभुवन की वासना समुद्र के समान थपेड़े ले उठती थी और जिनके नेत्रों की चमक में मनुष्य अपनी शक्ति, ज्ञान और विवेक खो बैठता था वही अब इतनी बुरी, इतनी कुरूप और इतनी घृणित तथा असीम वृद्ध होकर अपनी लम्बी केश राशि के ढेर के ऊपर पड़ी थी। और मुझे सोचना पड़ा कि यही वह स्त्री थी जो अभी-अभी मोहिनी बनी खड़ी थी ! मेरे सामने कितना भयंकर सत्य खड़ा था जो मैं कितना चाहकर भी नहीं झुठला सकता था !

मैंने देखा वह मर रही थी। मैं उसकी मृत्यु पर प्रसन्न था क्योंकि यदि वह जीवित रहती तो कितनी यातना भुगतती ! वह थोड़ी देर बाद अपने हाथों की

हड्डियों को टेक कर तनिक उठी और अपना सिर निरुद्देश अगल-बगल हिलाने लगी जैसे कछुआ अपना सिर हिलाता है। देख तो वह सकती नहीं थी क्योंकि उसकी आँखों पर झिल्ली चढ़ आई थी और उनमें कीचड़ सी भर गई थी। ओह! वह कितनी भयंकर लग रही थी! उसके मुख पर युगांतर का बुढ़ापा झलक रहा था! इतनी वृद्ध, इतनी वृद्ध कि जिसका वर्णन असंभव है। परन्तु वह अब भी क्षीण और फटे स्वर से बोल सकती थी। वह कहने लगी। उसका स्वर काँप रहा था और वह इतना कर्कश और बुरा था कि सुनने वाला दहल उठता था। वह बोली :

"ओह! मेरे कैलीक्रेटीस! मुझे, अपनी आयशा को, भूल न जाना! मेरे परिवर्तन पर न हँसना मेरे प्रियतम क्योंकि मैं मरी नहीं हूँ! मैं फिर आऊँगी··· अब की बार और अधिक सुन्दरी बन कर···ओह! ओह!···मेरे कैलिक्रे···!!" और वह अधिक नहीं बोल सकी; गिर गई और मर गई।

भय और आतंक की पराकाष्ठा को पार करने वाले उस दृश्य को मैं काफी झेल गया था अब और न झेल सका। मैं गिर पड़ा·····

शायद मैं बेहोश हो गया था क्योंकि जब मुझे होश आया मेरे अङ्ग-अङ्ग में पीड़ा हो रही थी और शरीर अकड़ गया था। मैंने देखा लिओ अब भी बेहोश पड़ा था, मैंने उसे जगाया और वह उठकर बैठ गया। 'हे भगवान!' मैं चीख पड़ा। अभी शायद उस देश का जादू बाकी था। मेरे लिओ के सुवर्ण जैसे केश हिम के समान श्वेत हो गए थे! भय ने उन्हें ऐसा बना दिया था। मैंने जौब को उठाया पर वह मर चुका था। पास ही अपने सुगंधित केशों के ऊपर आयशा का वह बन्दर जैसा शरीर पड़ा था। मैंने उसे उसी के कफ़न जैसे उस सफेद कपड़े से ढँक दिया, तभी गड़गड़ाता हुआ वह जीवन ज्योति का स्तंभ आया और उसमें से लपटें पूर्ववत् निकलने लगीं।

लिओ मुर्झाया हुआ था। मैंने उससे संकेत में पूछा तो उसने मना कर दिया। वह बोला :

"चाचा! अब अधिक जीने की इच्छा नहीं होती। और कौन जाने इस अग्नि शिखा का क्या असर हो?" फिर उसने आयशा का नाम लेकर उस अग्नि के सामने शपथ ली :

"मैं तेरी याद में हे आयशा ! जब तक जीऊँगा, कभी किसी स्त्री से संपर्क नहीं करूँगा·····मैं तेरे प्रेम में ही तेरी प्रतीक्षा करूँगा !!"

दीप्त स्तंभ गड़गड़ाता हुआ पृथ्वी के गर्भ में फिर घुस गया। सृष्टि आदि से अंत तक घूमने वाले उस स्तंभ पर आयशा के मरने का कोई असर नहीं था। दो हजार साल पहले उसने उसे अजर-अमर जीवन दिया था और आज उसी ने उसे असीम वृद्ध बना कर मार दिया। कितना भीषण उपहास था ! जब आयशा अपने प्रियतम को न पा सकी थी तो उसे अमर जीवन प्रतीक्षा में तड़पने और यातना भोगने का मिला था और अब जब वह अपने प्रियतम को पा गई थी, होठों से प्याला लगते ही वह टूट गया। मैं और अधिक कुछ सोच सका। लालटेनें अब भी जल रही थीं। मैंने लिओ का हाथ पकड़ा और लौट चला·····।

× × × ×

२५

उपसंहार

भीम प्रयत्नों से हम लौटे। मार्ग में कई बार ऐसा लगा कि हम उस पृथ्वी के गर्भ में मार्ग भूल गए हैं पर जब हम उस हिलती लाट पर आये जहाँ से उस पत्थर के दाँत पर पुल द्वारा जाना पड़ता था तो हमारा लौटने का सारा उत्साह ठंडा हो गया क्योंकि तख़्ता तो पहले ही खो चुका था। उसी समय एक बड़ा कपड़ा फरफराता हुआ आया और लिओ के शरीर को उसने पूरा ढँक लिया। हमने देखा वह उस दिन का आयशा का उड़ा हुआ काला लबादा था। अब तक लिओ पत्थर हो गया था, घटनाओं ने उसे जड़ बना दिया था। अब वह फूट निकला और ज़ोर-ज़ोर रोने लगा। हमने बड़ी कठिनाई से कूद कर वह मृत्यु का गह्वर पार किया। मैं तो कूदने में भी पीछे रह गया और दाँत के अग्र भाग में लटकता ही रह गया था पर मेरे लिओ ने मुझे अपनी भीम-शक्ति से खींच कर बचा लिया। जब हम उस अन्धकारपूर्ण मार्ग से होकर लौटे

लालटेनें उस आँधी में बुझ चुकी थीं। बाहर आये; तब तक दो दिन ो रातें, जब से हम घुसे, हो चुकी थीं। भूख से हम बेहाल थे।

बिलाली ने जब केवल हम दो को देखा तो बोला :

"मेरे बनमानुष ! वह कहाँ हैं 'जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य है' ? और तुम्हारा सूहर ?"

"दोनों मर गए", मैंने उत्तर दिया।

सुन कर वह हँसा और बोला :

"वह 'जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य है', मर ही नहीं सकतीं। वह शायद ं चली गई हैं···वह इसी भाँति कभी-कभी सदियों चली जाती हैं। एक बार की अनुपस्थिति में एक और स्त्री उनके स्थान पर यहाँ रानी बन गई थी पर ब वह लौटीं तो उन्होंने उस पाखंडी स्त्री को मार कर पुनः अपना राज्य ापित किया।"

"नहीं वह अग्नि में·····!"

"हाँ, वह सब जगह जा सकती हैं", बीच में ही वह बोल उठा। मैं चुप हो गया। मैं उससे कैसे कहता कि उसकी वह 'जिसकी आज्ञा मानना अनिवार्य थी' अब जीवित नहीं थी, कि उसकी सारी अद्भुत शक्तियों का उसी ान पर अन्त हो गया था जहाँ वह उसे मिली थीं। मैंने बिलाली से कहा :

"हे पिता ! हम समुद्र में पहुँचना चाहते हैं हमारी सहायता करो !"

बिलाली वचन का पक्का था। उसी ने हमें साथ लेकर हमारी डोंगी तक पहुँचा दिया। यदि वह न होता और एमैहैग्गर लोगों को पता चल जाता कि 'वह जिसकी आज्ञा मानना अनिवार्य थी' मर गई हैं तो हम दोनों निश्चय रूप से गर्म बर्तन द्वारा मार कर खा लिये जाते।

हम उस देश में पाँच हफ़्ते पहले घुसे थे···तब हम चार थे और अब···? बड़ी कठिनाई से हमने नाव समुद्र में डाल दी और उत्तर की ओर खेने लगे।

ज़ंबेली के पास हमें जंगलियों ने पकड़ लिया, वह लिओ को जादूगर इस लिये समझते थे क्योंकि वह इतना जवान था फिर भी उसके केश हिम की भाँति श्वेत। एक अरब की सहायता से हम वहाँ से छूटे और जब हम वापस ब्रिज लौटे पूरे दो वर्ष व्यतीत हो चुके थे।

लिओ अब भी ब्रह्मचारी है। अपने हृदय से उस स्त्री का वह रूप निकालने में असमर्थ है, और मैं···?···

मुझे अभी तक इन सब रहस्यों का भेद कुछ भी पता नहीं लगा है। क्या आत्मा फिर-फिर आती है? क्या लिओ सचमुच ही अतीत का कैलीक्रेटीस है और क्या एमिनार्टस ही यूस्टेन बन कर बदला लेने आई थी? यूस्टेन को उस गुफा में ही कैसे पता चल गया था कि लिओ उससे छिनने वाला था? और हाँ आयशा ने कौयर के उन खंडहरों में क्या देखा था जो वह दूसरे दिन यूस्टेन को कोस रही थी? मैं अब भी अपने मन में पूछता हूँ···क्या लिओ और आयशा फिर कभी···कभी···मिलेंगे?

मेरे लिये यह सब रहस्य ही बने रहे हैं और रहेंगे। लिओ के केश अब धीरे-धीरे फिर स्वर्णिम हो चले हैं परन्तु वह अब भी आयशा की याद नहीं भुला सका है, वह भी शायद तड़पता ही रहेगा। दो हजार साल पहले के पुजारी कैलीक्रेटीस ने उस नील की पुत्री के आकर्षण से देवी आइसिस के प्रति अपनी शपथ तोड़ दी थी और इसीलिये शायद देवी ने ऐसी मृत्यु दी थी और अब···और अब वही पुजारी···मेरा लिओ! अपनी उसी हत्यारिन के लिये तड़प रहा है। मैं आज भी उस यूथोपियन की खोपड़ी वाले पर्वत, आठ हजार साल पुराने कौयर और उस अद्‌भुत स्त्री की याद करता हूँ तो हृदय कसक उठता है, भय से रोमांच हो आता है।

———